77
अनमोल सीरीज़

पं. शशि मोहन बहल

मनोकामनादायक व्रत एवं त्यौहार



व्रत एवं त्यौहारों द्वारा मनोकामना
प्राप्त करने के लिए सर्वोपयोगी उपाय



202

मनोकामनादायक व्रत व त्यौहार

व्रत उपवास, आराधनायें, उपासनायें, कथायें यह सब अपना निश्चित महत्त्व रखते हैं। इनका जो सुफल होता है वह अवश्य ही चमत्कारी होता है। इनका सीधा प्रभाव पड़ता है। साधारण से साधारण मनुष्य भी इनको करने के बाद अपनी कार्य-सिद्धि का हर्ष प्राप्त कर सकता है और अपना आने वाला जीवन सुखमय बना सकता है।

जीवन को मंगलमय करने के लिए ही व्रत-त्यौहार और उपवास बनाये गये हैं। अतएव इनका पालन कर आप सफलता प्राप्त कर सकते हैं। जीवन का एक दिन अन्त होना है। साँसें निकल जायेंगी और मृत हो गये शरीर का अन्तिम संस्कार कर दिया जायेगा। जीवन जितना भी है, उसे अपने सत्कर्मों का पालन कर, ईश्वर की आराधना कर, साधु-सन्तों की सेवा कर, सफल करना चाहिए। हमारे धर्म के मुख्य त्यौहार आदि किस प्रकार के हैं? इनकी सम्पूर्ण सूची इस पुस्तक में दी गई है। प्रमुख व्रतों व त्यौहारों की पूजन विधि, इनसे सम्बन्धित चित्रादि, व्रत कथा व आरती आदि को विख्यात लेखक पं० शशिमोहन बहल ने आपकी मनोकामना की पूर्ति हेतु प्रस्तुत किया है। इन व्रतों व त्यौहारों द्वारा आपका जीवन सार्थक, शुभ, मंगलमय हो।

卐 भारती प्रकाशन

मनोकामनादायक
व्रत व त्यौहार

प्रस्तुति एवं विवेचन :

पं० शशि मोहन बहल

(ज्योतिष एवं हस्तरेखा के अनुभवी लेखक)

प्रकाशक :

मारुति प्रकाशन

33, हरी नगर, मेरठ-250 002

- पुस्तक : मनोकामनादायक व्रत व त्यौहार
- प्रस्तुति : पं० शशि मोहन बहल
- प्रकाशक : मारुति प्रकाशन, 33, हरी नगर, मेरठ-250 002
  ☏(0121)3255234, 2518025
- कम्प्यूटरीकृत पृष्ठसज्जा : मित्तल कम्प्यूटस, मेरठ।
- मुद्रक : संजय प्रिन्टर्स, देहली।

- मूल्य : पचास रुपये केवल (50.00)

लेखकीय.....।

भक्तिमार्ग के अनुसार ऐश्वर्य मनोकामना पूर्ति, धन-धान्य और इन्द्रिय सुख से तृप्त हुआ सांसारी ही पूर्ण विश्वास से आगे बढ़ता है। जो तृप्त नहीं होता, अतृप्त वासनाऐं उस पर सदैव छाई रहती हैं। सब प्रकार के कर्म, हिंसा और अनिष्ट ही अतृप्ति के कारण होते हैं, अतः आध्यात्मिक मार्ग मनोकामना पूर्ति की पूरी छूट देता है। परन्तु जो केवल इच्छाओं की तृप्ति कर ही रुक जाता है तथा उपासना की अगली सीढ़ी पर नहीं चढ़ता, भक्तिमार्ग में उसे निरा पशु कहा गया है।

सभ्य सांसारी की जब कामनाऐं पूर्ण हो जाती हैं तो वह अपनी इच्छानुसार कार्य सिद्धि करने के योग्य हो जाता है। इस पुस्तक में उपवास और धार्मिक कथाओं के माध्यम से इच्छापूर्ति की विधि को बारीकी से प्रस्तुत किया गया है।

महान दार्शनिक **अरस्तू** का कथन है—"ज्ञान तर्कपूर्ण, तर्कसिद्ध और वास्तविक ही होना चाहिए। ज्ञान की यही जिज्ञासा विज्ञान को क्यों कारणवादी बनाती है।" यह कारणवाद ही एक ऐसा स्रोत है जो उन समस्त मान्यताओं को विश्वासहीन बना देता है। आज के युग में मनुष्य गर्व कर सकता है। वैज्ञानिक समस्त मानव जीवन को सुविधा और सुरक्षा देने के लिए रात-दिन लगे हैं। अगणित धन इनके लिए व्यय किया जा रहा है⋯फिर भी विडम्बना यह है कि सुरक्षा की यह भावना हमें निरन्तर असुरक्षित किये जा रही है।

छोटे से कद का व्यक्ति विशाल और भव्य अट्टालिका बनाने में सक्षम है। अनेक विशाल मशीनें बना डाली हैं। सागर की अथाह गहराइयाँ नाप डाली हैं, पहाड़ों की ऊँचाईयां अपने छोटे पैरों से नाप डाली हैं। सुख और ऐश्वर्य के नवीन उपकरण बना डाले हैं। अन्तरिक्ष में उसने पताका गाड़ दी है।

आज के युग में विज्ञान को सम्भवतः यह बात समझ में न आये कि दृश्य से अधिक महत्त्वपूर्ण अदृश्य है। हम केवल भौतिक विज्ञान को ही नहीं वरन् आत्मज्ञान और परा-विज्ञान से परे भी बहुत कुछ देख चुके हैं। इतिहास गवाह है कि हमने जो कुछ भी पाया है वह इसी जीवन

से पाया है। इसी पिण्ड में ब्रह्माण्ड को देखा है। जो कुछ रहस्यमय है, उसे जानने का अभी पूरा प्रयास नहीं हुआ है। समस्त संसार एक चक्र में घूम रहा है। यह सोचने का किसी को समय ही नहीं है कि वह किस ओर जा रहा है ? क्यों जा रहा है ? उसका लक्ष्य क्या है ?

धार्मिक पूजा-पाठ और उपवास इस पीढ़ी की बहुत-सी समस्याओं का, बहुत से प्रश्नं का समाधान करते हैं ताकि आज का मानव व्यर्थ भटके नहीं।

उपवास, कथा वह सर्वमान्य उपलब्धि है जो हर मानव, हर समुदाय को अपने दुःखों, कष्टों को मिटाने का एक सबल माध्यम है। भारतीय संस्कृति सदा ही आध्यात्मिकता को प्राथमिकता देती आयी है। दुर्भाग्य है, आज का मानव विलासिता में लिपटा पड़ा है। जो जन परमेश्वर के पूजा-पाठ में विश्वास रखते हैं, अपने कष्ट तो दूर करते ही हैं, साथ ही साथ अपना अगला जन्म भी संवारते हैं।

यूं तो उपवास कथा संग्रह पर अनेक पुस्तकें हैं परन्तु इस संग्रह में आपको वे सभी कथाएं मिलेंगी, जिन्हें हमारे धर्म में मान्यता प्राप्त है। यह पुस्तक मैंने इसी पावन उद्देश्य से संग्रहीत की है कि दुःखीजन अपने इष्टदेव का उपवास करके उस सुख, उस मनोकामना को प्राप्त कर ले जो आज उसको प्राप्य नहीं है।

प्रिय पाठकों ! अत्यंत धैर्य और अनवरत गम्भीरता के साथ उपवास कर, कथाओं का पठन और श्रवण कर प्रत्येक व्यक्ति इन कथाओं के द्वारा अपना जीवन सुखमय बना सकता है।

शशिमोहन बहल
"तंत्र सबके लिए मिशन"
डी-4, राधापुरी, कृष्णा नगर,
देहली-110 051

अनुक्रमणिका



वर्ष के सम्पूर्ण व्रत एवं त्यौहार

भारत त्यौहारों एवं पर्वों का देश है। प्रत्येक मनुष्य की कोई-ना-कोई मनोकामना अवश्य होती हैं। जिसको कि पूर्ण करने के लिये वह प्रयासरत रहता है। व्रत एवं त्यौहारों में पूजन की विधि आदि के माध्यम से भी मनुष्य अपनी मनोकामना पूर्ण कर सकता है।

तो आइये, सर्वप्रथम हम वर्षभर के सम्पूर्ण व्रत एवं त्यौहारों के बारे में जान लें—

किस माह में कौन से व्रत एवं त्यौहार

माह	पक्ष	तिथि	व्रत एवं त्यौहार
चैत्र	शुक्ल	प्रतिपदा	सम्वतसरारम्भ, चन्द्र दर्शन, नवरात्रघट स्थापन,
	शुक्ल	तृतीया	गण गौरी व्रत
	शुक्ल	सप्तमी	नवरात्र सप्तमी व्रत
	शुक्ल	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
	शुक्ल	नवमी	श्रीराम नवमी व्रत, घट विसर्जन
	शुक्ल	एकादशी	कामदा एकादशी व्रत
	शुक्ल	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत, मेष की संक्रान्ति वैशाखी
		पूर्णिमा	श्री हनुमान जयन्ती (दक्षिण भारत) चैत्री पूर्णिमा, सत्यनारायण व्रत
वैशाख	कृष्ण	एकादशी	बरुथिनि एकादशी व्रत

माह	पक्ष	तिथि	व्रत एवं त्यौहार
	कृष्ण	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
	शुक्ल	एकादशी	मोहिनी एकादशी व्रत
	शुक्ल	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
		पूर्णिमा	सत्यनारायण व्रत बुद्ध पूर्णिमा
ज्येष्ठ	कृष्ण	एकादशी	अपरा एकादशी व्रत
	कृष्ण	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रत पूजन
	शुक्ल	एकादशी	निर्जला एकादशी व्रत
	शुक्ल	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
		पूर्णिमा	श्री सत्यनारायण व्रत
आषाढ़	कृष्ण	एकादशी	योगिनी एकादशी व्रत
	कृष्ण	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
	शुक्ल	एकादशी	देवशयनी एकादशी, चातुर्मास्य व्रत प्रारम्भ
	शुक्ल	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
		पूर्णिमा	सत्यनारायण व्रत, गुरू पूर्णिमा
श्रावण	कृष्ण	एकादशी	कामदा एकादशी व्रत
	कृष्ण	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
	शुक्ल	तृतीया	हरियाली तीज, मधुश्रवा तीज
	शुक्ल	पंचमी	नाग पंचमी
	शुक्ल	एकादशी	पवित्रा एकादशी व्रत
	शुक्ल	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
		पूर्णिमा	सत्यनारायण व्रत, रक्षाबन्धन
भाद्रपद	कृष्ण	सप्तमी	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (स्मार्तो का) शीतला सप्तमी-ठण्डी
	कृष्ण	अष्टमी	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव) गोकुलाष्टमी
	कृष्ण	एकादशी	अजा एकादशी व्रत, गोवत्स पूजन
	कृष्ण	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
	शुक्ल	पंचमी	ऋषि पंचमी
	शुक्ल	एकादशी	पद्मा एकादशी व्रत
	शुक्ल	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
		चतुर्दशी	अनन्त चतुर्दशी
		पूर्णिमा	सत्यनारायण व्रत, महालयारम्भ

माह	पक्ष	तिथि	व्रत एवं त्यौहार
आश्विन	कृष्ण	प्रतिपदा	प्रतिपदा का श्राद्ध
	कृष्ण	द्वितीया	द्वितीया का श्राद्ध
	कृष्ण	तृतीया	तृतीया का श्राद्ध
	कृष्ण	चतुर्थी	चतुर्थी का श्राद्ध
	कृष्ण	पंचमी	पंचमी का श्राद्ध
	कृष्ण	षष्ठी	षष्ठी का श्राद्ध
	कृष्ण	सप्तमी	सप्तमी का श्राद्ध
	कृष्ण	अष्टमी	अष्टमी का श्राद्ध
	कृष्ण	नवमी	नवमी का श्राद्ध, सौभाग्यवती श्राद्ध
	कृष्ण	दशमी	दशमी का श्राद्ध
	कृष्ण	एकादशी	एकादशी का श्राद्ध, इन्दिरा एकादशी
	कृष्ण	द्वादशी	द्वादशी का श्राद्ध
	कृष्ण	त्रयोदशी	त्रयोदशी का श्राद्ध, प्रदोष व्रत
	कृष्ण	चतुर्दशी	चतुर्दशी का श्राद्ध, पितृ विसर्जन,
	शुक्ल	प्रतिपदा	नवरात्र प्रारम्भ
	शुक्ल	सप्तमी	नवरात्र सप्तमी व्रत, सरस्वती आह्वान
	शुक्ल	अष्टमी	श्री दुर्गा अष्टमी
	शुक्ल	नवमी	महानवमी, घट विसर्जन, नवरात्र समाप्त
	शुक्ल	दशमी	विजय दशमी, दशहरा
	शुक्ल	एकादशी	पापांकुशा एकादशी व्रत
	शुक्ल	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
	शुक्ल	पूर्णिमा	सत्यनारायण व्रत, शरद पूर्णिमा
कार्तिक	कृष्ण	चतुर्थी	करवा चतुर्थी व्रत
	कृष्ण	अष्टमी	अहोई अष्टमी
	कृष्ण	एकादशी	रमा एकादशी व्रत
	कृष्ण	त्रयोदशी	सोम प्रदोष व्रत, धन तेरस
	कृष्ण	चतुर्दशी	नरका चौदस
		अमावस्या	श्री महालक्ष्मी पूजन, दीपावली
	शुक्ल	प्रतिपदा	अन्नकूट, गोवर्धन पूजा
	शुक्ल	द्वितीया	यम द्वितीया, भाई दूज
	शुक्ल	एकादशी	प्रबोधिनी एकादशी व्रत
	शुक्ल	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत

माह	पक्ष	तिथि	व्रत एवं त्यौहार
		पूर्णिमा	सत्यनारायण व्रत.
मार्गशीर्ष	कृष्ण	एकादशी	उत्पन्ना एकादशी व्रत
	कृष्ण	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
	शुक्ल	एकादशी	मोक्षदा एकादशी व्रत
	शुक्ल	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
		पूर्णिमा	सत्यनारायण व्रत, स्नान दान की पूर्णिमा
पौष	कृष्ण	एकादशी	सफला एकादशी व्रत
	कृष्ण	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
	शुक्ल	एकादशी	पुत्रदा एकादशी व्रत
	शुक्ल	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
		पूर्णिमा	सत्यनारायण व्रत
माघ	कृष्ण	एकादशी	षटतिला एकादशी व्रत
	कृष्ण	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
	शुक्ल	पंचमी	बसन्त पंचमी
	शुक्ल	एकादशी	जया एकादशी व्रत
	शुक्ल	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
		पूर्णिमा	सत्यनारायण व्रत, माघी पूर्णिमा
फाल्गुन	कृष्ण	एकादशी	विजया एकादशी व्रत
	कृष्ण	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत श्री महाशिवरात्रि व्रत
	शुक्ल	एकादशी	आमला एकादशी व्रत
	शुक्ल	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
		पूर्णिमा	होलिका दहन, सत्यनारायण व्रत
चैत्र	कृष्ण.	प्रतिपदा	होली-धुलैन्डी (धूली बन्धन)
	कृष्ण	एकादशी	पाप मोचनी एकादशी
	कृष्ण	त्रयोदशी	प्रदोष व्रत
		अमावस्या	संवत्सर समाप्त

संक्रान्ति का निर्धारण सूर्य के राशि में प्रवेश करने से होता है अर्थात् जिस समय सूर्य जिस राशि में प्रवेश करता है उस समय उस राशि की संक्रान्ति होती है। उदाहरण के लिये सूर्य लगभग **14 अप्रैल से 13 मई** के मध्य **मेष** राशि में प्रवेश करता है, अत: यह मेष संक्रान्ति कहलाती है तथा यह शुभ फलदायक होती है। संक्रान्ति अंग्रेजी के महीनों के अनुसार लगभग कब होती है यह पृष्ठ 17 पर दी गयी तालिका में स्पष्ट किया गया है।

नवग्रहों के दान, मंत्र एवं जाप आदि—1

ग्रह	बीज-मन्त्र	जप-संख्या	आराधन	धारण	दान
सूर्य	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	7,000	हरिवंशपुराण-श्रवण	माणिक्य	गेहूं, गाय, गुड़, तांबा, सोना, लाल वस्त्र, लाल कमल, रक्तचन्दन, मूंगा आदि।
चन्द्रमा	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः	11,000 सन्ध्याकाल	शिवस्तुति	मोती	चावल, कपूर, सफेद वस्त्र, चांदी, शङ्ख, वंशपात्र, सफेद चन्दन, श्वेत पुष्प, चीनी, वृषभ, घृत, दधि, मोती।
मंगल	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	10,000 सवा दो घड़ी	शिवस्तुति	प्रवाल	तांबा, सोना, गेहूं, लाल वस्त्र, गुड़, लाल चन्दन, लाल पुष्प, केसर, कस्तूरी, लाल वृषभ, मसूर की दाल, पृथ्वी, विद्रुम।
बुध	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	19,000 5 घड़ी	अमावस्या व्रत	पन्ना	कांसी, हाथीदांत, हरा वस्त्र, मूंगा, पन्ना, सुवर्ण, दासी, कपूर, वस्त्र, फल, षट्रस-भोजन, घृत, सर्वपुष्प।
गुरु	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	19,000 सन्ध्याकाल	अमावस्या व्रत	पुखराज	पीला वस्त्र, सोना, हल्दी, घृत, पीला पुष्प, पीला अन्न, पुखराज, अश्व, पुस्तक, मधु, लवण, शर्करा, भूमि, छत्र।

नवग्रहों के दान, मंत्र एवं जाप आदि—2

ग्रह	बीज-मन्त्र	जप-संख्या	आराधन	धारण	दान
शुक्र	ॐ द्री द्री द्रौं स: शुक्राय नम:	6,000 सूर्योदय	गौ-पूजा	हीरा	चांदी, सोना, चावल, घी, सफेद वस्त्र, सफेद चन्दन, हीरा, सफेद अश्व, दही, गंन्धद्रव्य, चीनी, गौ, भूमि।
शनि	ॐ प्रां प्रीं प्रौं स: शनैश्चराय नम:	23,000 सन्ध्याकाल	मृत्युञ्जय-जप	नीलम	तिल, उड़द, भैंस, लोहा, तेल, काला वस्त्र, नीलम, कुलथी, काली गौ, काले पुष्प, जूता, कस्तूरी, सुवर्ण।
राहु	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं स: राहवे नम:	18,000 रात्रि	मृत्युञ्जय-जप	फिरोजा	अभ्रक, लौह, तिल, नीला वस्त्र, छाग, ताम्र-पात्र, सप्तधान्य, उड़द, गोमेद, काला पुष्प, तेल, कम्बल, घोड़ा, खड्ग।
केतु	ॐ म्रां म्रीं म्रौं स: केतवे नम:	17,000 रात्रि	मृत्युञ्जय-जप	लहसुनिया	कस्तूरी, तिल, छाग, काला वस्त्र, ध्वजा, सप्तधान्य, कम्बल, उड़द, वैदूर्य, काला पुष्प, तेल, सुवर्ण, लोहा, शस्त्र।

सूर्य संक्रान्ति	अवधि (लगभग)
मेष	14 अप्रैल से 13 मई
वृष	14 मई से 13 जून
मिथुन	14 जून से 13 जुलाई
कर्क	14 जुलाई से 13 अगस्त
सिंह	14 अगस्त से 13 सितम्बर
कन्या	14 सितम्बर से 13 अक्टूबर
तुला	14 अक्टूबर से 13 नवम्बर
वृश्चिक	14 नवम्बर से 13 दिसम्बर
धनु	14 दिसम्बर से 13 जनवरी
मकर	14 जनवरी से 13 फरवरी
कुंभ	14 फरवरी से 13 मार्च
मीन	14 मार्च से 13 अप्रैल

यदि संक्रान्ति किसी मास में शुक्ल पक्ष की सप्तमी को हो, साथ ही दिन भी रविवार हो तो ऐसी संक्रान्ति कामदा जया संक्रान्ति कहलाती है। इस संक्रान्ति को यदि सूर्य उपासना, सत्यनारायण व्रत आदि किया जाए तो एक अश्व मेध यज्ञ के बराबर फल प्राप्त होता है।

संक्षेप में पूजन विधि

अगर हम अपने चारों ओर खोज भरी दृष्टि डालें तो एक बात समान रूप से दृष्टिगोचर होगी, वह है पूजा। इसके रूप और तरीके अनेक हैं, लेकिन कार्य केवल एक है और वह है स्वागत। पूजा आरम्भ करने से पहले संकल्प लिया जाता है। जिसका अभिप्राय यह है, मैं 'अमुक' नाम का व्यक्ति अमुक गोत्र, जाति में उत्पन्न आज इस दिन, तारीख, समय पर अमुक स्थान पर अमुक कार्य के लिए अमुक अनुष्ठान करने का संकल्प करता हूं। संस्कृत में श्री श्वेत वाराह कल्पे अष्टाविशतितमे कलियुगे प्रथम चरणे संवत् शाके मास पक्ष तिथि वार योगकरण का नाम लेकर नवग्रहों के नाम बोलें। आप इसके स्थान पर तारीख, सन्, समय भी कह सकते हैं या मास पक्ष तिथि वार संवत कह सकते हैं। स्थान के विषय में जम्बू द्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तरे इन्द्रप्रस्थ नगरे नारायण अंचले इस प्रकार कहा जाता है। आप अपने मकान का नं०, शहर का नाम लेकर काम चला सकते हैं। हाथ में जल लेकर संकल्प करें और जल को पात्र में छोड़ दें।

सभी देवी-देवताओं की पूजा की जाती है। कर्मकाण्डी विद्वान् तो श्लोकों, मंत्रों द्वारा करते हैं। परन्तु साधारण गृहस्थ तो संस्कृत नहीं जानता ? उनकी सुविधा

के लिए मैं हिन्दी भाषा में इस विधि को बतला रहा हूं। परमात्मा भाषा नहीं समझता है। वह तो केवल मन की भाषा को जानता है। पूजन के 16 अंग हैं इसलिए इसे षोडशोपचार पूजा कहा जाता है। हम सबसे पहले आह्वान को लेते हैं।

आपके यहां कोई मेहमान आता है तो आप उसे द्वार पर स्वागत करके भीतर ले आते हैं। मार्ग में उसके पुष्प छिड़कते, अर्घ्य देते हुए भीतर लाते हैं। माचिस में अग्नि है। परन्तु उसे प्रगट करने के लिए रगड़ना होता है तभी अग्नि उत्पन्न हो जाती है। आपने जो भी पूजा करनी है आप उस देवी-देवता के चित्र को सम्मुख रख लीजिये। स्वयं आसन पर पूर्व की तरफ मुख करके बैठ जाएं। उनसे प्रार्थना कीजिये कि वह आपके पूजास्थल पर स्वयं पधारें। इसे आप **"आह्वानम् समर्पयामि"** कहकर, कर सकते हैं। तांबे का गिलास जिसे पंचपात्र कहते हैं। उसमें एक छोटी चम्मच पड़ी होती है, एक छोटी कटोरी भी साथ होती है। दीपक जलाने का भी एक पात्र होता है उसी से आरती उतारी जाती है। एक घंटी होती है। संभव हो तो एक शंख भी पूजा में रखें। तो **"आह्वानम् समर्पयामि"** कहकर पंचपात्र से जल लेकर छोटे पात्र में डाल दें। इस जल से सम्भव हो सके तो दूर्वादल, तुलसी के पत्ते, देसी पान का पत्ता, सफेद तिल, चावल, पुष्प भी डाल सकते हैं।

देवता से आसन ग्रहण करने की प्रार्थना करिये। **"आसनम् समर्पयामि"** कहकर पात्र से जल लेकर छोटे पात्र में डाल दीजिये। अब आप उन्हें अर्घ्य दीजिये। देवता के दोनों ओर जल लेकर पान के पत्ते से या शंख में जल भर उससे जल को छिड़कें और कहते जाएं **"अर्घ्यं समर्पयामि"**।

इसके बाद आप चरण धोइये और मुख आचमन से मुख साफ करना, कुल्ला करना, मुंह धोना आदि क्रिया करें। इसके लिए आप जल छोटे पात्र में डालिये और बोलें—**"पादयोपाद्यं हस्तयो प्रक्षालनं समर्पयामि।"** इसके बाद मधुपर्क कराते हैं, फिर शुद्ध जल से मुख साफ कराते हैं। मधुपर्क में एक भाग शुद्ध घी, दो भाग शहद, एक भाग दही मिलाकर बनाया जाता है। इसे सामने रखकर **"मधुपर्क समर्पयामि"** कहकर मधुपर्क अर्पण करें और **"मुखे आचमनम्"** कहकर मुख साफ करा दें।

तदुपरान्त स्नान की व्यवस्था करें। स्नान से पहले उबटन लगायें। उबटन में हल्दी, घिसा हुआ चन्दन मिलाकर उबटन बनाया जाता है। यह **"उबटनम् समर्पयामि"** कहकर किया जाता है। फिर शुद्ध जल से स्नान करायें। दूध के स्नान में थोड़ा दूध छोटे पात्र में **"दुग्धं स्नानम् समर्पयामि"** कहकर पंचामृत डालें, फिर जल डालें, **"घृते स्नानम् समर्पयामि"** कहकर घी पात्र में डालें, फिर जल डालें। **"मधुस्नानम् समर्पयामि"** कहकर मधु छोटे पात्र में डालें, फिर जल डालें, फिर **"शर्करा स्नानं समर्पयामि"** कहकर शक्कर पात्र में डालें, फिर जल डालें। **"चन्दनं स्नानं समर्पयामि"** कहकर घिसा चन्दन पात्र में डालें, फिर जल

डालें। फिर इत्र आदि से भी स्नान कराते हैं। **"सुगन्धित द्रव्यं स्नानम् समर्पयामि"** कहकर इत्र मूर्ति पर लगायें। पंचामृत दूध, दही, घी, शहद, गंगाजल, तुलसीदल मिलाकर बनाया जाता है।

मस्तक पर तिलक लगाने की क्रिया इस उपचार के अन्तर्गत आती है। चन्दन लगाया जाता है। मस्तक पर **"गन्धं समर्पयामि"** कहकर तिलक लगा दीजिये। माता की पूजा में कुंकुम समर्पयामि, हरिद्रा, गुलाल, काजल आदि अर्पण करें।

मस्तक पर जहां चन्दन लगाया है उसके ऊपर साबुत चावल लगाये जाते हैं। **"अक्षतान् समर्पयामि"** कहकर चावल लगाते हैं।

"वस्त्रं समर्पयामि" कहकर वस्त्र आदि अर्पण कीजिये। **"अलंकारं समर्पयामि"** कहकर अंग मस्तक, भुजा, कलाई आदि पर पुष्प व पुष्प मालायें अर्पित करें। जो वस्तु न हो उसके स्थान पर अक्षत अर्पण कर सकते हैं।

"पुष्पं पुष्पमालां समर्पयामि" कहकर पुष्प समर्पित करें। पूजा में उपयोग आने वाली जो वस्तुएं न हों तो उनके स्थान पर अक्षत पुष्प अर्पित किये जा सकते हैं। अगरबत्ती, धूपबत्ती जलाकर उसका धुआं हाथ से प्रवाहित करते हुए बोलते जाएं—**"धूपम् आघ्रापयामि"**।

घी का दीपक उसमें बाती जलाकर दाहिने हाथ की ओर रखें और **"दीपम् दर्शयामि"** कहकर उस पर कुछ अक्षत के दाने फेंकें। घण्टी बजाएं।

अब भोजन कराइये, नैवेद्य अर्पण कीजिये—मिठाई, फल, मेवा आदि थाली में सजाकर सामने रखिये। पाँच प्रकार की मिठाई, पाँच प्रकार के फल, पाँच प्रकार की मेवा रखिये। नित्य पूजा में तो बताशे से भी काम चल सकता है। **"नैवेद्यं समर्पयामि"** कहकर हाथ जोड़कर कुछ देर को नेत्र बन्द कर लीजिये। फिर जल पंचपात्र से छोटे पात्र में डालकर **"आचमनम् समर्पयामि"** बोलिए।

भोजनोपरान्त पान, सुपारी लीजिये। पान के पत्ते पर सुपारी, इलायची आदि रखकर कुछ द्रव्य रखिये और **"ताम्बूलं पुंगीफलं सुदक्षिणाम् समर्पयामि"** कहकर अर्पित कर दीजिये।

अब थाली में देशी कपूर रखकर अथवा दीपक से आरती बनाकर **आरती** उतारें। आरती अपने बायें से सीधे हाथ की तरफ से ले जाते हुए करते हैं। आप आरती उदाहरण कथा के अनुसार कर सकते हैं।

पुष्पांजलि आप केवल देवी-देवता के चरणों में रखकर अंजलि में भर कर पुष्प चढ़ा दें। चारों ओर बिखेर दें।

देवी-देवता के चारों ओर जो स्थान खाली हो अपनी बायीं ओर से दायीं ओर चलते हुए **प्रदक्षिणा** करें। उसके बाद दण्डवत् प्रणाम करें और अभीष्ट प्राप्ति की प्रार्थना करें। और सबके कल्याण की प्रार्थना करें।

संक्षेप में षोडशोपचार की विधि पुनः प्रस्तुत है—

(1) आह्वानं समर्पयामि, (2) आसनं समर्पयामि; (3) अर्घ्यं समर्पयामि, (4) पाद्योपाद्यं हस्तयो प्रक्षालनम् समर्पयामि, (5) सर्वांगे स्नानं समर्पयामि, (6) गन्धं समर्पयामि, (7) अक्षतान् समर्पयामि, (8) वस्त्रं यज्ञोपवीतं समर्पयामि, (9) पुष्पं पुष्पमालां समर्पयामि, (10) धूपम् आघ्रापयामि, (11) दीपम् दर्शयामि, (12) नैवेद्यं समर्पयामि, (13) ताम्बूलं पुंगीफलं सुदक्षिणाम् समर्पयामि, (14) नीराजनम् (आरती), (15) पुष्पांजलि, (16) प्रदक्षिणा।

पंचोपचार पूजा में—(1) आह्वान, (2) आचमन, (3) गंध अक्षत, (4) पुष्प धूपदीप, (5) नैवेद्य आचमन ताम्बूलं आदि। इसके पश्चात् आप कथा, व्रत प्रारम्भ कर सकते हैं।

अगर आपके यहां कलश स्थापना की परम्परा हो तो आप निम्न प्रकार कलश की स्थापना करें—

एक कोरे मिट्टी के घड़े अथवा धातु के पात्र में पानी भरकर उस पर आम, पीपल, अशोक आदि के पत्ते और एक साबुत नारियल लाल कपड़े में लपेट कर भूमि पर थोड़ी मिट्टी बिछाकर उस पर मिट्टी के कलश को रख दें। चाहें तो उस मिट्टी में कुछ जौ के दाने मिला दें जो दिन-ब-दिन उगकर बड़े होते जायेंगे, यह वरुण देवता का कलश है। आपके कुल में जिस देवता की पूजा होती आ रही है वह आपका कुल देवता है।





श्री सत्यनारायण व्रत-कथा

प्रत्येक मास की पूर्णिमा, संक्रान्ति, अमावस्या अथवा इच्छानुसार किसी भी दिन श्री सत्यनारायण भगवान् की कथा का पठन अथवा श्रवण शुभ फलदायक होता है। इस व्रत को करने से थोड़े समय में ही पुण्य प्राप्त होता है और मनवांछित फल की प्राप्ति भी होती है।

पूजा की सामग्री

श्रीफल, केशर, चन्दन, अबीर, गुलाल, धूप, कपूर, कलावा, लौंग, पंचामृत, दूध, घृत, शक्कर, शहद, केलाफल, केलापत्ती, फूलमाला, आम्रपल्लय, तुलसीदल, बन्दरवार, ऋतुफल, स्वर्णमूर्ति, आसन, अंग वस्त्र यज्ञोपवीत, मिष्ठान, पत्रावली नैवेद्य, दीपशलाका, जल, आचमनी तथा चौकी आदि।

सत्यनारायण व्रत पूजन विधि

व्रत करने वाला पूर्णिमा, संक्रान्ति, अमावस्या अथवा इच्छानुसार किसी भी दिन सायंकाल में स्नान आदि से निवृत्त होकर पूजा स्थान में आसन पर बैठकर आचमन ले और श्री गणेश, गौरी, वरुण, विष्णु आदि सब देवताओं का ध्यान करके यह संकल्प करे कि मैं सत्यनारायण स्वामी का पूजन तथा श्रवण सदैव करूंगा। फिर गणेश आदि देवताओं की पूजा करे। पुष्प हाथ में लेकर सत्यनारायण भगवान का ध्यान करे तथा श्रवण कर, ऊहे आप मेरे कष्टों को दूर करें।

व्रत-कथा

एक समय नैमिश्षारण्य तीर्थ में शौनकादि अठासी हजार ऋषियों ने श्री सूतजी से पूछा—"हे प्रभु ! इस कलियुग में वेद विद्या रहित मनुष्यों को प्रभु-भक्ति

किस प्रकार मिलेगी तथा उनका उद्धार कैसे होगा इसके लिए मुनि श्रेष्ठ कोई ऐसा उपाय कहिए जिससे थोड़े समय में पुण्य प्राप्त हो तथा मनवांछित फल मिले, सो हमारी कथा सुनने की इच्छा है।"

सर्वशास्त्र ज्ञाता श्री सूतजी बोले—"वैष्णवों में पूज्य आपने सब प्राणियों के हितों की बात पूछी है, अब मैं श्रेष्ठ व्रत को आप लोगों से कहूंगा जिस व्रत को नारद जी ने लक्ष्मी नारायणजी से पूछा था और लक्ष्मीपति ने मुनिश्रेष्ठ से कहा था, सो ध्यान से सुनें।"

प्रथम अध्याय

एक समय योगीराज नारद दूसरों के हित की इच्छा से अनेक लोकों में घूमते हुए मनुष्य लोक (मृत्युलोक) में पहुंचे। वहां बहुत योनियों में जन्मे हुए प्रायः सभी प्राणियों को अपने-अपने कर्मों के द्वारा अनेकों दुःखों से पीड़ित देखकर किस यत्न के करने से निश्चय ही इनके दुःखों का नाश हो सकेगा, ऐसा मन में सोचकर विष्णु लोक को गए। वहां श्वेत वर्ण और चार भुजाओं वाले देवों के ईश नारायण को जिनके हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म थे तथा वनमाला पहने हुए थे, देखकर स्तुति करने लगे। हे भगवन ! आप अत्यन्त शक्ति से सम्पन्न हैं, मन तथा वाणी भी आपको नहीं पा सकती है, आपका आदि, मध्य और अन्त नहीं है, निर्गुण स्वरूप होते हुए अनन्त गुणों से युक्त हो। सम्पूर्ण सृष्टि के भूत और भक्तों के दुःखों को नष्ट करने वाले हो, आपके लिए मेरा नमस्कार है। नारद जी से इस प्रकार की स्तुतियां सुनकर श्री विष्णु भगवान बोले—तुम किसलिये आए हो और तुम्हारे मन में क्या है ? हे महाभाग! मुझसे कहो। जो पूछोगे वह सब मैं तुम्हें बताऊंगा। नारद जी बोले—मृत्युलोक में सब जो अनेक योनियों से मनुष्य योनि में पैदा हुए हैं अपने-अपने कर्मों के द्वारा अनेक प्रकार के दुःखों से दुःखी हो रहे हैं। हे नाथ ! यदि मुझ पर दया भाव रखते हैं तो बतलाइये कि उन मनुष्यों के दुःख थोड़े से प्रयत्न से ही कैसे दूर हो सकते हैं ? श्री भगवान बोले—हे नारद ! मनुष्यों की भलाई की इच्छा से तुमने यह बहुत अच्छी बात पूछी। जिस काम के करने से मनुष्य मोह से छूट जाता है वह मैं कहता हूं सुन ! बहुत पुण्य का देने वाला स्वर्ग तथा मृत्यु दोनों लोकों में दुर्लभ एक व्रत है। आज मैं प्रेमवश होकर तेरे से उसे कहता हूं—नारायणजी का व्रत अच्छी तरह विधान के साथ करके मनुष्य सुख भोगकर मरने पर मोक्ष को प्राप्त होता है। भगवान के यह वचन सुनकर नारद मुनि बोले—उस व्रत का क्या फल है, विधान है और किसने यह व्रत किया है, किस दिन यह व्रत करना चाहिए ? सब विस्तार से कहो। कष्ट, शोक आदि को दूर करने वाला यह धन-धान्य को बढ़ाने वाला सौभाग्य तथा

सन्तान को देने वाला, सब स्थानों पर विजयी कराने वाला, भक्ति और श्रद्धा के साथ जिस किसी दिन मनुष्य श्रीसत्यनारायण भगवान की सायं समय ब्राह्मणों और बन्धुओं के साथ धर्मपरायण होकर पूजा करे, भक्तिपूर्वक प्रसाद सवाया दे। नैवेद्य, केले का फल, घी, गेहूं के आटे का चूर्ण लेवे, गेहूं के अभाव में साठी का चूर्ण, शक्कर तथा गुड़ ले और भक्षण योग्य पदार्थ जमा करके सवाये अर्पण कर देवे तथा बन्धुओं सहित भोजन करावे, भक्ति के साथ स्वयं भोजन करे। नृत्य, गीत आदि का आचरण कर सत्यनारायण भगवान को स्मरण करता हुआ अपने घर जाये। इस तरह करने पर मनुष्यों की आशा निश्चय ही पूरी होती है, विशेषकर कलियुग में इस पृथ्वी पर मोक्ष का यही सरल उपाय है। ऐसा विष्णु भगवान ने कहा।

बोलो सत्यनारायण भगवान की जय।

द्वितीय अध्याय

सूतजी बोले—हे ऋषियों ! जिसने पहले समय में इस व्रत को किया है अब मैं उसे बताऊंगा। सुन्दर काशीपुर नगर में एक अति निर्धन ब्राह्मण रहता था। वह भूख-प्यास से बेचैन नित्य ही पृथ्वी पर घूमता था। ब्राह्मण से प्यार करने वाले भगवान ने ब्राह्मण को कष्ट पाते देखकर बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारण कर उसके पास जाकर आदर के साथ पूछा—हे विप्र ! नित्य दुःखी हुआ तू क्यों पृथ्वी पर घूमता है ? हे श्रेष्ठ विप्र ! यह सब मुझसे कहो। ब्राह्मण बोला—मैं बहुत निर्धन ब्राह्मण हूं। भिक्षा के लिए भ्रमण करता हूं। हे भगवन! यदि आप इसका उपाय जानते हो तो कृपा कर कहो। बूढ़ा ब्राह्मण बोला—सत्यनारायण मनवांछित फल देने वाले हैं इसलिए हे ब्राह्मण ! तू उनका पूजन और व्रत कर। जिसके करने से मनुष्य सब कष्टों से छूट जाता है। ब्राह्मण को व्रत व सारा विधान बताकर बूढ़े ब्राह्मण का रूप धारण करने वाले सत्यनारायण भगव वहीं अन्तर्ध्यान हो गये। जिस व्रत को बूढ़े ब्राह्मण ने बताया है मैं उसको कर., यह निश्चय किया। उस विप्र को रात में नींद आई। अब वह सवेरे ही उठ सत्यनारायण का व्रत करने का निश्चय करके भिक्षा के लिए चला।

उस दिन विप्र को भिक्षा से अधिक धन मिला जिससे बन्धु-बांधवों के साथ उसने सत्यनारायण का व्रत किया। इस व्रत के प्रभाव से वह विप्र सब कष्टों से छूटकर अनेक प्रकार की सम्पत्तियों से युक्त हुआ। उस समय से ब्राह्मण प्रति मास व्रत करने लगा। इस तरह सत्यनारायण भगवान के इस व्रत को जो करेगा, सब पापों से छूटकर मोक्ष को प्राप्त होगा। आगे और पृथ्वी पर सत्यनारायण का व्रत करेगा तो वह मनुष्य यहां के सब कष्टों से छूट जायेगा। नारद मुनि से नारायण का कहा हुआ व्रत मैंने तुमसे कहा। हे ब्राह्मणों ! अब और मैं क्या कहूं ? ऋषि बोले—हे मुनि ! संसार में

ब्राह्मण से सुनकर किस- किसने इस व्रत को किया हम यह सब सुनना चाहते हैं—इसके लिए हमारे हृदय में बड़ी श्रद्धा है। सूतजी बोले—हे मुनियों ! जिस-जिसने यह व्रत किया है वह सुनो ! एक विप्र धन और ऐश्वर्य के अनुसार बन्धु-बान्धवों के साथ व्रत करने को तैयार हुआ। उसी समय वहां लकड़ी बेचने वाला आया और बाहर लकड़ियों को रखकर ब्राह्मण के घर गया। प्यास से दुःखी लकड़हारे ने विप्र को व्रत करते हुए देखा, विप्र को नमस्कार कर बोला आप यह क्या कर रहे हैं और इसके करने से क्या फल मिलता है यह विस्तार से कहो। विप्र बोला, सब मनोकामनाओं को पूरा करने वाला यह सत्यनारायण का व्रत है, इसकी कृपा से मेरे यहां धन-धान्य की वृद्धि हुई। उससे इस व्रत के विषय में जान लकड़हारा खुश हुआ और जल पीकर, प्रसाद खाकर अपने घर को गया।

सत्यनारायण देव के व्रत के लिए मन में विचार किया कि मुझे आज लकड़ी बेचने से जो धन प्राप्त होगा उससे ही सत्यनारायण देव का उत्तम व्रत करूंगा। मन में यह विचार लकड़ियां सिर पर रखकर जिस नगर में धनवान रहते थे ऐसे सुन्दर नगर में गया जहां से उस दिन उसे लकड़ियों का दाम चौगुना मिला तब वह प्रसन्न होकर पके हुए केले की फली, शक्कर, घी, दूध, गेहूं का चूर्ण आदि सब इकट्ठा कर और सवाया लेकर अपने घर को चला गया तथा सब भाइयों को बुलाकर विधि के साथ व्रत किया। उस व्रत के प्रभाव से लकड़हारा धन, पुत्रादियों से युक्त हो प्रसन्न हुआ और संसार के सर्व सुख भोगकर बैकुण्ठ को चला गया।

बोलो सत्यनारायण भगवान की जय।

तृतीय अध्याय

सूतजी बोले—हे श्रेष्ठ मुनियों ! अब आगे कथा कहता हूं सुनो। पहले समय में उल्कामुख नाम का एक बुद्धिमान राजा था। वह सत्यवक्ता और जितेन्द्रिय था। प्रतिदिन देव स्थानों में जाता तथा विप्रों को धन देकर संतुष्ट करता था। उसकी स्त्री कमल के समान मुख वाली सतीसाध्वी थी। भद्रशील नदी के किनारे उन दोनों ने सत्यनारायण का व्रत किया, उस समय वहां एक साधु वैश्य आया जिसके पास व्यापार हेतु बहुत-सा धन था। नौका को किनारे पर ठहराकर राजा के पास गया और पूछने लगा—हे राजन् ! भक्ति युक्त चित्त से यह आप क्या कर रहे हैं ? राजा बोला—हे साधु ! अपने बन्धु-बांधवों के साथ पुत्रादि की प्राप्ति के लिए यह सत्यनारायण भगवान का व्रत पूजन किया जा रहा है। राजा का यह वचन सुनकर साधु आदर के साथ बोला—हे राजन् ! मुझको उसका सब विधान कहो। मैं भी तुम्हारे कथनानुसार करूंगा। मेरे भी सन्तान नहीं है और इससे निश्चय ही होगी। राजा से सब विधान सुन व्यापार से निवृत्त हो आनन्द के साथ घर गया, साधु ने अपनी स्त्री से सन्तान देने वाले उस व्रत का समाचार सुनाया और कहा जब मेरे

सन्तान होगी तब मैं इस व्रत को करूंगा। साधु ने ऐसा अपनी स्त्री लीलावती से कहा। एक दिन उसकी स्त्री पति के साथ आनन्दित हो सांसारिक धर्म में प्रवृत्त होकर सत्यनारायण भगवान की कृपा से गर्भवती हो गई तथा दसवें मास में उसके कन्या का जन्म हुआ। कन्या का नामकरण संस्कार किया और कलावती नाम रखा। दिन-दिन वह इस तरह बढ़ने लगी जैसे शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा बढ़ता है। तत्पश्चात् लीलावती ने मीठे शब्दों में स्वामी से कहा कि अपना संकल्प किया हुआ भगवान का व्रत क्यों नहीं करते ? साधु बोला—हे प्रिये ! इसके विवाह के समय व्रत करूंगा। अपनी स्त्री को आश्वासन देकर नगर को गया। कलावती पितृगृह में वृद्धि को प्राप्त हो युवा हो गई। साधु ने जब नगर में सखियों के साथ कन्या को देखा तो तुरन्त ही उस धर्मावत ने दूत बुलाकर कहा कि कन्या के लिए सुन्दर वर की खोज करो। साधु की आज्ञा पाकर दूत कांचन नगर को गया, वहां से वह एक वैश्य के लड़के को लेकर आ गया। साधु ने सुन्दर गुणयुक्त युवक को देख सन्तुष्ट हो, जाति और बांधवों सहित विधि के अनुसार अपनी कन्या का उसके साथ विवाह कर दिया। प्रारब्ध से साधु व्रत करना भूल गया। जिसके कारण भगवान रुष्ट हो गए। अपने कर्म में प्रवीण साधु कुछ समय पश्चात् जामाता सहित व्यापार के लिए गया और सिन्धु के समीप सुन्दर नगर में जाकर व्यापार करने लगा। उन दोनों को राजा चन्द्रकेतु के नगर में पहुंचने पर सत्यनारायण भगवान ने प्रतिज्ञा भ्रष्ट देखकर श्राप दिया कि साधु को अत्यन्त दारुण दुःख मिले। एक दिन राजा के धन को लेकर चोर वहां आये जहां वे दोनों ठहरे थे। पीछे से राजा के दूतों को दौड़ते देखकर चोर भयभीत होकर माल वहां ही छोड़, छिप गये। जब राजा के दूत साधु वैश्य के पास पहुंचे तो वे राजा के धन को देखकर उन दोनों वैश्यों को पकड़ ले गए। प्रसन्नता से दौड़ते हुए राजा के समीप जाकर बोले—यह दो चोर हम लाए हैं देखकर आज्ञा दें। राजा की आज्ञा पाकर तुरन्त उनको दृढ़ता से बांधकर महाकारागार में बिना विचारे डाल दिया। सत्यनारायण भगवान की माया से वशीभूत होकर किसी ने भी उनका कहना नहीं सुना और उनका धन भी राजा चन्द्रकेतु ने ग्रहण कर लिया। उसी श्राप के द्वारा उनकी स्त्री भी घर पर बहुत दुःखी हुई और घर में जो धन था चोरों ने चुरा लिया। शारीरिक और मानसिक पीड़ाओं से तथा भूख-प्यास से अति दुःखित हो अन्न की चिन्ता में घर-घर फिरने लगी। एक दिन वह ब्राह्मण के घर गई वहां जाकर उसने सत्यनारायण भगवान का व्रत होते देखा। कलावती वहां बैठकर कथा सुनकर प्रसाद भक्षण कर रात को घर गई। माता ने कन्या कलावती को प्रेमपूर्वक कहा—हे पुत्री ! आज कहां रही तथा तेरे मन में क्या विचार है ? कलावती ने शीघ्र ही माता से कहा—हे माता ! मैंने एक विप्र के घर मनचाहा फल देने वाला व्रत देखा है। कन्या के ऐसे वचन सुनकर वैश्य की स्त्री सत्यनारायण व्रत करने की तैयारी करने लगी। उस वैश्य की स्त्री ने अपने कुटुम्बियों और बन्धुओं

के साथ व्रत किया और सत्यनारायण भगवान से वर मांगा कि पति और दामाद शीघ्र ही घर आ जायें, और प्रार्थना की कि दोनों का अपराध क्षमा करो। सत्यनारायण भगवान फिर इस व्रत से प्रसन्न हो गए। वे राजा चन्द्रकेतु को स्वप्न में दिखाई दिए और कहा कि हे राजन् ! दोनों बन्दी वैश्य प्रातःकाल ही छोड़ देवें और वह धन दे देना जो तुमने उनका लिया है। नहीं तो तेरा राज्य, धन, पुत्रादि सब नष्ट कर दूंगा। राजा को ऐसा कहकर भगवान अंतर्ध्यान हो गए और प्रातःकाल राजा चन्द्रकेतु ने अपने सेवकों के साथ सभा में बैठकर सबको स्वप्न सुनाया और दोनों वैश्य पुत्रों को छोड़ने को कहा।

संतरियों ने राजा के वचन सुनकर दोनों वैश्य पुत्रों के बन्धन खोल राजा के पास लाकर विनयपूर्वक कहा कि हम वैश्य पुत्रों को बेड़ी के बन्धन से मुक्त करके ले आये हैं। इन दोनों ने राजा चन्द्रकेतु को नमस्कार कर पहली बातों का स्मरण करते हुए डर के मारे कुछ भी न कहा। राजा ने दोनों वैश्य पुत्रों को देखकर आदर सहित कहा—प्रारब्ध से तुमने अत्यन्त दुःख उठाया परन्तु अब कुछ डर नहीं है। और उनकी बेड़ियां आदि निकलवाकर हजामत आदि बनवाई तथा राजा ने उनको वस्त्राभूषण देकर कहा कि अब अपने घर जाओ। वे दोनों राजा को नमस्कार करके घर को चले गये।

बोलो सत्य नारायण भगवान की जय।

चतुर्थ अध्याय

सूतजी बोले—वैश्य ने मंगलाचरण करके यात्रा आरम्भ की और ब्राह्मणों को धन देकर अपने नगर की ओर चला। वणिक के थोड़ी दूर पहुंचने पर दंडी वेषधारी सत्यनारायण भगवान ने वणिक से पूछा कि साधु ! तेरी नाव में क्या भरा है ? अभिमानी वणिक ने हंसते हुए उत्तर दिया कि हे दंडी, आप क्यों पूछते हो ? क्या मुद्रा लेने की इच्छा है ? मेरी नाव में बेल व पत्ते हैं। ऐसा सुनकर तुरन्त ही दंडी उसके पास से चले गए और कुछ दूर जाकर समुद्र के किनारे पर आसन जमा दिया। दंडी के चले जाने पर वैश्य को नित्यक्रिया के बाद नाव ऊंची उठी देखकर आश्चर्य हुआ तथा नाव में बेल आदि को देखकर मूर्च्छित हो भूमि पर गिर पड़ा। पुनः मूर्च्छा खुलने पर वणिक बहुत चिन्तातुर हुआ। उसके जामाता ने कहा कि आप शोक न करें। यह तो दंडी का श्राप है। वे सब कुछ कर सकते हैं, इसमें संदेह नहीं है। अतः उनकी शरण में जाना चाहिए तब ही हमारी इच्छा पूरी होगी। जामाता के वचन सुनकर वणिक दंडी के पास पहुंचा और दंडी को देखकर अत्यन्त भक्ति भाव से सादर नमस्कार कर बोला—मैंने आप से असत्य वचन कहे। मेरे उस अपराध को क्षमा करो। इस प्रकार बार-बार नमस्कार करके शोक से व्याकुल हो गया। उस वणिक

को इस तरह विलाप करते देखकर दंडी स्वामी ने कहा—रो मत और मेरे वचनों को सुन ! तू मेरी पूजा से मुकर गया है। भगवान के ऐसे वचन सुन वैश्य स्तुति करने को उद्यत हुआ। वह साधु बोला— हे भगवन, आपकी माया से मोहित हुए ब्रह्मादि देवता भी आपके रूप को नहीं जानते तब मुझ-सा दुर्बुद्धि आपकी माया से मोहित होकर कैसे जान सकता है, आप प्रसन्न होइये। मैं विधि-विधान अनुसार आपकी पूजा करूंगा। आप मुझ शरणागत की रक्षा करो और पहले के समान नौका में धन भर दो। वणिक के भक्ति से युक्त मीठे वचन सुनकर भगवान प्रसन्न हो गए। वणिक ने नौका पर चढ़कर उसको भरी हुई देखकर कहा कि सत्यनारायण की कृपा से मेरा मनचाहा पूरा हुआ और साथियों सहित यथा विधि पूजन कर सत्यनारायण भगवान की कृपा से अत्यन्त प्रसन्न हुआ नाव को जोड़ अपने देश की ओर चला।

साधु ने जामाता से कहा कि हमारी रत्नपुरी नगरी को देखो और अपने धन के रक्षक दूत को नगर में अपनी पत्नी तथा पुत्री को अपने आने की सूचना देने भेजा। उसने नगर में जाकर और वणिक पत्नी को हाथ जोड़कर नमस्कार कर अनुकूल वचन कहे—वणिक जामाता तथा बन्धु-बान्धव सहित नगर के समीप आ गए हैं ! दूत के ऐसे वचन सुनकर वणिक की स्त्री बहुत प्रसन्न हुई और सत्यनारायण की पूजा कर अपनी कन्या से बोली कि हे पुत्री ! मैं चलती हूं और तू दर्शन करके शीघ्र आना। इस प्रकार के माता के वचनों को सुनकर और व्रत को समाप्त कर तथा प्रसाद को त्याग वह भी पति की ओर चली गई। इससे सत्यनारायण भगवान ने क्रोध कर उसके स्वामी और धन के सहित नौका को डुबो दिया। कलावती अपने पति को न देखकर रोती हुई भूमि पर जा गिरी। इस तरह नौका को न देख और कन्या को रोता देख वणिक ने भयातुर हो, कहा—यह क्या आश्चर्य हुआ ? यह तो सत्यनारायण भगवान ने नौका हर ली। मैं धन-धान्य विधि-विधान के अनुसार सत्यनारायण की पूजा करूंगा ऐसा अपना मनोरथ सबको बुलाकर कहा और बार-बार भूमि पर गिरकर सत्यनारायण भगवान को प्रणाम किया। तब दीनों का पालन करने वाले भगवान प्रसन्न हुए तथा दया से पूर्ण होकर साधु से बोले—"तेरी कन्या प्रसाद को छोड़कर पति को देखने चली आई, इसलिए कन्या का पति अदृश्य हो गया, यदि वह घर जाकर प्रसाद खाकर लौट आए तो तेरी कन्या का पति मिल जाएगा।

आकाश से ऐसा वाक्य सुनकर कलावती शीघ्र ही घर जाकर प्रसाद खाकर आई तो अपने पति को वहां पाया। तब कलावती अपने पिता के पास आई और कहा—अब घर चलो, देर क्यों करते हो ? कन्या के वचन सुन वणिक संतुष्ट हुआ और सत्यनारायण का विधि-विधान से पूजन कर बन्धु-बान्धुवों सहित अपने घर को गया और पूर्णमासी तथा संक्रान्ति को सदैव सत्यनारायण का व्रत करने लगा।

फिर इस लोक में सुख भोगकर मृत्यु के पश्चात् स्वर्ग को चला गया। सूतजी बोले—हे ऋषियों ! अब आगे और कथा कहता हूं ध्यानपूर्वक सुनो।

बोलो सत्यनारायण भगवान की जय।

पांचवां अध्याय

तुंगध्वज नाम का राजा प्रजापालन में प्रसिद्ध था। उसने भी सत्यनारायण भगवान के व्रत का प्रसाद त्याग बहुत दुःख पाया। एक वन में जाकर अनेक प्रकार पशुओं को मारकर वह बड़ के पेड़ के नीचे आया। उसने भक्ति भाव से बन्धुओं सहित ग्वालों को सत्यनारायण का पूजन करते देखा। राजा देखकर अभिमान से वहां न गया और न नमस्कार किया। जब ग्वालों ने सत्यनारायण का प्रसाद राजा के पास रखा तो राजा ने अभिमान से प्रसाद को त्याग दिया। जब वह अपनी सुन्दर नगरी में पहुंचा तो अपने सौ पुत्रों तथा धन-धान्य आदि को नष्ट हुए पाया। 'भगवान ने ही यह सब नाश किया है ऐसा विश्वास है इसलिए मैं वहां जाता हूं जहां भगवान का पूजन होता है।' ऐसा मन में विचार भाव श्रद्धा से सत्यनारायण का विधि-विधान से पूजन किया। वह राजा सत्यदेव की कृपा से धन और पुत्रादिकों से सम्पन्न हुआ। तथा संसार में सुख भोगकर मरने पर सत्यलोक को गया। जो पुरुष परम दुर्लभ सत्यनारायण के व्रत करता है और भक्ति-भाव से फलदायिनी पुण्य कथा को सुनता है, वह भगवान की कृपा से धन ऐश्वर्य प्राप्त करता है। निर्धन धन पाता है और बन्दी बन्धन से छूटकर सुख भोग सत्यलोक को प्राप्त कर मोक्ष पाते हैं। विप्रों ! जिन्होंने पूर्व जन्म में व्रत किया है उनकी कथा हम कहते हैं। वृद्ध शतानन्द ने सुदामा का जन्म लेकर मोक्ष पाया। उल्कामुख नामक राजा दशरथ होकर बैकुण्ठ को प्राप्त हुआ। साधु नामक वैश्य ने मोरध्वज बनकर अपने पुत्र को आरे से चीरकर मोक्ष पाया और तुंगध्वज ने स्वयंभू होकर भगवान के भक्ति युक्त कर्म कर मोक्ष को प्राप्त किया।

बोलो सत्यनारायण भगवान की जय।

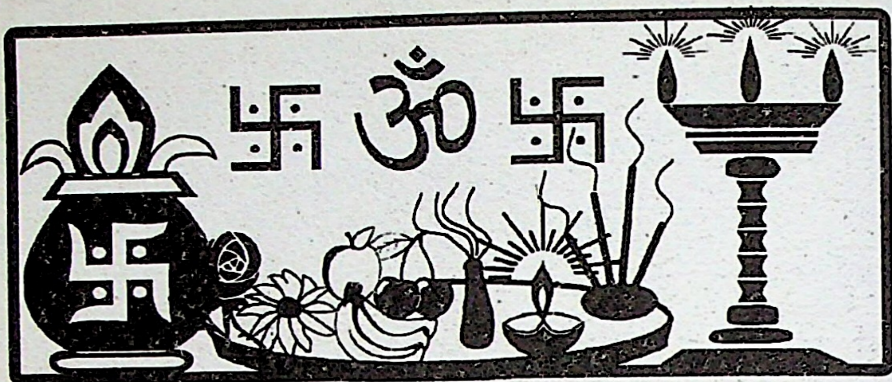
सत्यनारायण स्वामी की आरती

जय लक्ष्मी रमणा श्री जय लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी जन पातक हरणा।। टेक
रत्न जड़ित सिंहासन अद्भुत छवि राजे।
नारद करत निरन्तर घण्टा धुनि बाजे।। जय०
प्रकट भये कलि कारन द्विज को दरश दियो।
बूढ़ो ब्राह्मण बनकर कंचन महल कियो।। जय०

दुरबल भील कराल तिन पर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा तिनकी विपत हरी।। जय०
वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीनी।
सो फल भोग्यो प्रभूजी फिर स्तुति कीनी।। जय०
भाव-भक्ति के कारण क्षण क्षण रूप धरो।
श्रद्धा धारण कीनी तिनको काज सरो।। जय०
ग्वाल बाल संग राजा वन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीना दीनदयाल हरी।। जय०
चढ़त प्रसाद सवाया कदली फल मेवा।
धूप दीप तुलसी से राजी सत्यदेवा।। जय०
श्रीसत्यनारायणजी की आरती जो कोई गावे।
भक्त दास मनमुख मनवांछित फल पावे।। जय०

आरती श्री विष्णु भगवान जी की

ओ३म् जय जगदीश हरे स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनन के संकट छन में दूर करे।। ओ३म्
जो ध्यावे फल पावे दुःख विनशे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे कष्ट मिटे तन का।। ओ३म्
मात-पिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा आस करुं जिसकी।। ओ३म्
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी।। ओ३म्
तुम करूणा के सागर तुम पालन कर्त्ता।
मैं मूरख खल कामी कृपा करो भर्त्ता।। ओ३म्
तुम हो एक अगोचर सबके प्राण पति।
किस विधि मिलूं दयामय तुमको मैं कुमति।। ओ३म्
दीन बन्धु दुःख हर्ता तुम ठाकुर मेरे।
अपने हस्त बढओ द्वार पड़ा तेरे।। ओ३म्
विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा।। ओ३म्



श्री गणेश चतुर्थी (या संकट चौथ) व्रत

यह व्रत गणेश व गौरी जी की पूजा हेतु किया जाता है। विशेषतः विवाहित महिलाएं व कुंवारी कन्याएं इस व्रत को बड़े उत्साह से करती हैं। यह व्रत मनवांछित फलदायक है। हमारे हिन्दू धर्म में संकट चौथ के बाद ही विवाह सम्पन्न होते हैं—ऐसी मान्यता है कि गौरी जी को जब सिन्दूर चढ़ जाता है तभी सुहागिन की मांग का सिन्दूर शुभ होता है।

समय

यह व्रत माघ मास के कृष्ण-पक्ष की चौथ को किया जाता है।

विधि

इस दिन, विद्या, बुद्धि, वारिधि, गणेश तथा चन्द्रमा की पूजा करनी चाहिए। सारे दिन व्रत रखने के बाद सायंकाल चन्द्र दर्शनोपरान्त दूध का अर्घ्य देकर चन्द्रमा की विधिपूर्वक पूजा का नियम है। गाय का गोबर लेकर गौरी और गणेश की पिंडियां बनाकर एक पवित्र स्थान पर स्थापित करने के बाद पूजा की जाती है। इन पिंडियों को एक वर्ष तक घर में रखा जाता है। इस व्रत की पूजा में सामग्री के रूप में नैवेद्य सामग्री, तिल, ईख, शकरकन्द, मट्ठा, अमरूद, गुड़ तथा घी से चन्द्रमा व गणेश का भोग लगाया जाता है। घास तथा चाँदी का आभूषण हाथ में लेकर और उसमें थोड़ा जल डालकर गौरी व गणेश की पिंडियों के चारों तरफ घूमकर आराधना की जाती है। आराधना के लिए यह पंक्ति उत्तर-प्रदेश प्रान्त में बहुत प्रचलित है—

"लो चन्द्र प्यारे, धर्म तुम्हारा अर्घ्य हमारा।"

इस व्रत में पुत्रवती माताएं तथा सुहागिनें पति के चिरायु व सुख-समृद्धि के

लिए व्रत रखती हैं। ढके हुए 'पहार' को पुत्र ही खोलता है। यह 'पहार' तिल और गुड़ का मिश्रण होता है। इस तिलकुट को तब अपने कुटुम्ब में बाँटा जाता है।

'प्रसाद' का अपना विशेष महत्व है। अगर कोई पुत्रवती माता या सुहागिन स्त्री अपना एकाध व्रत छोड़ जाती है या नहीं कर पाती तो उसे 'पहार' चढ़ाना होता है। 'पहार' चढ़ाने से उसका टूटा प्रतिवर्ष का क्रम लगातार माना जाता है।

व्रत की कथा

बहुत प्राचीन काल की बात है—एक बार विपदापन्न देवगण जगत पिता त्रिपुरारी शंकर भगवान के पास गए। इस समय शंकर के साथ गणेश तथा स्वामी कार्तिकेय भी वहाँ उपस्थित थे। शिवजी ने दोनों बालकों से पूछा—"तुममें से कौन-सा ऐसा वीर बलवान है जो देवगणों के दुःखों-कष्टों का समाधान कर सकता है ?"

"मैं सर्वोच्च देव पद का अधिकारी तथा देव रक्षा में सक्षम हूं, प्रभु !" कार्तिकेय ने मुस्कराकर जवाब दिया।

"आपका क्या विचार है गणेश ?" शिवजी ने गणेश जी से पूछा।

"प्रभु, यदि आपकी आज्ञा मुझे मिले तो मैं विना किसी पद की इच्छा से समस्त देवगणों का कष्ट दूर कर सकता हूँ। चाहे देव सेनापति बनूँ या ना बनूं इसकी मुझे लालसा नहीं है।" गणेश जी ने सविनय कहा।

तब शिवजी ने कुछ क्षणों तक विचार किया फिर बोले—"आप दोनों पृथ्वी की परिक्रमा करो। जो भी परिक्रमा करके प्रथम आ जायेगा वही वीर तथा सर्वश्रेष्ठ देवता घोषित किया जायेगा।"

"जो आज्ञा प्रभु···· !" बोलते हुए कार्तिकेय बड़े घमंड के साथ अपने वाहन मोर पर बैठकर पृथ्वी की परिक्रमा के लिए चल दिये।

गणेश सोच में पड़ गए, चूहे के बल पर पूरी पृथ्वी का चक्कर लगाना कठिन कार्य है···उन्होंने एक उपाय सोचा, 'शिवजी महाराज ही तो पूरे ब्रह्माण्ड के मालिक हैं, जगत के पालनहार हैं···उन्हीं की परिक्रमा की जाये ?' यह विचार करके गणेशजी अपने माता-पिता की सात बार परिक्रमा करके बैठ गए। रास्ते में कार्तिकेय को पूरे पृथ्वी मण्डल में उनके आगे-आगे चूहे के पैरों के निशान दिखाई पड़े तो उन्हें महान् आश्चर्य हुआ।

कार्तिकेय परिक्रमा करके वापस आकर शिवजी के पास पहुंचे तो देखा गणेश जी पहले से ही विराजमान हैं। वह गणेश जी पर व्यंग्य कसते हुए बोले—"मैं ही एकमात्र इस पृथ्वी मण्डल का चक्कर लगाने वाला हूँ।"

"मैंने पढ़ा है कि माता-पिता के चरणों में ही सकल धर्म और तीर्थ मौजूद है इसलिए मैंने माता-पिता की सात बार प्रदक्षिणा की है। अब निर्णय आपके हाथों में है प्रभु !" गणेश ने नम्रतापूर्वक कहा।

गणेश जी की बात से समस्त उपस्थित देवगण दंग रह गये। सब नत मस्तक हो गये।

शंकर जी ने उन्मुक्त कंठ से गणेश की प्रशंसा करते हुए कहा—"गणेश तुम बहुत तीव्र बुद्धि और बलवान हो"सकल त्रिलोक का अधिकार मेरे पास ही है"पृथ्वी मण्डल का कार्य-भार मैं देखता हूँ"यह बात किसी के मस्तिष्क में नहीं आयी। गणेश ने वह बात जान ली है। अतः मेरा अशीर्वाद है—हर धर्म-कर्म, शुभ कार्य में सर्वप्रथम गणेश की ही पूजा होगी, जिस पूजा में गणेश पूजा नहीं होगी। वह पूजा अधूरी ही रहेगी।"

तब जाकर गणेश जी ने सकल देवगणों की विपदा का निवारण किया था।

अन्त में शिवशंकर भगवान ने यह बताया था कि चौथ के दिन चन्द्रमा तुम्हारे मस्तक का क्रीट बनेगा और सम्पूर्ण संसार को शीतलता प्रदान करेगा। जो भी व्रतधारी इस तिथि को तुम्हारी आराधना करेगा तथा चन्द्र अर्घ्यदान देगा और तुम्हारा व्रत रखेगा वह अखण्ड सौभाग्यशाली एवं परम सुख का अधिकारी होगा।

इस व्रत के पश्चात् चंचला लक्ष्मी की आरती से एवं गणेश कृपा से सुख-सम्पत्ति घर में आती है !

श्री लक्ष्मी जी की आरती

जय लक्ष्मी माता जय लक्ष्मी माता""
आदि शक्ति कहि तुमको सुर-मुनि जन ध्याता।।
जय कमल नाम की माता, हरि की प्रिय-प्रमले।
काली नाम तुम्हारा, जय लक्ष्मी बिमले।।
इन्द्राणी रुद्राणी ब्रह्माणी तुम ही।
सकल लोक की माता पायन हेतु मही।।
जिस घर वास तुम्हारा उसका क्या कहना।
रम्य भवन में चमके नित-नूतन गहना।।
महा निशा में घर-घर पूजा हो तेरी।
जय कमले हरि भामिनी अब सुध ले मेरी।।
जय लक्ष्मी माता जय लक्ष्मी माता""





करवा चौथ की व्रत-कथा

यह व्रत अति प्राचीन है। इसका प्रचलन महाभारत से भी पूर्व का है। यह व्रत सौभाग्यवती महिलाओं के लिए उत्तम माना गया है। सामान्य मान्यता के अनुसार सुहागिनें इस व्रत को अपने सुहाग (पति) की दीर्घायु के लिये रखती हैं। कहा जाता है इसे पांडवों की पत्नी द्रौपदी ने भी किया था।

समय

यह व्रत कार्तिक कृष्ण पक्ष को चन्द्रोदय चतुर्थी में किया जाता है।

करवा चौथ की पूजा विधि

इस व्रत के लिए सुहागिन स्त्रियों को रात में शिव, चन्द्रमा, पार्वती, स्वामी कार्तिकेय के चित्रों एवं सुहाग की वस्तुओं की पूजा करनी चाहिए। पहले दीवार पर चन्द्रमा, उसके नीचे शिव तथा कार्तिकेय आदि के चित्र बनाकर रखने चाहिएं। यह व्रत निर्जल होता है। केवल मधु प्रिय सत्य बोलना चाहिए। पीली मिट्टी की 'गौरी' बनाकर पूजन करना चाहिए। बहुधा स्त्रियाँ इस दिन करवों का भी आदान–प्रदान करती हैं।

यह सुहागिन स्त्रियों का प्रमुख व्रत है। सुहाग की दीर्घायु तथा धन-पुत्रादि की प्राप्ति के लिए किया जाता है। इस व्रत की एक प्रथा यह भी है कि रात्रि को जब चन्द्रमा निकलता है तो औरतें चन्द्रमा को छलनी से देखती हैं।

कार्तिक मास की चतुर्थी अर्थात् करवा चौथ के दिन लकड़ी का बाजोट पूरकर उस पर जल का भरा लोटा रखें। बायना निकालने के लिए एक मिट्टी का करवा रखकर करवे में गेहूँ व उसके ढक्कन में चीनी तथा दक्षिणा रूप में रुपये रखें। फिर उसे रोली से बांधकर गुड़ -चावल से पूजा करें। फिर तेरह बार करवे का टीका करके

उसे सात बार पाट के चारों ओर घुमायें तब श्री गणेश की मूर्ति या पिंडोल रखकर उसे रोली, गुड़ व चावल चढ़ायें और हाथ में तेरह दाने गेहूँ के लेकर कहानी सुनें। कहानी सुनने के बाद करवे पर हाथ फेरकर सास के पाँव छुयें। तदुपरान्त वह 13 दाने, गेहूँ व लोटा यथास्थान रख दें। रात होने पर चाँद देखकर चन्द्रमा को अर्घ्य दें, इस प्रकार करके प्रसाद खाकर व्रत करने वाली स्त्री व्रत खोले। करवा चौथ का व्रत रखने वाली स्त्रियों को चाहिये कि बहन और बेटी को भी व्रत सामग्री भेजें।

करवा चौथ व्रत-कथा

एक साहूकार था जिसके सात बेटे और एक बेटी थी। सातों भाई व बहन एक साथ बैठकर भोजन करते थे। एक दिन कार्तिक की चौथ का व्रत आया तो भाई बोला कि बहन आओ भोजन करें। बहन बोली कि आज करवा चौथ का व्रत है, चाँद उगने पर ही खाऊंगी। तब भाइयों ने सोचा कि चाँद उगने तक बहन भूखी रहेगी तो एक भाई ने दीया जलाया, दूसरे भाई ने छलनी लेकर उसे ढंका और नकली चाँद दिखाकर बहन से कहने लगे कि चल चाँद उग आया है—अर्घ्य दे ले। बहन अपनी भाभियों से कहने लगी कि चलो अर्घ्य दें तो भाभियां बोलीं, तुम्हारा चाँद उगा होगा हमारा चाँद तो रात को उगेगा। बहन ने जब अकेले ही अर्घ्य दे दिया और खाने लगी तो पहले ही ग्रास में बाल आ गया, दूसरे ग्रास में कंकड़ आया और जब तीसरा ग्रास मुँह की ओर किया तो उसकी ससुराल से संदेशा आया कि उसका पति बहुत बीमार है, जल्दी भेजो। माँ ने जब लड़की को विदा किया तो कहा कि रास्ते में जो भी मिले उसके पाँव लगना और जो कोई सुहाग का आशीष दे तो उसके पल्ले में गाँठ लगाकर उसे कुछ रुपये देना। बहन जब भाइयों से विदा हुई तो रास्ते में जो भी मिला उसने यही आशीष दिया कि तुम सात भाइयों की बहन हो, तुम्हारे भाई सुखी रहें और तुम उनका सुख देखो। सुहाग का आशीष किसी ने भी नहीं दिया। जब वह ससुराल पहुँची तो दरवाजे पर उसकी छोटी ननद खड़ी थी, वह उसके भी पाँव लगी तो उसने कहा कि सुहागिन रहो, सपूती हो तो उसने यह सुनकर पल्ले में गाँठ बांधी और ननद को सोने का सिक्का दिया। तब भीतर गई तो सास ने कहा कि पति धरती पर पड़ा है, तो वह उसके पास जाकर उसकी सेवा करने के लिए बैठ गई। बाद में सास ने दासी के हाथ बची-खुची रोटी भेज दी। इस प्रकार से समय बीतते-बीतते मंगसिर (मार्गशीर्ष) की चौथ आई तो चौथ माता बोली—करवा ले, करवा ले, भाइयों की प्यारी करवा ले। लेकिन जब उसे चौथ माता नहीं दिखलाई दी तो वह बोली हे माता ! आपने मुझे उजाड़ा तो आप ही मेरा उद्धार करोगी। आपको मेरा सुहाग देना पड़ेगा। तब उस चौथ माता ने बताया कि पौष की चौथ आयेगी, वह मेरे से बड़ी है उसे ही सब कहना। वही तुम्हारा सुहाग वापस देगी। पौष की चौथ आकर चली गई, माघ की चली गई, फागुन की चौथ आकर चली गई। चैत्र, बैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ और श्रावण,

भादो की सभी चौथ आयीं और यही कहकर चली गईं कि आगे वाली को कहना। असौज की चौथ आई तो उसने बताया कि तुम पर कार्तिक की चौथ नाराज है, उसी ने तुम्हारा सुहाग लिया है, वही वापस कर सकती है। वही आयेगी तो पाँव पकड़कर विनती करना। यह बताकर वह भी चली गई।

जब कार्तिक की चौथ आई तो वह गुस्से में बोली—भाईयों की प्यारी करवा ले, दिन में चाँद उगानी करवा ले, व्रत खंडन करने वाली करवा ले, भूखी करवा ले, तो यह सुनकर वह चौथ माता को देखकर उसके पाँव पकड़कर गिड़गिड़ाने लगी। हे चौथ माता ! मेरा सुहाग तुम्हारे हाथों में है—आप ही मुझे सुहागिन करें। तो माता बोली—पापिन, हत्यारिन मेरे पाँव पकड़कर क्यों बैठ गई ? तब बहन बोली कि जो मुझसे भूल हुई उसे क्षमा कर दो, अब भूल नहीं करूंगी, तो चौथ माता ने प्रसन्न होकर आँखों से काजल, नाखूनों में से मेंहदी और टीके में से रोली लेकर छोटी उंगली से उसके आदमी पर छींटा दिया तो वह उठकर बैठ गया और बोला कि आज मैं बहुत सोया। वह बोली—क्या सोया—मुझे तो बारह महीने हो गये अब जाकर चौथ माता ने मेरा सुहाग लौटाया। तब उसने कहा कि जल्दी से माता का पूजन करो। जब चौथ की कहानी सुनी, करवा पूजन किया तो प्रसाद खाकर दोनों पति-पत्नि चौपड़ खेलने बैठ गये। नीचे से दासी आई उसने उन दोनों को चौपड़ पाँसे से खेलते देखा तो उसने सास जी को जाकर बताया। तब से सारे गाँवों में यह प्रसिद्धि होती गई कि सब स्त्रियां चौथ का व्रत करें तो सुहाग अटल रहेगा। जिस तरह से साहूकार की बेटी को सुहाग दिया उसी तरह से चौथ माता सबको सुहागिन रखे। यही करवा चौथ के उपवास की सनातन महिमा है।

एक अन्य प्रचलित करवा चौथ व्रत-कथा

अति प्राचीन काल की बात है। एक बार पाण्डु पुत्र अर्जुन तप करने के लिए नीलगिरी पर्वत पर चले गए थे। इधर पाण्डवों पर अनेक मुसीबतें पहले से ही थीं। इससे द्रौपदी ने शोक विह्वल हो, कृष्ण की आराधना की। कृष्ण उपस्थित हुए और पूछा—"कहो ! क्या कष्ट है तुम्हें ?"

"प्रभु !" द्रौपदी ने हाथ जोड़कर कहा—"मुझे क्या कष्ट है आप तो स्वयं जानते हैं। आप तो अन्तर्यामी हैं। मुझे कष्टों के बोझ ने विह्वल कर दिया है। क्या कोई ऐसा उपाय है जिससे इन कष्टों से छुटकारा मिल सके?"

"तुम्हारा प्रश्न अति उत्तम है द्रौपदी !" कृष्ण मुस्कराकर बोले।

"प्रभु ! फिर मुझ दुःखी नारी का कष्ट दूर करने का उपाय बतायें ?" द्रौपदी ने पूछा।

"यही प्रश्न एक बार पार्वती जी ने शिवजी से कर दिया था। तब श्री शिवजी ने करवा चौथ व्रत का विधान बताया था।"

"फिर प्रभु, करवा चौथ की जानकारी मुझे भी दीजिए""और उसकी कथा कहिए।"

तब कृष्ण ने एक पल सोचने के बाद कहा था—"दुःख-सुख जो सांसारिक माना जाता है, प्राणी इसमें सदा ही लिप्त रहता है। मैं तुम्हें अति उत्तम करवा चौथ व्रत की कथा सुनाता हूँ, इसे ध्यान से सुनो :

प्राचीन काल में गुणी, विद्वान, धर्मपरायण एक ब्राह्मण रहता था। उसके चार पुत्र तथा एक गुणवती सुशील पुत्री थी। पुत्री ने विवाहित होकर चतुर्थी का व्रत किया। किन्तु चन्द्रोदय से पूर्व ही उसे क्षुधा ने बाध्य कर दिया। इससे उसके स्नेही दयालु भाइयों ने छल से पीपल की आड़ में कृत्रिम चन्द्रमा बनाकर दिखा दिया। लड़की ने अर्घ्य दे भोजन कर लिया। भोजन करते ही उसके पति की हृदयगति बन्द हो गयी। इससे दुःखी हो, उसने अन्न-जल त्याग दिया। उसी रात्रि में इन्द्राणी भूविचरण करने आयीं। ब्राह्मण पुत्री ने उससे अपने दुःख का कारण पूछा। इन्द्राणी ने बताया—"तुम्हें करवा चौथ व्रत में चौथ दर्शन से पूर्व भोजन कर लेने से यह कष्ट मिला है।" तब उस लड़की ने अंजलि बाँधकर विनय की कि इससे मुक्त होने का कोई उपाय बताइये।

इस पर इन्द्राणी ने कहा—"यदि तुम विधिपूर्वक अगली करवा चौथ का व्रत करो तो तुम्हारे पति पुनर्जीवित हो जायेंगे।"

कन्या ने ऐसा करने का वचन दिया तो उसका पति स्वस्थ हो गया। इस पर उस कन्या ने वर्ष भर प्रत्येक चतुर्थी का व्रत किया और अनन्त अखण्ड सुहाग प्राप्त किया।

श्री कृष्ण ने कहा—"हे द्रौपदी, यदि तुम इस व्रत को करोगी तो तुम्हारे सभी संकट टल जायेंगे।"

इस प्रकार द्रौपदी ने यह व्रत किया और पांडव सभी क्षेत्र में विजयी हुए।

इस प्रकार सौभाग्य, पुत्र-पौत्रादि और धन-धान्य की इच्छुक स्त्रियों को यह व्रत विधिपूर्वक करना चाहिए। इस व्रत में भगवान् शंकर की आरती की जाती है।

भगवान् श्री शंकर की आरती

जयति जयति जग-निवास, शंकर सुखकारी।
अजर अमर अज अरूप, सत चित आनंदरूप
व्यापक ब्रह्मस्वरूप, भव ! भव-भय-हारी।। जयति०
शोभित बिधुबाल भाल, सुरसरिमय जटाजाल,
त्रिलोचन, लोचन विशाल, मदन-दहन-कारी।। जयति०
भक्तहेतु कर में त्रिशूल, पल में करदे सब शूल-फूल,
हियकी सब हरते पीर हूल, अचल शान्तिकारी।। जयति०

अमल अरुण चरणकमल सफल करत काम सकल,
भक्ति-मुक्ति देत विमल, माया-भ्रम-टारी।। जयति०
कार्तिकेययुत गणेश, हिमतनया सहहे महेश,
राजत हो कैलास-देश, अकल कलाधारी।। जयति०
भूषण तन भूति ब्याल, मुण्डमाल कर कपाल,
सिंह-चर्म हस्ति-खाल, डमरू कर धारी।। जयति०
अशरण जन नित्य शरण, आशुतोष आश्तिहरण,
सकल भ्राँति कल्याण-करण जय जय त्रिपुरारी।। जयति०

जय शिव ओंकारा

जय शिव ओंकारा जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा, विष्णु सदाशिव अर्द्धांङ्गी धारा।। ॐ हर हर हर महादेव।
एकानन चतुरानन पंचानन राजै।
हंसानन गरुडासन वृषवाहन साजै।। ॐ हर हर हर महादेव।
दो भुज चारु चतुर्भुज दस भुज अति सोहे।
तीनो रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहे।। ॐ हर हर हर महादेव।
अक्ष माला वन माला मुण्डमाला धारी।
त्रिपुरारी कंसारी वर माला धारी।। ॐ हर हर महादेव।
श्वेताम्बर पीताम्बर बाधम्बर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे।। ॐ हर हर हर महादेव।
कर में श्रेष्ठ कमंडल चक्र त्रिशूल धर्ता।
जग-कर्ता जग-हर्ता जग पालनकर्ता।। ॐ हर हर हर महादेव।
ब्रह्मा विष्णु सदा शिव जानत अविवेका।
प्राणवाक्षर के मध्य ये तीनों एका।। ॐ हर हर हर महादेव
त्रिगुण स्वामी जी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पत्ति पाये।।
ॐ हर हर हर महादेव।





ऋषि पंचमी व्रत

इस व्रत को करने से अनेकों उत्तम फल प्राप्त होते हैं। समस्त तीर्थ यात्राओं, समस्त व्रतों और दान इत्यादि से जितने भी फल प्राप्त होते हैं, वे सब केवल अकेली ऋषि पंचमी के व्रत से ही प्राप्त हो जाया करते हैं। जो स्त्री इस व्रत को करती है वह सभी दुखों से छूट, सुख प्राप्त करती है। यह व्रत सकल ऐश्वर्य प्रदाता है। इस कथा को पढ़ने तथा सुनने वाले के भी समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और अन्त में स्वर्गलोक की प्राप्ति होती हैं।

समय

यह व्रत भादो मास के शुक्ल पक्ष में पंचमी को होता हैं।

विधि

कदली स्तम्भ, आम्र पल्लव, पंचपल्लव, कलश, यज्ञोपवीत, लाल वस्त्र, सफेद वस्त्र, तन्दुल (चावल), कुंकुम (रोली), मौली (कलावा), गुलाल, मंगलीक (गुड़), धूप, पुष्पादि, तुलसीदल, श्रीफल, ताम्बूल (पान) अन्य फल, माला, पंचामृत पदार्थ, नैवेद्यार्थप्रसाद पदार्थ, गौधूम चूर्ण, गुडान्न, रंगीन आटा, दीपक, भगवान की मूर्ति, लौंग, इलायची, दूर्वा (दूब), कर्पूर (कपूर), केशर आदि उपयोगी सामान देव चित्रादिा, द्रव्य दक्षिणा।

यह तैंतीस वस्तुएं अवश्य होनी चाहिएं। इस व्रत के दिन सूर्योदय से पहले ब्रह्ममुहूर्त में उठकर नित्यकर्म से निपटकर फिर किसी विद्वान पंडित को बुलाकर भगवान का एकाग्रचित्त से पूजन करें, श्रद्धापूर्वक पंचामृत से स्नान कराकर सप्त मुनियों को नैवेद्य अर्पण करें तथा समस्त पूजन की सामग्रियों से

यथाविधि पूजन करें। उसके बाद भगवान का प्रसाद समस्त बन्धुजनों में बांटें तथा कथा श्रवण करने वालों को दें। फिर स्वयं प्रसाद लें। व्रत की रात्रि को जागरण करना चाहिए। इस व्रत-कथा तथा पूजन करने से पूर्व सुख, आरोग्यता समृद्धि, यश, धन-धान्य, सन्तान, वैभव तथा विजय की प्राप्ति होती है और अन्त में सायुज्य मोक्ष मिलती है। ऐसा बताया गया है।

ऋषि पंचमी का माहात्म्य

पुराणों में ऋषि पंचमी के व्रत का अति सबल प्रावधान है। एक बार राजा युधिष्ठिर ने कृष्णजी से पूछा—"हे प्रभु! मैंने आपके श्रीमुख से अनेक व्रतों को सुना है। आप मुझ पर कृपा करके कोई ऐसी कथा सुनायें जो सकल कष्ट निवारणी, पापों का नाश करने वाली हो।"

राजा युधिष्ठिर के वचनों को सुनकर श्रीकृष्ण बोले—"राजेन्द्र! अब मैं आपको ऋषि पंचमी का उत्तम व्रत सुनाता हूं। जिसको करने से स्त्री समस्त पापों से छुटकारा पा जाती है। राजन्, जो स्त्री रजस्वला होकर घर-गृहस्थी के कामों में लगकर बर्तन आदि को छूती है, वह अवश्य ही ठीक नहीं करती, पाप करती है। अतः सभी वर्ग के लोगों को चाहिए कि वे रजस्वला स्त्री को घर का कार्य न करने दें। हे नृपउत्तम! पूर्व समय में वृत्तासुर का वध करने के कारण राजा इन्द्र को ब्रह्महत्या का महान् पाप लग गया था। तब ब्रह्मा जी ने कृपा करके इन्द्र के उस पाप को चार स्थानों पर बांट दिया था। प्रथम—अग्नि की ज्वाला में, दूसरा—नदियों के बरसाती जल में, तीसरा—पर्वतों में और चौथा—स्त्री की रज में। उसी पाप के कारण रजस्वला स्त्री पहले दिन चाण्डालिनी, दूसरे दिन ब्रह्मघातिनी, तीसरे दिन धोबिन और चौथे दिन शुद्ध होती है। उस रजस्वला धर्म में जाने या अन्जाने उससे जो भी पाप हो जाते हैं उनकी शुद्धि के लिए ऋषि पंचमी का व्रत करना चाहिए।

अब मैं एक प्राचीन कथा सुनाता हूं। सतयुग में विदर्भ नगरी में श्येनजित नामक राजा थे। वे प्रजा पालन में बड़े ही लगनशील थे। उनके राज्य में समस्त वेदों का ज्ञाता, सभी जीवों का उपकार करने वाला सुमित्र नाम का ब्राह्मण निवास करता था। उसकी स्त्री जयश्री पतिव्रता थी। परन्तु रात-दिन वह साध्वी घर के कार्यों में लगी रहती थी। अपने रजस्वला होने का आभास होते हुए भी वह घर-बार के कार्यों में लगी रहती थी। वह गृहस्थी के बर्तन आदि सभी को स्पर्श करती थी। कुछ समय पश्चात् वे दोनों स्त्री-पुरुष अपनी आयु भोगकर मृत्यु को प्राप्त हुए। जयश्री अपने ऋतु-दोष के कारण कुतिया बनी और सुमित्र को रजस्वला स्त्री के सम्पर्क में रहने के कारण बैल होना पड़ा क्योंकि ऋतु-दोष के अतिरिक्त इन दोनों का और कोई अपराध नहीं था। इस कारण उन दोनों को

अपने पूर्व जन्म का समस्त विवरण याद ही रहा। वे दोनों कुतिया और बैल के रूप में रहकर अपने पुत्र सौमित्र के यहां पलने लगे। सौमित्र धर्मात्मा था और अतिथियों का पूर्ण सत्कार किया करता था। अपने पिता की पुण्य तिथि को उसने ब्राह्मणों को अपने घर अनेकों प्रकार के भोजन कराये। उसकी स्त्री किसी काम से बाहर गई हुई थी। एक सर्प ने आकर रसोई के बर्तन में विष उगल दिया। सौमित्र की मां कुतिया के रूप में बैठी हुई यह देख रही थी अत: उसने अपने पुत्र को ब्रह्महत्या के पाप से बचाने की इच्छा से उस बर्तन का स्पर्श किया। सौमित्र की पत्नी से कुतिया का यह कृत्य न सहा गया और उसने जलती हुई लकड़ी से कुतिया को मारा। प्रतिदिन चौके में जो जूठन आदि शेष रहती थी वह उस कुतिया को डाल दिया करती थी किन्तु उस दिन उसने क्रोध के कारण वह भी फेंक दी। तब रात्रि के समय भूख से विकल होकर वह कुतिया अपने पूर्व पति के पास आकर बोली—"हे नाथ! आज मैं भूख से दु:खी हूं। वैसे तो रोज ही मेरा पुत्र कुछ खाने को देता था मगर आज उसने कुछ नहीं दिया है। मैंने सांप के विष वाले खीर के बर्तन को ब्रह्महत्या के भय से छूकर भ्रष्ट कर दिया था, इस पर बहू ने मुझे मारा और खाने को कुछ नहीं दिया।" तब बैल ने कहा—"भद्रे, तेरे ही पापों के कारण मैं भी इस योनि में आ पड़ा हूं। बोझा ढोते-ढोते मेरी कमर टूट गई है, आज मैं दिन भर खेत जोतता रहा। मेरे पुत्र ने आज मुझे भोजन नहीं दिया, ऊपर से मारा भी। मुझे कष्ट देकर उसने श्रद्धा को व्यर्थ ही किया है। अपने माता-पिता की बातें उनके पुत्र सौमित्र ने सुन लीं। उसने उसी समय उनको भोजन कराया और उनके दु:ख से दुखी होकर वन में चला गया। वन में जाकर उसने ऋषियों से कहा—"हे ऋषिश्वरों! मेरे माता-पिता किन कर्मों के कारण इस योनि को प्राप्त हुए और किस प्रकार उससे छुटकारा पा सकते हैं ?" सौमित्र के इन वचनों को सुनकर सर्वतपा नामक ऋषि दया करके बोले—"पूर्वजन्म में तुम्हारी माता ने अपने उच्छृंखल स्वभाव के कारण रजस्वला होते हुए भी घर-गृहस्थी की समस्त वस्तुओं को स्पर्श किया और तुम्हारे पिता ने उसका स्पर्श किया था। इसी कारण वे कुतिया और बैल की योनि को प्राप्त हुए हैं। तुम उनकी मुक्ति के लिए ऋषि पंचमी का व्रत करो। भादो मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी आवे, तब दांतोन आदि करके मध्याह्न में नदी के पवित्र जल में स्नान करो। नवीन वस्त्रों को धारण करके अरून्धती सहित सप्त ऋषियों का पूजन करो।"

श्री कृष्णजी बोले—"हे राजन्! सर्वतपा ऋषि के इन वचनों को श्रवण करके सौमित्र अपने घर लौट आया और ऋषि पंचमी का दिन आने पर उसने अपनी स्त्री सहित उस व्रत को धारण किया और उसके पुण्य को अपने माता-पिता को दे दिया। व्रत के प्रभाव के कारण उसके माता-पिता दोनों ही

पशु योनियों से मुक्त हो गये और स्वर्ग को गये। राजन! इस व्रत को करने से अनेकों उत्तम फल प्राप्त होते हैं। समस्त तीर्थ यात्राओं, समस्त व्रतों और दान इत्यादि से जितने भी फल प्राप्त होते हैं वे सब केवल अकेले ऋषि पंचमी के व्रत से ही प्राप्त हो जाया करती हैं। जो स्त्री इस व्रत को करती है वह सभी दुःखों से छूट, सुख प्राप्त करती है। यह व्रत सकल ऐश्वर्य प्रदाता है। इस कथा को पढ़ने तथा सुनने वाले के भी समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और अन्त में स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है।"

ऋषि पंचमी व्रत-कथा

एक समय राजा सिताश्व श्री ब्रह्मा जी के समीप गये और उनको नमस्कार कर बोले—"हे देव! आप समस्त धर्मों के प्रवर्त्तक और गूढ़ धर्मों को जानने वाले हो। आपके मुख से धर्म चर्चा श्रवण कर मन को शान्ति मिलती है। भगवान के चरण-कमलों में प्रीति बढ़ती है। वैसे आपने मुझे नाना प्रकार के व्रतों के विषय में उपदेश दिये हैं। अब उस श्रेष्ठ व्रत को सुनने की अभिलाषा रखता हूं जिसके करने से प्राणी के समस्त पापों का नाश हो जाता है।" राजा के इन वचनों को सुनकर श्री ब्रह्मा जी बोले—"हे राजन्! तुम्हारा प्रश्न अति उत्तम और धर्म में प्रेम उपजाने वाला है। मैं आपको गुह्य और समस्त पापों को नष्ट करने वाला व्रत कहता हूं। यह व्रत ऋषि पंचमी के नाम से विख्यात है। इस व्रत को करने वाला अपने पापों से सहज ही छुटकारा पा लेता है और नर्क में कदापि नहीं जाना पड़ता है। इस व्रत का एक प्राचीन इतिहास है। उस इतिहास का मैं तुम्हारे सम्मुख वर्णन करता हूं—

विदर्भ देश में उत्तंक नामक ब्राह्मण अपनी पतिव्रता पत्नी के साथ रहता था।

उस ब्राह्मण दम्पति के एक पुत्र और एक पुत्री थी। उसके पुत्र का नाम सुविभूषण था। सुविभूषण तीव्र बुद्धि वाला था। उसने अल्पकाल ही में चारों वेदों को पढ़ लिया था। राजन, उत्तंक ने अपनी पुत्री का विवाह एक सुयोग्य ब्राह्मण कुमार के साथ कर दिया, किन्तु भगवान की गति से वह कुछ ही समय पश्चात् ही विधवा हो गयी। अतः विधवा होने के पश्चात् वह कन्या अपने धर्म का पालन करती हुई अपने पिता के पास रहते हुए अपना समय व्यतीत करने लगी। विधवा कन्या के दुःख से दुखी होकर उत्तंक अपना घरबार अपने पुत्र को सौंप कर अपनी स्त्री और कन्या को साथ लेकर गंगा जी के किनारे चला गया। वहां आश्रम बनाकर वेदों का पठन-पाठन करने लगा। उसके पास कुछ ब्राह्मण बालक भी वेद पढ़ने को रहने लगे। कन्या अपने धर्म का पालन करती हुई अपना समय व्यतीत करने लगी। वह नित्य मन लगाकर माता-पिता की सेवा करती थी। एक दिन समस्त कार्यों से थक कर वह एक शिला पर आराम करने को लेट गई। थकान के कारण उसको अपने शरीर की सुधि भी न रही। ईश्वर की गति से अर्द्धरात्रि के समय

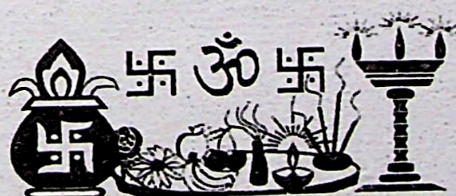
यकायक उसके शरीर में कीड़े उत्पन्न हो गए। शिष्यों ने जब उस वस्त्रहीन कन्या के शरीर पर कीड़ों को देखा तो उन्होंने जाकर अपनी गुरू-पत्नी को बताया। कन्या के शरीर में कीड़े पड़ जाने की बात को श्रवण कर ब्राह्मणी कातर स्वर में विलाप करती हुई उसी शिला के पास पहुंची। उसके शरीर पर कीड़ों को देखकर बहुत दुःखी हुई और दहाड़ मारकर रोने लगी। रोते-रोते वह ब्राह्मणी अचेत हो गई। जब उसे चेत हुआ तो उसने अपनी सोती हुई कन्या को गोदी में उठाया और अपने पति उत्तंक ऋषि के सामने ले गई। कन्या की दशा देखकर उस ब्राह्मणी ने अपने पति से कहा—"हे स्वामी, आप कृपा करके मुझे यह बतायें कि मेरी इस साध्वी कन्या की दुर्दशा किस दुष्कर्म के कारण हुई है ?"

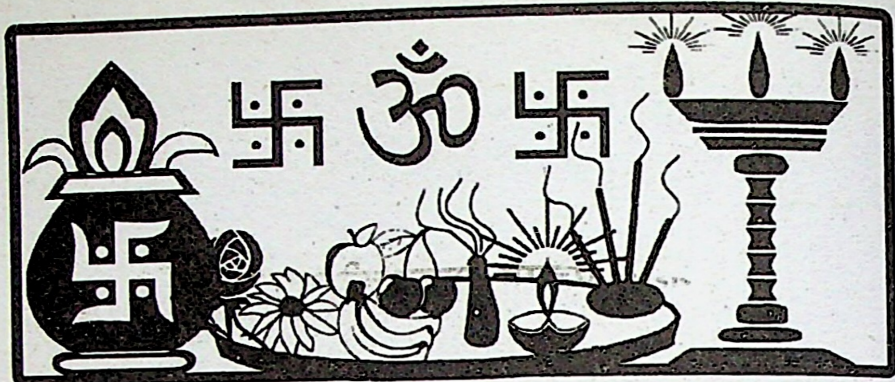
अपनी भार्या की बातों को सुनकर उत्तंक ऋषि थोड़ी देर के लिए शान्त होकर हृदय में ईश्वर का ध्यान करने लगे। उन्होंने अपनी ज्ञान-शक्ति से कन्या के पूर्व जन्म के समस्त वृत्तान्तों को ज्ञान लिया। तब वे अपने नेत्रों को खोलकर बोले--"प्रिये, यह कन्या अपने पहले सातवें जन्म में एक ब्राह्मणी थी। उस समय इसने रजस्वला होते हुए भी घर के घड़े आदि बर्तनों को छुआ था, उसी पाप के कारण उसके शरीर में कीड़े पड़ गये हैं। रजस्वला स्त्री पहले दिन चाण्डालिनी, दूसरे दिन ब्रह्महत्यारिनी, तीसरे दिन रज की अर्थात् धोबी की स्त्री के समान होती है। चौथे दिन वह स्नान के बाद शुद्ध होती है। इसने शुद्ध होने के बाद अपनी सखियों के साथ ऋषि पंचमी व्रत को देखकर भी उसका आदर नहीं किया। व्रत के दर्शनों के प्रभाव से तो इस जन्म में इसको उत्तम ब्राह्मण कुल प्राप्त हुआ और जिसका तिरस्कार करने से शरीर में कीड़े पड़ गये।" मुनि के वचनों को सुनकर सुशीला बोली—"स्वामी! जिस व्रत को दर्शनमात्र से आपके अनुसार ब्रह्म तेजोमय उत्तम कुल में जन्म प्राप्त हुआ और जिसका तिरस्कार करने से शरीर कीड़ों से भर गया, इस महान् आश्चर्यजनक व्रत को करने वाला निश्चय ही दैहिक, भौतिक और दैविक तीनों प्रकार के कष्टों से छूट जाता होगा। क्या आप इस व्रत के बारे में बतायेंगे ?" तब उत्तंक मुनि ने बताया—इस व्रत को करने से स्त्री सौभाग्य को प्राप्त करती है। स्त्री को गंगा स्नान के बाद नित्य कर्म करने चाहिएं। विधि विधान से पंचामृत बनाकर श्रद्धा, भक्ति सहित सप्त ऋषियों को स्नान करावे, चंदन, अगर, कपूर आदि गंध दे। पुष्प, धूप दीप, आदि निवेदन करे। पवित्र वस्त्र, यज्ञोपवीत सहित दे, उत्तम फलों और मिष्ठान का भोग लगावे। अर्घ्य दे। सप्तऋषि—कश्यप, अत्रि, भरद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि और वशिष्ठ जी का ध्यान करके प्रार्थना करे : हे श्रेष्ठ ऋषिवरों ! आप मेरी पूजा को स्वीकार करके मुझे कृतार्थ करें। मेरे द्वारा निवेदित अर्घ्य, भोग आदि को स्वीकार करें। इस प्रकार जो स्त्री ब्रह्मचर्य धारण करती हुई इस व्रत को करती है वह उत्तम कुल को प्राप्त करती है।

व्रत का फल समस्त तीर्थों के दर्शन और दान-पुण्य से भी श्रेष्ठ है। जो स्त्री सुख पाने की इच्छा से इस व्रत को धारण करती है वह सुन्दर-स्वरूप और उत्तम गुणों से परिपूर्ण पुत्र-पौत्र आदि को पाती है। इस लोक में वह समस्त भोग भोगकर और परलोक में भी अक्षय सुख को प्राप्त करती है। इस ऋषि पंचमी व्रत के प्रभाव से उसे अपने पूर्व जन्म का स्मरण रहा करता है।

ऋषि पंचमी-पूजन की आरती

जय जय जय ऋषिराज, जय जय जय ऋषिराज।
देव समान समाहत, कृत सब सुरगण काज।।
भृगु, पुलस्त्य, पुलहे, क्रतु अंगिरा, मरीचि,
कश्यप विश्वामित्र, वशिष्ठ, अत्रि, गौतम, नारद।।
श्री तप जय कश्यप जय जय जय ऋषिराज।।
वेदमंत्र द्रष्टावन, सबका भला किया।
सब जनता को तुमने, वैदिक ज्ञान दिया।।
श्री तप जय कश्यप जय जय जय ऋषिराज।।
सब ब्राह्मण जनता के मूल पुरुष स्वामी।
ऋषि संतित हम ज्ञानी हों सत्पथगामी।।
श्री तप जय कश्यप जय जय जय ऋषिराज।।
श्रद्धा भक्ति हृदय में आस्तिकता भर दो।
शिक्षित हों हम सारे, यह हमको वर दो।।
श्री तप जय कश्यप जय जय जय ऋषिराज।।
जय जय जय ऋषिराज।





जन्माष्टमी व्रत-कथा

ऐसा माना जाता है कि भगवान श्रीराम बारह कलाओं के अवतार थे तो भगवान श्री कृष्ण सोलह कलाओं के ! सच तो यह है कि वह पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर थे। अवतारवाद के सिद्धान्त को सारे धर्म-शास्त्र मानते हैं कि जब पृथ्वी पर अत्याचार, अनाचार का बोलबाला होता है, जन-जीवन कष्टप्रद हो जाता है, धर्म की क्षति होने लगती है, तब भगवान पृथ्वी पर अवतरित होते हैं।

यह तो स्पष्ट है कि द्वापर के अन्त में भगवान श्री कृष्ण धर्म की संस्थापना के लिए अवतरित हुए, पर प्रतिवर्ष पूरे भारतवर्ष में धूमधाम, हर्षोल्लास और श्रद्धा भक्ति के साथ जन्माष्टमी मनाने का क्या मतलब है ? क्या श्री कृष्ण प्रतिवर्ष जन्म लेते हैं ? गोकुल से मथुरा की कितनी दूरी है····केवल मात्र चार कोस (सात किलोमीटर)। रोज गोपियां दूध बेचने मथुरा जाती हैं, विरह का संदेश मथुरा स्थित कृष्ण को भेजती हैं। इतने संदेश भेजे गये कि मधुबन के कुएं भर गए हैं····'संदेशनि मधुबन कूप भरे' पर कृष्ण बेखबर सोये हैं, एकदम निर्विकार। गोपियों का विरह पीड़ित होना उन्हें तिल-मात्र भी प्रभावित नहीं कर पाता है। कारण—वे परब्रह्म परमात्मा जो हैं। ऐसे ब्रह्म का प्रतिवर्ष जन्म लेना कोई अर्थ नहीं रखता है।

मानव की गति है—अधोगामिनी। षड् विकार उसे पतनोन्मुख करने में सहायता पहुंचाते हैं। वह अनेकों मायाजाल में पड़कर भी परलोक के लिए कुछ करना चाहता है। राह प्रशस्त करने का आकांक्षी है। उसरा संस्कार ऐसा है। वह इस धरती का प्राणी है, जो देवताओं के अवतार की भूमि रही है। यहां देवता भी तन धारण करने के लिए मचलते हैं। इस अवस्था में जन्माष्टमी ऐसा पावन पर्व कृष्ण की बरबस याद दिलाता है। सत्य-असत्य

के संघर्ष में कृष्ण का आदर्श उसका सम्बल ही नहीं प्रेरक सिद्ध होता है। कृष्ण जैसे लोकनायक की अनन्त मनोहारिणी लीलाएं जन-जन में बसी हैं। सगुण उपासक जनता उन्हें स्मरण कर निहाल हो उठती है। उसकी आत्मा को परम शान्ति मिलती है।

असत्य पर सत्य की, पाप पर पुण्य की और अधर्म पर धर्म की विजय की परम्परा बड़ी पुरातन है। पग-पग पर सबको जीवन में ऐसे संघर्षों के दौर से गुज़रना पड़ता है।

'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय' सांस्कृतिक मंत्र है। धर्म का मूल उद्देश्य है जिसका प्रमाण है—कृष्ण चरित्र। कृष्ण का सम्पूर्ण जीवन लोकोपकार में बीता। ऐसे कृष्ण का प्रतिवर्ष स्मरण करना हमारी आत्मा को पवित्र करता है।

आज के जीवन के सन्दर्भ में भी जन्माष्टमी की प्रासंगिकता पर कोई प्रश्न नहीं उठाया जा सकता है। जीवन ज्यों-ज्यों जटिल, उलझनपूर्ण होता गया। इस विषम परिस्थिति में कृष्ण का उपदेश **'कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'** गीता का यह कर्मवाद कहीं फल का निषेध नहीं बताता, वरन् कर्म पर बल देता है। फलासक्ति की तीव्रता में कर्म की उपेक्षा हो जाती है। फल कैसे मिलेगा, फल तो कर्म का ही बदला हुआ रूप है। आज की दिग्भ्रमित, निराश कुंठित पीढ़ी, क्या विध्वंसात्मक रवैया छोड़कर कर्मोन्मुख नहीं हो सकती है ? यह पर्व उनमें कर्मण्यता का संदेश भरता है। कृष्ण ने कभी अनीति, अधर्म का साथ नहीं दिया। सदा सज्जनों की रक्षार्थ कटिबद्ध रहे। शकटासुर, अघासुर, कंस, बकासुर, चाणूर आदि का वध उनकी लीलाओं के अन्तर्गत आता है। हर कीमत पर अन्याय, अनैतिकता और अधर्म का नाश करना हमारा कर्त्तव्य है। मनुष्य देह ही इसलिए मिली है। आज कभी हम भ्रष्टाचार विरोध दिवस मनाते हैं और कभी आत्मप्रक्षालन दिवस और घूम-घाम कर फिर उसी कीचड़ में फंसते हैं। अपने-आपको जानें-पहचानें और सत्य के नाश के लिए प्राणपण से लग जायें। आज इसी की आवश्यकता है और जन्माष्टमी भी यही संदेश देती है।

समय

यह व्रत भाद्रपद कृष्ण पक्ष की अष्टमी को मनाया जाता है।

विधि

इस दिन प्रातःकाल स्नान करके निर्जल व्रत रखना होता है। पूर्णरूपेण सच बोलना चाहिए। अपराह्न पुनः स्नान आदि से निवृत्त होकर फलों का भोग

भगवान श्रीकृष्ण को लगाकर फल ग्रहण किया जा सकता है। धूप-दीप से भगवान श्रीकृष्ण की उपासना करनी चाहिए। रात को बारह बजने के बाद श्रीकृष्ण का जन्म माना गया है। उस समय भगवान की मूर्ति के आगे धूप-दीप चढ़ाकर दही का चरणामृत बनाना चाहिए। कोटू (कूटू) या सिंघाड़े के आटे को भूनकर उसमें सूखा मेवा मिलाकर पंजीरी बनाना चाहिए और सम्भव हो सके तो फलों का भी प्रसाद बनाना चाहिए। भगवान का भोग लगाने के बाद फल और प्रसाद खाकर व्रत तोड़ना चाहिए। यह व्रत स्त्री, पुरुष, किशोर कोई भी कर सकता है।

व्रत-कथा

राजा कंस को अपने बहनोई वासुदेव पर यह शक था कि वह विद्रोह का नेता है, इसीलिए एक दिन कंस अपनी बहन देवकी तथा बहनोई वासुदेव को रथ में बिठाकर अपने राजमहल में बंदी बनाकर रखने के लिए ले जा रहा था, इसी समय आकाशवाणी हुई—"हे मूर्ख कंस ! जिसे तू रथ पर ले जा रहा है उसी के आठवें गर्भ से जो पुत्र होगा वही तेरा काल बनेगा।"

आकाशवाणी सुनकर कंस को क्रोध आ गया। रथ से उतरकर उसने अपनी तलवार खींच ली। जैसे ही तलवार देवकी के ऊपर उठाई, वासुदेव ने उसका हाथ थामते हुए कहा—"हे राजन ! यह क्या करने जा रहे हैं ?"

"इससे मेरा काल जन्म लेगा ?" कंस ने क्रोध से तमतमाते हुए कहा। वासुदेव तो संत हृदय थे, बोले—"अभी प्रसव में बहुत समय है। फिर जब-जब देवकी पुत्र को जन्म दे तब-तब आप उस पुत्र को लेकर उसका वध कर देना।"

कंस की मति भगवान ने भ्रष्ट कर दी थी। वह मान गया था। उसने वासुदेव और देवकी को मथुरा के कारागार में डाल दिया।

राजा कंस ने अपनी बहन के सात बच्चों का वध कर डाला। जब आठवां पुत्र होने का समय आया, तब कंस ने जेल में पहरा कड़ा कर दिया। देवकी को भाद्रपद मास की कृष्णपक्ष की अष्टमी को पुत्र हुआ तो उस समय घनघोर वर्षा हो रही थी। जेल के फाटक खुले हुए थे यह चमत्कार ही था कि देवकी और वासुदेव की बेड़ियां और हथकड़ियां भी स्वतः टूट गयी थीं। पुत्र-कृष्ण का सलौना रूप देखकर देवकी आर्द्र स्वर में बोली—"स्वामी, इस बालक को देखकर मेरी ममता जाग उठी है। कितना सुन्दर बालक है ! आप इसे कहीं दे दो।"

"सत्य कहती हो प्रिये ! मगर इसे छिपाऊँगा कहां ?" वासुदेव ने कहा।

"हाँ, याद आया ! आज मुझे स्वप्न आया था। गोकुल में मेरी बहन यशोदा और नन्द बाबा के घर एक कन्या का जन्म हुआ है। आप इस बालक को वहां छोड़कर उस कन्या को ले आना। भगवान ने मुझे स्वप्न दिया है⋯वह कन्या देवी का अवतार है।"

और वासुदेव जी कृष्ण को लेकर कारागार से बाहर आए। अपने हाथों की टूटी हथकड़ियां और जेल के खुले द्वार देख वासुदेव जान गए थे कि भगवान की माया हैं। वह बालक को एक टोकरी में रखकर रात को ही चल पड़े।

रास्ते में यमुना नदी पार करनी थी। काली घटा के साथ वर्षा हो रही थी। वासुदेव ने भगवान का स्मरण किया और नदी में प्रवेश कर गये। यमुना भगवान के अवतार को पहचान गई थी। वह भगवान के पैर छूना चाहती थी। इसीलिए वासुदेव ज्यों-ज्यों यमुना में प्रवेश करते जा रहे थे, यमुना का जल बढ़ता चला गया था। यहाँ तक कि जब वासुदेव के मुंह के पास यमुना का जल स्तर आ गया था तब अवतारी श्री कृष्ण भगवान ने अपने पैर नीचे टोकरे से लटका दिए। यमुना जी बालक रूपी भगवान के चरणों का स्पर्श करते ही बिल्कुल कम हो गई। वासुदेव जी आसानी से यमुना पार हो गये। और गोकुल गांव में नन्द बाबा के घर रात में ही पहुंचकर उनसे सब कुछ कह दिया। वासुदेव बालक को नन्द बाबा के पास नन्द गाँव छोड़ आये और वहां से कन्या ले आए।

सुबह कंस ने बन्दीगृह में आकर देवकी की गोद से कन्या छीन ली और वध करने के लिए ज्यों ही कन्या को ऊपर उठाकर शिला पर पटकना चाहा तो कन्या हाथ से छूट गई। वह लक्ष्मी का अवतार थी.....आकाशवाणी हुई—"हे दुष्ट कंस ! तू क्या मुझे मारेगा, तेरा वध करने वाला जन्म ले चुका है।"

कंस घबरा गया था। सारे राज्य में अपने असुरगण—पूतना, शकटासुर, अघासुर, बकासुर, चाणूर आदि कृष्ण की खोज में भेजे थे। परन्तु भगवान ने सबका वध किया था और कंस के अत्याचार, अनाचार के खिलाफ आवाज उठाई थी और भरे दरबार में कंस के केश पकड़कर वध कर डाला था। फिर कंस के पिता राजा उग्रसेन को राजगद्दी पर फिर से बिठा दिया, जिनसे कंस ने पहले राज्य छीना था। इसी उपलक्ष में भारत में जन्माष्टमी बड़ी धूमधाम से मनाई जाती है।

श्रीकृष्ण जी की आरती (कुंज बिहारी)

आरती कुंज बिहारी की श्री गिरधर कृष्णमुरारी की।
गले में बैजंती माला, बजावे मुरलि मधुर बाला।
श्रवन में कुंडल झलकाला, नन्द के आनन्द नन्दलाला।
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली।
लतन में ठाढ़े बन माली।
भ्रमर-सी अलक, कस्तूरी-तिलक चन्द्र-सी झलक,
ललित छवि स्यामा प्यारी की। श्री गिरधर कृष्णमुरारी की।।
आरती कुंज बिहारी की....

कनकमय मोर मुकुट बिलसे, देवता दर्शन को तरसै।
गगन सों सुमन राशि बरसै,
बजे मुरचंन मधुर मिरदंग, ग्वालिनी संग।
अतुल रति गोप कुमारी की, श्री गिरधर कृष्णमुरारी की।
आरती कुंज बिहारी की..........
जहां ते प्रगट भई गंगा, कलुष कलिहारिणी श्री गंगा।
स्मरस ते होत मोह-भंगा,
बसी शिव सीस, जटा के बीच, हरै अध कीच।
चरण छवि श्री बनवारी की, श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की।
आरती कुंज बिहारी की..........
चमकती उज्जवल तट रेनू, बज रही वृन्दावन बेनू।
चहूं दिसि गोपी ग्वाल धेनू,
हंसत मृदु मंद चांदनी चंद, करत भवफंद।
टेर सुनुं दीन भिखारी की, श्री गिरधर कृष्णमुरारी की।
आरती कुंज बिहारी की श्री गिरधर कृष्ण मुरारी की।





एकादशी व्रत माहात्म्य

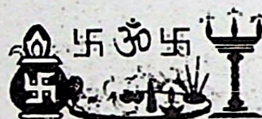
प्राचीन काल में एक बार शौनक आदि अट्ठारह हजार मुनि उपस्थित थे। तब सब ऋषियों ने सूतजी से विनम्र स्वर में पूछा—"महाराज, आप हमें एकादशी का पूर्ण माहात्म्य समझाएं ?"

सूतजी बोले, "हे मुनिवरों, एक साल में बारह माह होते हैं और प्रत्येक माह में कृष्ण पक्ष तथा शुक्ल पक्ष होता है। एक वर्ष में चौबीस एकादशी होती हैं। कभी-कभी अधिक मास (लौंद) के कारण दो एकादशी बढ़ जाती हैं। कुल मिलाकर छब्बीस एकादशी मानी गई हैं।

इनका विवरण इस प्रकार है—

1.	कामदा एकादशी	चैत्र शुक्ल पक्ष
2.	योगिनी एकादशी	आषाढ़ कृष्ण पक्ष
3.	देवशयनी एकादशी	आषाढ़ शुक्ल पक्ष
4.	पुत्रदा एकादशी	श्रावण कृष्ण पक्ष
5.	कामिनी एकादशी	श्रावण शुक्ल पक्ष
6.	बरुथनी एकादशी	बैशाख कृष्ण पक्ष
7.	मोहिनी एकादशी	बैशाख शुक्ल पक्ष
8.	अपरा एकादशी	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष
9.	निर्जला एकादशी	ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
10.	अजा एकादशी	भाद्रपद कृष्ण पक्ष
11.	परिवर्तिनी एकादशी	भाद्रपद शुक्ल पक्ष
12.	इन्दिरा एकादशी	आश्विन कृष्ण पक्ष
13.	पापांकुशा एकादशी	आश्विन शुक्ल पक्ष

14.	रमा एकादशी	कार्तिक कृष्ण पक्ष
15.	देवोत्थान एकादशी	कार्तिक शुक्ल पक्ष
16.	उत्पन्ना एकादशी	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष
17.	मोक्षदा एकादशी	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष
18.	सफला एकादशी	पौष कृष्ण पक्ष
19.	पुत्रदा एकादशी	पौष शुक्ल पक्ष
20.	षट्तिला एकादशी	माघ कृष्ण पक्ष
21.	जया एकादशी	माघ शुक्ल पक्ष
22.	विजया एकादशी	फाल्गुन कृष्ण पक्ष
23.	आमल एकादशी	फाल्गुन शुक्ल पक्ष
24.	पाप मोचिनी एकादशी	चैत्र कृष्ण पक्ष
25.	पद्मिनी अ० (लौंद)	शुक्ल पक्ष
26.	परमा अ० (लौंद)	कृष्ण पक्ष



कामदा एकादशी व्रत-कथा

मनोकामना को देने वाली कामदा एकादशी गृहस्थ जीवन में रहने वाले मनुष्यों के लिये अति श्रेष्ठ है। इसका उल्लेख बाराह पुराण में आता है। इस व्रत का अधिक महत्व है। जो भी प्राणी इस उत्तम व्रत को करता है, वह सभी मनोकामनाओं को प्राप्त कर लेता है।

समय

यह कामदा एकादशी चैत्र शुक्ल पक्ष की एकादशी को मनाई जाती है।

विधि

इस दिन व्रत धारण कर दान इत्यादि करना चाहिए। इससे बहुत फल मिलता है। इस व्रत के दिन स्वच्छता अति आवश्यक है। यहाँ तक कि व्रत के दिन किसी अन्य पुरुष का स्पर्श भी नहीं होना चाहिए। जैसा कि अन्य व्रतों में होता है—प्रात:काल स्नानादि कर धूप, दीप, कपूर और घी का दीपक जलाकर विराटरूप भगवान् की मूर्ति की उपासना करनी चाहिए। पूजा के बाद आरती आदि करके प्रसाद वितरण करना चाहिए। एक बात बहुत जरूरी है कि एकादशी का कोई भी

व्रत हो उस दिन अन्न या चावल कदापि नहीं खाना चाहिए। एकादशी के दिन चावल और अन्न खाना अनिष्टकारक माना जाता है। इस बात का विशेष ध्यान रखें।

कामदा एकादशी व्रत-कथा

हजारों वर्षों पहले की बात है 'नागलोक' में एक राजा पुण्डरीक राज्य करता था। वह कोमल स्वभाव का सम्राट था। नृत्य और संगीत का बहुत प्रेमी था। उसकी सभा में बहुत-सी अप्सराएँ, किन्नर, गन्धर्व नृत्य करते थे। एक समय की बात है, ललित नाम का एक गन्धर्व जब उसकी राज्य सभा में नृत्य गान में व्यस्त था, सहसा उसी समय उसे अपनी सुन्दरी की याद आ गयी। वह उसी की कल्पना में खो गया। कल्पना में खो जाने के कारण उसके नृत्य और संगीत का तारतम्य लयबद्ध न रह सका था। दरबार में उपस्थित कर्कट नामक नाग (देवों की जाति) यह बात जान गया उसने सारी बातें राजा से कह दीं। नाग की बातें सुनकर पुण्डरीक बहुत क्रोधित हुआ और उसने ललित को राक्षस हो जाने का श्राप दे दिया। ललित श्रापग्रस्त होकर हजारों वर्षों तक राक्षस योनि में भटकता रहा, उसकी प्रेयसी भी उन्मत्त वेश में उसका अनुसरण करती रही। एक समय वे दोनों शापित दम्पति विन्ध्याचल पर्वत के शिखर पर स्थित ऋष्यमूक नामक ऋषि के आश्रम में पहुंच गये। उनकी यह करुण स्थिति देखकर उन मुनि जी को दया आ गयी। उन मुनि जी ने पूछ लिया—"कहो नाग ललित, यह क्या स्थिति बना रखी है ?"

"मुनिवर, पुण्डरीक के श्रापवश मेरी यह दशा है। मेरा कसूर यही था कि राज्य-दरबार में मैं अपनी प्रेयसी की याद में व्यस्त हो गया था। भार्या की याद करना कोई पाप तो नहीं है मुनिवर.....।" राक्षस योनि में बने ललित नाग ने साग्रह कहा।

"पाप नहीं है, किन्तु तुमने अपने कर्त्तव्य और राजाज्ञा का उल्लंघन तो किया था।"

"परन्तु मुनिवर, इतना कठोर श्राप ! नाग योनि से राक्षस (नीच) योनि का श्राप दे दिया गया।" ललित गिड़गिड़ा उठा।

"मैं एक उपाय बताता हूँ, मानोगे..... ?" मुनिवर ने कहा।

"अवश्य मुनिवर..... !" उसने कहा।

"तुम दम्पति चैत्र शुक्ल पक्ष की 'कामदा' एकादशी का व्रत धारण करोगे तो तुम श्राप से मुक्ति पा जाओगे।" ऋष्यमूक ऋषि ने कहा।

दोनों ने मुनि जी का वचन मानकर व्रत धारण किया और नियमपूर्वक व्रत को निभाया। इससे उनके पाप कट गए थे। राक्षस योनि से पुनः नाग योनि को प्राप्त करके अपना उद्धार किया था। इसी कारण इसे 'कामदा' कहते

हैं। मनोकामना को देने वाली कामदा एकादशी गृहस्थ जीवन में रहने वाले मनुष्यों के लिये अति श्रेष्ठ है।

आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे।। ॐ
जो ध्यावे फल पावे, दुःख विनशे मन का।
सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।। ॐ
मात-पिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी।। ॐ
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर तुम सबके स्वामी।। ॐ
तुम करुणा के सागर तुम पालन कर्त्ता।
मैं मूरख खल कामी कृपा करो भर्त्ता।। ॐ
तुम हो एक अगोचर सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति।। ॐ
दीन बन्धु दुःख हर्ता तुम रक्षक मेरे।
करुणा हस्त बढ़ाओ, द्वार पड़ा तेरे।। ॐ
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा।। ॐ



बरुथनी एकादशी व्रत-कथा

इस व्रत को बरुथनी ग्यारस भी कहा जाता है। यह व्रत सुख-सौभाग्य का प्रतीक है। इस व्रत का प्रभाव इतना अधिक है कि पूर्व जन्म के पाप भी क्षमा हो जाते हैं। प्राणी अपना समस्त मनवाँछित फल भी प्राप्त कर लेता है। सुपात्र ब्राह्मण को दान देना चाहिए। यह दान करोड़ों वर्ष के कठोर तप से भी बढ़कर है। उसका दान अति उत्तम माना गया है। अन्न दान, वस्त्र दान इसके मुख्य स्तम्भ हैं।

समय

यह बैशाख कृष्ण पक्ष में एकादशी के दिन मनाया जाता है।

विधि

व्रत रखने वाले के लिए इस दिन भोजन करना, दातुन फाड़ना, दूसरे व्यक्ति की बुराई करना, क्रोध प्रकट करना और झूठ बोलना अनिष्टकारक है। इस व्रत में तेल की बनी चीज नहीं खानी चाहिए। इस व्रत के करने से सौ गउओं की हत्या का भी दोष नष्ट हो जाता है। सर्वप्रथम स्नानादि करके धूप-दीप जलाकर भगवान की आराधना करनी चाहिए और प्रसाद वितरण करना चाहिए।

बरुथनी एकादशी व्रत-कथा

एक समय नर्मदा के तट पर मान्धाता नामक तपस्वी राजा रहता था। वह अत्यन्त दानी एवं तपस्वी था। एक समय जब वह जंगल में तपस्या कर रहा था तो एक जंगली भालू ने आकर उसका पैर चबाना शुरू कर दिया। थोड़ी देर बाद वह राजा को घसीटकर वन में ले गया। तब राजा ने तापस धर्म के अनुसार क्रोध न करके भगवान विष्णु से विनय की, विष्णु भगवान को उन पर दया आ गई और भालू का सुदर्शन चक्र से वध कर दिया। परन्तु भालू तो उनका पैर खा चुका था। इसलिए वह अपंग हो गया था।

राजा को दुःख से व्यथित देखकर भगवान ने उससे कहा—"हे राजन् ! तुम मथुरा जाकर मेरी बाराह अवतार मूर्ति की उपासना बरुथनी ग्यारस का व्रत रखकर करो, तुम्हारे अंग तुम्हें पुनः मिल जायेंगे।"

"अच्छा भगवन !" राजा ने कहा।

"भालू ने तुम्हारा पैर जो खाया है। वह तुम्हारे पूर्व जन्म का अपराध है और वह तुम्हें अवश्य भुगतना था।"

इस तरह राजा ने इस व्रत को बड़ी श्रद्धा एवं भक्ति से किया और वह पुनः अंगहीन से सअंग हो गये।

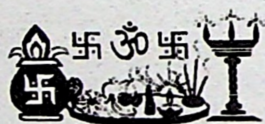
इस व्रत का प्रभाव इतना अधिक है कि पूर्व जन्म के पाप भी क्षमा हो जाते हैं। प्राणी अपना समस्त मनवाँछित फल भी प्राप्त कर लेता है।

इस व्रत को विधि से करने वाला इहलोक और परलोक दोनों ही सुधार लेता है।

आरती

शरण में आये हैं हम तुम्हारी,
दया करो हे दयालु भगवन्।
सम्हालो बिगड़ी दशा हमारी,

दया करो हे दयालु भगवन्।।
न हममें बल है न हममें शक्ति,
न हममें साधन न हममें भक्ति।
तुम्हारे दर के हैं हम भिखारी,
दया करो हे दयालु भगवन्।।
जो तुम हो स्वामी तो हम हैं सेवक,
जो तुम पिता हो तो हम हैं बालक।
जो तुम हो ठाकुर तो हम हैं पुजारी,
दया करो हे दयालु भगवन्।।
प्रदान कर दो महान् शक्ति,
भरो हमारे में ज्ञान भक्ति।
तभी कहलाओगे पाप हारी,
दया करो हे दयालु भगवन्।।
न होगी जब तक दया की दृष्टि,
न होगी जब तक कृपा की दृष्टि।
यह दासी कैसे रहे सुखारी,
दया करो हे दयालु भगवन्।।



मोहनी एकादशी

राम राज्य का युग भारत का प्राचीनतम् ऐतिहासिक काल है। भगवान राम के काल के हजारों वर्षों पश्चात् महाभारत का युग आया। राम राज्य के विषय में विधिवत इतिहास बाल्मीकि रामायण तथा अन्य हिन्दू धर्म ग्रन्थों में उपलब्ध हैं। भगवान राम की महिमा व चरित्र-चित्रण गोस्वामी श्री तुलसीदास जी ने 'रामचरितमानस' में कुशलतापूर्वक किया है जो आज भी अद्धितीय है।

भगवान की तीन विभूतियाँ होती हैं—शील, शक्ति और सौन्दर्य। श्री तुलसीदास ने राम का मर्यादा पुरुषोत्तम होने का बड़ा ही सजीव वर्णन किया है। उनके सद्भाव और राम राज्य की चर्चा विदेशों में भी चर्चा का विषय बनी है। मोहनी एकादशी में राम की ही पूजा होती है। इस व्रत का धारणकर्त्ता समस्त विकारों से, दुःखों से मुक्ति पा लेता है। अयोध्या में आज भी यह शब्द कहे जाते हैं।

चौपाई

हंसि पूछे जनकपुर की नारि, कहो, कैसे गज के फंद छुड़ाये।
खोले न खुलत जानकी को, कंकन केहि विधि चाप चढ़ाये।।

समय

यह व्रत बैशाख शुक्ल पक्ष की एकादशी को किया जाता है।

विधि

भगवान श्री राम की मूर्ति को स्नानादि से शुद्ध कराकर सफेद कपड़े पहनाने चाहिएं। स्वच्छ मन से ऊँचे आसन पर बैठकर धूप-दीप जलाकर आरती करने के बाद मीठे फल—केले, सेब व बेरों का भोग लगाना चाहिए। प्रसाद बाँटने के बाद यथा सम्भव पांच ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। दान देकर उनके चरण स्पर्श करना चाहिए। यदि सम्भव हो सके तो सफेद वस्त्र भी दान करें।

रात को भगवान राम का कीर्तन भी करना चाहिए। कीर्तनोपरान्त मूर्ति के पास ही सोना चाहिए। पूर्ण रूप से मन स्वच्छ रखें। इस अति उत्तम व्रत से बुरे कर्म समाप्त हो जाते हैं और मनुष्य की मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। तभी तो इसे मोहनी व्रत-कथा का रूप दिया गया है।

श्री रामावतार

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मनहारी अद्भुत रूप बिचारी।।
लोचन अभिरामा तनु घनश्यामा नव आयुध भुजचारी।
भूषन वनमाला नयन बिसाला सोभासिन्धु खरारी।।
कह दुइ कर जोरी, अस्तुति तोरी केहि विधि करौं अनन्ता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना वेद पुराण अनन्ता।।
करुना सुखसागर सबगुन आगर जेहि गावहिं श्रुति सन्ता।
सो मम हिय लागी तब अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकन्ता।।
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम-रोम प्रति वेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति फिर न रहै।।
उपजा जब ग्याना प्रभु मुस्काना चरित्र बहुत विधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै।।
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै शिशुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा।।

सुनि वचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं जे न परहिं भवकूपा।।

आरती श्रीराम

ऐसी आरती राम रघुबीर की करहि मन।
हरन दुखदुंद गोविंद आनंदधन।।1।।
अचर चर रूप हरि, सर्वगत, सर्वदा,
बसत इति बासना धूप दीजै।
दीप निजबोधगत कोह-मद-मोह-तम,
प्रौढ़ अभिमान चितवृत्ति छीजै।।2।।
भाव अतिशय विशद प्रवर नैवेद्य शुभ,
श्रीरमण परम संतोषकारी।
प्रेम-तांबूल गत शूल संशय सकल,
विपुल भव-वासना-बीजहारी।।3।।
अशुभ शुभ कर्म घृत-पूर्ण दशवर्तिका,
त्याग पावक, सतोगुण प्रकाश।
भक्ति-वैराग्य-विज्ञान दीपावली,
अर्पि नीराजनं जगनिवासं।।4।।
विमल हृदि-भवन कृत-शांति पर्यक शुभ
शयन विश्राम श्रीरामराया।
क्षमा-करुणा प्रमुख तत्र परिचारिका,
यत्र हरि तत्र नहिं भेद माया।।5।।
आरती-निरत सनकादि, श्रुति, शेष, शिव,
देवरिषि, अखिल, मुनि तत्व-दरसी।
करै सोइ तरै, परिहरै कामादि मल,
वदति इति अमलमति दास तुलसी।।6।।



अचला एकादशी

अपरा या अचला एकादशी दो नामों से जानी जाती है। इस व्रत का धारक ब्रह्महत्या के दोष से मुक्त हो जाता है, भूत योनि व बुरे कर्मों से छुटकारा

मिल जाता है। इसके सम्पन्न करने से कीर्ति, यश और धन, पुत्र की प्राप्ति होती है। इस व्रत में भगवान की पूजा की जाती है। किसी-किसी स्थान पर बलराम जी 'दाऊ' की भी पूजा का प्रचलन है।

समय

यह व्रत ज्येष्ट कृष्ण पक्ष की एकादशी को रखा जाता है। इसकी पूजा सूर्यास्त के पूर्व ही कर लेनी चाहिए।

विधि

इस व्रत की सम्पन्नता के समय चन्दन, तुलसी तथा कपूर से गंगाजल सहित भगवान विष्णु की पूजा की जानी चाहिए। मूर्ति पर मालार्पण करके धूप-दीप जलाकर 'विष्णु पुराण' का पाठ किया जा सके तो अति उत्तम है। इस व्रत की पूजा एकांत स्थल पर करनी चाहिए।

व्रत-कथा

हजारों वर्षों पहले महीध्वज नामक एक राजा हुआ करता था। उसका छोटा भाई ब्रजध्वज बड़ा ही क्रूर तथा अन्यायी एवं अधर्मी था। वह अपने बड़े भाई को देखकर जलता था। सदा इस फिराक में रहता था कि उसका अहित कर दे। एक दिन अवसर पाकर उसने अपने भाई महीध्वज की हत्या कर दी। रात्रि को उसकी देह को जंगली पीपल के वृक्ष के नीचे गाड़ दिया। मृत्यु के बाद वह राजा प्रेत योनि में पहुंच गया और पीपल के वृक्ष से अनेक उधम-उत्पात करने लगा। एक दिन धौम्य ऋषि वहां से गुजरे उन्होंने अपनी योग विद्या तथा तपोबल से उस प्रेत की जीवन कथा जान ली तथा उसे वृक्ष से नीचे उतरने को कहा। वह जब नीचे उतर आया तो धौम्य ऋषि ने पूछा—"तुम्हारी प्रेत योनि क्यों हुई ?"

—"कह नहीं सकता मुनिवर····!" वह हाथ जोड़कर बोला।

—"तुम्हारे पूर्व जन्म के कर्म ठीक नहीं थे। उन्हीं अपराधों के लिए तुम्हारी निर्मम हत्या हुई तथा प्रेत योनि मिली है। क्या तुम मेरा एक कहना मानोगे ?"

—"आपकी आज्ञा सर आंखों पर मुनिवर····!"

—"तुम एक व्रत करना।"

—"कौन-सा ?" उसने पूछा

—"ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष की एकादशी को अचला एकादशी व्रत रखना।" मुनिश्वर ने बतलाया।

—"बहुत अच्छा मुनिवर····!" उसने कहा।

—"इस व्रत के प्रभाव से तुम प्रेत योनि से मुक्ति प्राप्त कर लोगे।"

—"आपका बहुत-बहुत धन्यवाद, आपने मुझ पापी पर दया की।" राजा महीध्वज ने कहा।

धौम्य ऋषि की बात मानकर महीध्वज ने अचला एकादशी का व्रत किया और प्रेत योनि को त्याग कर दिव्य शरीर पा गया। कर्म अच्छे हो जाने से उसे सीधे स्वर्ग की प्राप्ति हुई।

श्री विष्णु विनय

जय श्रीपति मदन मुरारी,
श्रीमन्नारायण नारायण नारायण।
नृसिंह रूप धरि हिरनाकुश मारो,
भक्त प्रहलाद को कष्ट निवारो,
ऐसे भक्त हितकारी, श्रीमन्नारायण नारायण नारायण।
गज गनकादि अजामिल तारे,
भक्तहीन क्या करें विचारे,
काटो क्लेश हमारे, श्रीमन्नारायण नारायण नारायण।
शंख, चक्र, गदा पद्म अति सोहें,
पीतवस्त्र गलमाला मन मोहे,
ऐसे छवि धाम बिहारी, श्रीमन्नारायण नारायण नारायण।
रामरूप धरि रावण मारो,
कृष्ण रूप धरि कंस पछारो,
ऐसे असुर संहारी, श्रीमन्नारायण नारायण नारायण।
काम, क्रोध, मद जीतन हारे,
वसुधा के तुम पालन हारे,
तुमरी लीला अपरम्पार, श्रीमन्नारायण नारायण नारायण।
भक्तों के तुमही रखवारे,
हम सब सेवक नादान तिहारे।
करुणासिन्धु असुर संहारी, श्रीमन्नारायण नारायण नारायण।
शीश मुकुट कुण्डल छवि बांकी,
जेहि विलोकि मति सबकी छांकी,
तुम सम और न कोई, श्रीमन्नारायण नारायण नारायण।
तुमको छोड़ कहां मै जाऊं,
किसको अपना दुःख सुनाऊं,
नाव पड़ी मझधार, श्रीमन्नारायण नारायण नारायण।
बार-बार मैं विनती करता,
भक्तों के तुमही दुःख हरता,
'गोवर्द्धन' शरण तुम्हारी, श्रीमन्नारायण नारायण नारायण।

निर्जला एकादशी

इस एकादशी को भीमसेनी एकादशी भी कहा जाता है क्योंकि वेदव्यास के आज्ञानुसार भीमसेन ने इसे धारण किया था। इस व्रत का धारक दीर्घायु तथा मोक्ष की प्राप्ति करता है। यह व्रत करने से अनेक एकादशियों के व्रत का फल प्राप्त होता है। ऐसा इस व्रत का महत्व है।

समय

यह व्रत ज्येष्ठ की शुक्ल पक्ष की एकादशी को किया जाता है।

विधि

एकादशी के दिन स्नान करके सारा दिन व्रत रखना चाहिए। इस व्रत को रखने पर धूम्रपान निषेध है तथा जल पीना भी वर्जित है, इसलिए इसे निर्जला कहते हैं। अगले दिन द्वादशी को प्रातःकाल ब्रह्म बेला में उठकर स्नान आदि से निपटकर व्रतकर्ता को चाहिए, वह ब्राह्मण को भोजन कराये और **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'** मंत्र का जाप 108 बार करना चाहिए। गौदान, स्वर्णदान, वस्त्रदान भी करना चाहिए। छत्र, फल आदि दान निषिद्ध हैं।

व्रत-कथा

श्री भीमसेन बोले कि हे पितामह ! भ्राता युधिष्ठिर, माता कुन्ती, द्रौपदी, अर्जुन, नकुल और सहदेव आदि एकादशी के दिन व्रत करते हैं और मुझसे एकादशी के दिन अन्न खाने को मना करते हैं। मैं उनसे कहता हूं कि भाई मैं भक्तिपूर्वक भगवान की पूजा कर सकता हूं और दान दे सकता हूं परन्तु मैं एकादशी के दिन भूखा नहीं रह सकता। इस पर व्यास जी बोले—हे भीमसेन! यदि तुम नरक को बुरा और स्वर्ग को अच्छा समझते हो, तो प्रत्येक मास की दोनों एकादशियों को अन्न न खाया करो। इस पर भीमसेन बोला—हे पितामह! आपसे प्रथम कह चुका हूं कि मैं एक दिन एक समय भी भोजन किये बिना नहीं रह सकता फिर मेरे लिए पूरे दिन का उपवास करना तो कितना कठिन है। मेरे पेट में अग्नि का वास है जो अधिक अन्न खाने पर शान्त होती है। यदि मैं प्रयत्न करूं तो एक व्रत अवश्य कर सकता हूं। अतः आप मुझे कोई एक ऐसा व्रत बतलाइये जिससे मुझे स्वर्ग की प्राप्ति हो।

श्री व्यास जी बोले—हे वायु पुत्र! बड़े-बड़े ऋषि और महर्षियों ने बहुत से शास्त्र आदि बनाये हैं। यदि कलियुग में मनुष्य उन पर आचरण करे तो अवश्य ही मुक्ति को प्राप्त होता है। उसमें धन बहुत कम खर्च होता है, उसमें से सर्व प्रथम

ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए। उसके बाद स्वयं करना चाहिए। इसका फल एक वर्ष सम्पूर्ण एकादशियों के फल के बराबर है। हे भीमसेन ! स्वयं भगवान ने मुझसे कहा था कि इस एकादशी का पुन्य समस्त तीर्थों के बराबर है। एक दिन निर्जला रहने से मनुष्य पापों से मुक्त हो जाता है। जो मनुष्य निर्जला एकादशी का व्रत करते हैं उनको मृत्यु के समय भयानक यमदूत नहीं दीखते हैं। उस समय भगवान विष्णु के दूत स्वर्ग से आते हैं और उनको पुष्पकविमान पर बिठाकर स्वर्ग को ले जाते हैं। अतः संसार में सबसे श्रेष्ठ निर्जला एकादशी का व्रत है।

अतः यत्नपूर्वक इस एकादशी का निर्जल व्रत करना चाहिए। उस दिन **"ॐ नमो भगवते वासुदेवाय"** मन्त्र का उच्चारण करना चाहिए। उस दिन गौ का दान भी करना चाहिए। व्यासदेव जी के ऐसे वचन सुनकर उसने निर्जल व्रत किया लेकिन परिणामस्वरूप वे प्रातः होते-होते मूर्च्छित हो गए। तब पांडवों ने तुलसी, चरणामृत प्रसाद देकर उनकी मूर्च्छा दूर की। उसके बाद भीमसेन पाप-मुक्त हो गये। इस प्रकार जो व्यक्ति यह व्रत धारण करता है, उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है और वह सीधा स्वर्ग को जाता है।

आरती

अभयदान दीजै दयालु प्रभु, सकल सृष्टि के हितकारी।
भोलेनाथ भक्त-दुखमोचन, भवभंजन शुभ सुखकारी।।
दीनदयालु कृपालु कालरिपु अलखनिरंजन शिव योगी।
मंगल रूप अनूप छबीले अखिल भुवन के तुम भोगी।।
बाम अंग अति रंगरस-भीने उमा-वदनकी छबि न्यारी।
भोलेनाथ····

असुर-निकंदन सब दुखभंजन वेद बखाने जग जाने।
रुंड-माल गल व्याल भाल-शशि नीलकंठ शोभा साने।।
गंगाधर त्रिसूलधर विषधर बाघम्बरधर गिरिचारि।
भोलेनाथ····

यह भवसागर अति अगाध, पार उतर कैसे बूझै।
ग्राह मगर बहु कच्छप, छाये मार्ग कहो कैसे सूझै।।
नाम तुम्हारा नौका निर्मल, तुम केवल शिव अधिकारी।
भोलेनाथ····

मैं जानूं तुम सद्गुणसागर, अवगुण मेरे सब हरियो।
किंकर की बिनती सुन स्वामी सब अपराध क्षमा करियो।।
तुम तो सकल विश्व के स्वामी, मैं हूं प्राणी संसारी।
भोलेनाथ····

योगिनी एकादशी

इस एकादशी के व्रत के करने से पीपल वृक्ष के काटने का पूरा पाप खत्म हो जाता है और सकल मनोरथ प्राप्त करने के बाद मनुष्य को स्वयं स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है।

समय

यह एकादशी व्रत आषाढ़ कृष्ण पक्ष में किया जाता है।

विधि

व्रत रखने के बाद भगवान नारायण की मूर्ति को स्नान कराके भोग लगाते हुए फूल, धूप, दीप से आरती उतारनी चाहिए। गरीब ब्राह्मणों को दान देना अति श्रेष्ठ है। यथा-सम्भव वस्त्र दान भी किया जा सकता है।

व्रत-कथा

एक बार धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान श्रीकृष्ण से पूछा—हे जनार्दन, आप मुझे योगिनी एकादशी की कथा सुनायें।

श्रीकृष्ण भगवान बोले—हे राजन! आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम योगिनी है। इसके व्रत से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं और इस लोक में भोग तथा परलोक में मुक्ति देने वाला है। हे राज राजेश्वर! यह एकादशी तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। इसके व्रत से पाप नष्ट हो जाते हैं। मैं आपसे पुराण में कही हुई कथा दोहराता हूं। ध्यानपूर्वक सुनो—

अलकापुरी नगरी में कुबेर यक्षों का राजा राज्य करता था। वह शिव भक्त था। उसकी पूजा के लिए एक हेममाली पुष्प लाया करता था, उसके विशालाक्षी नाम की अत्यन्त सुन्दर स्त्री थी। एक दिन वह मानसरोवर से पुष्प ले आया, परन्तु कामासक्त होने के कारण पुष्पों को रखकर अपनी स्त्री के साथ रमण करने लगा और दोपहर तक न गया। जब राजा कुबेर को उसकी राह देखते-देखते दोपहर हो गयी तो उसने क्रोधपूर्वक अपने सेवकों को आज्ञा दी कि तुम लोग जाकर हेममाली का पता लगाओ कि अभी तक पुष्प क्यों नहीं लाया है ? जब सेवकों ने उसका पता लगा लिया तो वह कुबेर के पास आकर कहने लगे—हे राजन्! वह माली अभी तक अपनी स्त्री के साथ रमण कर रहा है। सेवकों की इस बात को सुनकर कुबेर ने हेममाली को बुलाने की आज्ञा दी। हेममाली कुबेर के सम्मुख डर से कांपता हुआ उपस्थित हुआ।

उसको देखकर कुबेर को अत्यन्त क्रोध आया और उसके होठ फड़फड़ाने लगे। उसने कहा—रे पापी! महानीच कामी! तूने मेरे परम पूज्यनीय ईश्वरों के भी ईश्वर शिवजी का अनादर किया है। इससे मैं तुझे श्राप देता हूं कि तू स्त्री का वियोग भोगेगा और मृत्युलोक में जाकर कोढ़ी होगा।

कुबेर के श्राप से हेममाली कोढ़ी हो गया था। भटकता-भटकता एक दिन वह एक आश्रम में पहुंचा। वह आश्रम मार्कण्डेय ऋषि का था। हेममाली को दुःखी और कोढ़ी देखकर ऋषि ने पूछा—"यह तुम्हारा कैसा रूप हो गया है। मैंने तपोबल से जाना है तुम्हारी काया तो बड़ी ही सुन्दर थी।"

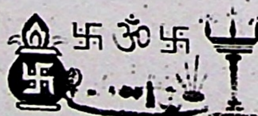
हाथ जोड़कर हेममाली बोला—"हे मुनि! मैं यक्षराज कुबेर का निजि सेवक था। मेरा नाम हेममाली है। मैं राजा की पूजा के लिए नित्यप्रति पुष्प लाया करता था। एक दिन अपनी स्त्री के साथ विहार करते-करते देर हो गई और दोपहर तक पुष्प लेकर न पहुंचा। उन्होंने मुझे श्राप दिया कि तू अपनी स्त्री का वियोग भोग और मृत्यु लोक में जाकर कोढ़ी बन तथा दुःख भोग। इससे मैं कोढ़ी हो गया हूं और महान दुःख भोग रहा हूं अतः आप कोई ऐसा उपाय बतलाइये जिससे मेरी मुक्ति हो।"

इस पर मार्कण्डेय ऋषि बोले—क्योंकि तूने मेरे सन्मुख सत्य बोला है। इसलिए मैं तेरे उद्धार के लिए एक व्रत बताता हूं। यदि तू आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष की योगिनी नामक एकादशी का विधिपूर्वक व्रत करेगा, तो तेरे समस्त पाप नष्ट हो जायेंगे और तू ठीक हो जाएगा।

मार्कण्डेय ऋषि के ऐसे सुभाषित वचन सुनकर हेममाली ने योगिनी एकादशी व्रत किया। प्रभाव इतना प्रबल था कि वह अगले दिन ही दिव्य शरीर वाला हो गया।

आरती

भजमन नारायण नारायण नारायण।
श्रीमन्न नारायण नारायण नारायण।
आदित्य नारायण नारायण नारायण।
भास्कर नारायण नारायण नारायण।
सत्य नारायण नारायण नारायण।
श्री हरि नारायण नारायण नारायण।।



देवशयनी एकादशी

इस एकादशी को पद्मा एकादशी भी कहते हैं। पुराणों के उल्लेख के अनुसार इस दिन से लेकर चार मास तक भगवान आदित्य विष्णु (सूर्य भगवान) पाताल लोक में निवास करते हैं। इसी कारण इसे हरिशयनी एकादशी तथा कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी, प्रबोधिनी एकादशी कहते हैं क्योंकि प्रबोधिनी एकादशी को भगवान विष्णु प्रत्यागमन कहते हैं। भगवान शयन करते हैं इसलिए कृषि कार्यों को छोड़ विवाहादि सभी बन्द हो जाते हैं। इस व्रत से समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। एक बार ब्रह्मा ने इस व्रत के महत्व को देवर्षि नारद को सुनाया था।

समय

यह व्रत आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष में पड़ता है।

विधि

प्रातःकाल उठकर स्नानादि से निपटकर व्रत रखना चाहिए। सायंकाल प्रथम प्रहर में धूप, नैवेद्य इत्यादि से भगवान श्री हरि का पूजन करना चाहिए। प्रसाद वितरण करने के वाद बचा हुआ प्रसाद गाय को अवश्य खिलाना चाहिए।

व्रत-कथा

कहा जाता है—एक बार ब्रह्मा ने इस एकादशी व्रत के महत्व का वर्णन देवर्षि नारद से इस प्रकार किया कि सतयुग में मान्धाता नांम का चक्रवर्ती सम्राट राज्य करता था। तीन वर्षों तक वर्षा न होने के कारण एक बार भयंकर अकाल पड़ा था। इससे चारों ओर त्राहि-त्राहि मच गई तथा यज्ञ, हवन, पिंडदान, कथा, व्रत सभी में कमी हो गयी। प्रजा के इस कष्ट को न सह सकने के कारण मान्धाता वन को चल पड़े। जंगल में विचार करते हुए वे एक दिन ब्रह्माजी के पुत्र अँगिरा ऋषि के आश्रम में आ पहुंचे। उनको साष्टांग प्रणाम किया। ऋषि ने कुशलक्षेम पूछा और वन विचरण का कारण जानना चाहा। इस पर राजा ने कहा—हे ऋषिश्वर! सब प्रकार के धर्मों का पालन करने पर भी मेरे राज्य में भयंकर अकाल पड़ा है। आप इसका कारण बताइये ? इस पर ऋषि ने कहा—राजन्! सतयुग सब युगों में श्रेष्ठ है और इसमें धर्म अपने चारों चरणों पर खड़ा होता है। इस युग में केवल ब्राह्मण ही तप कर सकता है। आपके राज्य में एक शूद्र तप कर रहा है, इसी कारण यह कष्ट प्रजा को उठाना पड़ रहा है।

जब तक उसकी लीला समाप्त न की जायेगी, तब तक यही हाल रहेगा। उस शूद्र को मारने से ही इन सब पापों का नाश हो सकेगा।"

इस पर राजा बोले—हे मुनि! मैं उस निरपराध तपस्या करने वाले शूद्र को नहीं मार सकता। आप इस दोष से छूटने का कोई अन्य उपाय बताइये। तब ऋषि बोले—हे राजन! यदि तुम ऐसा ही चाहते हो तो आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की पद्मा नाम की एकादशी का विधिपूर्वक व्रत करो। इस व्रत के प्रभाव से तुम्हारे राज्य में वर्षा होगी और प्रजा सुख पायेगी क्योंकि इस एकादशी का व्रत सब सिद्धियों को देने वाला है और उपद्रवों को शांत करने तथा मोक्ष प्रदान करता है। इसे स्वयं तथा मन्त्रियों सहित करो। मुनि के इन वचनों को सुनकर राजा अपने नगर को वापिस आया और विधिपूर्वक पद्मा एकादशी का व्रत किया। उस व्रत के प्रभाव से राज्य में वर्षा हुई और मनुष्यों को सुख पहुंचा। इस एकादशी को देवशयनी एकादशी भी कहते हैं। व्रत के करने से विष्णु भगवान प्रसन्न होते हैं अतः मोक्ष की इच्छा करने वाले मनुष्यों को एकादशी का व्रत करना चाहिए। चातुर्मास्य व्रत भी इसी एकादशी के व्रत से शुरू किया जाता है।

एक समय कुन्ती-पुत्र युधिष्ठिर बोले—हे भगवन, आदित्य विष्णु भगवान का शयन व्रत किस प्रकार किया जाता है ? सो सब कृपापूर्वक कहिये। श्री कृष्ण बोले कि हे राजन्! अब मैं आपको विष्णु के शयन का व्रत कहता हूं अब आप ध्यान देकर सुनिए—

जब सूर्य भगवान कर्क राशि में स्थित हों, तब विष्णु भगवान को शयन करना चाहिए तथा विष्णु भगवान की मूर्ति के सामने उपस्थित होकर प्रार्थना करनी चाहिए कि हे प्रभु ! अब आप जब चार मास तक शयन करें, तब तक मेरे इस चातुर्मास्य व्रत को पूर्णतः निर्विघ्न रखें।

इस प्रकार विष्णु भगवान की स्तुति करके शुद्ध भाव से मनुष्यों को दातुन आदि के नियम को ग्रहण करना चाहिए। विष्णु भगवान के व्रत को शुरू करने के पांच काल वर्णन किये हैं। देवशयनी एकादशी से लेकर देवोत्थानी एकादशी तक चातुर्मास्य व्रत को शुरू करना चाहिए। द्वादशी, पूर्णमासी, अष्टमी या संक्रान्ति को व्रत प्रारम्भ करना चाहिए और कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी को समाप्त कर देना चाहिए। इसके व्रत से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य इस व्रत को प्रतिवर्ष करते हैं वह सूर्य के समान दैदीप्यमान विमान पर बैठकर विष्णु लोक को जाते हैं। हे राजन! अब आप इसका पृथक्-पृथक् फल सुनें—

जो मनुष्य सायंकाल देव मन्दिरों में देवताओं तथा ब्राह्मणों को दीप दान करते हैं वह सीधे स्वर्ग को जाते हैं।

जो मनुष्य भक्तिपूर्वक भगवान के चरणामृत लेते हैं वह इस संसार के आवागमन चक्र से छूट जाते हैं। जो विष्णु मन्दिर में नित्य प्रति एक सौ आठ

बार गायत्री मंत्र का जाप करते हैं वह पापों में लिप्त नहीं होते। जो मनुष्य पुराण तथा धर्मशास्त्र को सुनते हैं और वेदपाठी ब्राह्मण को वस्त्रों का दान करते हैं वे दानी, धनी, ज्ञानी और कीर्तिवान होते हैं। जो मनुष्य भगवान या शिवजी का स्मरण करते हैं और अन्त में उनकी प्रतिमा दान करते हैं वह पापों से रहित होकर गुणवान बनते हैं। जो मनुष्य सूर्यनारायण को अर्घ्य देते हैं और समाप्ति में स्वर्ण या गौ दान करते हैं, उनको पूरी आयु की स्वस्थ देह प्राप्त होती है तथा कीर्ति, धन और बल पाते हैं। चातुर्मास्य व्रत करने वाले मनुष्य सब पापों से छूट जाते हैं और अन्त में स्वर्ग को जाते हैं। जो शिवजी या विष्णु भगवान का देवालय में गान करते हैं उन्हें रात्रि जागरण का फल मिलता है। जो मनुष्य चातुर्मास्य व्रत करते हैं उनको उत्तम ध्वनि वाला घण्टा दान करना चाहिए। इस प्रकार स्तुति करनी चाहिए—"हे भगवान! हे जगत्पति!! आप पापों का नाश करने और न करने योग्य कार्यों को करने से जो पाप उत्पन्न हुए हैं उनको नष्ट कीजिये।" चातुर्मास्य व्रत के अन्दर जो नित्य प्रति ब्राह्मणों का चरणामृत पान करते हैं, वे समस्त पापों तथा दुःखों से छूट जाते हैं और वे पुत्रवान, आयुवान और लक्ष्मीवान होते हैं।

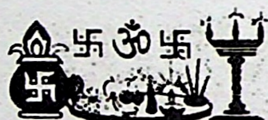
चातुर्मास्य व्रत के समाप्त हो जाने के बाद ही गौ दान करनी चाहिए। यदि गौ दान न कर सका तो वस्त्र दान अवश्य करना चाहिए। जो ब्राह्मणों को नित्य-प्रति नमस्कार करते हैं—उनका जीवन सफल हो जाता है और समस्त पापों से मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं।

हे कुन्ती पुत्र! इस चातुर्मास्य व्रत को करने वाला मनुष्य गन्धर्व विद्या में निपुण और स्त्रियों का प्रिय होता है। जो मनुष्य चातुर्मास्य व्रत में ब्राह्मण को शाक, फल आदि देते हैं और अन्त में यथाशक्ति दान-दक्षिणा, वस्त्र आदि देते हैं वह सुखी राज योगी बनते हैं। शाक और फल देवता तथा मुनियों को प्रिय हैं। अतः उसके देने से देवता प्रसन्न होते हैं। जो मनुष्य इस व्रत में प्रतिदिन सोंठ, मिर्च, पीपल और दक्षिणा के साथ दान करते हैं और व्रत के अन्त में स्वर्ण की सोंठ, मिर्च आदि दान देते हैं वे लगभग सौ वर्ष तक जीते हैं और अन्त में स्वर्ग को [redacted] हैं। जो तम्बाकू खाना छोड़ देते हैं—उनसे देवता प्रसन्न होते हैं और अनन्त धन देते हैं। इस व्रत में जो मनुष्य लक्ष्मी या पार्वती की प्रसन्नता के लिए हल्दी दान करते हैं और अन्त में चांदी के पात्र में हल्दी रखकर दान देते हैं, वे [redacted] अपने पति के साथ और पति अपनी पत्नी के [redacted] सुख भोगते हैं। इससे उन्हें [redacted]य, अक्षय धन तथा सुपात्र सन्तान मिलती है और उनकी देवलोक में पूजा होती है। इस व्रत में जो मनुष्य शिवजी और पार्वती जी की पूजा करते हैं तथा द[redacted] में वस्त्र, स्वर्ण आदि दान करते हैं और व्रत के शुरू में शिवलिंग की स्थापना करते हैं, गौ, बैल दान करते हैं और ब्राह्मणों को मीठा भोजन कराते हैं उन्हें सम्पत्ति और

कीर्ति मिलती है और इस लोक में सुख भोगकर अन्त में शिवलोक को जाते हैं, इसमें वामन भगवान की प्रसन्नता के लिए ब्राह्मणों को दहीयुक्त भात खिलाना चाहिए। यदि वह नित्य न हो सके तो अष्टमी, अमावस्या, पूर्णमासी और प्रत्येक रविवार या शुक्रवार को खिलाना चाहिए। इस व्रत की समाप्ति में भूमि का दान करना चाहिए। यदि भूमिदान न हो सके तो वस्तु और स्वर्ण से युक्त पादुका का दान करना चाहिए। ऐसा करने से मनुष्य धन-धान्य तथा सुकुलीन पुत्र प्राप्त करता है और अपने लिये स्वर्ग का मार्ग प्रशस्त करता है।

विष्णु वन्दना

ॐ जय विष्णु जग दाता।
जग पालक जग अन्नदाता।।
ॐ जय विष्णु····।
रत्न जटित मुकुट मुख मन्डल सोहें।
गले वैजयन्ती माला कर चक्र सोहें
करुणा के सागर दीनन के सुख दाता।।
ॐ जय विष्णु····।



कामिका एकादशी

यह व्रत पवित्रा के नाम से भी जाना जाता है। यह सब प्रकार के पापों और दु:खों का नाश करने वाली है। इसकी कथा सुनने से वाजपेय यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

समय

यह व्रत श्रावण की कृष्ण पक्ष एकादशी को रक्खा जाता है।

विधि

प्रात:काल स्नानादि से छुट्टी पाकर भगवान विष्णु की मूर्ति को पंचामृत में स्नान कराके भोग लगाना चाहिए। आचमन के बाद धूप, दीप, चन्दन, रोली, मोती आदि सुगन्धित पदार्थों से आरती उतारनी चाहिए। ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए। इस व्रत से मनुष्य सब कष्टों से मुक्ति पाता है। सुफल मनोरथ परिपूर्ण होते हैं।

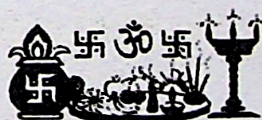
व्रत-कथा

मुनि सुदीप बोले—हे धर्मराज ! जो फल गङ्गा, काशी, नैमिषारण्य और पुष्कर में स्नान करने से प्राप्त नहीं होता वह कामिका एकादशी का व्रत कर भगवान विष्णु का पूजन करने के पश्चात् प्राप्त हो जाता है। इसलिए सुत, सुख-संपदा और स्वर्ग की प्राप्ति के लिए इसका व्रत अवश्य करना चाहिए।

हे राजन ! केदार और कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण के समय स्नान करने से, तालाब, बगीचा और स्वर्ण के सहित पृथ्वी दान करने से, सिंह राशि के गुरू में गोदावरी व गढ़गङ्गा में स्नान करने से, सामग्री सहित ब्याई हुई गौ दान करने से, अध्यात्म विद्या के अध्ययन करने से, जीवों की रक्षा करने से और हिंसा का परित्याग करने से जिस फल की प्राप्ति होती है, वह कामिका एकादशी के व्रत करने मात्र से प्राप्त हो जाती है। इसलिए इसका अवश्य व्रत करना चाहिए।

हे राजन ! सोना और चांदी के दान करने से तथा रत्न, मुक्ता मणियों से पूजा करने से विष्णु भगवान इतने प्रसन्न नहीं होते, जितने तुलसी पत्र से प्रसन्न हुआ करते हैं, इसलिए इस दिन, चोरी, हिंसा, क्रोध, झगड़ा, लड़ाई का त्याग कर देना चाहिए। इस व्रत को करने से मन की इच्छा पूरी होती है। जो भी स्त्री-पुरुष विधि-विधान से इसका व्रत करते हैं अथवा चित्त लगाकर इसकी कथा सुनते हैं—वे समस्त प्रकार के पाप और दुःखों से रहित होकर इस लोक में समस्त सुखों का उपभोग करते हुए अन्त में सद्गति को प्राप्त कर लिया करते हैं। इसलिए सुख और मोक्ष चाहने वाले को इसका व्रत अवश्य करना चाहिए।

इसका नाम पवित्रा इसलिए है कि यह पुत्रों के सहित सब सुखों को प्रदान करने वाली, सब पापों को दूर करने वाली और सद्गति को प्राप्त करने वाली है। इसमें भी विष्णु भगवान की ही आरती की जाती है।



अजा एकादशी

इस व्रत को तीन नामों से जाना जाता है। इसे जया, कामिका तथा अजा एकादशी भी कहते हैं। यह बहुत प्रसिद्ध व्रत है।

समय

यह व्रत भाद्रपद कृष्ण पक्ष की एकादशी को किया जाता है।

विधि

इस दिन व्रत रखकर भगवान विष्णु की पूजा करनी चाहिए। रात्रि जागरण व्रत धारण करने से समस्त कष्ट नष्ट हो जाते हैं। यह व्रत राजा हरिश्चन्द्र से जुड़ा हुआ है। शेष पूजन समान है।

व्रत-कथा

सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र की कथा सभी जानते हैं। जब ऋषि विश्वामित्र को सब कुछ दान करने के बाद वे श्मशान घाट पर चाण्डाल की नौकरी कर रहे थे तो एक दिन उनकी मुलाकात गौतम ऋषि से हो गयी। राजा ने सारी कथा उनको कह सुनाई। तब ऋषि ने उसे जया एकादशी का व्रत करने की सलाह दी। हरिश्चन्द्र ने यह व्रत करना आरम्भ कर दिया। इस बीच जब राजा के पुत्र रोहित को सर्प ने दंश मारा और श्मशान में राजा ने रानी से श्मशान कर मांगा। मगर असहाय रानी के पास कुछ न था। रानी ने साड़ी चीर कर श्मशान कर चुकाया। सत्य तथा व्रत के प्रभाव से उस समय भगवान वहां साक्षात् प्रकट हुए तथा राजा की प्रशंसा की। भगवान की कृपा से रोहित जीवित हो गया। इस प्रकार व्रत के प्रभाव से तीनों प्राणियों ने चिरकाल तक सुख भोगा और फिर स्वर्ग को चले गये।

इस व्रत में विष्णु भगवान की ही आरती की जाती है।



विष्णु परिवर्तिनी एकादशी

इसे पद्मा एकादशी भी कहते हैं। यह श्री लक्ष्मी जी का परम आह्लादकारी व्रत है। इस दिन भगवान विष्णु क्षीर सागर में शेष शैया पर शयन करते हुए करवट बदलते हैं। इसलिए इसको करवटनी एकादशी भी कहा जाता है।

समय

यह व्रत भाद्रपद शुक्ल पक्ष की एकादशी को किया जाता है।

विधि

अन्य व्रतों के समान इसमें भी प्रातः कार्यों से निवृत्त होकर व्रत रखना

चाहिये। धूप-दीप, जलाकर विष्णु तथा लक्ष्मी जी की आरती करनी चाहिए। प्रसाद बांटने के बाद स्वयं प्रसाद ग्रहण करना चाहिए।

व्रत-कथा

धर्मराज युधिष्ठिर के प्रश्न पर भगवान श्रीकृष्ण ने एकादशी की कथा सुनाते हुए कहा—"हे युधिष्ठिर इस दिन विष्णु भगवान करवट बदलते हैं। इसीलिए इसे परिवर्तिनी एकादशी कहा जाता है।"

इस पर श्री युधिष्ठिर बोले—"हे भगवन ! आपके वचनों को सुनकर मुझे महान संदेह हो रहा है कि आप किस प्रकार सोते तथा करवट बदलते हैं ? आपने बलि को क्यों जीता और वामन रूप धारण करके क्या-क्या लीलायें की हैं ? चातुर्मास्य की व्रत विधि क्या है ? आपके शयन करने पर मनुष्य का क्या कर्त्तव्य है ? विस्तारपूर्वक कहिए।"

तब श्रीकृष्ण भगवान बोले—"हे राजन ! अब आप पापों को दूर करने वाली कथा सुनो—त्रेता युग में बलि नाम का दानव था। वह अति भक्त, दानी, सत्यवादी तथा ब्राह्मणों की सेवा करने वाला था। वह सदैव यज्ञ, तप किया करता था। वह अपनी भक्ति के प्रभाव से स्वर्ग में इन्द्र के स्थान पर राज्य करने लगा। इन्द्र तथा देवता इस बात को सहन न कर सके और भगवान के पास जाकर प्रार्थना करने लगे, तब मैंने तेजस्वी ब्राह्मण बालक के रूप में राजा बलि को जीता।"

इस पर राजा युधिष्ठिर बोले—"हे प्रभु ! आपने वामन रूप धारण करके इस बलि को किस प्रकार जीता सो सविस्तार समझाइये ?"

श्रीकृष्ण भगवान बोले—"हे राजन् ! मैंने वामन अवतार करके राजा बलि से याचना की कि हे राजन, तुम मुझे तीन पैर भूमि दे दो इससे तुम्हारे लिए तीन लोक दान का फल प्राप्त होगा। राजा बलि ने इस छोटी सी याचना को स्वीकार कर लिया और भूमि देने को तैयार हो गया। तब मैंने अपना आकार बढ़ाया और भूलोक में पैर, भुवर लोक में जंघा, स्वर्ग लोक में कमर, महलोक में पेट, जन लोक में हृदय, तप लोक में कण्ठ और सत्यलोक में मुख को रखकर अपने सिर को ऊंचा उठा लिया।

उस समय सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, इन्द्र तथा अन्य देवता आदि शास्त्रानुसार मेरी स्तुति करने लगे। उस समय राजा को पकड़ा और पूछा कि हे राजन ! अब मैं तीसरा पैर कहां रक्खूं ? इतना सुनकर राजा बलि ने अपना सिर नीचे कर लिया। उस सिर पर अपना तीसरा पैर रख दिया और वह भक्त दानव पाताल को चला गया। जब मैंने उसे अत्यन्त विनीत पाया तो उससे कहा कि हे बलि ! मैं सदैव ही तुम्हारे पास रहूंगा। भादो के शुक्ल पक्ष की परिवर्तिनी नामक एकादशी के

दिन मेरी एक प्रतिमा राजा बलि के पास रहती है और एक क्षीर सागर शेषनाग पर शयन करती रहती है।" इस एकादशी को विष्णु भगवान सोते हुए करवट बदलते हैं, इस दिन त्रिलोकी के नाथ श्री विष्णु भगवान की पूजा की जाती है। इसमें चावल और दही रहित रूपा दान किया जाता है। इस दिन रात्रि को जागरण करना चाहिये। इस प्रकार व्रत करने से मनुष्य समस्त पापों से मुक्त होकर स्वर्ग लोक को जाता है। वह स्वर्ग लोक में जाकर चन्द्रमा के समान चमकते रहते हैं। उनको इस लोक तथा परलोक दोनों में यश मिलता है। जो इन पापों को नष्ट करने वाली एकादशी को सुनते हैं उन्हें अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। इस व्रत में श्री सत्यनारायण भगवान की आरती करने का प्रावधान है।

यह आरती श्री सत्यनारायण व्रत-कथा के अन्त में होती है।

आरती श्री लक्ष्मी नारायण जी की

ॐ जय लक्ष्मी रमणा श्री जय लक्ष्मी रमणा।
सत्यनारायण स्वामी जन पातक हरणा।।ॐ।।
रत्न जड़ित सिंहासन अद्भुत छवि राजै।
नारद कहत निरन्जन घण्टा ध्वनि बाजै।।ॐ।।
प्रकट भये कलिकारण द्विज को दरस दियो।
बूढ़ा ब्राह्मण बनकर कंचन महल कियो।।ॐ।।
दुरबल भील कराल इन पर कृपा करी।
चन्द्रचूड़ एक राजा जिनकी विपत्ति हरी।।ॐ।।
वैश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीनी।
सो फल भोग्यो प्रभुजी फेर स्तुति कीन्ही।।ॐ।।
भाव-भक्ति के कारण क्षण क्षण रूप धरो।
श्रद्धा धारण कीन्ही तिनको काज सरो।।ॐ।।
ग्वाल बाल संग राजा वन में भक्ति करी।
मनवांछित फल दीना दीनदयाल हरी।।ॐ।।
चढ़त प्रसाद सवाया, कदली फल मेवा।
धूप दीप तुलसी से राजी सत्यदेवा।।ॐ।।
श्रीसत्यनारायणजी की आरती जो कोई गावे।
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे।।ॐ।।
ऋद्धि-सिद्धि सुख-सम्पति जी भर पावे।।ॐ।।



पुत्रदा एकादशी

यह एकादशी पुत्रदा एकादशी के नाम से प्रचलित है। इसको धारण करने वाला मनुष्य शान्तिप्रिय, सुशील और आध्यात्मिक बनता है। इस दिन भगवान विष्णु के नाम पर व्रत रखकर पूजा की जाती है।

समय

इसका व्रत श्रावण मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी को किया जाता है।

विधि

पूजा–पाठ व आरती आदि करने के बाद इस दिन शाम को वेदपाठ करने वाले ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। सारा दिन भगवान की वन्दना में बिताना चाहिए। रात्रि में भगवान की मूर्ति के पास ही सोना चाहिए। इस व्रत को करने से निःसंतान को अवश्य पुत्र प्राप्त होता है। एक कहावत है 'विश्वासम् दायकम् फलम्' अर्थात् विश्वास और आस्था के साथ किया गया कार्य अवश्य ही पूरा होता है।

व्रत–कथा

पुराने समय में माहिष्मती नगरी में महीपति नामक राजा राज्य करते थे। वे अत्यन्त शान्तिप्रिय व धर्मात्मा थे। उनके कोई सन्तान न थी। इसलिए वह दुःखी रहते थे। एक बार राजा ने समस्त ऋषियों को बुलाया तथा पुत्र प्राप्ति का उपाय पूछा। परन्तु कोई भी उनकी समस्या का समाधान नहीं कर सका था। तब राजा महीपति अपने रथ पर सवार होकर जंगल को चल दिया था। मन में बहुत निराशा थी।

जंगल में एक मुनि का आश्रम देखकर राजा उस आश्रम में प्रवेश कर गया। सामने अपने भक्तों, शिष्यों के साथ लोमश ऋषि बैठे हुए थे।

राजा ने प्रणाम किया और बुझे मन से बैठ गया। तब लोमश ऋषि ने पूछा—"हे राजन ! कहिए कुशल तो हो। किसी प्रकार का आपको और प्रजा को कष्ट तो नहीं है ?"

—"हे दीनबन्धो ! आपकी कृपा से राज्य के सब अंग कुशल से हैं और प्रजा भी आनन्द से जीवन व्यतीत कर रही है परन्तु मेरे अभी तक कोई सन्तान नहीं हुई है। मैं इसीलिए रात–दिन बहुत दुःखी रहता हूं। अतः पुत्र प्राप्ति के लिए कोई उपाय बताइये।" राजा ने हाथ जोड़कर कहा।

इस पर लोमश ऋषि ने एक क्षण के लिये नेत्र बन्द किये और राजा के पूर्व जन्मों का विचार करने लगे, विचार करके बोले—हे ब्राह्मणों यह राजा पिछले

जन्म में अत्यन्त निर्धन था तथा बुरे कर्म किया करता था। वह एक गांव से दूसरे गांव में घूमा करता था तब ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी के दिन जब कि दो दिन से भूखा था दोपहर के समय एक जलाशय पर जल पीने गया। उस स्थान पर एक उसी समय की ब्याई हुई गाय जल पी रही थी। राजा ने उसको प्यासी हटा दिया और स्वयं जल पीने लगा। हे ब्राह्मणों ! इसीलिए राजा को यह दुःख भोगने पड़ रहे हैं। एकादशी के दिन भूखा रहने से उसको राजा होना पड़ा और प्यासी गऊ को हटाने से पुत्र के वियोग का दुःख भोगना पड़ रहा है।

इस पर राजा बोले—हे महर्षि ! शास्त्र में ऐसा लिखा है कि पुण्य से पाप नष्ट हो जाते हैं। इसलिए कृपा करके आप मेरे पूर्व जन्म के पाप नष्ट होने का उपाय बतलाइये क्योंकि उस पाप के क्षय होने से पुत्र रत्न की उत्पत्ति होगी। ब्राह्मण के ऐसे वचनों को सुनकर लोमश ऋषि बोले—हे राजन ! यदि श्रावण मास की शुक्ल पक्ष की पुत्रदा एकादशी का व्रत धारण करेंगे तो आपको पुत्र प्राप्त हो सकता है।

राजा प्रणाम करके वापस आ गया तथा यथासमय उसने पुत्रदा एकादशी का व्रत रखा और पुत्र को प्राप्त किया।



इन्दिरा एकादशी

यह एकादशी इन्दिरा के नाम से जानी जाती है। इसे पुरुष अधिक मात्रा में करते हैं।

समय

यह व्रत आश्विन कृष्ण पक्ष एकादशी को किया जाता है।

विधि

इस दिन शालिग्राम की पूजा कर व्रत रखना चाहिए। पवित्र होकर शालिग्राम को पंचामृत से स्नान कराकर वस्त्र पहनावें, भोग लगायें तथा आरती करें। पंचामृत वितरण करके ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए। इस व्रत से महापुण्य मिलता है।

व्रत-कथा

पुराने समय में राजा इन्द्रसेन माहिष्मती नगरी में राज्य करते थे। उनके माता-पिता दिवंगत हो चुके थे। अकस्मात् एक दिन स्वप्न में उन्हें मालूम हुआ

कि उनके माता-पिता यमलोक में परम कष्ट भोग रहे हैं। निद्रा टूटने पर वे बेहद चिन्तित हुए। किस प्रकार माता-पिता को इस यन्त्रणा से मुक्त करायें ? उन्होंने इस विषय पर अपने मन्त्री से परामर्श किया। मन्त्री ने अनेक विद्वानों को बुलाने का परामर्श दिया। ब्राह्मणों ने कहा—"राजन् ! यदि आप सकुटुम्ब इन्दिरा एकादशी का व्रत रखें तो आपके पित्तरों को मुक्ति मिल जायेगी। उस दिन आप ग्यारह ब्राह्मणों को भोजन करायें, दक्षिणा दें और शालिग्राम का पूजन कर तुलसी चढ़ायें तथा रात में मूर्ति के पास ही शयन करें। इससे आपके माता-पिता स्वर्ग लोक चले जायेंगे।"

राजा ने ऐसा ही किया। जब वह मन्दिर में सो रहा था तो भगवान ने उसे दर्शन देकर कहा—"हे राजन ! तुम्हारे व्रत के प्रभाव से तुम्हारे सभी पित्तर स्वर्ग पहुंच गये हैं।"

उस दिन से ही इस व्रत का महत्व बढ़ गया।

वन्दना

करत आरती नवब्रजनारी।
अगर कपूर सुगंधित बूका विविध
भांति की सौंझ संवारी।।
घंटा झालर शंख नृसिंहा, बिजै घंट धुनि परम सुखारी।
बंशी बीन मृदंग तंबूरा सहनाई बाजत है न्यारी।।
बरसत फूल गगन सों सुरगन देवबंधू नाचत दै तारी।
हरषत सखी करत न्यौछावर नारायण होवैं बलिहारी।।



पापांकुशा एकादशी

यह एकादशी पाप रूपी हाथी को पुण्य रूपी अंकुश से बेधने के कारण 'पापांकुशा' कहलाती है।

समय

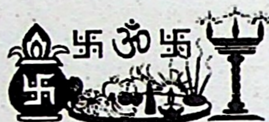
आश्विन शुक्ल पक्ष को एकादशी को मनायी जाती है।

विधि

इस दिन भगवान विष्णु की पूजा तथा ब्राह्मण को भोजन कराना वांछनीय है। इस व्रत से भगवान समस्त पापों को नष्ट कर देते हैं और सुख सम्पन्नता प्रदान करते हैं।

व्रत-कथा

विन्ध्य पर्वत पर महाक्रूर क्रोधन नामक एक बहेलिया रहता था। उसने अपनी सारी जिन्दगी हिंसा, लूटपाट, मद्यपान तथा मिथ्या भाषण में ही बिता दी। जीवन के अन्तिम क्षणों में जब यमराज ने क्रोधन को एक दिन पूर्व दरबार में लाने हेतु दूतों को आज्ञा दी। दूतों ने उसे यह बात बता दी। मृत्यु भय से डरकर वह नृशंस अंगिरा ऋषि के आश्रम में पहुंचा। ऋषिवर ने उसकी अनुनय-विनय से प्रसन्न होकर इस एकादशी का व्रत बता दिया। इस प्रकार वह क्रूर विधिपूर्वक इस व्रत को करके विष्णुलोक में चला गया। यमदूत हाथ ही मलते रह गये।



रमा एकादशी

समय

यह व्रत कार्तिक कृष्ण पक्ष की एकादशी को किया जाता है।

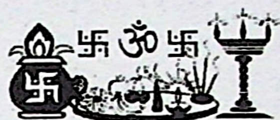
विधि

इस दिन भगवान केशव का सम्पूर्ण वस्तुओं से पूजन करना चाहिए। नैवेद्य तथा आरती करनी चाहिए। प्रसाद वितरित करके ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए, दान-दक्षिणा देनी चाहिए। इसे करने से कहा जाता है रमा, रम्भा आदि अप्सराएं स्वर्ग में सेवा किया करती हैं।

व्रत-कथा

पुराने समय में मुचकुन्द नाम का दानी, धर्मात्मा राजा राज्य किया करता था। उसे एकादशी व्रत पर पूरा विश्वास था। वह स्वयं भी प्रत्येक एकादशी को व्रत करता था और प्रजा पर भी यही नियम लागू कर रखा था। उसकी चन्द्रभागा नाम की एक पुत्री थी। वह पिता से भी अधिक इस व्रत पर विश्वास करती थी। उसका विवाह राजा चन्द्रसेन के पुत्र शोभन के साथ हुआ। वह राजा मुचकुन्द के साथ ही रहता था। शोभन ने भी यह व्रत किया। किन्तु वह क्षीणकाय था और भूख से व्याकुल हो मृत्यु को प्राप्त हो गया। इससे राजा तथा उसकी पुत्री अत्यन्त दुःखी हुए। शोभन को व्रत के प्रभाव से मन्दराचल पर्वत पर अवस्थित देवनगर

में स्थान मिला। उसकी सेवा में रम्भादि अप्सराएं लगी हुई थीं। अचानक एक दिन राजा मुचकुन्द मन्दराचल पर्वत पर टहलते हुए पहुँचा था, वहाँ अपने दामाद को देख विस्मित हो गया। घर आकर उसने अपनी पुत्री को सब वृत्तान्त कह सुनाया। समाचार पाकर चन्द्रभागा भी पति के पास चली गयी। वे दोनों सुख से पर्वत पर रम्भादि अप्सराओं से सेवित निवास करने लगे।



देवोत्थान एकादशी

(इसको देवथान एकादशी भी कहते हैं।)

समय

यह व्रत कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी को मनाया जाता है।

विधि

इस दिन घर की सफाई कर आँगन अथवा ओखली में एक बड़ा सा चित्र बनाया जाता है। उसके बाद पकवान, फल, सिंघाड़ा, गन्ना आदि अर्पित कर एक डलिया से ढक दिये जाते हैं। एक दीपक रात भर निरन्तर जलता रहता है।

व्रत-कथा

इस व्रत के ऊपर एक किंवदन्ती है कि भाद्रपद की एकादशी को ही भगवान ने शंखासुर नामक राक्षस को मारकर भारी थकावट से सो गये थे और कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी को ही आँखें खोली थीं। इस तिथि के बाद ही शादी, विवाहादि शुभ कार्य प्रारम्भ हो जाते हैं।



उत्पन्ना एकादशी

यह एकादशी भगवान श्रीकृष्ण की पूजा के लिए की जाती है। सुफल मनोरथदायक है।

समय

मार्गशीर्ष मास के कृष्ण पक्ष में व्रत रखा जाता है।

विधि

व्रत-धारक को दशमी के दिन रात को भोजन नहीं करना चाहिए। एकादशी के दिन ब्रह्म बेला में ही भगवान की पुष्प, जल, धूप, दीप, अक्षत से पूजन करके आरती करनी चाहिए। इस व्रत में केवल फल का ही भोग लगाया जाता है। यदि चोरी, दुराचार तथा परनिंदा जैसी भूल हो जाए तो सूर्य के सम्मुख नतमस्तक हो, क्षमा माँगनी चाहिए।

व्रत-कथा

एक समय का वृत्तान्त है महाबली मुर नामक दैत्य ने संग्राम में समस्त देवों को परास्त करके स्वर्ग के ऊपर अधिकार कर लिया। तब इन्द्र, वरुण, कुबेर, चन्द्र, सूर्य और दिग्पाल दुखित होकर कैलाश पर्वत पर चले गये और हाथ जोड़कर भगवान शंकर से प्रार्थना करते हुए इस प्रकार कहने लगे—"हे महादेव ! सब देवता मुर नामक दैत्य से दुखित होकर आपकी सेवा में उपस्थित हुए हैं अतएव उसे मारकर हम लोगों को सुखी करने की कृपा कीजिए।"

देवों के ये वाक्य सुनकर भगवान जगत-पति शंकर ने कहना आरम्भ किया—"हे देवताओं ! मैं उस मुर नामक महादैत्य को अभी मारकर आपको समस्त कष्टों से रहित कर देता परन्तु इस समय मैं घोर तपस्या में लगा हूँ। जिसमें क्रोध और हिंसा करना सर्वथा अनुचित है। यद्यपि किसी भी तपस्वी को क्रोध और हिंसा भूलकर भी नहीं करना चाहिए किन्तु फिर भी साधारण तपस्या में किसी आतताई को मारने से कोई पाप नहीं हुआ करता। हे देवों ! तुम मेरी शरण में आ चुके हो अतएव तुम्हारा उद्धार करना आवश्यक है किन्तु आपको भगवान विष्णु के पास क्षीर सागर जाने का कष्ट करना पड़ेगा। वहाँ जाकर उनकी प्रार्थना करने से वे उस महादैत्य को अवश्य नष्ट कर देंगे। इसलिए तुम्हारे थोड़े से कष्ट करने से वह दुष्ट भी मारा जायेगा और मेरी तपस्या में भी भंग नहीं होगा।" भगवान शंकर की यह बात सुनकर सब देवता विष्णु भगवान के पास गये और वहाँ जाकर उनसे प्रार्थना करते हुए कहने लगे—"हे जगदीश्वर ! ब्रह्म कुल में उत्पन्न नाड़ी जंघ नामक महादैत्य के पुत्र चन्द्रावली नामक नगरी के अधिपति मुर नामक महाबली असुर ने संग्राम में सब देवताओं को पराजित करके स्वर्गपुरी पर स्वयं अधिकार कर लिया है अतएव तमाम देवता दीनों की तरह इधर-उधर भटकते हुए अपना दुखमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। सो उस महादैत्य को मारकर देवों को सुखी करने

की कृपा कीजिए क्योंकि संसार में आपके सिवाय भक्तों का कष्ट हर कर उन्हें सुखी बनाने वाला स्वामी नहीं है। इसलिए शीघ्र कृपा कीजिए।"

देवों की इस प्रकार अनेक प्रार्थना सुनकर प्रसन्न होते हुए भगवान जगदीश्वर ने कहा—"हे देवों ! उस दुरात्मा दैत्य को मारकर तुम्हें शीघ्र सुखी बनाऊँगा। अतएव तुम्हें उसकी ओर से निश्चिंत हो जाना चाहिए।"

भगवान विष्णु के ये सुन्दर वाक्य सुनकर देवता बहुत प्रसन्न हुए। तत्पश्चात् देवों को साथ लेकर भगवान विष्णु ने ज्यों ही उस महादैत्य मुर को संग्राम के लिए ललकारा, तो ही वह दैत्यों की महासैन्य को सजाकर और नाना प्रकार के आयुधों को लेकर भगवान से युद्ध करने के लिए आ उपस्थित हुआ। इसके बाद देव और असुरों का युद्ध प्रारम्भ हो गया। भगवान की कृपा रूपी शक्ति को प्राप्त करके देवता लोग बड़े बलवान हो गये और असुरों को पराजित करते हुए उन्हें पृथ्वी पर सुलाने लगे। अपनी सेना देवों द्वारा हताहत होते देखकर मुर के क्रोध का कोई ठिकाना न रहा और कराल-काल के समान अपने बाणों को धनुष पर रखकर प्रलय काल के गद्य-मेद्य के समान देवों पर बाण-वर्षा करने लगा। बाण-वर्षा से विचलित होकर समस्त देवता—हे भगवान ! रक्षा करो, इस प्रकार चिल्लाते हुए भगवान से प्रार्थना करने लगे।

दैत्य को अपने ऊपर क्रोधित होकर शस्त्रास्त्र चलाते हुए देख विष्णु भगवान उसे भुलावा देने के लिए उसके आगे होकर भाग पड़े। लक्ष्मीपति को रण से भागता हुआ देखकर वह दैत्य मन में बड़ा हर्षित हुआ और इसके बाद उन्हें पकड़ने के लिए उनके पीछे-पीछे हो लिया। भगवान विष्णु हिमालय पर्वत की विशाल गुफा में चले गये और वहां जाकर देवों को अभय करने वाली अपनी शक्ति को प्रकट कर आराम से लेट गये। जिस समय वह दैत्य उस कन्दरा में पहुंचा तो उस समय उसने देखा कि एक अत्यन्त मनोहर कन्या सब आयुधों को लिए हुए युद्ध करने के लिए तैयार खड़ी है। उस भगवति देवमाया को देखकर वह महादैत्य ज्यों ही उन्हें मारने के लिए दौड़ा त्यों ही भगवती जगदम्बा ने तलवार से उसका सिर उड़ा दिया।

सभी देवता हर्षित होकर भगवती की प्रार्थना करने लगे। भगवान लक्ष्मीपति ने अपनी शक्ति को सम्वोधित करते हुए कहा—कल्याणि, मार्गशीर्ष, कृष्णा एकादशी को मेरे से उत्पन्न होकर तुमने मुर दैत्य का संहार किया है इसलिए तुम्हारा नाम उत्पन्ना एकादशी होगा और जो कोई व्यक्ति श्रद्धा-भक्ति से युक्त होकर तुम्हारा विधि-विधान से व्रत करेगा वह अन्त में सीधा मेरे लोक में चला जायेगा। हे अर्जुन ! इस प्रकार जो श्रद्धा-भक्ति से इस एकादशी के व्रत करेगा, अथवा इसके माहात्म्य को सुनेगा, वह समस्त संसारी सुखों को प्राप्त करता हुआ वैकुण्ठ में अनन्त सुखों को प्राप्त करेगा।

श्री जगजननी की आरती

जगजननी जय ! जय !! माँ जगजननी जय ! जय !!
भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय ! जय !!
जगजननी....

तू ही सत-चित-सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा।
सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव सुर-भूपा।।1।।
जगजननी....

आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी।
अमल अनन्त अगोचर अज आनंदराशी।।2।।
जगजननी....

अविकारी, अघहारी, अकल, कलाधारी।
कर्त्ता विधि, भर्त्ता हरि हर सँहारकारी।।3।।
जगजननी....

तू विधिवधू, रमा, तू उमा, महामाया।
मूलप्रकृति विद्या तू, तू जननी माया।।4।।
जगजननी....

राम, कृष्ण तू, सीता ब्रजरानी राधा।
तू, वाञ्छाकल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा।।5।।
जगजननी....

दश विद्या, नव दुर्गा नानाशस्त्रकरा।
अष्टमातृका योगिनि, नव नव रूप धरा।।6।।
जगजननी....

तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू।
तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डवलासिनि तू।।7।।
जगजननी....

सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या तू शोभाऽधारा।
विमसन विकट-स्वरूपा, प्रलयमयी धारा।।8।।
जगजननी....

तू ही स्नेहसुधामयि, तू अति गरलमना।
रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना।।9।।
जगजननी....

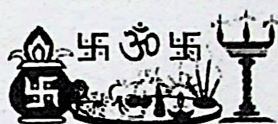
मूलाधारनिवासिनि, इस पर सिद्धिप्रदे।
कालातीता काली, कमला तू वरदे।।10।।

जगजननी····

शक्ति शक्तिधर तू नित्य अभेदमयी।
भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले! वेदत्रयी॥1॥
जगजननी····

हम अति दीन दुखी मां! विपत-जाल घेरे।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे॥2॥
जगजननी····

निज स्वभाववश जननी! दया दृष्टि कीजै।
करुणा कर करुणामयि! चरण-शरण दीजै॥3॥
जगजननी····



मोक्षदा एकादशी

जो भी व्यक्ति 'मोक्षदा' एकादशी का व्रत करता है, वह अपने कुटुम्ब सहित समस्त संसारी सुखों का उपभोग करता हुआ अन्त में मोक्ष प्राप्त करता है और प्रभु सेवा का अधिकारी होता है।

समय

यह व्रत मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी को रखा जाता है।

विधि

इस दिन तुलसी की मंजरी से और पाद्य, अर्घ्य, धूप, दीप, नैवेद्य से दामोदर भगवान की पूजा विधि-विधान से करते हुए चित्त लगाकर इसकी कथा सुननी चाहिए। ऐसा करने से उत्तम फल प्राप्त होता है।

व्रत-कथा

प्राचीन काल में चम्पक नामक एक अत्यन्त मनोहर नगर था। जिसमें बड़े-बड़े विद्वान् धर्मात्मा और वेद के जानने वाले ब्राह्मण रहा करते थे। उसी नगर में एक वैखानस नाम का राजा रहता था जो पुत्र की तरह प्रजा का पालन करता था। एक दिन उस राजा ने स्वप्न में अपने पिता को नरक में अनेक यातनाएं भोगते और विलाप करते देखा। स्वप्न में पिता को ऐसी बुरी दशा में देख राजा सारी रात सो नहीं

सका। प्रातःकाल उठकर चम्पक नरेश ने ब्राह्मणों के आगे हाथ जोड़कर कहा—हे ब्राह्मणों ! मैंने रात में अपने पिता को नरक में अनेक यातनाएं भोगते हुए और मुझे यह कहते हुए देखा है कि हे पुत्र, मैं अधोगति को प्राप्त हो गया हूं। अतएव मेरा उद्धार होने का शीघ्र प्रयत्न करो। कृपाकर कोई व्रत या कथा बताओ।

राजा के ये वाक्य सुनकर ब्राह्मणों ने कहा—हे राजा ! यहां से कुछ दूर त्रिकालदर्शी पर्वत का आश्रम है अतएव आप उनके पास जाकर इस समस्या पर विचार करने का कष्ट कीजिए। ब्राह्मणों ने ये वाक्य सुनकर, राजा ब्राह्मणों और मन्त्रियों को साथ लेकर महात्मा पर्वत मुनि के पास पहुंचा और मुनि से अपने पिता को नरक में यातनाएं भोगने वाली बात बतायी।

राजा की बात सुनकर मुनियों में सर्वश्रेष्ठ पर्वत ऋषि ने कहा—हे राजन! आपके पिता ने कामासक्त होकर न केवल दो स्त्रियों से विवाह किया था बल्कि एक से प्रेम करते हुए दूसरी को ऋतुदान से वंचित भी कर दिया था, यह उसी महापाप के कारण आपके पिता को नरक में जाकर महा दुःख भोगना पड़ रहा है।

अतः हे राजन्! आपको मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी का व्रत करना होगा। राजा वैखानस ने मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी का व्रत किया त्यों ही उसका पिता अपने पापों से मुक्त होकर उसे आशीर्वाद देता हुआ दिव्यरूप से स्वर्ग को चला गया। जो भी 'मोक्षदा' एकादशी का व्रत करेगा वह अपने कुटुम्ब सहित समस्त संसारी सुखों का उपभोग करता हुआ अन्त में मोक्ष प्राप्त करता है और प्रभु सेवा का अधिकारी होता है।



सफला एकादशी

यह व्रत करने से सभी कार्यों में सफलता मिलती है। इसीलिए इसे 'सफला एकादशी' कहते हैं।

समय

यह व्रत पौष कृष्ण पक्ष की एकादशी को किया जाता है।

विधि

इस दिन भगवान अच्युत की पूजा करनी चाहिए। इस व्रत को धारण

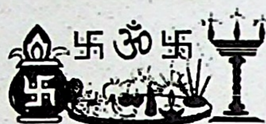
करने वालों को प्रातः स्नान करके भगवान की आरती करनी चाहिए। ब्राह्मणों तथा गरीबों को भोजन कराकर दान देना चाहिए। रात्रि में जागरण कर कीर्तन-पाठ करना अत्यन्त फलदायी है।

व्रत-कथा

बहुत समय पुरानी बात है चम्पावती नामक मनोहर नगरी में एक महिष्मान नाम का राजा राज्य किया करता था। उसके चार लड़के थे। परन्तु उनमें सबसे बड़ा लुम्पक नाम वाला लड़का बड़ा पापी और व्यभिचारी था। उसका काम जुआ खेलना, पर-स्त्रियों से व्यभिचार करना, वेश्याओं के साथ रहना, मद्यपान करना, चोरी करना, असत्य बोलना, हिंसा करना और देव-ब्राह्मण, सन्त और गुरुजनों की निन्दा, अपमान करना था। अपने पुत्र के आचरण को देखकर राजा दुःखी हो गये और उसे अपने राज्य से निकाल दिया। राज्य से निकाल दिये जाने के बाद लुम्पक एक निर्जन वन में एक पीपल के पेड़ के नीचे झोपड़ी बना वहीं गुजारा करने लगा। जब पौष कृष्ण पक्ष 'सफला एकादशी' का दिन आया तो दशमी की रात्रि को इतनी अधिक ठण्ड पड़ी कि उस रात्रि को पल भर भी न सो सका। उस पापी को उस दिन कोई शिकार भी न मिला था, अतएव वह भूखा-प्यासा उस पीपल के पेड़ के नीचे अचेत पड़ा रहा। सफला एकादशी की दोपहर के समय वह भूखा-प्यासा भोजन की खोज में चला, परन्तु निर्बल होने के कारण वह किसी जीव की हिंसा न कर सका तब उसने जमीन पर पड़े हुए कुछ फलों को इकट्ठा किया और उसी पीपल के पेड़ के नीचे ले आया। उस समय सूर्य भगवान अस्ताचल पर पहुंचकर लुप्त हो चुके थे। उस दिन उसे इतना कष्ट हुआ कि जन्म से पहले उसने कभी ऐसे दुःख का अनुभव नहीं किया था। विपत्ति के समय परमेश्वर भी याद आ जाता है, अतः तब उस पापात्मा को परमेश्वर भी स्मरण हो आया और वह पिता के राज्य-सुख की याद कर आंखों से आंसू बहाता हुआ इस प्रकार परमेश्वर की प्रार्थना करने लगा—हे प्रभु ! मैं अपने पापों को याद करके बड़ा दुखित हो रहा हूं। अतएव आप प्रसन्न होकर पापों के सहित मेरे कष्टों को नष्ट करने की कृपा कीजिए। मैं आज सच्चे दिल से प्रतिज्ञा कर कहता हूं कि अब से न तो किसी प्राणी को कष्ट दूंगा और न चोरी, हिंसा, मद्यपान, द्यूतक्रीड़ा, असत्य भाषण, गुरुजनों की निंदा एवं वेश्यागमन आदि कोई पाप कर्म भूलकर स्वप्न में भी नहीं करूंगा। मेरे समस्त अपराधों को क्षमा कीजिए।

इस प्रकार वह लुम्पक सारी रात सच्चे मन से ईश्वर की प्रार्थना-आराधना करता रहा। तब भगवान जगदीश्वर ने उसकी प्रार्थना पर प्रसन्न होते हुए उसके पिछले किये हुए पापों को क्षमा कर दिया। एकादशी की रात भगवान ने स्वप्न में राजा को दर्शन देकर अपने पुत्र को वापिस बुलाने के लिए कहा।

राजा ने एक सवार भेजकर अपने पुत्र लुम्पक को बुला लिया। अपनी नगरी में अपने पुत्र को आया देखकर राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और चम्पावती का राज्य अपने पुत्र को देकर रानी को साथ लेकर वन में चला गया। शेष जीवन भगवान की सेवा में व्यतीत कर दिया।



षटतिला एकादशी

इस व्रत के करने से समस्त पापों से मुक्ति मिलती है एवं धन-धान्य से पूर्ण हो जाते हैं। यह व्रत रखने से बैकुण्ठ लोक मिलता है।

समय

यह व्रत माघ कृष्ण पक्ष एकादशी को किया जाता है।

विधि

इस दिन भगवान विष्णु का पूजन करना चाहिए। कुछ लोग बैकुण्ठ रूप में भी पूजन करते हैं। इस दिन तिल दान करने चाहिएं। पंचामृत में तिल मिलाकर भगवान की मूर्ति को स्नान करायें। स्वयं भी तिल मिश्रित पदार्थ खायें और यही दान दें। रात्रि में भगवान की मूर्ति के पास सोयें। छः प्रकार के तिल प्रयोग किए जाने के कारण इसे 'षटतिला एकादशी' कहते हैं।

व्रत-कथा

प्राचीन काल में वाराणसी में एक गरीब अहीर रहता था। दीनता के कारण अनेक बार वह तथा उसके बच्चे भूखे रहते थे। जंगल से लकड़ी निर्वाह करता था। एक दिन वह अहीर किसी साहूकार के घर लकड़ी पहुंचाने गया। उसने देखा कि किसी उत्सव की पूर्व पाहिका तैयार की जा रही है। वह जानने की इच्छा से साहूकार से पूछ बैठा—"सेठजी, यह किस चीज की तैयारी हो रही है ?" तब सेठ ने कहा—"यह षटतिला व्रत की तैयारी है। इसे करने पर सब पापों से मुक्ति मिलती है और सुन्दर धन-धान्य से पूर्ण हो जाते हैं।"

यह सुनकर वह अहीर घर गया और अपनी स्त्री को सब वृत्तान्त कह सुनाया। उस दिन के पैसे से उसने सामान खरीदा और विधिपूर्वक एकादशी का व्रत किया। फलस्वरूप वह बहुत धनी हो गया और वाराणसी के एक

सम्मानित व्यक्ति के रूप में रहने लगा और शेष जीवन प्रभु-सेवा में व्यतीत किया।



जया एकादशी

इस व्रत से सभी पापों से छुटकारा मिल जाता है।

समय

यह व्रत माघ शुक्ल पक्ष एकादशी को किया जाता है।

विधि

इस दिन भगवान कृष्ण की पुष्प, जल, अक्षत, रोली, मौली तथा अन्य सुगंधित पदार्थों से पूजा करके आरती उतारनी चाहिए। भोग लगाये प्रसाद में से प्रसाद लेना चाहिए।

व्रत-कथा

बहुत पुराने समय की बात है। इन्द्र की सभा में एक गायक गंधर्व गीत गा रहा था। लेकिन उसका ध्यान अपनी सुन्दर स्त्री में लगा था, इसलिए बार-बार स्वर-लय भंग हो रहा था। इन्द्र को यह बात बहुत बुरी तरह खली और उन्होंने क्रोधित होकर उससे कहा—हे दुष्ट! तू जिसकी याद में मस्त है, वह राक्षसी हो जायेगी।

यह सुनकर वह बड़ा व्यथित हुआ और इन्द्र से क्षमा-याचना करने लगा। लेकिन इन्द्र ने कुछ न कहा।

वह घर चला गया। सचमुच उसे अपनी पत्नी पिशाचिनी के रूप में मिली। श्राप से मुक्त होने के लिए उसने अनेक यत्न किये लेकिन सब असफल हुए। एक दिन उसका मुनि नारद से साक्षात्कार हो गया। उन्होंने गंधर्व के दुःख का कारण पूछा, तो उसने सब कुछ बता दिया। इस पर नारद ने माघ शुक्ल पक्ष की 'जया एकादशी' का व्रत रखने को कहा। एकादशी के व्रत से वह फिर से अत्यन्त सौन्दर्यशाली हो गयी। वे फिर से सुखपूर्वक रहने लगे।



विजया एकादशी

इस व्रत के प्रभाव से दुःख-दरिद्र दूर हो जाते हैं। सभी कार्यों में सफलता मिलती है और सारे कष्ट दूर हो जाते हैं।

समय

यह व्रत फाल्गुन कृष्ण पक्ष एकादशी को किया जाता है।

विधि

इस दिन भगवान विष्णु की पूजा से अत्यन्त पुण्य मिलता है। पूजन में धूप, दीप, नैवेद्य, नारियल, रोली, मौली आदि चढ़ाया जाता है। सप्त-अन्न युक्त घृत-स्थापन किया जाता है। उसके ऊपर विष्णु की मूर्ति रखी जाती है। इस तिथि को 24 घंटे कीर्तन करके दिन-रात बिताने चाहिएं । द्वादशी के दिन अन्न भरा घड़ा ब्राह्मण को दिया जाता है।

व्रत-कथा

यह कथा भगवान श्री राम की लंका विजय से सम्बन्ध रखती है। त्रेता युग में मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी को जब चौदह वर्ष का बनवास हो गया तब वह श्री लक्ष्मणजी तथा मां जानकी सहित पंचवटी पर निवास करने लगे। उस जगह महापापी रावण ने सीताजी का हरण किया। इस दुःखद समाचार से श्री रामचन्द्रजी तथा लक्ष्मणजी अत्यन्त व्याकुल हुए और सीताजी की खोज में चल दिये। घूमते-घूमते मरणासन्न जटायु के पास जा पहुंचे। जटायु भी अपनी समस्त कथा सुनाकर स्वर्गलोक को चला गया। कुछ आगे चलकर उनकी सुग्रीव के साथ मित्रता हो गई और बाली का वध किया। पवन सुत हनुमान ने लंका में जाकर सीताजी से रामचन्द्रजी तथा सुग्रीव की मित्रता का वर्णन किया। वहां से लौट कर हनुमानजी श्री रामचन्द्रजी के पास आये और सारे समाचार कहे। श्री रामचन्द्रजी ने सुग्रीव की सम्मति लेकर वानरों, भालुओं की सेना सहित लंका को प्रस्थान किया। जब श्री रामचन्द्रजी समुद्र के किनारे पहुंच गये तब उन्होंने महान् अगाध, मगरमच्छ से युक्त, समुद्र को देखकर श्री लक्ष्मणजी से कहा—"हे लक्ष्मण ! इस महान् अगाध, मगरमच्छ से युक्त समुद्र को हम किस प्रकार पार कर सकेंगे ?"

श्री लक्ष्मण बोले—"हे प्रभु ! आप आदि पुरुष पुराण मर्यादा पुरुषोत्तम हो, यहां से करीब आधा योजन की दूरी पर कुमारी द्वीप में बकदालभ्य नाम के मुनि

रहते हैं। उन्होंने अनेकों नाम के ब्रह्मा देखे हैं। आप उनके पास जाकर इसका उपाय पूछिए।" लक्ष्मण जी के वचनों को सुनकर श्री रामचन्द्रजी बकदालभ्य ऋषि के पास गये और उनको प्रणाम करके बैठ गये। मुनि ने भी उनको मनुष्य रूप धारण किए हुए पुरुष को पुरुषोत्तम समझा और उनसे पूछा—"हे राम! आप कहां से पधारे हैं ?" श्री राम बोले कि "हे महर्षि! मैं अपनी वानर सेना सहित यहां आया हूं और रावण को जीतने लंका जा रहा हूं।"

तब मुनि जी ने उन्हें 'विजया एकादशी' व्रत को करने के लिए कहा। श्री रामचन्द्रजी ने व्रत किया और समुद्र पर पुल बांध लिया तथा विजय प्राप्त की।



आमल एकादशी

आंवले के वृक्ष में भगवान का निवास होने के कारण इसको आमल एकादशी कहते हैं।

समय

यह व्रत फाल्गुन शुक्ल पक्ष की एकादशी को किया जाता है।

विधि

व्रत करने वाले को स्नानादि क्रिया से निवृत्त होकर आंवले के वृक्ष को स्नान कराना होता है तथा धूप, दीप, चन्दन, रोली, फूल, चावल आदि से पूजन कर उसके नीचे ही ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए। इस दिन भोजन तथा दान देना यज्ञ के समान उत्तम माना गया है।

व्रत-कथा

प्राचीन काल में भारतवर्ष में चित्रसेन नामक एक राजा राज्य करते थे। जिनके राज्य में एकादशी व्रत का बहुत महत्व था। राजा, प्रजा सभी व्रत रखते थे। एक दिन राजा जंगल में शिकार खेलते-खेलते काफी दूर निकल गए तभी कुछ जंगली जातियों ने आकर उन्हें घेर लिया। म्लेच्छों ने राजा के ऊपर अस्त्र-शस्त्रों का कठिन प्रयोग किया मगर उन पर कोई प्रभाव न हुआ। यह देख वे चकित रह गये। जब उन जंगली जातियों की संख्या देखते-देखते बहुत बढ़ गयी तो राजा अचेत होकर

पृथ्वी पर गिर पड़े। उसी समय उनके शरीर से एक दिव्य शक्ति प्रकट हुयी जो उन समस्त राक्षसों को मारकर अदृश्य हो गयी। जब राजा की चेतना लौटी तो उन्होंने देखा कि समस्त म्लेच्छ मरे पड़े हैं। वे उधेड़-बुन में पड़ गए कि ये कैसे मरे ? तभी आकाशवाणी हुई—"हे राजन! ये समस्त राक्षस तुम्हारे 'आमल एकादशी' के प्रभाव से मरे हैं।" यह सुन राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उन्होंने वापिस लौटकर सारी प्रजा को 'आमल एकादशी' का माहात्म्य सुनाया। राक्षसों के विनाश से उनके राज्य में चैन की बंसी बजने लगी।



पाप मोचिनी एकादशी

इस व्रत के करने से समस्त पापों से मुक्ति मिल जाती है।

समय

यह व्रत चैत्र कृष्ण पक्ष एकादशी को किया जाता है।

विधि

इस दिन विष्णु भगवान की पूजा करके अर्घ्यदान देकर षोडशोपचार पूजन करके पूजा करनी चाहिए और ब्राह्मणों को दान करना चाहिए।

व्रत-कथा

प्राचीन काल में चैत्ररथ नामक वन था। उसमें अप्सरायें वास करती थीं, वहां हर समय बसन्त रहता था अर्थात् उस जगह सदैव तरह-तरह के पुष्प खिले रहते थे। उस जगह गन्धर्व कन्यायें विहार किया करती थीं। उस वन में इन्द्र अन्य देवताओं के साथ क्रीड़ा करता था। उस वन में एक मेधावी नामक मुनि भी तपस्या करते थे। एक दिन भंजुघोसी नामक एक अप्सरा उनको मोहित करने के लिए सितार बजाकर मधुर-मधुर गाने लगी। उस समय शिव के शत्रु कामदेव भी शिव भक्त मेधावी मुनि को जीतने के लिए तैयार हुए, कामदेव ने उस सुन्दर अप्सरा के भ्रू का धनुष बनाया, कटाक्ष को उसकी डोरी बनाई, उसके नेत्रों को बाण बनाया और कुचों को कुरी बनाया। उस भंजुघोषी अप्सरा को सेनापति बनाया। इस तरह कामदेव अपने शत्रु भक्त को जीतने को तैयार हुआ।

उस समय मेधावी मुनि भी युवा तथा हृष्ट-पुष्ट थे, उन्होंने यज्ञोपवीत

तथा दण्ड धारण कर रखा था। वे दूसरे कामदेव के समान शोभा पाते थे। उन मुनि को देखकर कामदेव के वश में हुई भंजुघोषी ने धीरे-धीरे मधुर वाणी से वीणा पर गाना शुरू किया। मेधावी भंजुघोषी के मधुर गाने तथा उसके सौंदर्य पर मोहित हो गए। वह अप्सरा उन मुनि को कामदेव से पीड़ित जानकर उनसे आलिंगन करने लगी, वह मुनि उसके सौंदर्य पर मोहित होकर शिव रहस्य को भूल गए और काम वशीभूत होकर उसके साथ रमण करने लगे। उस मुनि को काम के वशीभूत होने में बहुत समय बीत गया था। जब मुनि को समय का स्मरण आया तो यह अप्सरा उन्हें काल का रूप लगी।

उस अप्सरा को काल का रूप समझकर वह महान क्रोधित हुए और उस तप नाश करने वाली अप्सरा की तरफ क्रोध से देखने लगे, उनके अधर कांपने लगे और इन्द्रियां व्याकुल होने लगीं। तब मुनि उस अप्सरा से बोले ऐ दुष्टिनी! मेरे जप तप को नष्ट करने वाली तू अब मेरे श्राप से पिशाचिनी हो जा। तू महान् पापिन और दुराचारिणी है, तुझे धिक्कार है।

उस मुनि के क्रोधयुक्त श्राप से वह पिशाचिनी हो गई तब वह बोली—हे मुनि! अब क्रोध को त्याग कर मुझ पर प्रसन्न हो जाओ और इस श्राप का निवारण कीजिये क्योंकि विद्वानों ने कहा है साधुओं की संगत अच्छा फल देने वाली है, इसलिए आपके साथ मैंने तो बहुत वर्ष व्यतीत किये हैं। अतः अब आप मुझ पर प्रसन्न हो जाइये। तब मुनि को कुछ शान्ति मिली और उस पिशाचिनी से बोले—री दुष्टे! तूने मेरा बड़ा बुरा किया है परन्तु फिर भी मैं श्राप से छुटकारे का उपाय तुझे बताता हूं। चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की जो एकादशी है इसका नाम 'पाप मोचनी' है, इस एकादशी का व्रत करने से तू पिशाचिनी की देह से छूट जायेगी। इस प्रकार मुनि ने उसको समस्त विधि बतला दी और अपने पापों के प्रायश्चित के लिए अपने पिता-यवन ऋषि के पास गए। अपनी व्यथा कही, जबकि वह पहले से ही सब जान गए थे। और बोले—हे तात! तुम चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का विधि- विधान से व्रत करो जिससे समस्त पाप कट जायेंगे।

मुनि ने व्रत किया और पापों से मुक्ति पाकर स्वर्ग को प्राप्त किया। भंजुघोषी अप्सरा भी 'पाप मोचनी' का व्रत करके पूर्वतः स्त्री योनि में आ गई। उसका शरीर पिशाचिनी से सामान्य हो गया।



पद्मिनी एकादशी

मल मास या पुरुषोत्तम मास की कृष्ण पक्ष की एकादशी 'पद्मिनी एकादशी' कहलाती है। इस व्रत को अति उत्तम माना गया है।

समय

यह व्रत अधिक मास कृष्ण पक्ष को रखा जाता है।

विधि

पूजा-पाठ का उचित विधान करने के बाद राधा-कृष्ण और शिव-पार्वती की भी पूजा की जाती है।

व्रत-कथा

एक बार लंकापति रावण जब विश्व विजय करने निकला तो वह कीर्तिवीर्य सहस्त्रार्जुन से पराजित हो गया और बहुत दिनों तक बन्दीगृह में पड़ा रहा था। वहां वह बहुत हीनता महसूस करता रहा था। उसने अगस्त्य मुनि का स्मरण किया और उनकी कृपा से ही बन्दीगृह से आजाद हुआ। नारद को उसकी इस पराजय से बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने अगस्त्य मुनि से ही रावण की हार का कारण पूछा। मुनि ने बताया कि इस समय कीर्तिवीर्य अर्जुन को पराजित करने की शक्ति विष्णु के सिवाय किसी के पास नहीं है।

तब लंकापति ने लौंद की कृष्ण पक्ष की 'पद्मिनी एकादशी' का व्रत किया था और विजयश्री को प्राप्त हुआ।

विष्णु सहस्त्रनाम स्तोत्र

यस्य स्मरमात्रेण जन्म संसार बन्धनात्।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे।।
नमः समस्त भूतानामादिभूताय भूभृते।
अनेक रूप रूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे।।



परमा एकादशी

इस एकादशी को 'हरिबल्लभा एकादशी' भी कहते हैं।

समय

यह एकादशी पुरुषोत्तम मास (अधिक मास) की है। यह शुक्ल पक्ष को मनाई जाती है।

विधि

इस दिन स्नानादि करके विधि-विधान से पूजा करने के बाद विष्णु भगवान की उपासना की जाती है। अगर विष्णु पुराण या विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ किया जा सके तो अति श्रेष्ठ माना जाता है।

व्रत-कथा

प्राचीन काल में वभ्रु नामक एक दानी तथा प्रतापी राजा था। वह प्रतिदिन ब्राह्मणों को सौ गाएं दान करता था। उसी राज्य में प्रभावती नाम की एक बाल विधवा ब्राह्मणी रहती थी। भगवान विष्णु की परम भक्तिन थी। मल मास में नित्य स्नान कर विष्णु तथा शंकर की पूजा करती थी और 'हरिबल्लभा एकादशी' व्रत भी इस बीच वह लगातार करती थी।

देवयोग से राजा तथा बाल विधवा प्रभावती की मृत्यु एक ही दिन हुई। दोनों साथ ही धर्मराज के दरबार में पहुंचे। धर्मराज ने उठकर जितना स्वागत उस ब्राह्मणी का किया उतना ही उस राजा का भी किया। राजा प्रतिदिन सौ गाएं दान करता था। प्रभावती परमाभक्त थी। उसे भी बैकुण्ठ प्राप्त हुआ।





त्रयोदशी प्रदोष व्रत

यह व्रत करने वाले को सूर्योदय से पूर्व ब्रह्ममुहूर्त में उठकर नित्यकर्म से निवृत्त हो भगवान शंकर का ध्यान करना चाहिए। व्रत वाले दिन भोजन नहीं करना चाहिए। सायंकाल को जब सूर्यास्त में घण्टा भर शेष रह जावे तब स्नानादि कार्यों से निवृत्त होकर सफेद कपड़े धारण करके पूजन के स्थान को साफ-सुथरा तथा गाय के गोबर से लीप कर मंडप बनायें, मंडप को अच्छी तरह से सजा, पांच रंगों के मिश्रण से पद्माफूल की आकृति बनाकर कुशा का आसन बिछावें और आसन पर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके या 'उत्तराभिमुख' होकर बैठें और भगवान शंकर का पूजन करें।

'ॐ नमः शिवाय' इस मंत्र से जल चढ़ावें तथा जो फल उपलब्ध हो अर्पण करें।

नोट :—सूर्यास्त के बाद और रात्रि आने से पूर्व दोनों के बीच का समय प्रदोष कहलाता है।

त्रयोदशी माहात्म्य

त्रयोदशी प्रदोष धारक कभी दुःखी नहीं रहता है। उसके सभी पाप नाश हो जाते हैं। इस व्रत के करने से विधवा स्त्रियों को धर्म की प्राप्ति होती है और सुहागिन स्त्रियों का सुहाग अटल रहता है। बंदी कारागार से छूट जाता है। जो स्त्री-पुरुष जिस कामना को लेकर व्रत करते हैं, उनकी सभी कामनायें कैलाशपति शंकर पूरी करते हैं। सूतजी कहते हैं—त्रयोदशी व्रत करने वाले को सौ गऊदान का फल प्राप्त होता है। इस व्रत को जो विधि-विधान और सच्चे मन से करता है उसके सभी कष्टों का निवारण हो जाता है। व्रत-धारक को ग्यारह त्रयोदशी या पूरे साल 26 त्रयोदशी पूरी

करने के बाद उद्यापन करना चाहिए और अपनी मनोकामना पूर्ण होने की पूरी आस्था रखनी चाहिए। त्रयोदशी का माहात्म्य हम आगे दे रहे हैं।

प्रदोष व्रत का माहात्म्य

1. **रवि प्रदोष**—उम्र भर आरोग्यता के लिए रवि प्रदोष व्रत करना चाहिए।
2. **सोम प्रदोष**—अभीष्ट सिद्धि की कामना हेतु सोम प्रदोष व्रत करें।
3. **मंगल प्रदोष**—रोगों से मुक्ति और स्वास्थ्य हेतु मंगल प्रदोष व्रत करें।
4. **बुध प्रदोष**—सर्व कामना सिद्धि के लिए बुध प्रदोष करें।
5. **बृहस्पति प्रदोष**—शत्रु विनाश के लिए बृहस्पति प्रदोष करें।
6. **शुक्र प्रदोष**—सौभाग्य और स्त्री की समृद्धि के लिए शुक्र प्रदोष करें।
7. **शनि प्रदोष**—पुत्र प्राप्ति कामना हेतु शनि प्रदोष व्रत करें।

त्रयोदशी के दिन जो भी दिन पड़े उसी वार का त्रयोदशी प्रदोष व्रत करना चाहिए। तथा उसी दिन की कथा पढ़नी व सुननी चाहिए। रवि, सोम, शनि त्रयोदशी प्रदोष व्रत अवश्य करें। इससे अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है।



रवि त्रयोदशी प्रदोष

यह सर्वसुख, धन एवं आरोग्य देने वाला है। यह व्रत सभी मनोरथों को पूर्ण करता है।

समय

जब त्रयोदशी रविवार को हो तब रवि प्रदोष का व्रत किया जाता है।

विधि

आयु वृद्धि, स्वास्थ्य लाभ हेतु 'रवि त्रयोदशी' का व्रत करें। इसकी विधि इस प्रकार है—प्रातः स्नान करके निराहार रहकर शिव ध्यान में मग्न होकर शिव मंदिर में जाकर शंकर की पूजा करने के बाद अर्द्धपुण्ड और त्रिपुण्ड तिलक धारण करें, बेल-पत्र चढ़ावें, धूप, दीप, अक्षत से पूजा करें। मौसम का फल चढ़ावें (ॐ नमः शिवाय) मंत्र का रुद्राक्ष की माला से जप करें, ब्राह्मण को भोजन कराके यथा सामर्थ्य दक्षिणा दें। तत्पश्चात् मौन व्रत धारण करें, व्रती को स्वल्प मात्रा में क्षीर फल सेवन करना चाहिए, सत्य भाषण करना चाहिए। हवन आहुति देनी चाहिए।

आहुति मंत्र

"ओं ह्री क्ली नमः शिवाय, स्वाहा" से आहुति करनी चाहिए। इससे अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है। व्रती पृथ्वी शयन करें, एक बार भोजन करें। इससे सर्व कार्यसिद्धि होती है। श्रावण के महीने में तो इसका विशेष महत्व है। यह सर्वसुख धन आरोग्य देने वाला है। यह व्रत सब मनोरथों को पूर्ण करता है।

व्रत-कथा

दोहा—

आयु वृद्धि आरोग्यता, यदि चाहो कल्याण।
शिव पूजन विधिवत् करें, रहें सर्व सुख प्राण।।

एक समय सर्व प्राणियों के हितार्थ परम पावन भागीरथी के सुरम्य तट पर ऋषि समाज द्वारा विशाल गोष्ठी का आयोजन किया गया। विज्ञ महर्षियों की एकत्रित सभा में व्यास जी के परम शिष्य पुराणवेत्ता सूत जी हरि स्मरण करते हुए पधारे। सूत जी को देखते ही शौनकादि अट्ठासी हजार ऋषियों ने खड़े हो दंडवत् किया। महाज्ञानी सूत जी ने भक्त-भाव से ऋषियों को हृदय से लगाया तथा आशीर्वाद दिया। विद्वान् ऋषिगण और शिष्य आसन पर विराजमान हो गये।

मुनिगण विनीत भाव से पूछने लगे—हे दयालु हृदय ! कलि-काल में शंकर की भक्ति-आराधना किस उपाय से उपलब्ध होगी, बताने का कष्ट कीजिए, क्योंकि कलियुग में सर्व प्राणी पाप कर्म में रत तथा वेद शास्त्रों से विमुख रहेंगे। सामान्य जन अनेक संकटों से त्रस्त रहेंगे। हे मुनि श्रेष्ठ ! कलि-काल में सत्कर्म की ओर अभिरुचि न होगी। जब पुण्य क्षीण हो जायेंगे तो मनुष्य की बुद्धि असत् कर्मों की ओर प्रेरित होगी, अत: दुर्विचारी पुरुष वंश सहित समाप्त हो जायेंगे। इस अखिल भूमण्डल पर जो मनुष्य ज्ञानी होकर ज्ञान की शिक्षा नहीं देता उस पर परम पिता परमेश्वर कभी प्रसन्न नहीं होते। हे महामुने ! ऐसा कौन सा उत्तम व्रत है जिससे मनवाँछित फल की प्राप्ति होती हो, कृपा करके बतलाइये ?" ऐसा सुनकर दयालु हृदय-श्री सूत जी कहने लगे—हे मुनियों में श्रेष्ठ शौनक जी, आप धन्यवाद योग्य हैं। आपके विचार सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। आप वैष्णव अग्रगण्य हैं। क्योंकि आपके हृदय में सदा परहित की भावना रहती है। इसलिए हे शौनकादि ऋषियों सुनो! मैं उस व्रत को तुमसे कहता हूँ जिसके करने से सब पाप नष्ट हो जाते हैं, धन-वृद्धिकारक, दुःख विनाशक, सुख प्राप्त करने वाला, संतान देने वाला, मनवाँछित फल प्राप्त करने वाला, यह व्रत तुमको सुनाता हूँ जो किसी समय भगवान शंकर ने सती जी को बताया था। उनसे प्राप्त यह परम श्रेष्ठ उपदेश मेरे पूज्य पाद गुरूजी ने मुझे सुनाया था। जिसे आपको समय पाकर शुभ बेला में सुना रहा हूँ, बोलो उमापति शंकर की जय।

सूत जी कहने लगे—हे ऋषियों यह व्रत परम गोपनीय मंगलप्रद, संकट निवारक है।

शौनकादि ऋषि बोले—हे पूज्यवर महामते ! आपने यह व्रत परम गोपनीय मंगलप्रद, संकट निवारक बतलाया है, कृपया यह बताने का कष्ट करें कि यह व्रत किसने किया और क्या फल प्राप्त किया ?

श्री सूतजी बोले—हे विचारवान् ज्ञानियों ! आप शिव के परमभक्त हैं आपकी भक्ति देखकर व्रती पुरुषों की कथा कहता हूँ—

एक ग्राम में अति दीन ब्राह्मण निवास करता था। उसकी साध्वी स्त्री प्रदोष व्रत किया करती थी, उसके एक ही पुत्र था। एक समय का वृत्तांत है कि एक पुत्र गङ्गा स्नान के लिए गया। दुर्भाग्यवश मार्ग में चोरों ने उसे घेर लिया और वे कहने लगे कि हम तुझे मारेंगे, नहीं तो तू अपने पिता का गुप्त धन बतला दे। बालक दीन भाव से कहने लगा कि हे बन्धुओं ! हम अत्यन्त दुःखी दीन हैं। हमारे पास धन कहाँ है ? चोर फिर कहने लगे कि तेरे पास पोटली में क्या बंधा है ? बालक ने निःसंकोच उत्तर दिया कि मेरी माता ने मुझे रोटी बनाकर बाँध दी हैं। दूसरा चोर बोला कि भाई यह तो अति दीन दुःखी हृदय है, इसे छोड़िये। बालक इतनी बात सुनकर वहाँ से प्रस्थान करने लगा और एक नगर में पहुँचा। नगर के पास एक बरगद का पेड़ था, बालक वहाँ बैठ गया और थककर वृक्ष की छाया में सो गया, उस नगर के सिपाही चोरों की खोज कर रहे थे कि खोज करते-करते उस बालक के पास आ गये, सिपाही बालक को चोर समझकर राजा के समीप ले गए। राजा ने उसे कारावास की आज्ञा दे दी। उधर बालक की माँ भगवान शंकर जी का व्रत (प्रदोष व्रत) कर रही थी, उसी रात्रि को राजा को स्वप्न हुआ कि यह बालक चोर नहीं है, प्रातः छोड़ दो, नहीं तो आपका वैभव, राज्य सब शीघ्र ही नष्ट हो जायेगा। रात्रि समाप्त होने पर राजा ने उस बालक से सारा वृत्ताँत पूछा। बालक से सारा वृत्ताँत सुन राजा ने सिपाही भेज बालक के माता-पिता को पकड़वा कर बुला लिया। राजा ने उन्हें भयभीत देखा तो कहा कि तुम भय मत करो, तुम्हारा बालक निर्दोष है। हम तुम्हारी दरिद्रता देखकर पाँच गाँव दान में देते हैं। जिसकी दया से ब्राह्मण परिवार आनन्दित होने लगा। इस प्रकार जो कोई इस व्रत को करेगा उसे आनन्द प्राप्त होगा।



सोम त्रयोदशी प्रदोष व्रत

समय

जब त्रयोदशी सोमवार को हो तब सोम प्रदोष का व्रत किया जाता है।

माहात्म्य एवं विधि

सूत जी बोले हे ऋषिवरों ! अब मैं सोम त्रयोदशी व्रत का माहात्म्य वर्णन करता हूँ। इस दिन व्रत के करने से शिव-पार्वती प्रसन्न होते हैं। प्रातः स्नानादि से शुद्ध पवित्र हो, शिव-पार्वती का ध्यान करके पूजन करें और अर्घ्य दें।

"ओ३म् नमः शिवाय"

इस मंत्र का 108 बार जाप करें, फिर स्तुति करें—हे प्रभो ! मैं इस दुःख सागर में गोते खाता हुआ ऋण-भार से दबा, गृहदशा से ग्रसित हूँ, हे दयालु ! मेरी रक्षा कीजिए।

व्रत-कथा

शौनकादि ऋषि बोले—हे पूज्यवर महामते, आपने यह व्रत सम्पूर्ण कामनाओं के लिए ही बताया है, अब कृपा कर यह बताने का कष्ट करें कि यह व्रत किसने किया व क्या फल पाया ?

सूतजी बोले— एक नगर में एक ब्राह्मणी रहती थी। उसके पति का स्वर्गवास हो चुका था, कोई और उसका उत्तरदायी नहीं था। इसलिए सुबह होते ही वह अपने पुत्र को साथ लेकर भीख मांगने निकल जाती थी। भीख से जो मिलता था उसी से अपना पेट पालती थी तथा बच्चे का भी पेट भरती थी।

एक दिन जब ब्राह्मणी भिक्षा मांगकर लौट रही थी तो उसे एक लड़का मिला उसकी दशा बहुत खराब थी। ब्राह्मणी को उस पर दया आ गई। वह उसे अपने साथ ले आई।

वह लड़का विदर्भ का राजकुमार था। पड़ौसी राजा ने उसके पिता पर आक्रमण करके उसके राज्य पर कब्जा कर लिया था। इसलिए वह मारा-मारा फिर रहा था। ब्राह्मणी के आश्रम में वह ब्राह्मण कुमार की तरह पलने लगा। एक दिन ब्राह्मण कुमार और राजकुमार खेल रहे थे। उन्हें वहाँ गन्धर्व कन्याओं ने देख लिया। वे राजकुमार पर मोहित हो गईं। ब्राह्मण कुमार तो घर लौट आया लेकिन राजकुमार अंशुमती नामक गन्धर्व कन्या से बात करता रह गया। दूसरे दिन अंशुमती अपने माता-पिता से राजकुमार को मिलाने के लिए ले आई। उनको राजकुमार पसन्द आया, कुछ ही दिनों बाद अंशुमती के माता-पिता को शंकर

भगवान् ने स्वप्न में आदेश दिया कि वे अपनी कन्या का विवाह राजकुमार से कर दें, फलतः उन्होंने अंशुमती का विवाह राजकुमार से कर दिया।

ब्राह्मणी को ऋषियों ने आज्ञा दे रखी थी कि वह सदा प्रदोष व्रत करती रहे। इस व्रत के प्रभाव और राज गन्धर्व की सेनाओं व राजकुमार की सहायता से राजकुमार ने विदर्भ पर आक्रमण करके आक्रमणकारी राजा को मार भगाया और अपने पिता के राज्य को पुनः प्राप्त कर वहाँ आनन्द से राज्य करने लगा। राजकुमार ने ब्राह्मण कुमार को अपना प्रधानमंत्री बनाया।



मंगल त्रयोदशी प्रदोष व्रत

समय

जब त्रयोदशी मंगलवार को हो तब मंगल प्रदोष का व्रत किया जाता है।

विधि

सूतजी बोले—अब मैं मंगल त्रयोदशी प्रदोष व्रत का विधि-विधान कहता हूँ। मंगलवार का दिन व्याधियों का नाशक है। इस व्रत में एक समय व्रती को गेहूँ और गुड़ का भोजन करना चाहिए। देव प्रतिमा पर लाल रंग का फूल चढ़ाना और स्वयं लाल वस्त्र धारण करना चाहिए। इस व्रत के करने से मनुष्य सभी पापों व रोगों से मुक्त हो जाता है। इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं है। अब मैं आपको उस बुढ़िया की कथा सुनाता हूँ जिसने यह व्रत किया व मोक्ष को प्राप्त हुई।

व्रत-कथा

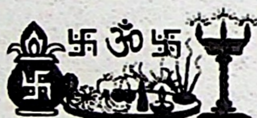
अत्यन्त प्राचीन काल की घटना है। एक नगर में एक बुढ़िया रहती थी। उसके मंगलिया नाम का एक पुत्र था। वृद्धा को हनुमान जी पर बड़ी श्रद्धा थी। वह हर एक मंगलवार को हनुमान जी का व्रत रखकर यथा विधि उनका भोग लगाती थी। इसके अलावा मंगलवार को न तो घर लीपती थी और ना ही मिट्टी खोदती थी।

इसी प्रकार से व्रत रखते हुए जब उसे काफी दिन बीत गए तो हनुमान जी ने सोचा कि चलो आज इस वृद्धा की परीक्षा लें। वे साधु का वेष बनाकर उसके द्वार पर जा पहुँचे और पुकारा—"है कोई हनुमान का भक्त, जो हमारी इच्छा को पूरी करे ?" वृद्धा ने यह पुकार सुनी तो बाहर आई और पूछा कि महाराज क्या

आज्ञा है ? साधु वेषधारी हनुमान जी बोले—"मैं बहुत भूखा हूँ, भोजन खाऊँगा। तू थोड़ी-सी जमीन लीप दे।" वृद्धा बड़ी दुविधा में पड़ गई। अन्त में हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि "हे महाराज, लीपने और मिट्टी खोदने के अतिरिक्त जो काम आप कहें वह मैं करने को तैयार हूँ।"

साधु ने तीन बार वचन लेने के बाद कहा—"तू अपने बेटे को बुला, मैं उसे औंधा लिटाकर उसकी पीठ पर आग जलाकर भोजन बनाऊंगा।" वृद्धा ने सुना तो उसके पैरों तले की धरती खिसक गई। मगर वह वचन हार चुकी थी। उसने मंगलिया को पुकार कर साधु महाराज के हवाले कर दिया, मगर साधु ऐसे मानने वाले न थे। उन्होंने वृद्धा के हाथों से ही मंगलिया को औंधा लिटाकर, उसकी पीठ पर आग जलवाई। आग जलाकर दुःखी मन से वृद्धा को बुलाकर कहा कि वह मंगलिया को पुकारे ताकि वह भी आकर भोग लगा ले। वृद्धा आँखों में आँसू भरकर कहने लगी कि अब आप उसका नाम लेकर मेरे हृदय को और न दुखाओ, लेकिन साधु महाराज न माने तो वृद्धा को भोजन के लिए मंगलिया को पुकारना पड़ा। पुकारने की देर थी कि मंगलिया बाहर से हंसता हुआ घर में दौड़ा आया, मंगलिया को जिन्दा देखकर बुढ़िया को सुखद आश्चर्य हुआ। वह साधु महाराज के चरणों में गिर पड़ी।

साधु महाराज ने उसे अपने असली रूप के दर्शन दिये। हनुमान जी को अपने आँगन में देखकर वृद्धा को लगा कि उसका जीवन सफल हो गया।



बुध त्रयोदशी प्रदोष व्रत

समय

जब त्रयोदशी बुधवार को हो तब बुध प्रदोष का व्रत किया जाता है।

विधि

1—इस व्रत में केवल एक बार भोजन करना पड़ता है।

2—इस व्रत में हरी वस्तुओं का प्रयोग किया जाना चाहिए।

3—यह व्रत शंकर भगवान का व्रत है। शंकर की पूजा—धूप, बेल, पत्रादि से की जाती है।

व्रत-कथा

प्राचीन काल की कथा है। एक बार एक व्यक्ति का नया-नया विवाह

हुआ था। वह जब दूसरी बार अपनी पत्नी को विदा कराने ससुराल पहुँचा तो उसने कहा कि वह बुधवार को अपनी पत्नी को विदा कराके ले जायेगा।

उसके सास-श्वसुर ने कहा—"बुधवार को पत्नी विदा कराना अशुभ होता है।"

"मेरे लिए शुभ हैं, मैं बुधवार को ही जाऊँगा।"

तब विवश होकर सास-श्वसुर को भारी मन से अपनी पुत्री को विदा करना पड़ा। वह आदमी बैलगाड़ी में अपनी पत्नी को बिठाकर चल दिया।

रास्ते में दूसरा नगर पड़ा तो उसकी पत्नी को प्यास लगी। वह बोली—"आप मेरे लिए पानी ला दो।"

वह आदमी लोटा लेकर पानी लेने चला गया।

जब आपस लौटा तो वह हैरान रह गया, उसने देखा कि उसकी पत्नी बैलगाड़ी में बैठी हंस-हंसकर किसी दूसरे आदमी से बातें कर रही थी, पानी का लोटा हाथ में पकड़ा हुआ था।

वह आदमी हैरान रह गया था। वह आदमी उसकी ही शक्ल-सूरत का था। वह उस आदमी से झगड़ा करने लगा। झगड़े में वहाँ भीड़ लग गई। पुलिस भी आ गयी। तब वह औरत हैरान हुई, वह किसे अपना पति समझे ? दोनों की शक्ल तो एक जैसी ही थीं।

राह में अपने-आपको लुटता देखकर वह आदमी रोने लगा। रोते हुए ही उसने भगवान से प्रार्थना की—"प्रभु, मेरा अपराध क्षमा करें। भविष्य में कभी भी बुधवार को पत्नी को विदा नहीं कराऊँगा।"

उसकी विनय से भगवान प्रसन्न हो गए और उसी समय दूसरा पुरुष अन्तर्ध्यान हो गया। तब वह आदमी प्रसन्न हो गया और अपनी पत्नी को साथ लेकर अपने नगर को आ गया।

उस दिन के बाद से वह सपत्नीक नियम से बुधवार प्रदोष व्रत रखने लगा।



बृहस्पति त्रयोदशी प्रदोष व्रत

समय

जब त्रयोदशी बृहस्पतिवार को हो तब बृहस्पति प्रदोष का व्रत किया जाता है।

विधि

इस व्रत की पूजा विधि अन्य प्रदोष व्रतों के समान-ही है।

व्रत-कथा

शत्रु विनाशक भक्ति प्रिय व्रत है यह सुख श्रेष्ठ।
वार मास तिथि सब से, है यह अति सुर श्रेष्ठ।।

एक बार इन्द्र और वृत्तासुर में घनघोर युद्ध हुआ, उस समय देवताओं ने दैत्य सेना पराजित कर नष्ट-भ्रष्ट कर दी। अपना विनाश देख वृत्तासुर अत्यन्त क्रोधित हो स्वयं युद्ध के लिए उद्यत हुआ।

मायावी असुर ने आसुरी माया से भयंकर विकराल युद्ध रूप धारण किया। इसके स्वरूप को देखकर इन्द्रादि सब देवगण भयभीत हो गये। तब देवताओं ने इन्द्र से परामर्श किया।

इन्द्र के परामर्श से परम गुरू बृहस्पति जी का आह्वान किया। गुरू तत्काल उठकर कहने लगे—"हे देवेन्द्र ! अब तुम इस वृत्तासुर की कथा ध्यान मग्न होकर सुनो। वृत्तासुर प्रथम बड़ा भारी तपस्वी कर्मनिष्ठ था। इसने गन्धमादन पर्वत पर उग्र तप करके शिवजी को प्रसन्न किया था। पूर्व समय में यह चित्ररथ नाम का राजा था। तुम्हारे समीपस्थ जो सुरम्य वन है, वह इसी राजा का था, अब साधु प्रवृत्ति विचारवान् महात्मा इसमें आनन्द लेते हैं। भगवान के दर्शन की अनुपम भूमि है। एक समय चित्ररथ इच्छा से कैलाश पर्वत पर चला गया। भगवान का स्वरूप और वाम अंग में जगदम्बा को विराजमान देखकर चित्ररथ हंसा और हाथ जोड़कर शिव शंकर से बोला—"हे प्रभो, हम मोह में फंसे हैं इसलिए स्त्रियों के वशीभूत रहते हैं किन्तु देवलोक में ऐसा दृष्टिगोचर नहीं हुआ कि स्त्री आलिंगन सभा में बैठे।" चित्ररथ के वचन सुनकर शिवजी हंसकर बोले कि हे राजन ! मेरा व्यवहार, दृष्टिकोण पृथक् है। मैंने मृत्युदाता काल कूट महाविष को पान किया है फिर भी तुम साधारण जनों की भांति मेरी हंसी करते हो। तभी पार्वती क्रोधित हो चित्ररथ की ओर देखती हुई कहने लगी—ओ दुष्ट ! तूने सर्वव्यापी महेश्वर और मेरी हंसी उड़ाई है, तुझे अपने कर्मों का फल भोगना पड़ेगा।

उपस्थित सभासद् महान् विशुद्ध प्रकृति के शास्त्र तत्वान्वेषी हैं और सनक-सनन्दन सनत्कुमार हैं, ये सर्व अज्ञान से नष्ट हो जाने पर शिव भक्ति में तत्पर हैं, अरे मूर्खराज ! तू अति चतुर है अतएव मैं तुझे वह शिक्षा दूंगी कि फिर तू ऐसे संतों के मजाक का दुःसाहस न करे। अब तू दैत्य स्वरूप धारण कर विमान से नीचे गिर, तुझे मैं ये श्राप देती हूं। अभी पृथ्वी पर चला जा। जब जगदम्बा भवानी ने चित्ररथ को ये श्राप दिया तो वह तत्क्षण विमान से गिर, राक्षस योनि

को प्राप्त हो गया और वह प्रख्यात महासुर वत्तासुर के नाम से मशहूर हुआ। तपष्टा नामक ऋषि ने उसे श्रेष्ट तप से उत्पन्न किया और अब वही वृत्तासुर शिव भक्ति में ब्रह्मचर्य से रहता है। इस कारण तुम उसे जीत नहीं सकते। अतः आप सब प्रदोष व्रत करो जिससे महाबली दैत्य पर विजय पा सको।

गुरूदेव के वचनानुसार 'गुरूवार त्रयोदशी प्रदोष व्रत' किया गया और विजय पाकर चैन से वास करने लगे।



शुक्र त्रयोदशी प्रदोष व्रत

समय

जब त्रयोदशी शुक्रवार को हो तब शुक्र प्रदोष का व्रत किया जाता है।

विधि

शुक्रवार त्रयोदशी प्रदोष व्रत पूजा विधि सोम प्रदोष के समान है। इसमें सफेद रंग के पदार्थ जैसे खीर आदि सेवन करने का विशेष महत्व है।

व्रत-कथा

प्राचीन काल की बात है। एक नगर में तीन मित्र रहते थे। वे एक दूसरे से अधिक विवेकी थे।

एक राजकुमार, दूसरा ब्राह्मण-पुत्र, तीसरा सेठ-पुत्र था। राजकुमार व ब्राह्मण-पुत्र का विवाह हो चुका था। सेठ-पुत्र का विवाह के बाद गौना नहीं हुआ था।

एक दिन तीनों मित्र आपस में स्त्रियों की चर्चा कर रहे थे। ब्राह्मण-पुत्र ने नारियों की प्रशंसा करते हुए कहा कि—"नारीहीन घर भूतों का डेरा होता है।" सेठ-पुत्र ने यह वचन सुनकर अपनी पत्नी लाने का तुरन्त निश्चय किया। सेठ-पुत्र अपने घर गया और माता-पिता से अपना निश्चय बताया। उन्होंने बेटे से कहा कि शुक्र देवता डूबे हुए हैं। इन दिनों बहू-बेटियों को उनके घर से विदा कराकर लाना शुभ नहीं, अतः शुक्रोदय के बाद तुम अपनी पत्नी को विदा करा लाना। सेठ-पुत्र अपनी जिद से टस से मस नहीं हुआ और अपनी ससुराल जा पहुंचा। सास-श्वसुर को उसके इरादे का पता चला। उन्होंने उसको समझाने की

कोशिश की, किन्तु वह नहीं माना। उन्हें विवश हो अपनी कन्या को विदा करना पड़ा। सास-श्वसुर से विदा होकर पति-पत्नी नगर से बाहर निकले ही थे कि उनकी गाड़ी का पहिया टूट गया और एक बैल की टांग टूट गई। पत्नी को भी काफी चोट आई। सेठ-पुत्र ने आगे चलने का प्रयत्न जारी रखा तभी डाकुओं से भेंट हो गई और वे धन-धान्य लूटकर ले गये। सेठ-पुत्र पत्नी सहित रोता-पीटता अपने घर पहुंचा। जाते ही उसे सांप ने डस लिया। उसके पिता ने वैद्यों को बुलाया उन्होंने देखने के बाद घोषणा की कि आपका पुत्र तीन दिन में मर जायेगा।

उसी समय इस घटना का पता ब्राह्मण-पुत्र को लगा। उसने सेठ से कहा कि आप लड़के को पत्नी सहित, बहू के घर (मायके) वापस भेज दो। यह सारी बाधाएं इसलिए आयी हैं कि आपका पुत्र शुक्रास्त में पत्नी को विदा करा लाया है, यदि वह वहां पहुंच गया तो बच जायेगा। सेठ को ब्राह्मण-पुत्र की बात जंच गई और अपनी पुत्र-बहू को वापिस लौटा दिया। वहां पहुंचते ही सेठ-पुत्र की हालत ठीक होनी आरम्भ हो गई। हालत ठीक होने के बाद जब शुक्रोदय हो गया तो सेठ-पुत्र आनन्दपूर्वक घर लौटा। अपने घर आने के बाद उसने आजन्म शुक्रवार (त्रयोदशी प्रदोष व्रत) रक्खे, शेष जीवन आनन्द से बीता और स्वर्ग को गया।



शनि त्रयोदशी प्रदोष व्रत

समय

जब त्रयोदशी शनिवार को हो तब शनि प्रदोष का व्रत किया जाता है।

विधि

इस व्रत की पूजा विधि अन्य प्रदोष व्रतों के समान ही है।

व्रत-कथा

गर्गाचार्य जी ने कहा—"हे महामते ! आपने शिव शंकर प्रसन्न हेतु समस्त प्रदोष व्रत का वर्णन किया। हम (शनि-प्रदोष विधि) सुनने की लालसा रखते हैं, आप कृपा करके सुनाइये।"

तब सूत जी बोले—"हे मुनिवरो ! निश्चयात्मक रूप से आपका शिव पार्वती के चरणों में अत्यन्त प्रेम है, मैं आपको शनि त्रयोदशी के व्रत के विधान और विधि को बतलाता हूं, सुनिये—

पुरातन कथा है कि एक निर्धन ब्राह्मण की स्त्री दरिद्रता से दुःखी हो शांडिल्य ऋषि के पास जाकर बोली—"हे महामुने ! मैं अत्यन्त दुःखी हूं, दुःख निवारण का उपाय बतलाइये। मेरे दोनों पुत्र आपकी शरण हैं। मेरे ज्येष्ठ पुत्र का नाम धर्म जो कि राजपुत्र हैं और लघु का नाम शुचिव्रत है, हम दरिद्र हैं, आप ही हमारा उद्धार कर सकते हैं।" इतनी बात सुन ऋषि ने शनि प्रदोष व्रत करने के लिए कहा। कुछ समय पश्चात् प्रदोष व्रत आया, तीनों ने व्रत का संकल्प लिया। छोटा लड़का जिसका नाम शुचिव्रत था एक तालाब पर स्नान करने को गया तो उसे मार्ग में एक सुवर्ण कलश धन से भरपूर मिला, उसको लेकर वह घर आया, प्रसन्न हो माता से कहा कि मां ! यह धन मार्ग में प्राप्त हुआ है। मां ने कहा—"बेटे यह शिव शंकर भगवान की कृपा से प्राप्त हुआ है। हम अब सदैव त्रयोदशी प्रदोष व्रत करते रहेंगे।"

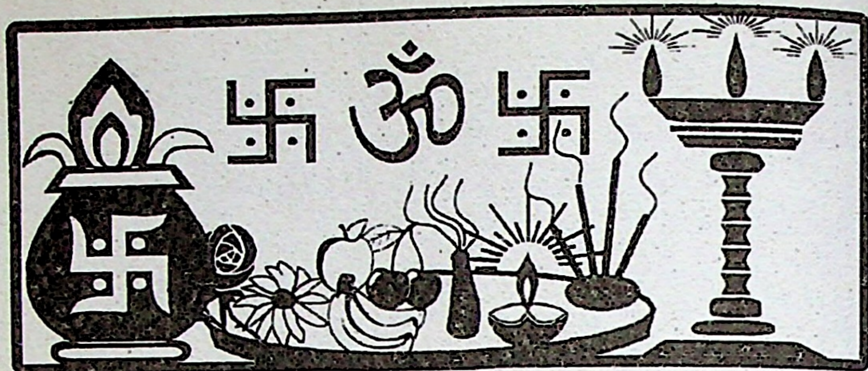
सारा परिवार धन-धान्य से सम्पन्न हो गया था। और जीवन सुख से बीतने लगा था।



त्रयोदशी व्रत उद्यापन विधि

कार्य सिद्ध होने पर (त्रयोदशी व्रत) का उद्यापन करें। एक दिन पूर्व गणेश पूजन करें। घर में अथवा मन्दिर में नृत्य कीर्तन द्वारा रात्रि को जागरण करें। प्रातः होते ही स्नानादि से निवृत्त हो रंगीन पद्मपुष्प रोली से मंडप बना उसमें शिव-पार्वती की प्रतिमा स्थापित कर पूजन करें। हवन करते समय उमा सहित **'ओ३म् नमः शिवाय'** मन्त्र से 108 बार खीर की आहुति दें। हवन के बाद आरती व शान्ति पाठ करके दो ब्राह्मणों को भोजन करा दक्षिणा दें और उनसे यह आशीर्वाद लें कि आपका व्रत पूर्ण हो। यह वचन दोनों पंडित कहें। जो स्त्री-पुरुष इस विधि-विधान से व्रत करके उद्यापन करते हैं उनकी सभी मनोकामना पूर्ण हो, मोक्ष को प्राप्त होते हैं। ऐसा स्कन्ध पुराण में कहा गया है।





सोलह सोमवार व्रत-कथा

पूजन-विधि

'देशकालौ संकीर्त्य अमुक कामना सिद्धाय व्रतं इदं करिष्ये।' इस प्रकार का संकल्प करने के पश्चात् 'महाकाव्य नमः शूलिने नमः सम्भूते नमः' इन मन्त्रों सहित षोडशोपचार पूजा करके सपरिवार देवता का पूजन करें। पूर्व आदि के क्रम से, 'ब्राह्मण पूजयामि, विष्णु पूजयामि, स्कंधं पूजयामि, महांकालं पूजयामि' इस तरह आह्वान आदि उपचार से पूजन करके 'चण्डाय नमः' मन्त्र से ईशान कोण में चण्डी की पूजा करें, तत्पश्चात् प्रार्थना करें। निम्न मंत्र का सस्वर उच्चारण करें—

मन्त्र

दश भुजाय त्रिनेत्राय पंच वक्त्राय शूलिने।
श्वेत वस्त्राय रूपाय सुश्वेताभरणाय च।
शंकराय महेशाय उमासहिताय वर्तमानः
त्राहिमां कृपया देवशरणः भव महेश्वर।

इस प्रकार प्रार्थना करके **'नन्दकेशवाराय नमः'** इस मन्त्र से आगे नन्दकेश्वर की पूजा करें तदनन्तर फूल लेकर अंग पूजा करें।

विधि

देवाधि देवाय नमः पादौ पूजयामि शंकराय नमः जघे पूजयामि, शिवाय नमः जानुनौं पूजयामि, शूलपाणये नमः कंठं पूजयामि स्थान वैनमः स्तनौं पूजयामि नीलकंठाय नमः कंठं पूजयामि स्थान वैनमः स्तनौं पूजयामि, श्री शिवाय नमः मुख पूजयामि, त्रिनेत्राय नमः नेत्रं पूजयामि, शशि भूषनाय नमः मुकुट पूजयामि, देवाधि देवाय नमः सर्वांग पूजयामि।

उद्यापन

व्रत की पूर्णता के लिए उद्यापन अवश्य करना चाहिए। चित्त-वित्त (धन और जीवन) यह सब चल है, इस बात को समझकर यत्नपूर्वक व्रत का उद्यापन करें और बैल के सहित सुवर्ण के महादेव पार्वती यथाशक्ति बनाकर, उसमें वित्त शाटयान करें और शिवलिंगतोभद्र बनाकर, जल से भरा हुआ और दो सफेद कपड़ों से ढका हुआ कलश रखें और वेणुमय ताम्र पात्र को कलश पर रखकर उस कलश को उत्तम मंडल में धरें। उसी कलश के ऊपर पार्वती सहित महादेव को स्थापित करके पूर्वोक्त मंत्रों से पूजा कर, यज्ञोपवीत, दुपट्टा, नाना प्रकार की खाने की वस्तुएं तथा धान्य चढ़ावें, पुष्प तथा पत्तों का मंडप सजावें। रूई की शय्या और दर्पण देवता के सामने रक्खें। और गीत और वाद्य के शब्दों से रतजगा करें और अपने गृह के अनुसार अग्नि स्थापना करें। तत्पश्चात् मन्त्रों द्वारा पलाश और छोंकरा की लकड़ी से एक सौ आठ बार चावल, तिल, घी से अलग-अलग हवन करें। तत्पश्चात् पूर्णाहुति कर स्विस्ठिकृतादि करके हवन के अन्त में समोहित हो सपत्नीक गुरू की पूजा, वस्त्र आभूषण, श्रेष्ठ ग्रह-सामग्री और सफेद कपिला सुशीला दूध देने वाली सवत्सा रत्न पुच्छा घण्टा आभूषणों से भूषित दक्षिणा सहित गऊ (शिवों ते प्रथिताम) यह कहकर दें और यह मन्त्र बोलें—

धेनुर्वे जोगतां माता नित्य विष्णुपदे स्थिता।
सवत्साचमया दत्ता पीयतां मे सदा शिवः।

तत्पश्चात् उत्तम तेरह ब्राह्मणों को भोजन कराकर उसको दक्षिणा सहित वस्त्र अलंकार छत्र दें और ताम्र पात्र, पकवान, फल और नाना प्रकार के भक्ष्य से युक्त तेरह घट ब्राह्मणों को दें। पूजा किये हुए देवता सम्पूर्ण सामग्री सहित देवता को तुम ग्रहण करो, जिससे हमारा व्रत पूर्ण हो और सदा शिव मुझ पर प्रसन्न हों, तीनों जगत के स्वामी को मैं ग्रहण करता हूं। शान्ति और कल्याण हो। यह कहकर ब्राह्मण मूर्ति को ग्रहण करे। हे देव! देवेश! इस व्रत को मैंने सदा भक्ति से किया है। इसमें कुछ न्यून हो गया हो तो वह परिपूर्ण हो। इस प्रकार देवता और ब्राह्मण की पुनः-पुनः प्रार्थना करके धर्मयुक्त हो, शिष्ट इष्ट मित्र बांधवों सहित भोजन करें। जो कोई मनुष्य इस विधान से इस व्रत को करता है, वह जिन-जिन कामनाओं को चाहता है, उन्हें पाता है। दाता, सुखी तेजस्वी तीनों लोकों में विख्यात होकर अन्त में उत्तम विमान में बैठकर सोमलोक को जाता है और जब तक सौ मनु भोग करते हैं तब तक सोमलोक में भोग करता है। तत्पश्चात् शिव लोक में जाकर भगवान शंकर के साथ सुख भोगता है और शम्भू रूप से क्रीड़ा करता हुआ फिर जन्म को नहीं पाता है। इस सोमव्रत को सर्वप्रथम भगवान श्री कृष्ण चन्द्र जी महाराज ने किया था और बड़े-बड़े धर्मात्माओं, राजाओं ने भी इस व्रत को किया है। कोई इस गुप्त इतिहास को पढ़ता

या सुनाता है और भक्तिपूर्वक दान देता है वह सम्पूर्ण पापों से विमुख हो, शिव गणों के साथ उत्तम विमान पर चढ़कर शिवपुरी को जाता है।

माहात्म्य

अश्वपति प्रदेश में भगवान शंकर का एक बहुत बड़ा सोने का मन्दिर था। उस मन्दिर का पुजारी बड़ा धूर्त तथा नशेबाज था। जो लोग मन्दिर में भगवान् के दर्शन के लिए आते थे उनको पहले नशीली चीजें खिला देता था और फिर उनके पैसे आदि सब छीन लेता और इस तरह दिनानुदिन पापों की ओर बढ़ता जा रहा था।

एक दिन रात के समय भगवान् शंकर और पार्वती घूमने निकले। जब पुजारी का ऐसा हाल देखा तो पार्वती जी ने अप्रसन्न होकर उससे कहा—"हे नीच ! तूने मेरी पूजा, जप, तप त्याग कर पाप करना शुरू कर दिया है, जा तू मेरे श्राप से कोढ़ी हो जा।"

पार्वती जी के श्राप देने के साथ ही पुजारी कोढ़ी हो गया। फिर तो वह बहुत दुःखी हो रोने-चिल्लाने लगा। भगवान की कृपा से देवांगनाएं भी पुजारी की यह दशा देखने को आईं। और बोली—क्यों भाई! तुम्हारा यह हाल क्यों हुआ है ? इस पर पुजारी ने रो-रो कर अपना सारा हाल कह सुनाया। इस पर देवांगनाओं ने दया करके कहा—"हम तुझे एक उपाय बताती हैं, तू ध्यानपूर्वक सुन! सोलह सोमवार का व्रत रखने से तेरा कोढ़ ठीक हो जायेगा और तू इससे मुक्ति पावेगा। किसी एक सोमवार से व्रत आरम्भ करो।

पहले स्नान करके पवित्र वस्त्र धारण करो फिर अपनी सामर्थ्य के अनुसार दान-पुण्य करो। फिर आधा सेर गेहूं का आटा-घी भून कर चूरमा बनाओ। फिर भगवान शंकर की मिट्टी की मूर्ति बनाओ। जब मूर्ति बन जाए तो शुद्ध जल से स्नान करके दूध दही, चावल, रोली, फल, प्रसाद और जनेऊ पहनायें, फिर दण्डवत् करें और परिक्रमा करें। जब इतना काम कर लें तो पीछे एक भाग चूरमा भगवान शंकर के चरणों में अर्पित करें और दुःख दूर करने की प्रार्थना करें कि हे प्रभू ! आप अब की बार मेरा उद्धार कीजिए। अब मैं कान पकड़कर सौगन्ध खाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि आइन्दा कभी पाप नहीं करूँगा।

फिर **'ओ३म् नमः शिवाय'** मन्त्र की एक माला का एक जाप करें। शिवजी की प्रतिमा जल में विसर्जन करें। प्रतिमा विसर्जन के बाद स्नान कर और बाकी बचे हुए चूरमा के दो भागों में से एक भाग बिजार को खिलाना, एक भाग एकान्त में बैठकर खुद खाना।

इसी प्रकार जब सोलह सोमवार व्रत रख चुके हों तो 17वें सोमवार को पहले से दस गुना चूरमा बनावें तब पूजा करने के पश्चात् ब्राह्मण और छोटे-छोटे बच्चों को बांटकर खुद खाना।

हे पुजारी ! ऐसा करने से सब पुरुषों व स्त्रियों का शारीरिक कष्ट दूर होता हैं। सुख, शान्ति, धन और सन्तान की वृद्धि होती है। सब इच्छायें पूरी हो जाती हैं और मुक्ति मिलती है। पर एक बाद याद रखने की है। तू सावधान होकर सुन और गाँठ बाँध ले। जो कोई व्रतधारी इन सत्रह सोमवारों के बीच में किसी से झगड़े, झूठ बोले, पाप दृष्टि रखे, झूठे मुँह सो जाये, किसी को दुःख देवे, दान ग्रहण करे तो वह सुख के बजाय दुःख पावेगा, और व्रत का फल अकारथ जायेगा।" देवांगनायें ऐसा उपदेश देकर अन्तर्ध्यान हो गईं और पुजारी ने शान्ति के साथ पवित्र विचारों के साथ सोलह सोमवार विधिपूर्वक व्रत रखा।

इस व्रत के प्रभाव से पुजारी का कोढ़ दूर हो गया, सोने के समान सुन्दर शरीर हो गया और हर तरह से सुख प्राप्त हो गया।

एक दिन एक अत्यन्त निर्धन व दुःखी ब्राह्मण पुजारी के पास आकर कहने लगा—"महाराज ! मैं बेहद दुःखी हूँ आपकी सेवा में आया हूँ। आप मेरी सहायता कीजिए।"

जब ब्राह्मण ने अपना बाकी हाल सुनाया तो पुजारी को उस पर अत्यन्त क्रोध आया और उसको बहुत झाड़ा। बहुत लताड़ा। खूब खरी-खोटी सुनाई। जब तरस आया तो उसने कहा—"भाई, पहले मैं तेरी तरह ही अत्यन्त दुःखी था। रात-दिन नशे में धुत रहता था। पाप कर्म में लगा रहता था। लेकिन सोलह सोमवारों का व्रत करने से मेरी दशा बदल गई और विचार भी बदल गये हैं। अतः तुम्हें जिस प्रकार मैं समझाता हूँ उस प्रकार विधिपूर्वक व्रत करो। भगवान तुम्हारे सब दुःख दूर कर देंगे।

ब्राह्मण पुजारी का आदेश पाकर घर को वापस लौट गया। और वहाँ जाकर विधिपूर्वक सोमवार के सोलह व्रत पूरे किये।

इसके पश्चात् वह एक दिन किसी काम से नगर को गया तो वहाँ रूपवती, गुणवती तथा साक्षात लक्ष्मी स्वरूप राजकुमारी का स्वयम्वर रचा हुआ था। राजा ने घोषणा कर रखी थी कि मेरी हथिनी जिस व्यक्ति के गले में माला डाल देगी उसी के साथ मैं राजकुमारी का विवाह करके आधा राजपाट उसे दे दूंगा।

ब्राह्मण भी तमाशा देखने के विचार से राजमहल में जा पहुँचा। अब भगवान की लीला देखिए, राजा की हथिनी ने सूंड में माला लेकर उस ब्राह्मण के गले में डाल दी, फिर उसको प्रणाम किया। राजा ने अपनी प्रतिज्ञानुसार राजकुमारी का विवाह उस ब्राह्मण के साथ कर दिया और आधा राजपाट उसको दे दिया। ब्राह्मण फिर सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करने लगा और रात-दिन भगवत भजन में लीन रहने लगा। एक दिन राजकुमारी ने अपने पति से पूछा—"प्राणनाथ ! आपने ऐसा कौन-सा पुण्य किया है जिससे आपको राजपाट और इतना सुख प्राप्त हुआ है ?" तब ब्राह्मण ने अपना सारा हाल कह सुनाया। फिर तो राजकुमारी ने भी सोलह सोमवारों का व्रत

रखा और ढाई मन चूरमे का प्रसाद गरीबों में बांटा। इन सोलह व्रतों का प्रभाव यह हुआ कि भगवान ने उसको एक अति रूपवान, अति बलवान, भाग्यवान, अच्छे गुणों से युक्त पुत्र प्रदान किया। ब्राह्मण ने ज्योतिषियों को बुलाया और बालक की कुण्डली बनवाई तो उन्होंने बताया कि इस बालक के ग्रह बड़े प्रबल हैं। यह चक्रवर्ती राजा होगा और सब राजे-महाराजे इसके पैरों में अपना शीश झुकायेंगे। यह बात सुनकर ब्राह्मण और राजकुमारी अत्यन्त प्रसन्न हुए।

जब राजकुमार बड़ा हुआ तो माता ने उसे भी सोलह सोमवारों का व्रत रखवाया। राजकुमारी ने व्रत के बीच प्रतिज्ञा की—"प्रभु ! मेरे राज्य में प्रजा सुखपूर्वक रहे, यही मेरी कामना है।"

कुछ समय पश्चात् विदर्भ देश की राजकुमारी के साथ राजकुमार का विवाह हो गया। विदर्भ देश के राजा ने बेटी के दहेज में अपना सारा राजपाट दे दिया और इस तरह वह ब्राह्मण कुमार सारे भारतवर्ष का सबसे बड़ा राजा बन गया। बाकी राजा उसके अधीन हो गए। बड़े-बड़े विद्वान् ब्राह्मण उस ब्राह्मण कुमार के राज्य में चौबीस घंटे कथा-कीर्तन करते रहते थे। गरीब-अमीर सब हर प्रकार से सुखी थे। किसी को किसी प्रकार का कष्ट न था।

जब राजकुमार के माता-पिता वृद्धावस्था को प्राप्त हुए और राजपाट राजकुमार को सौंप कर खुद भगवद् भजन के लिए वनों में चले गए, तब राजकुमार उनके जाने के बाद बहुत दुःखी हुआ और दिन-रात शिवजी की पूजा में रहने लगा। अपनी रानी से भी कहा कि तू मेरे साथ शंकर भगवान की पूजा किया कर।

इस पर रानी ने बेहद नाराज होकर राजकुमार से कहा—आपको भला किस बात की कमी है जो इन फिजूल बातों में अपना समय नष्ट कर रहे हैं। आप दूसरे देशों को विजय करें, जंगल में जाकर शिकार खेलें। यह पूजा-पाठ भक्ति-वक्ति तो साधु-सन्तों का काम है। मुझे यह बिल्कुल पसन्द नहीं है। आप इन सबको बन्द कर दें।

राजकुमार ने अपनी पत्नी की बात अनसुनी कर दी और चुपचाप भगवान शंकर के पूजन के लिए वन में चला गया।

रात को स्वप्न में भगवान शंकर ने उसको दर्शन देकर कहा—"बेटा तुम अपनी स्त्री को तुरन्त घर से निकाल दो, नहीं तो दुःख पाओगे। प्रातःकाल राजा ने अपने मन्त्रि-मण्डल को बुलाकर सारा वृत्तान्त कह सुनाया। सारी बात सुनकर मंत्री कहने लगे—महाराज, रानी को शीघ्रातिशीघ्र वनवास दे दीजिए। सर्वसम्मति से राजकुमार ने रानी को वन में भिजवा दिया।

अब रानी जंगलों में मारी-मारी फिरने लगी और दरिन्दे भी उसे तरह-तरह से कष्ट पहुँचाने लगे। गर्मी, सर्दी और बरसात से भी उसको अपार दुःख भोगना पड़ा। कई साल तक वह इस प्रकार दुःख भोगती रही। एक दिन धोबिन को उस

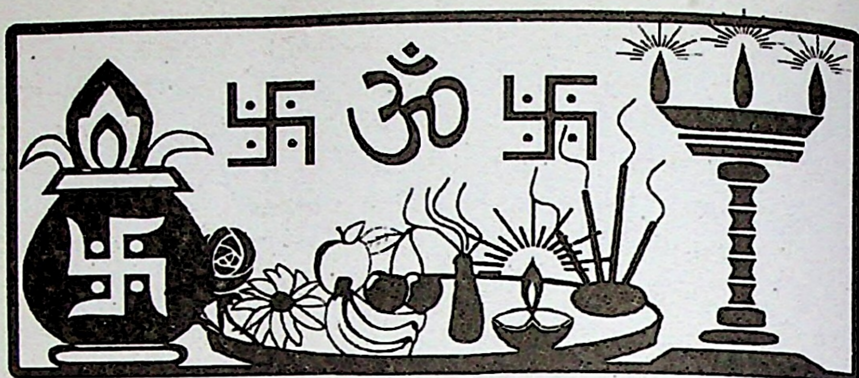
पर दया आई, वह उसको अपने साथ अपने घर ले गयी। धोबी ने दोनों को मा मारकर घर से निकाल दिया। एक साधु ने रानी का जब यह हाल देखा तो उस उस पर बड़ा तरस आया। उसने भगवान शंकर से प्रार्थना की—"भोलेनाथ ! शं देव ! संसार का कल्याण करने वाले महाराज ! इसके अपराध क्षमा कीजिए। अ यह स्त्री अपने किए पर पछता रही है।"

इसके पश्चात् उस साधु ने रानी को सोलह सोमवार के व्रत रखवाये भगवान शंकर ने राजा को स्वप्न में बताया कि तुम अपनी रानी को जंगलों में मंगवाओ। जंगलों में से रानी को लिवाने के लिए रथ भिजवाया। इसके पश्च राजा-रानी दोनों जब तक जीवित रहे सदा सदैव सोलह सोमवारों का व्रत करते र

जो कोई प्राणी प्रेम सहित भगवान शंकर का पूजन करके सोलह सोमव का व्रत रखेगा वह इस लोक में सुख पाकर, अन्त में मोक्ष का अधिकारी होग

आरती भगवान शंकर की

हर हर हर महादेव!
सत्य, सनातन, सुन्दर, शिव ! सबके स्वामी।
अविकारी, अविनाशी, अज अन्तर्यामी ।।1
आदि, अनन्त, अनामय, अकल, कलाधारी।
अमल, अरूप, अगोचर, अविचल, अघहारी ।।2
ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, तुम त्रिमूर्तिधारी।
कर्त्ता, भर्त्ता, धर्त्ता तुम ही संहारी ।।3
रक्षक, भक्षक, प्रेरक, प्रिय औढ़रदानी।
साक्षी, परम अकर्त्ता, कर्त्ता, अभिमानी ।।4
मणिमय-भवन, निवासी, अति भोगी, रागी।
सदा श्मशान विहारी, योगी बैरागी ।।5
छाल-कपाल, गरल-गल, मुण्डमाला, व्याली।
चिताभस्मयतयन, त्रिनयन, अयन महाकाली ।।6
प्रेत-पिशाच-सुसेवित पीतजट धारी।
विवसन विकट रूपधर रुद्र प्रलयकारी ।।7
शुभ्र-सौम्य, सुरसरिधर, शशिधर, सुखकारी।
अतिकमनीय, शान्तिकर, शिवमुनि-मन-हारी ।।8
निर्गुण, सगुण, निरञ्जन, जगमय, नित्य प्रभो।
कालरूप केवल हर ! कालातीत विभो ।।9
सत, चित्त, आनंद, रसमय, करुणामय धाता।
प्रेम-सुधा-निधि, प्रियतम, अखिल विश्व-त्राता ।।10
हम अतिदीन, दयामय ! चरण-शरण दीजै।
सब विधि निर्मल मति कर अपना करि लीजै ।।11



सप्तवार व्रत

विभिन्न मनोकामनाओं की प्राप्ति के लिये सप्ताह के सातों वारों का व्रत शुभ फलदायक है।



रविवार व्रत-कथा

सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला यह व्रत श्रेष्ठ है। इस व्रत के करने से मान-सम्मान बढ़ता है तथा शत्रुओं का नाश होता है। नेत्र पीड़ा के अतिरिक्त अन्य सभी शारीरिक पीड़ायें भी दूर करता है।

विधि

श्री लक्ष्मी शंकर, शिवा गौरी शारदा वेश।
शक्ति शान्ति शुभदा सदा सुमिरूँ सुखेश।।

एक समय मान्धाता ने महर्षि वशिष्ठ से कहा—"हे मुनिवर श्रेष्ठ ! आपके सुख से पापनाशन सर्व कार्यभप्रद सर्वरोग नाशक, पूजा अर्घ्य, आसन, नैवेद्य सहित रविवार व्रत-कथा सुनने की प्रबल इच्छा है। कृपया हमसे कहें।"

महर्षि ने कहा—"राजन , जिनके उदय काल में सकल सुर, असुर सभी प्रणाम करते हैं, उन भास्कर की कथा तीर्थ, यज्ञ, दान, तप के समान है। इस व्रत को अगहन मास में करने से विशेष फल प्राप्त होता है।

सूर्य व्रतं करिष्यामि यावहर्षो दिवाकरः।
व्रतं सम्पूर्णतां यातु त्वत्सादा प्रभाकर।।

यह मंत्र नियम के लिए है। प्रातःकाल उठकर नदी में स्नान तथा पितृ तर्पण करके स्वच्छ स्थान को लीपकर सूर्य की पूजा करें। उसी स्थान पर बारह दलों का कमल ताँबे के पतरे पर लाल चन्दन बनाएं। उसी पृथ्वी पर बने कमल रखकर दीनानाथ सुरेश्वर देव की पूजा करें।

बारह महीनों में बारह सूर्यों के नाम स्मरण करते हुए पूजा की जाती है। बारहों मासों का अर्घ्य नैवेद्य और आसन का विधान पृथक्-पृथक् है।

मार्गशीर्ष

मार्गशीर्ष अर्थात् अगहन में पित्रों की पूजा की जाती है। नारियल से अर्घ्य, घी और गुड़ सहित अक्षतों का नैवेद्य दिया जाता है। तीन तुलसी पत्र खाकर जितेन्द्रिय होकर ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए और सामर्थ्यानुसार दक्षिणा देनी चाहिए।

पौष

पौष में भगवान श्री विष्णु की पूजा की जाती है। खिचड़ी का नैवेद्य और जम्भीरी नींबू का अर्घ्य देकर तीन पत्र घी खाया जाता है और घी के साथ ब्राह्मण को भोजन कराना अति श्रेष्ठ होता है।

माघ

माघ में वरुण नामक सूर्य की पूजा करके घी, तिल, गुड़ का भोजन ब्राह्मण को देकर दक्षिणा दें, केलें का फल नैवेद्य देकर उसी से अर्घ्य दिया जाता है। अन्त में तीन मुट्ठी तिल खाने चाहिएं।

फाल्गुन

फाल्गुन में सूर्य की पूजा जम्भीरी नींबू से अर्घ्य देकर तीन फल, दही खाकर नैवेद्य में घी सहित चावल दान करें और उसी का भोजन ब्राह्मण को दें।

चैत्र

चैत्र में भानु की पूजा करके घी मिला अन्न का नैवेद्य, अनार से अर्घ्य देकर और तीन पत्र दूध पीकर दक्षिणा सहित मिष्ठान का भोजन ब्राह्मण को दें।

वैशाख

वैशाख में तपन नाम सूर्य की पूजा और सुघृत मास से नैवेद्य, दाख का फल अर्घ्य गोबर का आसन और घी दक्षिणा सहित माण अर्थात् शहद का दान करें।

ज्येष्ठ

ज्येष्ठ में इन्द्र की पूजा दही से सने हुए सत्तू का नैवेद्य और आम से अर्घ्य दें और तीन चुल्लू जल का आचमन कर दही-चावल का भोजन ब्राह्मण को दें।

आषाढ़

आषाढ़ में रवि की पूजा करके चिउड़े का भोजन ब्राह्मण को दान देकर तीन मिर्च खाकर व्रत करें।

श्रावण

श्रावण मास में गर्भास्तिभान की पूजा, त्रपुल का अर्घ्य फल दें और तीन मुट्ठी सत्तू का आहार करें। ब्राह्मण को दक्षिणा सहित भोजन दें।

भाद्रपद

भाद्रपद अथवा भादो में यम नामक सूर्य की पूजा, सीताफल, घी, चावल का नैवेद्य और गौ-मूत्र का पान करके ब्राह्मण को भोजन दें।

आश्विन

आश्विन में हिरण्येता नामक सूर्य की पूजा करें।

कार्तिक

कार्तिक में दिवाकर नामक सूर्य की पूजा में केले के फल और खीर का नैवेद्य देकर फिर खीर का भोजन करें।

सभी व्रतों को समाप्त करके उद्यापन करना चाहिए। शुक्र के ग्रह में जाकर उनके चरणों में प्रणाम करें, कहें कि उद्यापन करूंगा...मेरे घर चलिए। यह कहकर माशा भर स्वर्ण से सूर्य की मूर्ति बनाकर पंच रत्न सहित बिना छेद का कलश स्थापित करके उस पर चावल से भरा तांबे का बर्तन रखें और लाल कपड़े से आच्छादित करके पुष्प माला से वेष्ठित करें, अग्नयन्तारण पूर्वक पंचामृत से स्नान कराके प्रतिष्ठा कर चन्दन, कुसुम और अनेक तरह के फूलों से सजा अच्छा रेशमी कपड़ा, कमण्डल और जूता दें।

शिव के पार्श्व में तीन वर्धनी स्थापित कर दो कपड़े संज्ञा के निमित्त दें। कमल के प्रति पात्र सूर्य की बारह नामों से (पित्र, विष्णु, वरुण, सूर्य, भानु, तपन, इन्द्र, रवि, गर्भास्तभान, यम, हिरण्येता, दिनकर) पूजा करें। बीच में संध्या सहित सहस्र किरण की सुपारी, धूप, दीप घृत नैवेद्य से पूजा करके नारियल का अर्घ्य दें।

अर्घ्य के लिए मन्त्र नीचे दिया गया है :

नमस्सहन्त किरण्य सर्वव्याधि विनाशन।
ग्रहाणार्घ्यं मद्यादतं संज्ञया सहितो रसे।।

इस मन्त्र से अर्घ्य देकर आरती की पूजा का संकल्प करें। फिर अन्त में गुरू को प्रसन्न करके प्रार्थना करें।

मन्त्रहींन क्रियाहीनं भक्तिहीनं तु यत्कृताम्।
तत्सर्वसम्पूर्णतां यातु भूमिदेव प्रसादतः।।

ब्राह्मण विद्या को प्राप्त करता है। क्षत्रिय राज्य, वैश्य बुद्धि और शूद्र सुख की प्राप्ति करता है।

व्रत-कथा

भगवान श्रीकृष्ण ने जब मथुरा से पलायन किया और त्रैलोक्य दुर्लभ समृद्धियों से परिपूर्ण द्वारकापुरी का समुद्र तट पर निर्माण करवाया तो महर्षि दुर्वासा को उसे देखने की बड़ी उत्कंठा हुई। वे द्वारकापुरी पहुंचे। भगवान श्रीकृष्ण को जब उनके आगमन की सूचना प्राप्त हुई तो वह स्वयं नगर से बाहर आ गये। उनको अपने महल में लाकर अर्घ्य, पाद्य, आसन व भोजन से उनकी पूजा की। जब महर्षि दुर्वासा और भगवान श्रीकृष्ण भोजन के बाद परस्पर वार्तालाप कर रहे थे तो भगवान के पुत्र साम्ब ने आकर महर्षि दुर्वासा का मजाक किया, इससे दुर्वासा को क्रोध बहुत आया लेकिन श्रीकृष्ण के कारण वह उससे कुछ नहीं कह सके। यहां से चलकर महर्षि ने सारी घटना देव ऋषि नारद जी से कही और कहा—"हे देवर्षि ! आप जब प्रभास क्षेत्र को जाओ तब साम्ब को शिक्षा दो।"

देवर्षि नारद द्वारका को गए और भगवान श्रीकृष्ण जी से कहा—"अपनी सेना मुझे दिखाइए।"

भगवान श्रीकृष्ण ने वैसा ही किया। सेना को देखकर देवर्षि नारद ने कहा—"इस सेना में साम्ब नहीं है। मैं द्वारकापुरी से शीघ्र ही साम्व को लेकर आता हूं।"

इस प्रकार नारद जी श्रृंगार सहित, कामदेव की भांति सुन्दर श्रेष्ठ जाम्बवती पुत्र साम्ब को ले आए। अति रूपवती भगवान श्रीकृष्ण की समस्त रानियां साम्ब को देखकर परस्पर चुम्बन करने लगीं, तब नारद जी ने श्रीकृष्ण भगवान से कहा—"यह साम्ब बड़ा दुश्चरित्र है।"

नारद के वचन सुनकर भगवान श्रीकृष्ण को क्रोध आ गया। वे बोले—"हे नराधम साम्ब ! तुम कुष्ठ रोग से दुःखी हो जाओ।"

साम्ब तुरन्त कुष्ठ रोग से पीड़ित हो गये। तब साम्ब ने भगवान श्रीकृष्ण से कहा—"प्रभु ! आपने मुझे किस कारण से श्राप दिया ?"

भगवान श्रीकृष्ण ने अपनी शक्ति से विचार किया और बोले—"यह श्राप तुम्हें दुर्वासा ऋषि का अपमान करने से मिला है। मैं तुम पर कृपा करके कहता हूं, कुष्ठनाशक सूर्य का व्रत करो।"

—"इस सर्वफलप्रद व्रत को कैसे किया जाता है ?" साम्व ने पूछा।

—"क्वार के महीने में जब रविवार हो तब से स्त्री-पुरुष इस व्रत को वर्ष भर तक करें, गोबर से पृथ्वी में गोला मण्डल बनाकर लाल फूल और लाल अक्षत से सूर्य को निम्न मन्त्र से अर्घ्य दें—

यथाज्ञा विमला स्सर्वास्सूर्य भास्कर भानुभिः।
तथा शास्सफलाँ मह्यकुरू नित्यम् मर्माचरत्।।



सोमवार व्रत

सोमवार का व्रत सामान्यतः दिन के तीसरे पहर तक होता है। व्रत में भोजन का कोई विशेष नियम नहीं है परन्तु दिन-रात में केवल एक समय ही भोजन करें। सोमवार के व्रत में शिवजी एवं पार्वती का पूजन किया जाता है।

सोमवार के व्रत तीन प्रकार के होते हैं—सोम प्रदोष, सोलह सोमवार एवं साधारण प्रति सप्ताह सोमवार। इन तीनों की पूजन विधि समान है परन्तु व्रत-कथा भिन्न-भिन्न हैं। सोम प्रदोष व सोलह सोमवार की व्रत-कथा पुस्तक में पहले दी जा चुकी हैं। यहां पर प्रति सप्ताह सोमवार की व्रत-कथा दी जा रही है।

व्रत-कथा

एक बहुत धनवान साहूकार था, जिसके घर, धन आदि सभी प्रकार का सुख था। परन्तु व्रह पुत्र न होने के कारण दुःखी रहता था। वह पुत्र की मनोकामना के लिये प्रत्येक सोमवार को शिवजी का व्रत एवं पूजन किया करता था। सायंकाल को शिव मन्दिर में जाकर शिवजी के श्री विग्रह के सामने दीपक जलाया करता था। उसके इस भक्तिभाव से प्रभावित होकर एक समय श्री पार्वतीजी ने शिवजी महाराज से कहा कि, "प्रभो यह साहूकार आपका अनन्य भक्त है और सदैव आपका पूजन एवं व्रत पूर्ण श्रद्धा से करता है। आप इसकी मनोकामना को पूर्ण कीजिये।"

शिवजी ने कहा, "हे पार्वती ! यह संसार कर्मक्षेत्र है। जैसे किसान खेत में जैसा बीज बोता है वैसा ही फल मिलता है। उसी प्रकार इस संसार में मनुष्य जैसा कर्म करता है वैसा ही फल भोगता है।"

पार्वतीजी ने अत्यन्त आग्रह के साथ कहा, "महाराज ! जब यह आपका अनन्य भक्त है और इसको यदि किसी प्रकार का कष्ट है तो उसको अवश्य दूर करना चाहिए क्योंकि आप तो सदैव ही अपने भक्तों पर दयालु होते हैं और दुःखों को दूर करते हैं। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो मनुष्य आपका व्रत एवं पूजन क्यों करेंगे।"

पार्वतीजी का ऐसा आग्रह जानकर शिवजी महाराज कहने लगे, "हे

पार्वती ! इसके कोई पुत्र नहीं है, यह इसी दुःख से दुःखी रहता है। इसके भाग्य में पुत्र न होने पर भी मैं इसको पुत्र की प्राप्ति का वर देता हूं। परन्तु वह पुत्र केवल बारह वर्ष तक जीवित रहेगा। इसके पश्चात् वह मृत्यु को प्राप्त हो जायेगा। मैं इससे अधिक कुछ नहीं कर सकता।"

साहूकार यह सब बातें सुन रहा था। इससे उसको न तो कुछ प्रसन्नता हुई और न ही शोक। वह पहले की भांति ही शिवजी महाराज का व्रत एवं पूजन करता रहा।

कुछ समय व्यतीत होने के बाद साहूकार की स्त्री गर्भवती हुई और दसवें महीने उसके गर्भ से अति सुन्दर बालक का जन्म हुआ। साहूकार के घर में बहुत खुशी मनाई गई परन्तु साहूकार ने इसकी आयु केवल बारह वर्ष की जान कोई अधिक प्रसन्नता प्रकट नहीं की और न ही यह भेद किसी को बताया। जब वह पुत्र ग्यारह वर्ष का हो गया तो उस बालक की माता ने उसके पिता से विवाह आदि के लिये कहा तो वह साहूकार कहने लगा कि अभी मैं इसका विवाह नहीं करूंगा। अपने पुत्र को काशीजी पढ़ने के लिये भेजूंगा। फिर साहूकार ने लड़के के मामा को बुलाकर उसे बहुत सा धन देते हुए कहा तुम इस बालक को काशी जी पढ़ने के लिये ले जाओ और रास्ते में जिस स्थान पर भी जाओ यज्ञ करते और ब्राह्मणों को भोजन कराते जाओ।

वह दोनों मामा-भानजे यज्ञ करते, ब्राह्मणों को भोजन कराते जा रहे थे। रास्ते में उनको एक शहर पड़ा। उस शहर में राजा की कन्या का विवाह था और दूसरे राजा का लड़का जो विवाह कराने के लिये बारात लेकर आया था वह काना था। उसके पिता को इस बात की बड़ी चिन्ता थी कि कहीं वर को देख कन्या के माता-पिता विवाह में किसी प्रकार की अड़चन पैदा न कर दें। इस कारण जब उसने अति सुन्दर सेठ के लड़के को देखा तो मन में विचार किया कि क्यों न दरवाजे के समय इस लड़के से वर का काम चलाया जाये। ऐसा विचार कर वर के पिता ने लड़के और मामा से बात की तो वे राजी हो गये। फिर उस लड़के को वर के कपड़े पहना दिये तथा घोड़ी पर चढ़ा दरवाजे पर ले गये और सब कार्य प्रसन्नता से पूर्ण हो गया। फिर वर के पिता ने सोचा कि यदि विवाह कार्य भी इसी लड़के से करा लिया जाये तो क्या बुराई है ? ऐसा विचार कर लड़के और उसके मामा से कहा, "यदि आप फेरों के और कन्यादान के काम को भी करा दें तो आपकी बड़ी कृपा होगी और मैं इसके बदले में आपको बहुत-सा धन दूंगा।" उन्होंने स्वीकार कर लिया और विवाह-कार्य भी बहुत अच्छी तरह सम्पन्न हो गया। परन्तु जिस समय लड़का जाने लगा तो उसने राजकुमारी की चुन्दड़ी के पल्ले पर लिख दिया कि तेरा विवाह तो मेरे साथ हुआ है परन्तु जिस राजकुमार के साथ तुमको भेजेंगे वह काना है और मैं काशीजी पढ़ने जा रहा हूं। लड़के के जाने के पश्चात्

उस राजकुमारी ने जब अपनी चुन्दड़ी पर ऐसा लिखा पाया तो उसने राजकुमार के साथ जाने से मना कर दिया और कहा कि यह मेरा पति नहीं है। मेरा विवाह इसके साथ नहीं हुआ हैं। वह तो काशीजी पढ़ने गया है। राजकुमारी के माता-पिता ने अपनी कन्या को विदा नहीं किया और बारात बिन दुल्हन के ही वापस चली गई।

उधर सेठ का लड़का और उसका मामा काशीजी पहुंच गए। वहां जाकर उन्होंने यज्ञ करना और लड़के ने पढ़ना शुरू कर दिया। जब लड़के की आयु बारह वर्ष की हो गई तो उस दिन उन्होंने यज्ञ रचा रखा था कि लड़के ने अपने मामा से कहा, "मामाजी आज मेरी तबियत कुछ ठीक नहीं है।" मामा ने कहा, "अन्दर जाकर सो जाओ।" लड़का अन्दर जाकर सो गया और थोड़ी देर में उसके प्राण निकल गए।

जब उसके मामा ने आकर देखा वह मुर्दा पड़ा है तो उसको बड़ा दुःख हुआ और उसने सोचा कि यदि मैं अभी रोना-पीटना मचा दूंगा तो यज्ञ का कार्य अधूरा रह जाएगा। अतः उसने जल्दी से यज्ञ का कार्य समाप्त कर ब्राह्मणों के जाने के बाद रोना-पीटना आरम्भ कर दिया। संयोगवश उसी समय शिव-पार्वतीजी उधर से जा रहे थे। जब उन्होंने जोर-जोर से रोने की आवाज सुनी तो पार्वतीजी कहने लगीं, "महाराज ! कोई दुखिया रो रहा है, इसके कष्ट दूर कीजिए।"

जब शिव-पार्वतीजी ने पास जाकर देखा तो एक लड़का मुर्दा पड़ा था। पार्वतीजी कहने लगीं, "महाराज यह तो उसी सेठ का लड़का है जो आपके वरदान से हुआ था।"

शिवजी कहने लगे, "हे पार्वती ! इसकी आयु इतनी थी सो यह भोग चुका।"

तब पार्वतीजी ने कहा, "हे महाराज ! इस बालक को और आयु दो, नहीं तो इसके माता-पिता तड़प-तड़प कर मर जायेंगे।"

पार्वती के बार-बार आग्रह करने पर शिवजी ने उसको जीवन का वरदान दिया और शिवजी महाराज की कृपा से लड़का जीवित हो गया। शिव-पार्वती कैलाश को प्रस्थान कर गये।

तब वह लड़का और मामा उसी प्रकार यज्ञ करते तथा ब्राह्मणों को भोजन कराते अपने घर की ओर चल पड़े। रास्ते में वे उसी शहर में आए जहां उसका विवाह हुआ था। वहां आकर उन्होंने यज्ञ प्रारम्भ कर दिया तो लड़के के श्वसुर ने उसको पहचान लिया और अपने महल में ले जाकर उसकी बड़ी खातिर की। साथ ही बहुत धन व दास-दासियों सहित आदरपूर्वक लड़की और दामाद को विदा किया। जब वे अपने शहर के निकट आए तो मामा ने कहा—"मैं पहले तुम्हारे घर जाकर खबर कर आता हूं।" जब उस लड़के का मामा घर पहुंचा तो लड़के

के माता-पिता घर की छत पर बैठे थे और यह प्रण कर रखा था कि यदि हमारा पुत्र सकुशल लौट आया तो हम राजी-खुशी नीचे आ जायेंगे, नहीं तो छत से गिरकर अपने प्राण त्याग देंगे।

इतने में लड़के के मामा ने आकर यह समाचार दिया कि आपका पुत्र आ गया है तो उनको विश्वास नहीं आया तब उसके मामा ने शपथपूर्वक कहा कि आपका पुत्र अपनी स्त्री के साथ बहुत सारा धन लेकर आया है तो सेठ ने आनन्द से उसका स्वागत किया और बड़ी प्रसन्नता के साथ रहने लगा। इसी प्रकार से जो कोई भी सोमवार के व्रत को धारण करता है अथवा इस कथा को पढ़ता और सुनता है, उसकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।



मंगलवार व्रत

मंगलवार के व्रत के दिन एक समय गेहूँ और गुड़ का भोजन करना श्रेष्ठ है। 12 सप्ताह तक व्रत को करने से सब दोष दूर होते हैं। राज्यसभा में सम्मान प्राप्त होता है। लाल रंग के पुष्पों का सेवन करना तथा साफ वस्त्र धारण करना विशेष लाभदायक होता है। श्री हनुमान जी का पूजन करना चाहिए।

व्रत-कथा

सूतजी बोले—हे परीक्षित ! आज मैं तुम से मंगलवार के व्रत का महत्व प्रकट करूंगा। पुराने जमाने में एक छोटे से नगर में एक ब्राह्मण और ब्राह्मणी रहते थे। उनके घर में कोई सन्तान न थी। जिनके कारण वह दिन-रात इसी चिन्ता में रहते थे कि भगवान किसी प्रकार उन्हें एक पुत्र दे। अंत में वह ब्राह्मण वन में चला गया और वहाँ उसने हनुमान जी की आराधना शुरू कर दी। घर में उसकी पत्नी भी दिन-रात हनुमान जी की पूजा किया करती थी और मंगलवार के दिन व्रत रखकर शाम को भोग लगाकर भोजन करती थी। एक दिन ऐसा हुआ कि मंगलवार के दिन ब्राह्मणी किसी कारण से भोजन न बना सकी और शाम को भी भोग न लगा सकी। इससे वह उदास हो गयी और उसने निश्चय किया कि अगले मंगलवार को व्रत अनुष्ठान करके और हनुमान जी को भोग लगाकर ही भोजन करेगी। अतः छः दिन तक वह भूखी रही।

सातवें दिन को सुबह ही ब्राह्मणी मूर्च्छा खाकर गिर पड़ी तब पवन पुत्र हनुमान जी ने उसे दर्शन दिए और सचेत करके कहा कि तुम्हारी पूजा

सफल हुई और मैं तुमको यह सुन्दर बालक देता हूँ जो तुम्हारी ऐसी सेवा करेगा जैसे कोई निज कोख से जाया बालक हो। फिर हनुमान जी ने अपने साथ लाये बालक से कहा—जाओ अपनी माँ की सेवा करो और उन्हें कोई कष्ट न होने दो। बालक को पाकर ब्राह्मणी बहुत प्रसन्न हुई और उसके साथ आनन्द पूर्वक रहने लगी। ब्राह्मणी ने उस बालक का नाम मंगल रखा।

कुछ समय पश्चात् ब्राह्मण जब वन से वापिस आया और अपने घर में एक सुन्दर बालक को देखा तो अपनी पत्नी से बोला—यह बालक किसका है ? पत्नी ने कहा—हमें हनुमान जी ने प्रसन्न होकर दिया है। उस समय तो पण्डित चुप हो गया लेकिन उसके मन में तरह-तरह की शंकाएं उत्पन्न होने लगीं। यह औरत जरूर कुल्टा है, उसने सोचा जरूर इसने यह लड़का व्यभिचार करके उत्पन्न किया है, ऐसा सोचकर पँडित का पहले तो उस बालक से प्रेम हट गया और बाद में तो वह यहां तक चाहने लगा कि यह बच्चा किसी तरह मर ही जाये। एक दिन जब वह कुएं पर पानी लेने गया तो वह बालक भी साथ हो लिया। पानी भरते समय धोखे से बच्चे को कुएं में गिरा दिया और आप घर लौट आया। ब्राह्मणी ने जब यह पूछा कि मंगल कहां है, तो उसने कह दिया कि वह बाहर खेल रहा है। इस पर ब्राह्मणी ने आवाज दी मंगल! मंगल! और बालक हंसता हुआ आ गया। ब्राह्मण के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। उस बच्चे को महावीर स्वामी ने बचाया था। इस पर और भी कई बार उसने बालक को मारना चाहा। पर हर बार वह हनुमान जी की कृपा से बचता रहा। एक दिन जब ब्राह्मण घर में सो रहा था तब उसे स्वप्न आया और हनुमान जी ने उसे दर्शन देकर कहा कि हे ब्राह्मण! इस बालक पर किसी प्रकार का सन्देह मत करो। तुमने जो मेरी भक्ति की है उसी से प्रसन्न होकर मैंने यह बालक तुम्हारी पत्नी को दिया है। स्वप्न देखकर ब्राह्मण को अपार हर्ष हुआ और दोनों बहुत समय तक अत्यन्त आनन्दपूर्वक रहते रहे।

सूतजी बोले—हे राजन, इसी प्रकार जो कोई इस कथा को पढ़ता-सुनता और मंगलवार व्रत धारण करता है उसके सब दुःख श्री हनुमान जी की कृपा से दूर हो जाते हैं।

एक और अन्य व्रत-कथा

सूतजी ने कहा—एक नगर में एक बुढ़िया रहती थी। वह मंगलवार को व्रत भी करती थी और विधि से कथा भी सुनती थी। उसका एक पुत्र था जिसको वह मंगलवार के दिन उत्पन्न होने के कारण मंगलिया कहकर पुकारती थी। मंगलवार के दिन न तो वह घर लीपती थी और न ही मिट्टी खोदा करती थी। एक दिन मंगल देवता उसकी श्रद्धा देखने के लिए उसके घर में साधु के भेष में आये और आवाज़ लगाई। बुढ़िया ने कहा, महाराज आज्ञा ! साधु कहने लगा कि हमें बहुत

भूख लगी है। भोजन बनाना है इसके लिए तू थोड़ी-सी जमीन लीप दे तो तेरा बड़ा पुण्य होगा। यह सुनकर बुढ़िया ने कहा कि आज तो मैं मंगलवार की व्रती हूं इसलिए चौका नहीं कर सकती, कहिए तो आपके लिए छिड़काव कर दूं। उस पर आप भोजन बना लीजिएगा। मगर साधु बोला—हम तो गोबर से लिपे हुए चौक पर ही रसोई बनाते हैं। तब बुढ़िया ने कहा कि जमीन लीपने के अतिरिक्त और कोई सेवा हो तो बताइये। साधु बोला—अच्छा इसके अतिरिक्त हम जो कुछ भी कहें, तू मानेगी ? बुढ़िया ने कहा, हां। साधु बोला—सोच लो। बुढ़िया ने कहा, सोच लिया। तब साधु ने कहा, अपने लड़के को बुलाकर यहां जमीन पर औंधा लिटा दो। हम उसकी पीठ पर अपना भोजन तैयार करेंगे। बाबा की बात सुनकर बुढ़िया चुप हो गयी। साधु ने कहा, अब क्या सोचती है अब बुला बेटे को। बुढ़िया ने अपने बेटे को बुलाया और कहा, जा तुझे बाबा बुलाते हैं। लड़के ने साधु को प्रणाम किया और आज्ञा चाही। साधु बोले—अपनी मां को बुला ला। बेटा मां को बुला लाया। साधू ने बुढ़िया से कहा अपने बेटे को तुम ही औंधा लिटाओ। बुढ़िया ने मंगल देवता का स्मरण करके अपने बेटे को औंधा लिटा दिया और उसकी पीठ पर अंगीठी रख दी और कहने लगी कि महाराज, अब मैं जाती हूं। आप अपना भोजन बनाइये। साधु ने लड़के की पीठ पर रखी अंगीठी में आग जलाई और भोजन बनाया। जब भोजन बन चुका तो उसने बुढ़िया को बुलाकर कहा—अब अपने बेटे को बुलाओ। बुढ़िया बोली—यह कैसे हो सकता है ? उस पर आपने खाना बना लिया है। वह तो मर गया होगा। आप कृपा करके मुझे उसका स्मरण न दिलाइये, आप भोग। लगाइये और जहां जाना हो जाइये। पर साधु ने जिद्द की, बोला—नहीं तुम उसे बुलाओ तो। तब बुढ़िया ने विवश होकर अपने बेटे को 'मंगलिया' कहकर आवाज दी। लड़का दौड़ता हुआ आ गया। बुढ़िया चकित रह गई। साधु ने लड़के को प्रसाद दिया और बुढ़िया से कहा—माई, तेरा व्रत सफल हो गया, तेरे हृदय में दया है और अपने ईश्वर में अटल विश्वास है, भक्ति है। इस कारण तुझे अब कभी कोई कष्ट नहीं पहुंचेगा।

इस प्रकार परीक्षित को कथा सुनाकर सूत जी चुप हो गए।

श्री पवनाभिनन्दनाय नमः

ॐ नमो भगवते हनुमादाख्य रुद्राय सर्व दुष्टजन मुख स्तंभन कुरुं कुरुं ओइम् हा ही हं ठं ठं ठं फट् स्वाहाः।। ॐ नमो हनुमते अंजनी गर्भ संभूताय राम लक्ष्मण नन्दकाय कपि सग्य प्रकाराय पुण्य प्रकाशनाय पर्वतोत्पाटनाय सुग्रीव साधन काय रणेपरोच्चाटनाय कुमार ब्रह्मचर्याय गभीर शब्दोदयाया ओइम् हा ही हू सर्वदुष्ट निवारणाय स्वाहाः।। ॐ नमो हनुमते सर्वं ग्रहांभूत भविष्यद्वर्तमानान् दूरस्त समीपस्थान सर्वकाल दुष्ट बुद्धीउच्चाटयपरबला निक्षोभय क्षोभय ममसर्व काय साधय साधय हनुमते स्वाहाः। ॐ हां हीं ह फट देहि ॐ शिवं सिद्धि ॐ हां हीं ह स्वाहाः।। ॐ परजृत, यन्त्र मंत्रपराहंकार भूत-प्रेत पिशाच परदृष्टि सर्वविघ्न दुर्जन

चेटक विद्या सर्वग्रहमय निबाराय निवाराय वध बध पच पच दल विलय विलय कीलय कीलय सब कुयन्त्राणि कुदुष्ट बांच ओऽम् हीं हा हूं फट् स्वाहा।। ॐ नमो हनुमते पाहि पाहि एहि सर्वग्रह भूतानां डाकिनी शाकिनीनां सर्वविषनाध् आकर्षय आकर्षय मर्दय मर्दय छेदय छेदय अपभृत्यु प्रभूतमृत्युमुप शोषय ज्वल प्रज्वल भूतज्वर प्रेतज्वर चातुथिकज्वर माहेश्वरज्वारी छिधि छिधि भिन्दि भिन्दि अत्रिशूल पित्तशूल कक्षिशूल शिरो भ्वंतरशूल भ्वंतरशूल पित्तशूल ब्रह्मराक्षस कुलप्रवलनाय कुलविष निबिशं कुरुं कुरुं फट् स्वाहाः।। ॐ हां हों हूं सर्व दुष्ट ग्रह निवारणाय स्वाहाः।। ॐ नमो हनुमते पवन पुत्राय वैश्वानरसखाय हन हन पापदृष्टि हनुमद् दाज्ञास फुरः ओऽम हां हा हूं हैं हः हनुमते नमः।।

आरती श्री हनुमान जी की

आरती कीजै हनुमान लला की,
दुष्टदलन रघुनाथ कला की।।टेक।।
जाके बल से गिरवर कांपै।
रोग-दोष जाके निकट न झांके।।
अंजनिपुत्र महा बलदाई।
संतन के प्रभु सदा सहाई।।
दे वीरा रघुनाथ पठाये।
लंका जारि सिया सुधि लाये।।
लंका-सो कोट समुद्र-सी खाई।
जात पवनसुत बार न लाई।।
लंका जारि असुर संहारे।
सिया रामजी के काज संवारे।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे।
लाये संजीवन प्राण उबारे।।
पैठि पताल तोरि जम-कारे।
अहिरावण की भुजा उखारे।।
बायें भुजा असुरदल मारे।
दाहिने भुजा संत जन तारे।।
सुर नर मुनि आरती उतारे।
जय जय जय हनुमान उचारे।।
कंचन थार कपूर लौ छाई।
आरती करत अंजना माई।।
जो हनुमान की आरती गावै।
बसि बैकुंठ परम पद पावै।।

श्री हनुमान चालीसा

दोहा

श्री गुरू चरण सरोज रज,
निज मनु मुकुरू सुधारि।
वरनऊं रघुवर विमल जसु,
जो दायकु फल चारि ।।1।।
बुद्धिहीन तनु जानिके,
सुमिरौं पवन कुमार।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहि,
हरहु कलेश विकार ।।2।।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहूं लोक उजागर।। 1।।
रामदूत अतुलित बल धामा। अंजनी-पुत्र पवन-सुत नामा।। 2।।
महावीर विक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी।। 3।।
कंचन बरन बिराज सुवेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा।। 4।।
हाथ वज्र औ ध्वजा विराजै। कांधे मूंज जनेऊ साजै।। 5।।
संकर सुवन केसरी नंदन। तेज प्रताप महा जग वंदन।। 6।।
विद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर।। 7।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया।।8।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। विकट रूप धरि लंक जरावा।।9।।
भीम रूप धरि असुर संहारे। रामचन्द्र के काज संवारे।।10।।
लाय संजीवन लखन जियाय। श्री रघुवीर हरषि उर लाय।।11।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।।12।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।।13।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा।।14।।
जम कुबेर दिगपाल जहां ते। कवि कोविद कहि सके कहां ते।।15।।
तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा।।16।।
तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना। लंकेश्वर भए सब जग जाना।।17।।
जुग सहस्त्र योजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू।।18।।
प्रभु मुद्रिका मेल मुख माँहि। जलधि लांघि गये अचरज नाहिं।।19।।
दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।। 20।।
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे।। 21।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रच्छक काहू को डर ना।। 22।।

आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हांक तें कांपै।। 23।।
भूत पिसाच निकट नहीं आवै। महावीर जब नाम सुनावै।। 24।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा।। 25।।
संकट ते हनुमान छुड़ावै। मन क्रम वचन ध्यान जो लावै।। 26।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा।। 27।।
और मनोरथ जो कोई लावै। सोई अमित जीवन फल पावै।। 28।।
चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा।। 29।।
साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे।। 30।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता।। 31।।
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा।। 32।।
तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुःख बिसरावै।। 33।।
अन्त काल रघुबर पुर जाई। जहां जन्म हरि-भक्त कहाई।। 34।।
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेई सर्व सुख करई।। 35।।
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा।। 36।।
जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरू देव की नाईं।। 37।।
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहिं बंदि महा सुख होई।। 38।।
जो यह पढ़े हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा।। 39।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महं डेरा।। 40।।

दोहा

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।।

।। इति ।।

संकटमोचन हनुमानाष्टक

बाल समय रवि भक्षि लियो तब,
तीन्हुं लोक भयो अंधियारो।
ताहि सों त्रास भयो जग को,
यह संकट काहू सों जात न टारो।
देवन आनि करी बिनती तब,
छोंड़ि दियो रवि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो ।।1।।
बालि की त्रास कपीस बसै गिरि,
जात महाप्रभु पंथ निहारो।

चौंकी महामुनि शाप दियो, तब,
चाहिये कौन विचार विचारो।
कर द्विज रूप, लिवाय महाप्रभु,
सो तुम दास के सोक निवारो
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकट मोचन नाम तिहारो।।2।।
अंगद के संग लेन गये सीय,
खोज कपीस यह बैन उचारो।
जीवन ना बचिहौं हम सों जु,
बिन सुधि लाए इहां पगु धारो।
हेरि थके तट सिन्धु सबै तब,
लाय सिया सुधि प्रान उबारो।।
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो ।।3।।
रावण त्रास दई सिय को सब,
राक्षसि सों कहि सोक निवारो।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु,
जाय महा रजनीचर मारो।
चाहत सीय असोक सों आगि सु,
दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो ।। 4।।
बाण लग्यो उर लक्ष्मन के तब,
प्राण तजे सुत रावण मारो।
लै गृह वैद्य सुषेन समेत,
तबै गिर द्रोण सुबीर उपारो।
आन संजीवन हाथ दई तब,
लछिमन के तुम प्राण उबारो।
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो ।। 5।।
रावण युद्ध अजान कियो तब,
नाग कि फांस सबै सिर डारो।
श्री रघुनाथ समेत सबै दल,
मोह भयो यह संकट भारो।
आनि खगेस तबै हनुमान जु,

बन्धन काटि सुत्रास निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो ।। 6।।
बन्धु समेत जबै अहिरावन,
लै रघुनाथ पताल सिधारो।
देविहिं पूजि भली विधि सों बलि,
देउ सबै मिलि मन्त्र विचारो।
जाय सहाय भयो तब ही,
अहिरावन सैन्य समेत संहारो।
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो ।। 7।।
काज किये बढ़ देवन के तुम,
वीर महाप्रभु देखि विचारो।
कौन सों संकट मोर गरीब को,
जो तुमसों नहिं जात है टारो।
वेगि हरो हनुमान महाप्रभु,
जो कछु संकट होय हमारो।
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो ।। 8।।

दोहा

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर।
बज्र देह दानव दलन, जय जय जय कपि सूर।।

पवन सुत हनुमान की जय



बुधवार व्रत

बुधवार का व्रत बुध ग्रह की शान्ति तथा सद्बुद्धि की प्राप्ति के लिए किया जाता है। श्वेत पुष्प, वस्त्र तथा चन्दनादि से बुध की पूजा करनी चाहिए। इस व्रत में केवल एक बार भोजन का विधान है। जो कुछ भोजन करें उसी प्रकार की वस्तु

दान भी दें। यही व्रत की विशेषता है। सात बुधवार का व्रत सर्वविदित है। बुधवार का विशाखा नक्षत्र का योग व्रत के लिए विशेष फलदायी है।

व्रत-कथा

एक समय की बात है—एक व्यक्ति अपनी ससुराल गया और कुछ दिन तक वहां ठहरा रहा। इसके पश्चात् उसने जाने के लिए विदा मांगी लेकिन उसके ससुराल वालों ने कहा कि आज बुधवार है। आज के दिन लड़कियों को विदा नहीं किया जाता अतएव तुम कल आकर ले जाना। लेकिन वह मूर्ख नहीं माना और उसने कहा कि मुझे आज ही विदा कर दीजिए। उसके जिद्द करने पर उन लोगों ने लड़की और दामाद को विदा कर दिया। मार्ग में एक स्थान पर उस मनुष्य की स्त्री ने कहा—मुझको प्यास लगी है, तुम कहीं से पानी ले आओ।

वह मनुष्य लोटा लेकर रथ से उतरकर पानी लेने के लिए चला गया और जब एक कुएं से पानी लेकर वापस लौटा तो क्या देखता है कि उसकी स्त्री के पास उसकी शक्लो-सूरत का और उस जैसे कपड़े पहने हुए एक दूसरा मनुष्य रथ पर बैठा है। यह देखकर उसकी आंखों में खून उतर आया और उसने क्रोध में भरकर उस दूसरे मनुष्य से कहा—"तुम कौन हो जो कि मेरी स्त्री के पास बैठे हो ?"

इस पर उस दूसरे मनुष्य ने उत्तर दिया—"अबे जा ! तू कौन है ? चल भाग यहां से। यह स्त्री तो मेरी है।"

इस प्रकार झगड़ा बढ़ गया और वहां बहुत से लोग एकत्र हो गये। जब लोगों ने उस स्त्री से पूछा तो वह भी कोई सही उत्तर न दे सकी क्योंकि वह दोनों की एक जैसी शक्ल-सूरत व एक जैसे वस्त्र देखकर अपने असली पति को न पहचान पा रही थी। इतने में उस स्थान पर राजा के सिपाही आ पहुंचे और उस मनुष्य को, जो कि लोटे में पानी लेकर आया था, पकड़ने के लिए तैयार हो गये। इस पर वह मनुष्य बड़ा घबराया और भगवान से प्रार्थना करने लगा—'प्रभु ! यह क्या अन्याय हो रहा है ? जो सच्चा है वह झूठा और जो झूठा है वह सच्चा प्रमाणित हो रहा है !'

इस पर आकाशवाणी हुई—"यह सब-कुछ बुध देव की माया से हो रहा है। यह मनुष्य अत्यन्त आग्रह करके अपनी स्त्री को बुध के दिन अपने साथ लिवा ले जा रहा था। इसी कारण यह क्लेश प्राप्त हुआ है।"

इसके पश्चात् श्री बुध देव तो अन्तर्ध्यान हो गए और वह मनुष्य श्री बुध देव की स्तुति करने लगा जिससे श्री बुध देव ने अपनी माया को हटा लिया और वह दूसरा मनुष्य रथ में से अदृश्य हो गया, तब वह अपनी पत्नी सहित अपने घर आया।

जो कोई इस कथा को पढ़ता या सुनता है, उसको बुध के दिन गमन करने का कोई दोष नहीं लगेगा।

एक और अन्य व्रत-कथा

एक व्यापारी दूर-दूर के देशों में घूम-घूम कर व्यापार करता था। एक बार जब वह व्यापार के सिलसिले में समुद्र पार गया हुआ था तो उसकी पत्नी को बुधवार के दिन एक परम सुन्दर बालक पैदा हुआ। व्यापारी को परदेश में बारह वर्ष लग गये और समुद्र पार होने के कारण न तो वह कोई पत्र स्वयं ही भेज सका और न ही उसे कोई पत्र मिला। बारह वर्ष के बाद वह बहुत-सा धन लेकर अपने घर को वापस लौटा।

अपने नगर से थोड़ी दूरी पर उसके धन-सम्पत्ति से लदे हुए छकड़े एक खेत में धंस गए। अनेकों उपाय करने पर भी वह बाहर न निकले। पास-पड़ौस के गांव वालों ने भी बड़ा जोर लगाया मगर किसी के बनाए से भी कुछ न बन सका। कई दिन बीत गए तब गाड़ियों पर चौकीदार नियत करके वह व्यापारी अपने नगर में आया लेकिन बारह वर्ष बीत जाने के कारण कोई भी उसे न पहचान सका। उसको एक ज्योतिषी ने कहा, यदि बुधवार को पैदा हुआ कोई आदमी तुमको मिल सके तो ले आओ। अब उसने यही बात गांव वालों को कही और साथ ही अपना परिचय भी दिया। गांव वालों ने व्यापारी का अभिनन्दन किया और उसे बताया कि उसका अपना ही लड़का बुध के दिन पैदा हुआ है उसको ही ले जाओ।

उस व्यापारी को अपने लड़के के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था और उसकी स्त्री भी अपने पति का पता न लगने के कारण अतीव दुःखी थी। जब उसको अपने पति के आगमन का पता चला तो वह अपने पुत्र को साथ लेकर दौड़ी हुई आई और उसके चरणों पर गिर पड़ी। व्यापारी ने भी अपने होनहार पुत्र को गले लगाया। जो कि अपनी अनुपम सुन्दरता, विद्या, प्रतिभा तथा शील स्वभाव के लिए दूर-दूर तक विख्यात था। पति-पत्नि व पुत्र तीनों ही एक-दूसरे से मिलकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। व्यापारी ने अपने पुत्र को साथ लेकर गाड़ियों को दल-दल में से निकाला और आनन्द से अपने दिन बिताने लगा। तभी से सब स्त्रियां पराक्रमी एवं सुन्दर पुत्र पाने की लालसा से बुधवार का व्रत रखती हैं।



बुधाष्टमी की पूजा और कथा

भगवान श्रीकृष्ण चन्द्र जी महाराज ने महाराजा युधिष्ठिर से कहा—हे युधिष्ठिर ! अब मैं बुधाष्टमी व्रत के सम्बन्ध में कहता हूं। इस व्रत के करने से

मनुष्य को नर्क नहीं मिलता। सतयुग के अन्त में बहुत भृत्य, सहृदय, मित्र-मन्त्रियों सहित एक इल नाम का राजा था। वह एक बार हिमालय पर्वत पर गया। वह एक ऐसे स्थान पर पहुंचा जिस जगह को श्राप था कि जो व्यक्ति वहां जायेगा, वह स्त्री हो जायेगा। राजा शिकार की धुन में चलता-चलता उसी क्षेत्र में पहुंचा और वहां पहुंचने के साथ ही वह स्त्री बन गया। अब वह वन में परम सुन्दरी स्त्री बना हुआ घूमने लगा। मैं कहां हूं, किसकी स्त्री हूं और कहां से आई हूं : इन बातों का उसे कुछ भी ज्ञान न रहा। रूप, उदारता और गुण से युक्त उस स्त्री को देखकर श्री बुध देव जी अत्यन्त प्रसन्न हुए और उसको अपने पास रख लिया, उससे पुरखा नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। यही पुरखा समस्त चन्द्रवन्शी राजाओं के आदि पुरखे हैं। तभी से लोग बुधाष्टमी का पूजन करते चले आ रहे हैं। यह बुधाष्टमी समस्त पापों को मिटाने वाली तथा सब विपत्तियों को दूर करने वाली है। इसी सम्बन्ध में हे धर्म पुत्र ! मैं तुमको एक और कथा सुनाता हूं।

विदेह नगर में निमि नाम का राजा था। संग्राम में शत्रुओं ने उसको मार डाला। उस राजा की रानी जिसका नाम उर्मिला था, निर्धन होकर एक लड़के और लड़की को साथ लेकर एक ब्राह्मण के घर जाकर रहने लगी। अपने और अपने बच्चों के पेट की खातिर वह ब्राह्मण के घर में धान कूटती और आटा पीसती। एक दिन उसने कुछ गेहूं चुराकर आटा पीसकर अपने बच्चों को खिला दिया, कुछ दिनों के बाद रानी मर गयी। उसका पुत्र सत्ययोग से एक बार फिर अपनी नगरी विदेह में जाकर राजा हो गया और उसकी कन्या जो कि परम सुन्दरी थी जिसका नाम श्यामला था, धर्मराज ने ग्रहण कर लिया। उन्होंने श्यामला को यथोचित् शिक्षा दी और अपने घर में सात कीलों से बन्द सात प्रवर भी दिखाये और कहा—हे वैदेहनन्दिनी ! इनको कभी न खोलना।

यह सुनकर धर्मराज की पत्नी श्यामला ने 'हां' कहकर उनको विश्वास दिलाया कि वह उनकी आज्ञा के अनुसार ही काम करेगी और उन प्रवरों को कदापि न खोलेगी। लेकिन वह अपनी बात पर कायम न रही और एक दिन उसने उन प्रवरों में से एक को खोल डाला और उसमें अपनी माता रानी उर्मिला को देखा। वह रो रही थी और यमराज के दूत उसे खौलते हुए तेल में डालकर यातना दे रहे थे।

यह देखकर श्यामला अत्यन्त दुःखी हो गई। उस प्रवर को बन्द कर दिया और दूसरे प्रवर को खोला। उसमें भी देखा कि उसकी माता एक शिला पर पड़ी है, और यमदूत उसे लोहे के मूसलों से कुचल रहे हैं। तब उसने तीसरे को खोलकर देखा तो देखती है कि उसकी माता कीचड़ में फंसी हुई है और यमदूत उस पर पथराव कर रहे हैं, चौथे प्रवर में भयंकर कुत्ते उसके शरीर को नोंच रहे थे। पांचवें प्रवर में देखा कि उसकी माता को अभक्ष्य पदार्थ खिलाए जा रहे हैं। और वह बुरी तरह से चिल्ला रही थी। वह पृथ्वी पर पड़ी थी और यमदूत उसके गले पर पैर रखकर उसको

पीड़ा पहुंचा रहे थे। संडासी से पकड़कर हथौड़ों से उसके शरीर पर चोटें मारी जा रही थीं। छठे प्रवर में उसको कोल्हू में डालकर मुग्दर से पीटा जा रहा था। और सातवें प्रवर में काले-काले कीड़े जहां-तहां उसके शरीर को काट रहे थे।

अपनी माता की यह अवस्था देखकर श्यामला अत्यन्त दुःखी हुई। उसको उदास देखकर धर्मराज ने पूछा—"प्रिये ! तुम किस कारण से उदास हो ? क्या तुमने इन प्रवरों को खोल डाला ?"

श्री धर्मराज के प्रश्न करने पर श्यामला ने पूछा—"मेरी माता ने अपने पूर्वजन्म में ऐसा कौन-सा पाप किया था जिसके कारण आप उसे इतनी यातना दे रहे हैं ?"

श्यामला के पूछने पर धर्मराज बोले—"क्या तुम नहीं जानतीं जो मुझसे पूछ रही हो ? ब्राह्मण का धन चुराकर भोजन करने से सात पीढ़ी तक नर्क भोगना पड़ता है। गेहूं के दाने कृमि रूप होकर सात पुश्त तक दुःख देते हैं। वही गेहूं के दाने, जिनको कि तुम्हारी माता ने ब्राह्मण के घर से चुराया था अब कीड़े बनकर उसको दुःख दे रहे हैं।"

श्यामला ने कहा—"तुम जैसा जामाता पाकर मेरी माता इतना दुःख पाये यह तो बड़े आश्चर्य की बात है। इसलिये जिस तरह भी वह इस पाप से छूटे वैसा ही कीजिये।"

यह सुनकर धर्मराज देर तक ध्यान मग्न रहे। उन्होंने श्यामला से कहा—"इस जन्म से पहले तुम ब्राह्मणी थीं। उस जन्म में सखी के साथ यथोचित् फलदायिनी बुधाष्टमी के व्रत के पुण्य को यदि तुम अपनी माता को दो तो तुम्हारी माता यातना से मुक्त हो जायेगी।"

श्री धर्मराज की बात सुनकर श्यामला ने स्नान करके तीन बार 'दिया' कहकर बुधाष्टमी का पुण्य अपनी माता को दे दिया जिसके प्रभाव से वह उसी क्षण मोक्ष को प्राप्त हो गई।

व्रत-विधि

राजा युधिष्ठिर ने कहा—प्रभु ! अब आप इस बुधाष्टमी के व्रत की विधि मुझसे कहिए।

भगवान श्रीकृष्ण चन्द्र जी महाराज बोले—जब भी शुक्ल पक्ष की अष्टमी को बुधवार हो तभी इस व्रत को करना चाहिए। इसमें एक बार भोजन करने का विधान है। प्रातः नदी में स्नान कर जल और रत्नों से कमण्डल भरकर घर में आकर बुध की पूजा करें।

माशा भर, या चार रत्ती या दो रत्ती सोने की बुध की मूर्ति बनवायें। अंगुष्ठ मात्र, चतुर्भुज सुलक्षण बुध की मूर्ति बनवाकर पदम में सित तण्डुलों

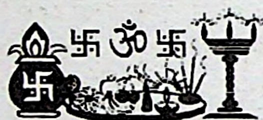
से पूरित बिना छेद का कलश स्थापित करें। सोने के बर्तनों को दो पीले वस्त्रों से ढंक कर अक्षत आदि से पूजा करें। पंचामृत से स्नान करवाकर क्रम-पूर्वक मन्त्रों से नैवेद्य गुग्गल, धूप, दशांग, सुगन्ध, आदि अर्पण करें।

भगवान श्रीकृष्ण चन्द्र जी महाराज बोले—व्रत के आदि, मध्य या अन्त में उद्यापन करें। सप्तमी में मनुष्य दातुन व स्नान करे और आचमन करे। संकल्प करके दस ब्राह्मणों का वरण करे। अष्टमी में प्रातःकाल उठकर पवित्र हो गंगा आदि किसी तीर्थ में स्नान करके लीपे-पोते। घर में सबसे पहले पुन्याहवाचन और रक्षाबन्धन करावे, फिर प्राणायाम करके तिथिवार के उच्चारण के बाद कहे कि सांगफल की प्राप्ति के लिए मैंने बुधाष्टमी का व्रत किया था अब उद्यापन करूंगा। यह कहकर कुछ जल छोड़े। वस्त्र आदि से आचार्य तथा वस्त्र, ताम्बूल, भूषण आदि से ब्राह्मणों का वरण करे। तत्पश्चात् प्रथम गृहयज्ञ करके पूजा करे। तदनन्तर मंत्र वरन से कार्णिका सहित दल अग्र और केसरों को पूर्ण करके मध्य में अष्टदल कमल बनावे। कर्णिका और दलों में यथा शक्ति अन्न छोड़े। उसी के बीच पूर्व आदि दिशाओं में कुम्भ स्थापित करके उनको वस्त्र से अलंकृत करे। गंगाजल, पंचपल्लव और पंचवल्कल से युक्त नवकलशों की गंगाजल से यथाविधि पूजा करे। तदनन्तर उस मंडल में ग्रहों को स्थापित करे उसके पूर्व में वस्त्र वल्कल, पल्लव; कंचन, पंचरत्न सहित बुध को ग्रहों के बीच रखकर मंत्रों से प्रतिष्ठा और पूजा करे और कहे कि पहले सात जन्मों ने जो चोरी या और कुछ पाप मैंने किया हो उसकी निवृत्ति के लिए जो बुधाष्टमी का व्रत मैंने किया है उसके सांगफल की प्राप्ति और बुध की प्राप्ति के लिए उद्यापन करूंगा। इस प्रकार मूर्ति बनवाकर उसकी पूजा करे। वर्ष भर अथवा उससे आधे या चौथाई सोने से बनवाकर कर्णिका के बीच कलश के ऊपर तांबे का पतरा रखकर उसके ऊपर उस मूर्ति को स्थापित कर पंचामृत से उसको स्नान करवाये। दो वस्त्रों से वेष्टित करे और बुध वासराकृति अत्रेय पीत वस्त्र चतुर्भुज शंख, चक्र, गदा सागधर नारायण का ध्यान करे। पीत पुष्प, अक्षत आदि सोलहों उपचारों से पुरुष सूक्त पढ़कर पूजा करे। उसके दायें **'इ विष्णु क्स'** मन्त्र से अधिदेवता विष्णु की और बायें सत्य विधिवत सहस्त्र शीर्षापुरुष की पूरा करे। दलों से पूर्व से लेकर प्रदक्षिण रीति से रवि, सोम, बुध, कुज, गुरू, शुक्र, शनि, केतु अनन्त वामन, विष्णु सौरि, सत्य, जनार्दन, हंस नारायण की दल में अग्र में धूप-दीप, नैवेद्य से पूजा करे। बारह इन्द्र आदि दस दिग्पालों की पूजा करके चित्रगुप्त और श्यामला की पूजा करे। तांबे के थाल में सोलह लड्डू, यज्ञोपवीत फल दक्षिणा रखकर दान करे। शास्त्रोक्त विधि से हवन इस प्रकार करे कि मण्डल के पश्चिम में चौकोर वेदी बनावे। उल्लेखनादि कुशकडिका के कृत्य करके अग्निस्थापन करे। इद्मते दर्भ में परिषस्तरण करके पात्रासादन करे। पूर्ण पात्र रखने के अन्त में ब्राह्मण को आसन दे और दध्याधान के अन्त में अपामार्ग की लकड़ी

जौ, ब्रीहि, तिल, घी, गेहूं से अलग मुख्य आहुति दे। उद्‌बध्य सब, इस मंत्र को अष्टात्तरशत हवन करे। मन्त्रों से भगवान श्री विष्णु नारायण का हवन करे। आधिपत्य और अधिदेव के मंत्रों से हवन करे। फिर ग्रहादिकों का हवन करके पूर्णाहुति देकर ब्रह्म विसर्जन करे। पत्नी सहित आचार्य को यथाविधि पूजा करके मूर्ति वस्त्रकलश गौदान दक्षिणा स्नान करे। ब्रह्मा आदि ब्राह्मणों को दक्षिणा आदि से सन्तुष्ट करने के पश्चात् ब्रह्म भोज करे।

आरती भगवान युगलकिशोर की

आरति जुगलकिशोर की कीजै, तन मन धन न्यौछावर कीजै।
गौर स्याम मुख निरखन कीजै, प्रेम स्वरूप नयन भर पीजै।
रवि ससि कोटि बदन की सोभा, ताहि देखि मेरो मन लोभा।
मोर मुकट कर मुरली सौहे,नटवर वेष निरख मन मोहै।
ओढ़े पीत नील पट सारी, कुंजन ललना-लालबिहारी।
श्री पुरुषोत्तम गिरिवरधारी, आरति करत सकल ब्रजनारी।
नंदनंदन वृषभानु-किशोरी, परमानंद प्रभु अविचल जोरी।



बृहस्पतिवार व्रत

किसी समय एक नगर में एक बहुत बड़ा व्यापारी रहा करता था। वह जहाजों पर माल लदवाकर दूसरे देशों को भेजा करता था और खुद भी जहाजों के साथ दूर-दूर देशों को जाया करता था और इस तरह से खूब धन कमाकर लाता था। उसकी गृहस्थी खूब मजे से चल रही थी। वह दान भी खूब खुलकर करता था। और उसका इस तरह से दान देना उसकी स्त्री को बिल्कुल पसन्द न था। वह किसी को एक दमड़ी देकर भी खुश न थी।

एक बार जब वह सौदागर माल से जहाज को भरकर किसी दूसरे देश को गया था तो पीछे से गुरू बृहस्पति देवता साधु का रूप धारण करके उसके मकान पर उसकी कंजूस पत्नी के पास पहुंचे और भिक्षा याचना की। उस व्यापारी की पत्नी ने बृहस्पति देवता से कहा—"महात्मा जी, मैं तो इस दान-पुण्य से बहुत तंग आ गई। मेरा पति अपना सारा धन दान में ही व्यर्थ लुटाता रहता है। अब आप ऐसा कोई उपाय कीजिए जिससे कि हमारा सारा धन नष्ट हो जाए। इससे न धन लुटेगा और न ही मुझे दुःख होगा।"

बृहस्पति देवता ने कहा—"पुत्री ! तुम भी बड़ी विचित्र हो। धन और सन्तान तो सभी चाहते हैं। पुत्र और लक्ष्मी तो पापी के घर में भी होनी चाहिए। यदि तुम्हारे पास अत्यधिक धन है तो इससे तुम दिल खोलकर पुण्य कार्य करो, भूखों को भोजन, प्यासों को पानी पिलाओ, यात्रियों के लिए धर्मशालायें बनाओ, कितनी ही कुंवारी कन्यायें धन के अभाव में बिन ब्याही बैठी हैं, उनका विवाह सम्पन्न कराओ और भी कई पुण्य कार्य ऐसे हैं जिसको करके तुम्हारा नाम लोक-परलोक में सार्थक हो सकता है।"

लेकिन व्यापारी की स्त्री बड़ी ढीठ थी। उसने कहा—"महाराज जी, मैं इस सम्बन्ध में आपकी कोई बात नहीं सुनना चाहती। मुझे ऐसे धन की बिल्कुल आवश्यकता नहीं है जो मैं दूसरों को बांटती फिरूं।"

गुरू साधु बोले—"यदि तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो फिर ऐसा ही होगा। तुम अब ऐसा करना कि सात बृहस्पतिवार तक घर को लीपन करके पीली मिट्टी से अपने केशों को धोना, भोजन में मांस तथा मदिरा ग्रहण करना, भट्टी चढ़ाकर कपड़े धोना, बस तुम्हारा सब धन नष्ट हो जायेगा।" और इतना कहने के पश्चात् बृहस्पति देवता अन्तर्ध्यान हो गए।

उस औरत ने जो कि श्री बृहस्पति गुरू को साधु समझे हुए थी, उसके कहे अनुसार सात बृहस्पतिवार तक वैसा ही किया। केवल छः बृहस्पतिवार ही बीतने पर उस स्त्री का सम्पूर्ण धन नष्ट हो गया और वह स्वयं भी परलोक सिधार गई।

उधर उसके पति का माल से भरा हुआ जहाज समुद्र में डूब गया और उसने बड़ी मुश्किल से लकड़ी के तख्तों पर बैठकर अपनी जान बचाई।

खैर, वह रोता-धोता किसी न किसी तरह से अपने नगर में पहुंचा। वहां आकर उसने देखा कि उसका सब धन नष्ट हो गया है और उसकी छोटी लड़की बैठी आंसू बहा रही है। उस व्यापारी ने अपनी लड़की को तसल्ली देकर शांत कराया और उससे सब समाचार पूछा।

लड़की ने अपने पिता को उस साधु वाली पूरी कहानी सुना दी। उसने लड़की को शान्त किया और भगवान की करनी पर प्रसन्न हुआ। अब वह प्रतिदिन जंगल में जाकर वहां से लकड़ियां चुन लाता और उन्हें नगर में बेचकर अपनी जीविका चलाने लगा। मगर धन के अभाव के कारण वह वहुत दुःखी था। क्योंकि गुजारा बड़ी मुश्किल से चलता था।

एक दिन उसकी लड़की ने उससे दही खाने की इच्छा प्रकट की। लेकिन उसके पास तो एक पैसा भी न था, जो लड़की को दही लाकर दे देता। चुनांचे वह उसे झूठे आश्वासन देकर जंगल में जाकर, एक वृक्ष के नीचे बैठकर अपनी पूर्व दशा का विचार करने लगा। वह बृहस्पति का दिन था। बृहस्पति देवता उसकी अवस्था देखकर साधु का भेष धारण करके वहां आ पहुंचे और उस

व्यापारी के पास आये और कहने लगे—"लकड़हारे, तू इस जंगल में किस चिंता में बैठा है ?"

व्यापारी ने उत्तर दिया—"महाराज, आप सब कुछ जानने वाले हैं।" इतना कहकर उसने आर्द्र कण्ठ और भीगी आंखों से बृहस्पति देव को अपनी सारी आपबीती सुना दी। बृहस्पति देवता ने कहा—"भाई, तुम्हारी पत्नी ने बृहस्पति के दिन भगवान का अपमान किया था जिसके कारण से तुम्हारा यह हाल हुआ है। लेकिन अब चिंता न करो। भगवान तुम्हें पहले से भी अधिक धनवान करेंगे। तुम मेरे कहने के अनुसार बृहस्पति के दिन बृहस्पति का पाठ किया करो। दो पैसे के चने और मुनक्का मंगाकर जल के लोटे में थोड़ी सी शक्कर डालकर वह अमृत और प्रसाद परिवार के सब सदस्यों को तथा सुनने वालों में बांट दिया करो और खुद भी अमृत पान किया करो तथा प्रसाद पाया करो तो भगवान तुम्हारी सारी कामनायें पूरी करेंगे।"

साधु को प्रसन्न देखकर उस व्यापारी ने कहा—"महाराज, मुझे लकड़ियों में से इतना भी लाभ नहीं है कि दो पैसे की दही लाकर भी अपनी इकलौती कन्या को खिला सकूं। उसको मैं हर रोज झूठे आश्वासन देकर टाल आता हूं। और इसलिए मैं इस समय यहां इतना व्याकुल होकर बैठा हुआ था।"

आचार्य बृहस्पति ने कहा—"भक्तराज ! तुम चिंता मत करो। बृहस्पति के दिन तुम शहर में लकड़ियां बेचने के लिए जाना। तुमको उस दिन लकड़ियों से चार पैसे अधिक मिलेंगे। जिस में से तुम दो पैसे की दही लाकर अपनी कन्या को खिलाना और दो पैसे का मुनक्का और चने लाकर बृहस्पति देवता की कथा करना। जल में जरा सी शक्कर डालकर अमृत बनाना और कथा का प्रसाद सबको बांटना और खुद भी खाना तो तुम्हारे सब मनोरथ सिद्ध हो जायेंगे।" इतना कहकर बृहस्पति देवता अन्तर्ध्यान हो गए।

धीरे-धीरे बृहस्पतिवार का दिन भी नजदीक आ पहुंचा। व्यापारी ने जंगल में से लकड़ियां इकट्ठी कीं और शहर में बेचने के लिए लाया। उसको उस दिन चार पैसे अधिक मिले, जिनमें से दो पैसे की दही लेकर उसने अपनी लड़की को दी और दो पैसे के चने और मुनक्का लेकर अमृत बनाकर प्रसाद बांटा और प्रेम से खाया। उसी दिन से उसकी सब कठिनाइयां दूर होने लगीं। लेकिन अगले बृहस्पतिवार को बृहस्पति देवता की कथा करवाना भूल गया।

शुक्रवार को उस नगर के राजा ने आज्ञा दी कि कल मैंने एक बहुत बड़े यज्ञ का आयोजन करवाना है। अतएव कोई भी व्यक्ति अपने घर में अग्नि न जलाये और समस्त जनता मेरे यहां आकर भोजन ग्रहण करे। जो इस आदेश की अवहेलना करेगा उसे सूली पर लटकाया जायेगा।

राजा की आज्ञानुसार अगले दिन सब लोग राजा के महल में भोजन करने के लिए गए लेकिन वह व्यापारी और उसकी लड़की दोनों तनिक विलम्ब से पहुंचे,

अतएव राजा ने उन दोनों को अपने महल के अन्दर ले जाकर भोजन करवाया। जब यह दोनों पिता-पुत्री भोजन करके वापिस आ गए तो महारानी की नजर उस खूंटी पर पड़ी जिस पर कि उसका नौलखा हार टंगा हुआ था। उस खूंटी पर अब हार नहीं था। उसको विश्वास हो गया कि उसका वह हार लकड़हारा और उसकी लड़की ही ले गए हैं। तत्काल सिपाहियों को बुलाकर दोनों बाप-बेटी को कैद में डाल दिया गया।

बंदीगृह में पड़कर दोनों बाप-बेटी अत्यन्त दुःखी हो गए। वहां उन्होंने बृहस्पति का स्मरण किया। चुनांचे देवता वहीं पर प्रकट हो गए और उससे कहने लगे—भक्तराज ! तुम पिछले सप्ताह बृहस्पति देवता की कथा करना भूल गए थे। इसलिए तुम्हारा यह हाल हो गया है। अब भी तुम किसी प्रकार की चिंता मत करो, बृहस्पति के दिन कैद खाने के दरवाजे पर तुमको दो पैसे पड़े हुए दिखाई देंगे, तुम वह पैसे उठाकर चने और मुनक्का मंगा लेना, फिर विधिपूर्वक बृहस्पति देवता का पूजन तथा कथा करना, बस फिर तुम्हारे सब दुःख दूर हो जायेंगे।

जब बृहस्पति का दिन आया तो उस व्यापारी को जेल के मुख्य द्वार पर दो पैसे पड़े मिले। बाहर सड़क पर एक औरत जा रही थी। व्यापारी ने कहा कि वह बाजार से उस दो पैसे के चने और मुनक्का ला दे ताकि मैं बृहस्पति देवता की कथा कर सकूं। उस औरत ने कहा—मैं अपने कपड़े सिलाने जा रही हूं अतः मैं तुम्हारे बृहस्पति भगवान को क्या जानूं। इतना कहकर वह औरत वहां से चली गई। थोड़ी देर के बाद वहां से एक और स्त्री निकली। व्यापारी ने उसको बुलाकर प्रार्थना की—बहिन ! तु मुझे बाजार से दो पैसे के चने और मुनक्का ला दे। मुझे बृहस्पतिवार की कथा करनी है और प्रसाद बांटना है।

वह स्त्री बृहस्पति का नाम सुनकर गद्‌गद होकर बोली—बलिहारी जाऊं, भगवान के नाम पर मैं तुम्हें अभी मुनक्का और चने लाकर देती हूं। मेरा इकलौता बेटा मर गया है। मैं तो उसके लिए कफन लेने जा रही थी, मगर अब पहले तुम्हारा काम करूंगी और उसके बाद बेटे के लिए कफन लाऊंगी। फिर उसने व्यापारी से दो पैसे लिए और बाजार से चने और मुनक्का ले आई और स्वयं भी बृहस्पति देवता की कथा समाप्त होने के पश्चात् कफन लेकर अपने घर की ओर रवाना हुई।

देखती क्या है कि लोग उसके लड़के की लाश लेकर 'राम नाम सत है' कहते हुए श्मशान की ओर जा रहे हैं। स्त्री ने उन लोगों से कहा—भाई, मुझे लाड़ले का मुख तो देख लेने देते। लोगों ने अर्थी को पृथ्वी पर रख दिया। स्त्री ने अपने पुत्र के मुख में प्रसाद और अमृत डाला। प्रसाद और अमृत के मुख में पड़ने के साथ ही लड़का उठ खड़ा हुआ और अपनी माता को गले लगाकर मिला।

दूसरी स्त्री जिसने कि बृहस्पति देवता का निरादर किया था वह जब अपने पुत्र के विवाह के लिए कपड़े लेकर वापिस लौटी और जब वह घोड़ी पर सवार हो बाजे-गाजे से बारात के साथ बाजार से निकला तो घोड़ी ने एक

ऐसी छलांग मारी कि वह जमीन पर आ गिरा। बुरी तरह घायल हो गया और कुछ ही क्षण के पश्चात् मर गया। तब वह स्त्री रो-रोकर बृहस्पति देवता से कहने लगी—हे देव, मेरा अपराध क्षमा करो।

उसकी प्रार्थना सुनकर भगवान श्रीवीर साधु का रूप धारण करके वहां पहुंचे और उस स्त्री से कहने लगे—देवी ! अधिक शोर मचाने की कोई आवश्यकता नहीं है। तुमने देवता का निरादर किया था जिसका परिणाम तुम्हें यह मिला है। अब भी तुम जेल खाने जाकर उस भक्त से क्षमा याचना करो व उससे बृहस्पति देवता की कथा सुनो। इससे सब ठीक हो जाएगा। इतना कहकर बृहस्पति देवता अन्तर्ध्यान हो गए।

वह स्त्री फिर जेल खाने पहुंची और मुख्य द्वार के पास जाकर उस व्यापारी से मिली। हाथ ज़ोड़कर कहने लगी—भक्तराज ! मैंने तुम्हारा कहना नहीं माना और तुम्हें मुनक्का और चने लाकर नहीं दिए, इससे बृहस्पति देवता मुझसे रुष्ट हो गए हैं। जिसके कारण मेरा इकलौता बेटा घोड़ी से गिरकर मर गया।

उन्होंने कहा—हे माता ! तू चिन्ता मत कर, बृहस्पति देवता सब कल्याण करेगा। तुम अब अगले बृहस्पतिवार को आकर बृहस्पति देवता की कथा सुनना। तब तक अपने लड़के के शव को फूलों, इत्र तथा घी आदि सुगन्धित वस्तुओं में डालकर रख दो। स्त्री ने वैसा ही किया। बृहस्पति का दिन भी आ पहुंचा। दो पैसे के मुनक्के और चने लेकर, पवित्र जल का लोटा भरकर कारागार के द्वार पर आई और प्रेम और श्रद्धा के साथ बृहस्पति देवता की कथा सुनी। जब कथा समाप्त हुई तो अमृत और प्रसाद लाकर अपने मृत पुत्र के मुख में डाला। एकाएक उसको सांस आने लगी और वह खड़ा हो गया। पुत्र को लेकर वह प्रसन्नतापूर्वक अपने घर को रवाना हुई और बृहस्पति देवता के गुण गाने लगी। और उसी दिन रात्रि में राजा को बृहस्पति देवता ने स्वप्न में दर्शन दिए और कहा—'राजन् ! तूने जिस व्यापारी और उसकी लड़की को बंदीगृह में बन्द कर रखा है वह दोनों निर्दोष हैं। अब दिन निकलने के साथ दोनों को जेल से मुक्त कर देना। तेरी रानी का नौलखा हार उस खूंटी पर लटका हुआ है। दिन निकला तो रानी ने अपना हार उस खूंटी पर लटका हुआ देखा। राजा ने उस व्यापारी तथा उसकी लड़की दोनों को जेल से मुक्त करके वस्त्र धारण करवा कर अपराध के लिए क्षमा याचना की और उसको अपना आधा राजपाट देकर तथा उसकी लड़की का उच्चकुल में विवाह सम्पन्न करवा कर दहेज में अनमोल हीरे जवाहरात दिए।

गुरू बृहस्पति ऐसे ही हैं, भोले हैं, जैसी जिसकी मनोकामनाएं होती हैं वह पूर्ण करते हैं। जो कोई श्रद्धा या प्रेम से बृहस्पति देवता की कथा पढ़ेगा या सुनेगा अथवा दूसरों को पढ़कर सुनायेगा, उसकी सब मनोकामनायें पूरी होंगी। कुंवारी कन्याएं इस व्रत को करके मनवांछित पति प्राप्त करती हैं।

आरती बृहस्पति देवता की

जय बृहस्पति देवा, स्वामी जय बृहस्पति देवा।
छिन-छिन भोग लगाऊं कदली फल मेवा।।ॐ।।
तुम पूर्ण परमात्मा तुम अन्तर्यामी।
जगत पिता जगदीश्वर, तुम सबके स्वामी।।ॐ।।
चरणामृत निज निर्मल, सब पातक हर्त्ता।
सकल मनोरथ दायक, कृपा करो भर्त्ता।।ॐ।।
तन, मन, धन, अर्पण कर जो जन शरण पड़े।
प्रभु प्रकट तब होकर, आकर द्वार खड़े।।ॐ।।
दीन दयाल दयानिधि, भक्तन हितकारी।
पाप दोष सब हर्त्ता, भव बन्धन हारी।।ॐ।।
सकल मनोरथ दायक, सब संशय तारी।
विषय विकार मिटाओ सन्तन सुखकारी।।ॐ।।
जो कोई आरती तेरी प्रेम सहित गावे।
जेष्ठानन्द, कैद से मुक्ति सो निश्चय पावे।।ॐ।।



शुक्रवार व्रत-कथा अथवा सन्तोषी माता की कथा

सिद्ध सदन सुन्दर बदन, गण नायक महाराज।
दास आपका हूं सदा, कीजे जन जन के काज।।
जय शिवशंकर गंगाधर, जय जय उमा भवानी।
सिया राम कीजे कृपा, हरि-राधा कल्यानी।।

प्रिय भक्त बन्धुओं और बहनों;

आपके सामने आज एक ऐसी सुन्दर पवित्र वार्ता आपको चरित्र रूप में बता रहे हैं जिसे श्रद्धा, आस्था पूर्वक श्रवण करने से समस्त गृहस्थ परिवारजन सकल पीड़ा और दुःखों से छुटकारा पा जाते हैं।

सभी जानते हैं जब-जब भक्तों पर भीर पड़ी है भगवान ने अनेकों अवतार लिए हैं। जैसे कृष्णावतार, रामावतार, दुर्गावतार, दुर्गा उत्पत्ति आदि प्रमुख अवतार हैं। उसी तरह माता सन्तोषी की मृत्यु लोक पर जनित करना जो गणेश भगवान की अनुकम्पा है।

सन्तोषी मां को उमा रूप भी बताया गया है। और उमा के अन्दर साक्षात् भगवती दुर्गा का रूप माना गया है। अतः सकल दुःख हरणी माता सन्तोषी एक शीर्षस्थ स्तम्भ है।

दुर्गा सप्तशती के अध्याय पांच में नवां श्लोक है, जो भगवती देवी का गुणगान करता है।

'नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताभ्।।

देवी को नमस्कार है, महादेवी शिवा को नमस्कार है, प्रकृति एवं भद्रा को प्रणाम है। हम लोग नियमपूर्वक जगदम्बा को नमस्कार करते हैं।

व्रत-कथा

एक परिवार में एक बुढ़िया थी, उसके सात पुत्र थे। सभी बेटे कमाने वाले थे लेकिन एक बेटा कुछ भी नहीं कमाता था, बेकार था। बुढ़िया सबको अच्छा भोजन कराती थी लेकिन जो काम नहीं करता था उसे सब का झूठन ही खाने को देती थी। वह स्वभाव का सीधा था। कभी अपनी जुबान पर शिकायत नहीं लाता था।

एक बार उसकी पत्नी ने कहा—"आपकी माताजी आप पर बड़ी खुश रहती हैं।"

—"हां···इसमें क्या सन्देह है ?"

—"सन्देह···तभी तो तुम्हें सबका झूठा, गिरा-पड़ा खाने को मिलता है।"

—"यह तुम क्या कहती हो ?"

—"जो एक कड़वा सच है—सच सदा ही कड़वा लगता है।"

—"मैं नहीं मानता, आंखों देखी बात पर ही मुझे विश्वास होता है। अफवाह आदमी को बिगाड़ देती है।"

—"हाथ कंगन को आरसी क्या ?" पत्नी हंसकर बोली।

कुछ दिन बाद एक त्यौहार आया। घर में सात प्रकार के भोजन और चूरमा के लड्डू बने। यह जांचने को वह सिर दुखने का बहाना करके पतला वस्त्र सिर से ओढ़ रसोई घर में ही सो रहा और कपड़े में से देखता रहा था।

छः भाई भोजन करने आये। देखा उनको, मां ने सुन्दर आसन बिछाये हैं और सात प्रकार की रसोई परोसी है। आग्रह करने पर वह जिमाती है। वह उन्हें देखता रहा, छः भाई भोजन खाकर उठ गये।

अब बुढ़िया मां ने उनकी झूठी थालियों में से झूठे लड्डुओं के टुकड़े मिलाकर एक लड्डू बनाया। झूठन साफ कर बुढ़िया मां ने पुकारा—बेटा उठ, छहों भाई भोजन कर गए, अब तू ही बाकी है, उठ न, कब खायेगा ?"

—"मां, मुझे भोजन नहीं करना। मैं परदेश जा रहा हूं।"

माता ने कहा—"कल जाता हो आज ही चला जा।"

वह बोला—"हां, आज ही जा रहा हूं।" यह कहकर वह घर से निकल गया। चलते समय उसे बहू की याद आई।

वह गौशाला में कंडे थाप रही थी। वह वहां जाकर बोला—

"हम जावें परदेश को, आवेंगे कुछ काल।
तुम रहियो संतोष से, धर्म आपनो पाल।।"

वह बोली—

"जाओ पिया आनन्द से हमरो सोच हटाय।
राम भरोसे हम रहें ईश्वर तुम्हें सहाय।।
देउ निशानी आपनी देख धरूँ मैं धीर।
सुधी हमरी न बिसारियो रखियों मन गंभीर।।"

वह बोला—"मेरे पास क्या है, एक अंगूठी है सो ले लो और अपनी कुछ निशानी हमें दे दो।"

वह बोली—"मेरे पास क्या है, यह गोबर भरा हाथ है।" यह कहकर उसकी पीठ पर गोबर के हाथ की छाप मार दी। तब वह चल दिया।

वह चलते-चलते दूर देश में पहुंचा। वहां एक साहूकार की दुकान थी। वहाँ जाकर कहने लगा—"भाई, मुझे नौकरी पर रख लो।"

व्यापारी को आवश्यकता थी। वह बोला—"रह जा।"

लड़के ने पूछा—"वेतन कितना दोगे ?"

साहूकार ने कहा—"काम देखकर दाम मिलेगा।"

लड़के को नौकरी मिल गई। वह सवेरे आठ बजे से रात बारह बजे तक नौकरी बजाने लगा।

थोड़े ही दिनों में दुकान का लेन-देन, हिसाब-किताब ग्राहकों को माल बेचना, सारा कार्य करने लग गया।

साहूकार के आठ नौकर थे। सब चक्कर खाने लगे। यह तो भारी होशियार बन गया, सेठ ने भी काम देखा और तीन महीने में ही उसे आधे मुनाफे का साझीदार बना लिया।

बारह वर्ष बाद वह भी नामी सेठ बन गया और मालिक अपना सारा कारोबार उस पर छोड़कर बाहर चला गया।

अब बहू पर क्या बीती, सुनो—उसके सास-श्वसुर उसे बहुत दुःख देने लगे। सारी गृहस्थी का काम कराते, उसे लकड़ी लेने भी जंगल भेजते।

इस बीच रोटियों के आटे से जो भूसी निकलती उसकी रोटी बनाकर उसको रख दी जातीं और नारियल की खोपड़ी में पानी। इस प्रकार वह दिन गुजारती रही।

वह एक दिन लकड़ी लेने जा रही थी कि रास्ते में बहुत-सी स्त्रियाँ सन्तोषी माता की पूजा कर रही थीं। वह भी खड़ी हो गई।

कथा सुनकर वह कहने लगी—"बहन, यह तुम किस देवता की पूजा कर रही हो और इसके करने से क्या फल होता है ? इस व्रत के करने की क्या विधि है ? तुम अपने इस व्रत का विधान मुझे समझा दोगी तो मैं तुम्हारा बड़ा उपकार मानूंगी।"

तब एक स्त्री बोली—"सुनो। यह सन्तोषी माता का व्रत है। इसके करने से निर्धनता व दरिद्रता का नाश होता है। लक्ष्मी घर में आती है। मन की चिन्ताओं का भार दूर होता है। घर में सुख आने से मन को प्रसन्नता और शांति मिलती है। निपुत्री को पुत्र मिले। स्वामी बाहर गया हो तो शीघ्र आये। क्वारी कन्या को मनपसन्द वर मिले। राजद्वार में बहुत समय से मुकदमा चलता होय तो निपट जाये। कलह, क्लेश की निवृत्ति हो, सुख शांति आये। घर में धन जमा हो, पैसा जायदाद का लाभ हो और भी जो कुछ मन में कामना हो वह इस सन्तोषी माता की कृपा से पूरी हो जाती है इसमें सन्देह नहीं है।

वह पूछने लगी, यह व्रत कैसे किया जाये यह भी बताओ। आपकी बड़ी कृपा होगी।

स्त्री कहने लगी, सवा आने का गुड़ चना लेना। इच्छा हो तो सवा पाँच आने का या सवा रुपये का भी, सहूलियत के अनुसार लेना। बिना किसी परेशानी के श्रद्धा और प्रेम से जितना भी बन सके सवाया ही लेना। सवा पैसे, सवा पाँच आना तथा इससे भी अधिक शक्ति और भक्ति के अनुसार लेना। प्रत्येक शुक्रवार को निराहार रह, कथा-कहानी सुनना, इस बीच में क्रम टूटे नहीं। लगातार नियम पालन करना, सुनने वाला कोई न मिले तो घी का दीपक जला उसके आगे उस जल के पात्र को सामने रख कथा कहनी चाहिए, परन्तु नियम न टूटे, जब तक कार्य सिद्ध न हो। नियम पालन करना और कार्य सिद्ध हो जाने पर व्रत का उद्यापन करना।

तीन मास में माता फल पूरा करती है। यदि किसी के ग्रह खोटे हों तो भी माता तीन वर्ष में अवश्य सिद्ध करती है। फल सिद्ध होने पर ही उद्यापन करना चाहिये, बीच में नहीं।

उद्यापन में अढ़ाई सेर आटे का खाजा तथा चना का साक करना, आठ लड़कों को भोजन कराना। जहाँ तक मिले देवर-जेठ, भाई-बन्धु, कुटुम्ब के लड़के लेना, न मिलें तो रिश्तेदार व पड़ौसियों को बुलाना। उन्हें शक्ति अनुसार दक्षिणा दे, माता का नियम पूरा करना। उस दिन घर में कोई खटाई न खावे।

यह सुन बुढ़िया के लड़के की बहू चल दी। रास्ते में लकड़ी का बोझा बेच दिया और उन पैसों से गुड़ चना ले माता के व्रत की तैयारी की।

आगे चली। सामने मन्दिर देख पूछने लगी—सामने मन्दिर किसका है ?

सब कहने लगे, सन्तोषी माता का मन्दिर है।

यह सुनकर मन्दिर में जा माता के चरणों में लेटने लगी। दीन हो, विनती करने लगी, माँ मैं बड़ी दुःखी हूं, व्रत के नियम कुछ नहीं जानती।

हे माता जगत जननी ! मेरा कष्ट दूर करो, मेरा कष्ट हरो, मैं तेरी शरण में हूं।

माता को दया आई। एक शुक्रवार बीता। दूसरे शुक्रवार को ही उसके पति का पत्र आया और तीसरे शुक्रवार को उसका भेजा हुआ पैसा आ पहुँचा।

यह देख जेठानी मुँह सिकोड़ने लगी, इतने दिनों में पैसा आया इसमें क्या बड़ाई, लड़के ताने देने लगे—काका के तो अव पत्र आने लगे, रुपया आने लगा, अब तो काकी की खातिर बढ़ेगी, अब तो काकी बुलाने से भी न बोलेगी।

बेचारी सरलता से कहती—भैया, कागज आये, रुपये आये तो हम सबको अच्छा है। ऐसा कहकर आंखों में आंसू भरे सन्तोषी माँ के मन्दिर में आ मातेश्वरी के चरणों में गिरकर रोने लगी और कहने लगी कि माँ मैंने आपसे पैसा कब माँगा है। मुझे पैसे से क्या काम है। मुझे अपने सुहाग से काम है, मैं तो अपने स्वामी के दर्शन और सेवा मांगती हूं।

माता जी ने प्रसन्न होकर कहा—जा बेटी, तेरा स्वामी आयेगा।

यह सुनकर खुशी से बावली हो घर में जा, काम करने लगी।

अब सन्तोषी माँ विचारने लगी—इस भोली पुत्री को कह तो दिया तेरा पति आयेगा, परन्तु आयेगा कहां से ? वह तो इसे स्वप्न में भी याद नहीं करता, उसे याद दिलाने मुझे ही जाना पड़ेगा।

इस तरह माता जी उस बुढ़िया के बेटे के पास जाकर प्रकट हो कहने लगी—साहूकार के बेटे सो रहा है या जागता है ?

वह कहता है—माता, सोता भी नहीं हूं और जागता भी नहीं हूं, बीच में हूं। कहो क्या आज्ञा है ?

माँ कहने लगी—तेरे घर-बार सब-कुछ है या नहीं ?

वह बोला—मेरे सब-कुछ है माता, माँ-बाप हैं, बहू है, क्या कमी है।

माँ बोली—भोले पुत्र ! तेरी घरवाली घोर कष्ट उठा रही है, माता-पिता उसे बहुत त्रास दे रहे हैं। वह तरस रही है उसकी भी सुधि ले।

वह बोला—हां माता जी यह तो मालूम है पर जाऊँ कैसे ? परदेश की बात लेन-देन का कोई हिसाब नहीं, कोई जाने का रास्ता नजर नहीं आता कैसे चला जाऊँ ?

माँ कहने लगी—मेरी बात मान, सवेरे नहा-धोकर सन्तोषी माता का नाम

लेकर घी का दीपक जला दण्डवत् कर दुकान पर बैठ। देखते-देखते तेरा लेन-देन चुक जाएगा, जमा माल बिक जायेगा।

अब तो वह सवेरे बहुत जल्दी उठा, भाई-बन्धुओं से सपने की सारी बात कही।

वे सब उसकी बात अनसुनी कर दिल्लगी उड़ाने लगे और कहने लगे—कहीं सपने भी सच्चे होते हैं ?

एक बूढ़ा बोला—देख भाई, मेरी बात मान। इस तरह सांच-झूंठ कहने के बदले तो देवता ने जैसा कहा है वैसा ही करने में तेरा क्या जाता है।

अब बूढ़े की बात मान वह नहा-धोकर सन्तोषी माता को दण्डवत कर घी का दीपक जला दुकान पर जा बैठा तो थोड़ी देर में क्या देखता है देने वाले रुपया लाने लगे, कोठे में भरे सामानों के खरीदार नकद दाम में सौदा करने लगे, शाम तक धन का ढेर लग गया। मन में माता का चमत्कार देख प्रसन्न हो घर को ले जाने के लिए गहना, कपड़ा आदि सामान खरीदने लगा। यहां के काम से निपट तुरन्त घर को रवाना हुआ।

वहां बेचारी बहू जंगल में लकड़ी लेने जाती। लौटते समय माता जी के मन्दिर पर विश्राम लेती है, यह तो उसका रोज रुकने का स्थान था। दूर पर धूल उड़ती देख वह माता जी से पूछती है—हे माता ! यह धूल कैसे उड़ रही है।

मां कहती है—पुत्री, तेरा धनी आ रहा है। अब तू ऐसा कर लकड़ियों के तीन बोझ बना ले। एक नदी के किनारे रख, दूसरा मेरे मन्दिर पर छोड़ और तीसरा अपने सिर पर रख। तेरे धनी को लकड़ी का बोझ देखकर मोह पैदा होगा, वह यहां रुकेगा, नाश्ता-पानी बना-खाकर मां से मिलने जायेगा तब तू लकड़ियों का बोझ उठाकर लाना और बीच चौक में लकड़ी डाल तीन आवाज जोर से लगाना—लो सासू जी लकड़ियों का बोझ। भूसी की रोटी दो, नारियल की खोपड़ी में पानी दो। आज मेहमान कौन आया है ?

—"बहुत अच्छा माता जी !" कहकर वह प्रसन्न मन हो, लकड़ी के तीन बोझ ले आई।

एक नदी पर, एक माता के मन्दिर पर रखा।

इतने में मुसाफिर आ पहुंचे। लकड़ी सूखी देख उसके धनी की इच्छा उत्पन्न हुई कि लकड़ी कैसी बढ़िया हैं। अपना बस यहीं मुकाम करें और भोजन बना खा-पीकर गांव में जाएं।

इस प्रकार रुककर भोजन बना, विश्राम ले गांव को गया। सब से प्रेम से मिला।

उसी समय उसकी बहू सिर पर लकड़ी का बोझ ले उतावली-सी आती है और लकड़ी का भारी बोझ आंगन में डाल जोर से तीन बार आवाज देती

है—लो सासू जी, लकड़ियों को बोझ, अब भूसी की रोटी दो, नारियल की खोपड़ी में पानी दो, आज मेहमान कौन आया है ?

यह सुन उसकी सास अपने दिए हुए दुःखों को भुलाने हेतु कहती है—बहू, ऐसा क्यों कहती है। तेरा मालिक ही तो आया है। आ बैठ, मीठा भात भोजन कर, कपड़े-गहने पहन।

इतने में ही आवाज सुनकर वह बाहर आता है और अंगूठी देख व्याकुल हो जाता है। मां से पूछता है, यह कौन है मां ?

मां कहती है—बेटा, यह तेरी बहू है, आज बारह बरस हो गए, जब से तू गया है तब से सारे गांव में जानवर की तरह भटकती फिरती है, काम-काज घर का कुछ नहीं करती, चार समय आकर खा जाती है। अब तुझे देखकर भूसी की रोटी और नारियल की खोपड़ी में पानी मांगती है।

वह लज्जित हो बोला—ठीक है मां, मैंने इसे भी देखा है और तुम्हें भी देखा, अब दूसरे घर की चाबी मुझे दो, मैं उसमें रहूंगा।

अब मां बोली—ठीक है बेटा, जो तेरी मर्जी हो सो कर। यह कहर चाबियों का गुच्छा उसने पटक दिया।

उसने चाबियां ले दूसरे मकान में जा तीसरी मंजिल का कमरा खोलकर सारा सामान सजाया। एक दिन में ही राजमहल जैसे ठाठ बन गए।

अब क्या था, वह सब सुख भोगने लगी।

इतने में अगला शुक्रवार आया। उसने अपने पति से कहा—मुझे सन्तोषी माता का उद्यापन करना है।

धनी बोला—बहुत अच्छा, कर खुशी से। तुरन्त वह उद्यापन की तैयारी करने लगी। जेठ के बच्चों को भोजन के लिए कहने गई। उसने मन्जूर किया, परन्तु जेठानी अपने बच्चों को सिखाती है—देखो रे, भोजन के समय सब खटाई मांगना, जिससे उसका उद्यापन पूरा न हो।

बच्चे जीमने आये, खाना पेट भर खाया परन्तु बात याद आते ही कहने लगे—हमें कुछ खटाई दो।

खटाई न दी जायेगी। यह सन्तोषी माता का प्रसाद है, वह कहने लगी।

बच्चे बोले—पैसे लाओ। वह भोली कुछ जानती नहीं थी, उसने पैसे दे दिये।

लड़के उसी समय उठ करके पैसों की इमली ले आये और खाने लगे।

यह देख माता जी ने कोप किया, राजा के दूत इसके धनी को पकड़ ले जाने लगे। जेठ-जेठानी मनमाने खोटे वचन कहने लगे—"साला लूट-लूट कर धन एकत्रित कर लाया है, अब सब मालूम हो जायेगा, जब जेल की रोटी खायेगा।"

बहू से वचन सहन नहीं हुए, वह रोती-रोती माता जी के मन्दिर को

जाती है और कहती है—माता जी, यह आपने क्या किया ? हंसा कर अब क्यों रुलाने लगी ?

माता बोली—पुत्री, तूने अभिमान करके मेरा व्रत भंग किया है। इतनी जल्दी सब बातें भुला दीं।

वह कहने लगी—माता, भूली तो नहीं, न कुछ अपराध ही किया, मुझे तो लड़कों ने भूल में डाल दिया। मैंने भूल में उन्हें पैसे दे दिये, मुझे क्षमा करो।

मां बोली—ऐसी भी भूल होती है।

वह बोली—मां मुझे माफ कर दो, मैं तुम्हारा उद्यापन फिर करूंगी।

मां बोली—अब मत भूलना।

वह कहती है—अब भूल न होगी मां। अब बताओ वे कैसे घर आवेंगे ?

मां बोली—जा पुत्री, तेरा मालिक तुझे रास्ते में ही आता मिलेगा।

वह वहां से निकली और उसे धनी आता मिला। वह पूछती है—कहां गये थे ?

तब वह कहने लगा—इतना धन जो कमाया है, उसका टैक्स राजा ने मांगा था उसे भरने गया था।

वह प्रसन्न हो बोली—भला हुआ, अब घर को चलो।

दोनों घर चले गये। कुछ दिन बाद फिर शुक्रवार आया वह बोली—मुझे फिर माता जी का उद्यापन करना है।

धनी ने कहा—करो।

वह फिर जेठ के लड़कों को भोजन के लिए कहने गई।

जेठानी ने एक-दो बात और सुनाई और सब लड़कों को सिखाने लगी—तुम सब लोग पहले से ही खटाई मांगना।

लड़के भोजन की बात पर कहने लगे—हमें खीर नहीं भाता, मन बिगड़ता है, कुछ खटाई खाने को दो तो चलें ?

वह बोली—"खटाई किसी को नहीं मिलेगी। खाना हो तो खाओ।" यह कह वह ब्राह्मणों के लड़के बुला भोजन कराने लगी। यथा शक्ति दक्षिणा में उन्हें एक-एक फल दिया। इससे सन्तोषी मां प्रसन्न हुई। कुछ दिनों बाद उसके पुत्र हुआ।

नये मास के चन्द्रमा के समान अपने पुत्र को ले प्रतिदिन माता जी के मन्दिर को जाती थी।

मां कहने लगी—यह रोज आती है, आज तो मैं ही इसके घर चलूं। इसका आसरा देखूं तो सही। ऐसा विचार कर माता ने भयानक रूप बनाया, गुड़-चनों से सना मुख, ऊपर को सूंड के समान होठ, उस पर मक्खी भिनभिना रही थीं। देहली में पांव रखते ही सास चिल्लाई—देखो रे कोई ढेडनी-डांकिनी चली आ रही है, लड़कों ! इसे भगाओ, नहीं तो किसी को खा जायेगी।

लड़के भागने लगे, चिल्लाकर खिड़की बन्द करने लगे। बहू एक रोशनदान में से यह देख रही थी। प्रसन्नता से पगली बन चिल्लाने लगी—"आज माता जी मेरे घर आई हैं।" यह कहकर बच्चे को दूध पीने से हटाती है।

इतने में तो सास का क्रोध फट पड़ा। बोली—अरी रांड की रांड, क्या देखकर उतावली हुई, बच्चे को पटक दिया। इतने में मां के प्रताप से जहां देखो वहां लड़के ही लड़के नजर आने लगे।

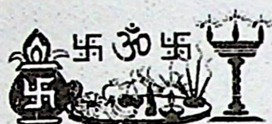
वह बोली—मां, जिसका व्रत मैं करती हूं यह वही सन्तोषी माता हैं। इतना कहकर झट से सारे द्वारों के किवाड़ खोल देती है। सबने माता के चरण पकड़ लिये। वे विनती करती हैं—हे माता ! हम मूर्ख हैं, अज्ञानी हैं, पापिन हैं, तुम्हारे व्रत की विधि कुछ नहीं जानतीं। तुम्हारा व्रत भंग करके हमने बड़ा अपराध किया है। हे जग माता ! आप हमारा अपराध क्षमा करो।

इस प्रकार माता प्रसन्न हुई। जैसा बहू को फल दिया, वैसा माता सबको दे। जो पढ़े, सुने, सुनाए उनके उसके सभी मनोरथ पूर्ण करे। बोलो करुणामयी मां की जय। सन्तोषी माता की जय।

सन्तोषी माता की आरती

जय सन्तोषी माता जय सन्तोषी माता।
अपने सेवक जन को सुख सम्पत्ति दाता।।जय····।।1।।
सुन्दर चीर सुनहरी मां धारण कीन्हों।
हीरा पन्ना दमकें, तन सिंगार लीनो।।जय····।।2।।
गेरू लाल छटा छवि, बदन कमल सोहे।
मन्द हंसत करुणामयी त्रिभुवन बन मोहे।।जय····।।3।।
स्वर्ण सिंहासन बैठी चमर ढुरत प्यारे।
धूप दीप मधु मेवा भोग धरे न्यारे।।जय····।।4।।
भुना चना गुड़ ही में मां सन्तोष किया।
सन्तोषी कहलाई भक्तन विभव दियो।।जय····।।5।।
शुक्रवार प्रिय मानत आज दिवस सोही।
भक्त मण्डली छाई कथा सुनत मोही।।जय····।।6।।
मन्दिर जगमज ज्योति मण्डल ध्वनि छाई।
विनय करें तेरे बालक चरनन शीश नवाई।।जय····।।7।।
भक्ति भाव मय पूजा अंगीकृत कीजे।
जो मन बसे हमारे इच्छित फल दीजे।।जय····।।8।।
दुखी दरिद्री रोगी संकट मुक्त किए।
बहुत धन-धान्य भरे सुख सौभाग्य दिए।।जय····।।9।।

ध्यान धरो जाने तेरी फल मनवांछित पायो।
पूजा कथा श्रवण कर घर आनन्द आयो।।जय॰॰।।10।।
शरण गहे की लज्जा रखियो जगदम्बे।
संकट तू ही निवारे दयामयी अम्बे।।जय॰॰।।11।।
सन्तोषी मां की आरती जो कोई गावे।
कवि मुकन्द घर ताके सुख सम्पत्ति आवे।।जय॰॰।।12।।



शनिवार व्रत

यह व्रत बहुधा लोग श्रावण मास की शुक्ल पक्ष को प्रारम्भ करते हैं।

शनिवार का व्रत कुछ गम्भीर प्रकार का है। इसे कुछ लोग शनि ग्रह की शक्ति के लिए करते हैं, कुछ लोग भगवान सदाशिव महाराज की प्रसन्नता के लिए रखते हैं।

इस व्रत का फल अति उत्तम होता है। शनि ग्रह के प्रकोप के साथ राहु-केतु की दशा भी सुधर जाती है और कल्याण होता है।

व्रत-विधि

शनिवार को प्रातः उठकर स्नान-ध्यान करके संकल्प करना चाहिए। राहू-केतु की लोहे या शीशे की मूर्तियां बनवाकर उनकी पूजा करनी चाहिए, काले चावल, कपड़े, काले फूल व काले चन्दन का प्रयोग करना चाहिए। हो सके तो पूजा पीपल के पेड़ के नीचे ही करें।

पूजा के बाद पेड़ की सात बार प्रदक्षिणा करें। प्रदक्षिणा के बाद पीपल के पेड़ में कच्चा सूत लपेटना चाहिए और शनि देव की प्रार्थना करनी चाहिए। लोहे के कटोरे में कड़वा तेल भरकर काले रंग के तिल या काली चीजों का दान करना चाहिए। यदि हो सके तो काला कपड़ा, काली गाय, काली बकरी या काले लोहे के बर्तन दान करें।

व्रत-कथा

बहुत पुरानी बात है, महाराज दशरथ को राज ज्योतिषियों ने बताया कि जब शनि ग्रह कृत्तिका को भेदकर रोहिणी पर आयेंगे तो धरती पर दस वर्षों का भीषण अकाल पड़ेगा, लोग अन्न-जल के अभाव से मरने लगेंगे और चारों

ओर हाहाकार मच जाएगा। राजा दशरथ ज्योतिषियों की बात सुनकर चिन्तित हो गए उन्होंने अपने गुरू महर्षि वशिष्ठ से इसके निवारण का उपाय पूछा, लेकिन शनि के प्रभाव को दूर करने का कोई उपाय उनको भी मालूम न था। महाराज दशरथ निराश होना न जानते थे, उन्होंने हथियार सजाये और नक्षत्र लोक पर चढ़ाई कर दी।

जब शनि कृत्तिका के पश्चात् रोहिणी पर आने के वास्ते तैयार हुए तो महाराज दशरथ ने उनका रास्ता रोक लिया। शनि देव को आज तक दशरथ जैसे पराक्रमी राजा को देखने का अवसर न मिला था। उन्होंने महाराज से कहा—

—"राजेश्वर ! तुम्हारे इस आलौकिक पराक्रम को देखकर मैं परम प्रसन्न हूं, आज तक जितने भी देवता, असुर तथा मनुष्य मेरे सम्मुख आये हैं, सभी जल गए हैं लेकिन तुम अपने अदम्य तेज और उग्र तप के कारण बच गए हो। तुम जो भी वरदान मांगोगे वह मैं तुम्हें दूंगा।"

महाराज दशरथ ने कहा—"महाराज, आप रोहिणी पर न जायें, यह मेरी प्रार्थना है।"

शनि देव ने महाराज दशरथ की प्रार्थना स्वीकार कर ली और उन्हें धरती का दुःख-दरिद्र दूर करने वाले शनिवार के व्रत की विधि बतलाई और कहा—वे लोग जो मेरे (शनि के) कारण अथवा मेरे मित्र राहू एवं केतु के कारण दुःख भोग रहे हैं उनकी रक्षा यह व्रत करेगा। इस व्रत के करने से उनकी सब विपत्तियां दूर हो जायेंगी।

इसके बाद महाराज दशरथ नक्षत्र लोक से अयोध्या वापिस लौट आए और अपने राज्य में शनिवार के व्रत का खूब प्रचार किया। तभी से इस व्रत का प्रचलन है। शनि ग्रह के अनिष्ट को भी यह कथा कम करती है।

एक और अन्य व्रत-कथा

एक बार सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहू और केतु इन नौ ग्रहों में इस बात पर झगड़ा होने लगा कि हममें सबसे बड़ा कौन है ? सभी अपने आपको बड़ा समझते थे। उन सब लोगों का झगड़ा काफी बढ़ गया और वे किसी फैसले पर न पहुंच सके तो देवराज इन्द्र के पास गए और उनसे निवेदन किया।

—"हे प्रभु, आप सब देवताओं के राजा हैं, इसलिए आप हमारा न्याय करके बताइये कि हम नौ ग्रहों में से सबसे बड़ा कौन है ?"

ग्रहों की बात सुनकर देवराज इन्द्र बुरी तरह से घबरा गए और बोले—

—"मुझ में इतनी सामर्थ्य नहीं है जो किसी को बड़ा या छोटा बता सकूं। मैं इस मामले में कुछ नहीं कह सकता, हां एक उपाय मैं आप लोगों को अवश्य बता सकता

हूं। इस समय मृत्यु लोक में महाराजा विक्रमादित्य का राज्य है। वह दूसरों के दुःखों को दूर करने वाले हैं इसलिए तुम्हें उनके पास जाना चाहिए। वह अवश्य तुम लोगों का दुःख दूर करेंगे। देवराज इन्द्र की यह बात सुनकर सभी ग्रह महाराजा विक्रमादित्य के पास गए और उन्हें सारा किस्सा सुनाया। ग्रहों की बात सुनकर महाराजा विक्रमादित्य सोचने लगे किसको बड़ा और किसको छोटा बताऊँ ? काफी देर तक विचार करने के पश्चात् उन्होंने एक उपाय सोचा और सोने, चांदी, कांसा, पीतल, शीशा, रांगा, जस्ता, अभ्रक, लोहा आदि नवों धातु के नौ आसन बनाए और उनको क्रमानुसार बिछवा दिया गया। सोने का सबसे आगे और लोहे का सबसे पीछे। इसके बाद राजा ने ग्रहों से कहा—आप सब अपने-अपने आसनों पर बैठ जाइए। जिसका आसन सबसे आगे है उसको सबसे बड़ा और जिसका सबसे पीछे है उसको सबसे छोटा समझिए । क्योंकि लोहे का आसन सबसे पीछे था इसलिए शनि देव ने समझ लिया कि मुझे सबसे छोटा बना दिया। इससे शनि देव को बड़ा क्रोध आया और उन्होंने कहा—राजा ! तू मेरे पराक्रम को नहीं जानता। सूर्य एक राशि पर एक महीना, चन्द्रमा सवा दो दिन, मंगल डेढ़ महीना, बृहस्पति तेरह महीने, बुध और शुक्र एक-एक महीना, तथा राहू और केतु दोनों उल्टे चलते हुए केवल अट्ठारह महीने एक राशि पर रहते हैं, परन्तु मैं एक राशि पर तीस महीने तक रहता हूं। बड़े-बड़े देवताओं को भी मैंने भारी दुःख दिया है। हे राजन ! मेरी बात तनिक ध्यानपूर्वक सुनो—जब भगवान श्री रामचन्द्र जी महाराज पर साढ़े साती आई तो उनको बनवास हो गया और रावण पर आई तो भगवान श्री रामचन्द्र और श्री लक्ष्मण जी ने सेना लेकर लंका पर चढ़ाई कर दी और रावण के सारे कुल का नाश कर दिया। इसलिए राजा अब तू भी तनिक सावधान रहना।

शनि की बात सुन राजा विक्रमादित्य नम्रता से बोले—"जी कुछ मेरे भाग्य में लिखा होगा, वह देखा जाएगा।"

इसके पश्चात् अन्य ग्रह तो बड़ी प्रसन्नता के साथ और शनि देवता बड़े क्रोध में भरकर विक्रमादित्य के दरबार से उठकर अपने-अपने स्थानों को रवाना हो गए।

कुछ समय पश्चात् जब महाराजा विक्रमादित्य पर साढ़े साती की दशा आई तो शनि देव घोड़ों के सौदागर का रूप धारण करके अनेक प्रकार के सुन्दर घोड़ों के साथ महाराजा विक्रमादित्य की राजधानी में पहुंचे। जब महाराजा विक्रमादित्य ने यह सुना कि मेरे नगर में घोड़ों का एक बहुत बड़ा सौदागर आया है तो उन्होंने अश्वपाल को अपने लिए कुछ अच्छे-अच्छे घोड़े खरीदने का आदेश दिया। अश्वपाल ऐसी अच्छी नस्ल के घोड़े देखकर और उनका मूल्य सुनकर चकित रह गया। उसने इसके सम्बन्ध में राजा को सूचित किया। राजा ने सौदागर के पास जाकर उन घोड़ों को देखा और उनमें से एक घोड़ा पसन्द किया और सवारी

के लिए उस पर चढ़ा। बस राजा के उस पर चढ़ने की देर थी कि वह हवा हो गया और जंगल में राजा को गिराकर अदृश्य हो गया। अब राजा जंगल में अकेला मारा-मारा फिरने लगा। भूख प्यास ने भी उसे बेहद सताया। इतने में कहीं से एक ग्वाला आ निकला। उसने राजा को पानी पिलाया। पानी पीने के पश्चात् राजा ने ग्वाले से समीप के नगर का मार्ग पूछा। ग्वाले ने राजा को सीधा रास्ता बता दिया। राजा की उंगली में जो अंगूठी थी वह निकालकर ग्वाले को दी और स्वयं ग्वाले के बताए हुए मार्ग पर चलता हुआ शहर में आ पहुंचा और एक सेठ की दुकान पर बैठ गया। सेठ ने जब उसका नाम व ग्राम पूछा तो राजा ने कहा—मेरा नाम वीका है और मैं उज्जैन का रहने वाला हूं। सेठ ने उसको कुलीन मनुष्य समझकर जल पिलाया। सेठ की दुकान पर उस दिन बहुत अधिक बिक्री हुई, इससे सेठ राजा को भाग्यवान पुरुष समझकर अपने घर भोजन कराने के लिए ले गया। भोजन करते समय राजा ने देखा कि एक सोने का हार खूंटी पर लटक रहा है और खूंटी हार को निगल रही है। भोजन के पश्चात् आवश्यकता पड़ने पर जब सेठ को हार कहीं पर न मिला तो उसने यही निश्चय किया कि हो न हो हार अवश्य ही वीका ने चुराया है। लेकिन जब महाराजा विक्रमादित्य से पूछा गया तो उन्होंने कहा कि हार मैंने नहीं चुराया है। इस पर पांच-सात आदमी महाराजा विक्रमादित्य को पकड़कर कोतवाल के पास ले गए तो कोतवाल ने उनको राजा के सामने उपस्थित कर दिया और कहा—महाराज यों तो यह आदमी भला सा मालूम होता है, चोर मालूम नहीं होता लेकिन सेठ का कहना है कि चोरी इसी ने की है क्योंकि उसके घर में इसके अतिरिक्त घर का आदमी कोई नहीं आया। इस पर राजा ने आज्ञा दी—इस (राजा विक्रमादित्य) के हाथ-पैर काटकर चौरंग्या किया जाए। राजा की आज्ञानुसार महाराजा विक्रमादित्य के हाथ-पैर काट दिए। इसके पश्चात् राजा की यह दशा हो गई कि जो किसी ने उनके मुख में डाल दिया तो खा लिया। इस प्रकार कुछ काल व्यतीत हुआ तो एक तेली उनको अपने घर ले गया और अपने कोल्हू पर बैठा दिया। महाराजा विक्रमादित्य कोल्हू पर बैठे हुए दिन भर बैल हांकते रहते। जब राजा की दशा समाप्त हो गई और एक रात को वर्षा के समय मल्हार गा रहा था तो उसका गाना सुनकर उस नगर के राजा की लड़की उस पर मोहित हो गई और उसने अपनी दासी को इस बात का पता लगाने को भेजा कि देखो इस समय कौन मल्हार गा रहा है ? दासी आवाज पर कान लगाकर इधर-उधर देखती हुई चली। तेली के घर में उसने देखा कि चौरंग्या राग गा रहा है। दासी ने वापिस आ महल में राजकुमारी को सब वृत्तान्त सुना दिया। दासी की बात सुनकर राजकुमारी ने प्रण कर लिया कि मैं विवाह करूंगी तो इस चौरंग्या के साथ ही करूंगी और अगले दिन से ही राजकुमारी ने अनशन व्रत आरम्भ कर दिया। दासी ने रानी को सब वृत्तान्त सुना दिया। रानी तुरन्त ही राजकुमारी के पास पहुंची और उसने दुःख

का कारण पूछा। राजकुमारी ने कहा—"माता जी, मैंने प्रण कर लिया है कि अमुक तेली के घर जो चौरंग्या है, मैं उसी के साथ विवाह करूंगी।"

रानी ने कहा—"बेटी, क्या तू पगली हो गई है ? तेरा विवाह तो किसी देश के बड़े राजा के साथ किया जायेगा।"

राजकुमारी ने कहा—"माता जी, मैं अपना प्रण कभी नहीं तोड़ूंगी।"

रानी ने चिन्तित होकर यह बात राजा को बतलाई, राजा ने भी आकर राजकुमारी को समझाया।

उसने कहा—"पुत्री ! मैं अभी देश देशान्तर में अपने दूत भेजकर सुयोग्य, गुणवान तथा रूपवान राजकुमार के साथ तेरा विवाह करूंगा। जो बात तुमने सोची है वह तुम जैसी राजकुमारी को शोभा नहीं देती।"

इस पर राजकुमारी ने कहा—"पिताजी, यदि आप इस सम्बन्ध में कुछ कहेंगे तो मैं अपने प्राण त्याग दूंगी परन्तु दूसरा वर नहीं चुनूंगी।"

इतना सुनकर राजा ने क्रोध में भरकर कहा—"यदि तेरे भाग्य में ऐसा लिखा है तो फिर मैं इसमें क्या कर सकता हूं ?"

राजा ने उसी समय तेली को बुलाकर कहा—"तेरे घर में जो चौरंग्या है उसके साथ मैं अपनी लड़की का विवाह करना चाहता हूं।"

तेली ने कहा—"महाराज, यह कैसे हो सकता है ? कहां आप हमारे राजा और कहां मैं एक नीच तेली।"

राजा ने कहा—"भाई, भाग्य में लिखे को कौन मिटा सकता है ? तुम अपने घर जाकर विवाह की तैयारी करो।"

अब तेली अपने घर जा विवाह की तैयारी करने लगा। फिर राजा ने राजकुमारी का विवाह चौरंग्या (महाराजा विक्रमादित्य) से कर दिया। रात्रि के समय जब महाराजा विक्रमादित्य और राजकुमारी मनभावती महल में सोए तो आधी रात के समय शनि देव ने महाराजा विक्रमादित्य को स्वप्न में दर्शन देकर कहा—"राजन ! कहो, मुझको छोटा बताकर तुमने कितने दुःख उठाये हैं ?"

तब महाराजा विक्रमादित्य ने शनि देव से अनेक प्रकार से क्षमा याचना की। इस पर शनि देव ने प्रसन्न होकर महाराजा विक्रमादित्य को हाथ-पैर दिए। हाथ-पैर दोबारा प्राप्त होने के बाद महाराजा विक्रमादित्य ने हाथ जोड़कर श्री शनि देव से कहा—"महाराज, मेरी एक प्रार्थना आप स्वीकार करें। यह कि जैसा दुःख आपने मुझे दिया वैसा किसी और को न दीजिएगा।"

शनि देव ने कहा—"राजन् ! हम तुम्हारी यह प्रार्थना स्वीकार करते हैं। जो मनुष्य मेरी कथा सुनेगा या कहेगा उसको मेरी दशा में किसी प्रकार का दुःख न होगा और जो नित्य ही मेरा ध्यान करेगा और चींटियों को आटा डालेगा, उसके सब मनोरथ पूरे होंगे।" इतना कहकर शनि देव अन्तर्ध्यान हो गए।

प्रातःकाल जब राजकुमारी मनभावती की आँख खुलीं और उसने महाराजा विक्रमादित्य के हाथ-पैर देखे तो आश्चर्यचकित रह गई। उसको चकित देख राजा ने अपना सब वृत्तान्त कहा और यह भी बताया कि मैं राजा विक्रमादित्य हूं। महाराजा विक्रमादित्य की बात सुनकर राजकुमारी अत्यन्त प्रसन्न हुई प्रातःकाल जब राजकुमारी की सखियों ने उसका हाल पूछा तो उसने उनको सब वृत्तान्त कह सुनाया। तब तो नगर भर में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। जब सेठ ने यह खबर सुनी तो दौड़ा हुआ आया और राजा विक्रमादित्य के चरणों में गिर पड़ा और क्षमा मांगने लगा कि आप पर चोरी का झूठा दोष लगाया। अतः अब जो आपका जी चाहे मुझे दण्ड दीजिए।

राजा विक्रमादित्य ने कहा—"सेठ जी, मुझ पर शनि देव का कोप था, उसके कारण यह सब दुःख उठाने पड़े हैं। इसमें आपका कोई कसूर नहीं है। अब आप देख लो कि मैं कैसा था, अब कैसा हो गया हूं। आप अब प्रसन्नतापूर्वक अपना काम देखें।"

सेठ ने कहा—"अन्नदाता ! वह तो मैं करूंगा ही किन्तु मुझे तभी शान्ति होगी जब आप मेरे घर चलकर प्रीतिपूर्वक भोजन करेंगे।"

तब राजा ने कहा—"जैसी आपकी इच्छा ! वैसे मैं इसकी आवश्यकता नहीं समझता।"

सेठ महाराजा विक्रमादित्य को अपने घर ले गया और बहुत ही बढ़िया तथा स्वादिष्ट भोजन उनके सामने रखा।

जब राजा विक्रमादित्य भोजन कर रहे थे तो एक आश्चर्य की बात उन्होंने सबको दिखाई। जो खूंटी पहले हार निगल गई थी, अब उगल रही थी। महाराजा विक्रमादित्य ने कहा—"जब मुझ पर शनि देव का कोप था तो खूंटी ने हार निगल लिया था और अब जब शनि देव का कोप समाप्त हो गया है तो खूंटी ने हार उगल दिया है। तो सेठ ने हाथ जोड़कर बहुत सी मोहरें महाराजा विक्रमादित्य को भेंट कीं, और कहा मेरे यहां एक कन्या है उसका पाणिग्रहण आप करें। इसके बाद सेठ ने अपनी कन्या का विवाह राजा के साथ कर दिया। इस प्रकार कुछ दिनों तक उस शहर में रहने के पश्चात् उस नगर के राजा से जाने की प्रार्थना की और इस प्रकार राजा से आज्ञा लेकर महाराजा वीर विक्रमादित्य राजकुमारी मनभावती, सेठ की कन्या कंवरी तथा दोनों जगहों से प्राप्त दहेज और अनेक दासियां, घोड़ों व रथों तथा पालकियों सहित अपनी राजधानी को रवाना हो गए। जब वह उज्जैन के निकट पहुंचे तो समस्त नगरवासी उनका आगमन सुनकर बाजों-गाजों तथा पुष्प-मालाओं के साथ नगर के बाहर उनके स्वागत के लिए आए। नगर में बड़ा भारी महोत्सव मनाया गया। और अगले दिन महाराजा विक्रमादित्य ने यह घोषणा करवाई—शनि देव सब ग्रहों

में सर्वोपरि हैं। मैंने इनको छोटा बतलाया था इससे मुझे बहुत दुःख प्राप्त हुआ। चुनांचे आज के बाद सब लोग उनकी पूजा व कथा किया करें।

जो कोई शनि देव की कथा को पढ़ता है और सुनता है उसके सब दुःख श्री शनि देव की कृपा से स्वयं दूर हो जाते हैं।

शनि देव की आरती

जय जय रविनन्दन जय दुख भजन रंजन जय शनि हरे।
जय भुज चारी धारण कारी,
दुष्ट दलन सन्त हितकारी।।जय०।।
तुम होत कुपित नित करत दुखित,
धनिको निर्धन सुखी होत दुखित।।जय०।।
तुम धर अनूप यम का स्वरूप हो,
करत वधन।।जय०।।
तब नभ जो दस तोहि करत सो बस,
जा करै रटन।।जय०।।
महिमा अपार जग में तुम्हार,
जपते देव तन।।जय०।।
सब नैन कठिन नित बरें अगन,
भैंसा वाहन।।जय०।।
प्रभु तेज तुम्हारा अतिहि करारा,
जानत सब छन।।जय०।।
प्रभु शनि दान से तुम महान,
होते हो भगवान।।जय०।।
प्रभु उदित नारायन शीश,
नवा यन धरे चरन।।
जय शनि हरे।।





नवग्रह पूजन विधान

भारत ने ब्रह्माण्ड की जानकारी अनेक वर्ष पहले प्राप्त कर ली थी। वेदों ने सूर्य और चन्द्रमा को देवता के रूप में स्वीकारा। बाद के खोजकर्त्ताओं ने मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहू और केतु जैसे ग्रहों को जाना। इतना ही नहीं, ग्रहों के कारण मानव तन-मन पर पड़ने वाले अशुभ अथवा शुभ प्रभाव को भी जाना। फिर अनुभव के आधार पर ग्रह शान्ति पूजन की व्यवस्था तय की। इसी को हम 'ग्रह पूजन' कहते हैं। सामान्य रूप से पूजन में एक श्लोक पढ़कर सभी ग्रहों की शान्ति की प्रार्थना की जाती है, जो इस प्रकार है—"ॐ **ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च। गुरूश्च शुक्रः शनिराहूकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु।"**

अब सबसे पहले हम पूजन सामग्री को लेंगे। हालांकि अलग-अलग ग्रहों की पूजा में काम आने वाली सामग्री अलग-अलग है लेकिन साधारणरूप में पूजा के लिए आवश्यक वस्तुओं की सूची यहाँ दी जा रही है। इसे साधक घटा-बढ़ा भी सकता है।

आसन, बाजोट, प्रतिमा, नारियल, वस्त्र, नैवेद्य, दान के लिए वस्तुएं, पात्र, दीप, आरती के लिए पात्र, कलश, अन्न, गंगाजल, केशर, कस्तूरी, चंदन, अगरबत्ती, धूप, शुद्ध घी, तेल, रूई, कलावा, रोली, देसी पान, लौंग, इलायची, सुपारी, पंचमेवा, पंचामृत (दूध, दही, शहद, गंगाजल, तुलसीदल) पुष्प मालाएं, बिल्व पत्र, दूर्वा, चावल और दक्षिणा। ग्रहों के पूजन में सादे अथवा रंगे हुए चावलों का प्रयोग होता है। आटा, हल्दी भी ग्रह मंडल बनाने के लिए प्रयोग में आते हैं। जप के लिए माला भी आवश्यक होती है। आरती के लिए देशी कपूर अथवा रूई तैयार रखनी चाहिए। केले के पत्ते, आम के पत्ते, वन्दनवार के लिये प्रयोग में लाए जाते हैं।

नवग्रह पूजा करने के लिए पहले साधक को स्नान आदि से निवृत्त हो पूजन के उपयुक्त नये वस्त्र पहनना चाहिए। पूजन करते समय साधक को पूर्व की तरफ मुख कर पालथी मारकर बैठना चाहिए। पूजन के लिए सामग्री अपने समीप रखनी चाहिए। घी का दीपक अपनी बाईं ओर तथा तेल का दीपक दाहिनी ओर रखें। चित्र को आसन पर रखें।

इसके बाद पात्र से थोड़ा गंगाजल अपने बायें हाथ की हथेली पर रखें। दाहिने हाथ से अंगूठा, मध्यमा और अनामिका जोड़कर बायें हाथ की हथेली पर रखे जल को अपने ऊपर छिड़कें। इस अवसर का मंत्र इस प्रकार है— "**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोअपि वा। यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।**" इसके बाद आसन को पवित्र करें। "**ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरू चासनम्।।**" इसके बाद यज्ञोपवीत धारण करें। "**ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्रयं प्रतिमुच्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः। यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।।**" अगर आप ग्रह शान्ति पूजन में सपत्नीक बैठें तो निम्नलिखित मंत्र के पाठ से गठजोड़ा करें—"**ॐ यदाबध्नन दाक्षायणा हिरण्य शतानीकाय सुमनस्यमानाः।। तन्म आ बन्धामि शत शारदायायुष्यज्जरदष्टियर्थासम्।।**" इसके बाद जलपात्र में रखा जल आचमनी से दाहिनी हथेली में लें और उसका तीन बार पान करें। "**ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः।।**" जल आचमन के उपरान्त "**ॐ हृषिकेशाय नमः**" कहकर अपना हाथ शुद्ध करें। अब दीप प्रज्जवलित करें। "**भो दीप देवस्यस्त्वं कर्मसाक्षी हाविघ्नकृत। यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात् तातत्वं सुस्थिर भव।।**" इन क्रियाओं के बाद संकल्प करें।

संकल्प

"**ॐ यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदुसुप्तस्य तथैवेति। दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।। ॐ शन्नो मित्रः शं वरूण शन्नो भवत्वर्याम। शन्न इन्द्रो बृहस्पति शन्नो विष्णुरूरूक्रमः।।**" संकल्प इस प्रकार है—"**ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु। ॐ तत्सदद्य श्रीमद्भगवतो श्री पुराणपुरुषोत्तमस्य विष्णुराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्री ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे सप्तमें वैवस्तमन्वन्तरे अष्टाविंशतितित में कलयुगे कलीप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्ष बौद्धावतारे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मवर्तेकदेशे पुण्य प्रदेशे (अमुक) क्षेत्रे (अमुक) ग्रामे (अमुक) सम्वतसरे (अमुक) ऋतौ मासानाममासे (अमुक) मासे (अमुक) तिथौ (अमुक) वासरे (अमुक) नक्षत्रे (अमुक) गोत्रोत्पन्न (अमुक) नाम (शर्मा, गुप्ता, वर्मा)**

कायिक वाचिक मानसिक ज्ञाताज्ञात सकल दोष परिहारार्थ श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त फल प्राप्त्यार्थ आरोग्यैश्वर्य दीर्घायुः विपुल धन-धान्य समर्थ पुत्र-पौत्रादि अभिवृद्धि हेतु सपुत्रस्त्री बान्धवस्य जन्मराशेः सकाशादनिष्ठ स्थानस्थित ग्रहजनित पीड़ा परिहारार्थ (अमुक) देवतास्य पूजनं करिष्ये/करिष्यामि।।" गणेश पूजन भी पहली आवश्यकता है।

गणेश पूजन

"ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च किपलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्दो गजाननः।। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।" इस प्रकार गणेश का आह्वान करें। गणेश जी का पूजन करें।

"ॐ गणपतये नमः आसनं समर्पयामि। (आसन दें) पाद्यं समर्पयामि (पाद्य अर्पित करें) अर्घ्यं समर्पयामि (अर्घ्य समर्पित करें) आचमनीयं समर्पयामि (जल समर्पित करें) स्नानं समर्पयामि (जल समर्पित करें) गन्धं समर्पयामि (तिलक करें) धूपं-दीपं दर्शयामि (धूप-दीप अर्पण करें) नैवेद्यं समर्पयामि (प्रसाद चढ़ावें) आचमनीयं समर्पयामि (जल समर्पित करें) दक्षिणां समर्पयामि (दक्षिणा चढ़ावें) नमस्करोमि (नमस्कार करें)।"

गणेश पूजन के उपरान्त पूजन करें। सर्वप्रथम सूर्य ग्रह पूजन करें।

सूर्य पूजन

सूर्य साधना रविवार को की जाती है। इससे शारीरिक और मानसिक विकास होता है। जप, गेहूँ, गुड़, कमल पुष्प, केसर, लाल चन्दन, लाल वस्त्र, तांबा, सोना, माणिक आदि का दान किया जाता है।

साधना के लिए प्रातः उठकर सूर्य आराधना करनी चाहिए। सूर्यास्त के उपरान्त कुछ भी खाना-पीना मना है। सूर्य उपवासधारी दोपहर बाद मीठा भोजन में प्रयोग करें। सोमवार को प्रातः सूर्यार्घ्य देने के बाद व्रत सम्पूर्ण करें।

सूर्य मन्त्र

सूर्य का वर्ण लाल है। लाल चावल एवं लाल पुष्प लेकर निम्नलिखित मंत्र से आह्वान करें—"ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यच। हिरण्येन संविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।" ॐ जपाकुसुमसंकाश काश्यपेयं महाद्युतिम। तमोअरि सर्वपापध्नं सूर्यमावाह्याम्यहम।। ॐ विश्वानिदेय सवितदुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न आसुव ।। ॐ भूर्भुवः स्वः कलिंग देशोद्भव काश्यप गोत्र, रक्तवर्ण भो सूर्य। इहागच्छ इह तिष्ठ सूर्याय नमः श्री

सूर्यमावाहामि स्थापयामि। पद्मासनः पद्माकरो द्विबाहुः पद्मद्युतिः सप्ततुरडेवाहनः। दिवाकरो लोकगुरू किरीटीमयि प्रसादं देवाः।। ॐ ग्रहाणा-मादिरादित्यो लोकरक्षण कारकः। विषम स्थान सम्भूतां पीड़ां हरतु ते रविः।।

सूर्य का तान्त्रिक मन्त्र

सूर्य का तान्त्रिक मंत्र इस प्रकार है—**ॐ सू सूर्याय नमः अथवा ॐ ह्रीं घृणिः सूर्याय नमः**। जप संख्या—सात हजार है।

सूर्य का यन्त्र

कृत्तिका नक्षत्र में रविवार के दिन सूर्य के सिंह राशि में होने पर सूर्य साधना प्रभावी होती है। सूर्य यंत्र भोजपत्र पर अंकित करना चाहिए और सूर्य की पूजा करनी चाहिए।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः का सात हजार पांच सौ की संख्या में जाप करें। तांबे अथवा सोने में विधिपूर्वक बनाया यंत्र धारण भी किया जाता है।

सूर्य का दान

सूर्य की दान सामग्री—गेहूँ, गुड़, देशी घी, लाल चन्दन, लाल पुष्प, लाल वस्त्र, केशर, तांबा, मूंगा। इस दान को रविवार के दिन दक्षिणा के साथ देना चाहिए।

चन्द्र पूजन

भारतीय ज्योतिष के मतानुसार चन्द्रमा मन का कारक। चन्द्र उतावलापन और लाभ की आकांक्षा बढ़ाता है। पाचन क्रिया और रजोदर्शन को प्रभावित करता है।

सौर मंडल में अग्निकोण में अर्द्धचन्द्र के रूप में स्थापित किया जाता है। चन्द्र ग्रह की अनुकूलता पाने के लिए शिव की पूजा का भी विधान है। चन्द्रमा की साधना सोमवार को की जाती है। चन्द्र स्तुति, पूजन, अनुकूल प्रभाव देता है। चन्द्र ग्रह का पूजन इस प्रकार है—

आह्वान

हाथ में पुष्प लेकर आह्वान करें—

**"क्षीरदार्णव सम्भूत अत्रिगोत्र समुद्भव।
ग्रहाणार्घ्य शशाडेदं रोहिणी सहितं मम्।।"**

स्थापना

ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रमा देवता इहागच्छतु इह तिष्ठ। सोमाय नमः।

ध्यानम्

श्वेताम्बरः श्वेतविभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दण्डधरो द्विबाहुः।
चन्द्रोअमृत्मत्वावरदः किरीटी मयि प्रसादं विद्यातुतेजः।।
इसके चन्द्र पूजन करें।

जप का मंत्र

ॐ सों सोमाय नमः।

बीज मंत्र

ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।

जन्म कुण्डली में चन्द्रमा अगर अनिष्टकर स्थान पर हो तो शंकर की साधना करनी चाहिए। उपवास करने वाला श्वेत भोजन चावल, दही, दूध आदि ग्रहण करे। साधक मंगलवार को अर्घ्यदान कर व्रत पूर्ण करे।

दान

बांस-पात्र, चावल, कपूर, मुक्ता, श्वेत वस्त्र, रूपा, घृत, सोना, दक्षिणा।



मंगल ग्रह पूजन

मंगल ग्रह पृथ्वी के समीप है। पूजन के लिए सौर मंडल में सूर्य के दक्षिण में त्रिकोण रूप लाल रंग से स्थापित किया जाता है। मंगल साहस का दाता है। शुभ स्थान का मंगल धन-सम्पदा देता है। अशुभ स्थिति में यह वैवाहिक जीवन को नष्ट करता है। मंगल को भूमिपुत्र भी कहा जाता है। मंगल ग्रह हनुमान-आराधना से संतुष्ट होता है। वैवाहिक जीवन एवं संतान सुख के लिए मंगल साधना लाभकर है। मंगल की आराधना मंगलवार को ही आरम्भ करनी चाहिए। इस उपवास में बिना नमक का भोजन एक बार ही करें। भोजन सूर्यास्त के बाद नहीं करें। उपवास की पूर्ति बुधवार को सूर्य को अर्घ्य देकर की जाए। अगले पृष्ठ पर लिखे मंत्रों द्वारा मंगल की पूजा करें।

आह्वान

लाल चन्दन, लाल फूल और चावल हाथ में लेकर मंगल के आह्वान हेतु मंत्र पाठ करें:—

धरणीगर्भ संभूतं विद्युत्कांति समप्रभाम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाह्याम्हम्।

ध्यान

ॐ भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत्सदा। वृष्टिकृद वृष्टिहर्ता च पीड़ां हरतु ते कुंजः।

इसके उपरान्त पूजन करें।

मंत्र

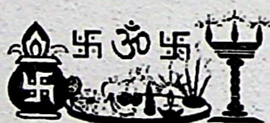
ॐ अग्निमूर्धा दिवः ककुत्पतिः अयम्। आपा रेता असि जिन्वति।। भौमाय नमः।

बीज मंत्र

ॐ ह्रं श्रीं भौमाय नमः।

दान

मसूर की दाल, गेहूँ, मूंगा, भूमि, रक्त चन्दन, लाल वस्त्र, लाल पुष्प, तांबा, सोना, केशर, कस्तूरी एवं यथाशक्ति दक्षिणा।



बुध ग्रह पूजन

बुध चमकीला, हरे रंग वाला है। यह ग्रह सूर्य के अधिक समीप है। बुध जातक के बोलने के ढंग, विद्या-अध्ययन, व्यंग्य क्षमता को प्रभावित करता है। अगर जन्म कुण्डली में बुध उच्च स्थान का है तो सफल वकील बनने में सहायक होता है। अशुभ होने पर जातक को शंकालु और रोगी बनाता है। बुध ग्रह मण्डल में ईशान कोण में स्थापित है। इसका रंग हरा बतलाया गया है। बुध साधना का फल पाने के लिए भगवती साधना का विधान है। यथासंभव हरे फूल और हरे रंग के चावल लेकर बुध का आह्वान करें।

आह्वान

प्रियंगुकलिका भासं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यंगणोपेतं बुधमावाह्याम्यहम्।।

स्थापना

ॐ भूर्भुवः स्वः बुध इहागच्छ इहातिष्ठ। बुधाय नमः
पुष्प, अक्षत नवग्रह मंडल में बुध स्थान पर छोड़ दें।

ध्यान

**ॐ उद्‌बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स असजेथामयं च।
अमिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।।
दूर्वादलस्य वपुः किरीटी चतुर्भुजो दण्डधरश्च हारो।
वर्माग्निधृक्सोमसुतो सदा मे सिंहात्रि रूढ़ोवरदो बुधो मे।।**
इसके उपरान्त साधना शुरू करें।

तांत्रिक मंत्र

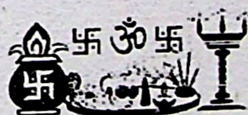
ॐ बुं बुधाय नमः।

जप

**ॐ उत्पात रूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः।
सूर्य प्रियकरो विद्वान् पीड़ा हरतु ते बुधः।।**

दान

बुध के दान हेतु कांसे का बर्तन, हरा कपड़ा, मूंग, पन्ना, धार्मिक पुस्तक, भोजन, दक्षिणा, हाथी दांत, देसी कपूर आदि वस्तुएं हैं।



बृहस्पति पूजन

बृहस्पति देवताओं के गुरू और नीति के गुरू हैं। जन्म कुण्डली में बृहस्पति की स्थिति उच्च होने पर जातक ज्ञानवान, लोकप्रिय और समाज में आगे रहता है। कुण्डली में गुरू अहितकर स्थान में होने पर जातक मन्द बुद्धि और आकर्षणहीन रहता है।

सौर मण्डल में गुरू बृहस्पति का स्थान सूर्य के उत्तर में पीले रंग के अष्ट दल के रूप में है। बृहस्पति की पूजा—किसी मास के शुक्ल पक्ष के

गुरूवार को आरम्भ करनी चाहिए। बृहस्पति साधना हेतु संध्या का समय उपयोगी है। बृहस्पति की आराधना उन कन्याओं के लिए विशेष फलदायी है जिनके विवाह में विघ्न आ रहे हों।

बृहस्पति उपवासधारी को केले की पूजा, पीले वस्त्र और एक बार पीला भोजन करें। केला सर्वाधिक लाभकारी है। साधक हाथ में पीले पुष्प और पीले चावल लेकर निम्नलिखित मंत्र का पाठ करें—

आह्वान

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हादधुमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यदीदयच्छवसऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।
उपायाम गृहीतोअसि बृहस्पतये त्वैष ते योनिर्बृहस्पतये त्वा।।
देवानां च मनीनां च गुरूं कांचनसंनियम्।
वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरूमावाह्याम्यहम्।

स्थापना

ॐ भूर्भुवः स्वः बृहस्पते इहागच्छ इहतिष्ठ। बृहस्पते नमः।
इस मंत्र पाठ के बाद पीत पुष्प एवं पीले रंगे अक्षत छोड़ें।

ध्यान

पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो देवगुरू प्रशान्तः।
यथाक्षसूत्रं च कमण्डलुंज दण्ड च विभ्रद्धंरदोअस्तु।।

तांत्रिक मंत्र

ॐ बूं बृहस्पते नमः।

जप

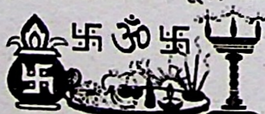
ॐ देवमंत्री विशालक्षः सदा लोकहिते रतः।
अनेक शिष्य सम्पूर्णः पीड़ाहस्त ते गुरूः।।

बीज मंत्र

ॐ ह्रीं क्लीं हूँ बृहस्पतये नमः।

दान

पीला अनाज, पीले वस्त्र, घी, पीले फूल, हल्दी, मधु, केला एवं दक्षिणा।



शुक्र पूजन

शुक्र दैत्यों के गुरू हैं। अत्यन्त चमकीला शुक्र केवल आठ माह में सूर्य की परिक्रमा पूरी कर लेता है। सौर मंडल में शुक्र ग्रह को सूर्य के पूर्व में पंचकोण द्वारा स्थापित किया जाता है। कुण्डली में शुभ स्थान पर शुक्र होने से जातक को भौतिक सम्बन्धों का सुख मिलता है। अशुभ स्थान पर जातक में कामुकता आती है। अहितकर स्थान पर होने से अन्य उपवास साधना के साथ लक्ष्मी की आराधना का भी विधान है। साधक प्रातः शुक्र पूजन करें। दोपहर बाद श्वेत भोजन दही, भात, अथवा खीर का भोजन करें।

श्वेत पुष्प, अक्षत हाथ में लेकर निम्नलिखित मंत्र से आह्वान करें—

आह्वान

ॐ हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरूम्।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं आह्वामिहम्।।

बीज मंत्र

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।

तान्त्रिक मन्त्र

ॐ शुं शुक्राय नमः।

दान

श्वेत चन्दन, चावल, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, घी, दही, शक्कर, गऊ (श्वेत वर्ण की) और दक्षिणा।



शनि ग्रह पूजन

शनि सूर्य पुत्र कहे गये हैं परन्तु इनमें परस्पर मैत्री नहीं है। सूर्य की शनि परिक्रमा करता है। जन्म कुण्डली में उच्च स्थान पर बैठा शनि जातक के यश, ऐश्वर्य, दीर्घ आयु और चिन्तन शक्ति का, विशेष रूप से दार्शनिक चिन्तन का, कारक होता है। अशुभ स्थान पर बैठा शनि अनाचार को बढ़ावा देता है। शनि श्याम वर्ण है। किसी भी जातक की जन्म कुण्डली के अनुसार शनि की दशा अढ़ाई वर्ष और साढ़े सात वर्ष रहती है। सौर मण्डल में शनि का स्थान पश्चिम में है। मकर और कुम्भ राशि का स्वामी शनि मारक कहलाता है। शनि को अधिक बलशाली

कहा गया है। शनि की प्रसन्नता के लिए भैरव की साधना उपयुक्त बतायी है। शनि के कष्ट को कम करने के लिए हनुमान की साधना का भी प्रचलन है।

उपवास करने वाले को दोपहर बाद नमक रहित भोजन करना चाहिए। कृष्ण वर्ण के पुष्प अथवा बिल्वपत्र और काले रंगे अक्षत लेकर निम्न मंत्र से आह्वान करें:—

आह्वान

नीलांबुजसमाभासं रविपुत्र यमाग्रजम्।
छाया मार्तण्ड सम्भूतं शनिमाव्राहाम्यहम्।।

स्थापना

ॐ भूर्भुवः स्वः शनैश्चर इहागच्छ इहतिष्ठः शनैश्चराय नमः।

ध्यान

ॐ सूर्यपुत्रो दीर्घदेही विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दाचार प्रसन्नात्मा पीड़ां हरतु ते शनिः।।

मंत्र

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभि सवन्तु नः ॐ शनैश्चराय नमः।।

शनि साधना में अभिमंत्रित रुद्राक्ष की माला लेकर मंत्र जप का विधान है।

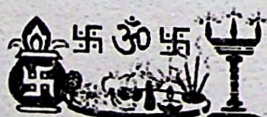
बीज मंत्र

ॐ शं शनैश्चराय नमः।

पूजन के लिए मध्याह्नकाल उपयुक्त माना गया है।

दान

काले तिल, उड़द, तेल, काले वस्त्र, लोहा, दक्षिणा।



राहू पूजन

राहू केवल छाया ग्रह माना जाता है। यह भी सूर्य की परिक्रमा करता है। सौर मंडल में राहू का स्थान नैऋत्य कोण में है। कन्या राशि का स्वामी राहू

जातक की तार्किक वृत्ति को बलवान बनाता है। जातक की कुण्डली में अगर राहू उच्च का हो तो कुशल राजनीतिज्ञ बनाता है। अशुभ स्थान का राहू जातक को चिन्ताग्रस्त रखता है। राहू पीड़ित जातक को अनिन्द्रा और चिड़चिड़ापन सताता है। राहू ग्रह के वक्री होने पर आने वाले कुप्रभाव से मुक्ति की आकांक्षा की जाती है। राजपक्ष में आई विपत्तियों से बचाने में भी राहू की आराधना उपयोगी है। पूजन के लिए निश्चित दिन शनिवार माना है। काले अक्षत और यथासंभव नीले काले पुष्प लेकर नीचे लिखे मंत्र से आह्वान करें—

आह्वान

अर्धकायं महावीर्य चन्द्रादित्य विमर्दनम्।
सिंहिका गर्भ संभूत राहू आह्वामिहम्।।

स्थापना

ॐ भूर्भुवः स्वः राहू देवता इहागच्छ इहातिष्ठ। राहवे नमः।

राहू यंत्र पर एवं नवग्रह मंडल में राहू स्थान पर पुष्प और अक्षत छोड़ें।

ध्यान

ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा कया सचिष्ठया वृता। ॐ महाशिरा महावक्त्रो दीर्घ दृष्टो महाबलः। अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीड़ां हरतु ते नमः।।

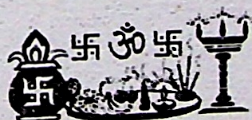
राहू की पूजा करने के उपरान्त जप करना चाहिए। जप रात्रि के समय किया जाता है।

बीज मंत्र

ॐ रां राहवे नमः

दान

गोमेद, काले तिल, नीले वस्त्र, काले उड़द, तेल, सीसा, सरसों, चाकू, काला कम्बल, नीले पुष्प, दक्षिणा। दान अपाहिज को देना विशेष फलदायी होता है।



केतु पूजन

केतु भी छाया ग्रह माना जाता है। केतु का जन्म कुण्डली में फलदायी

स्थान होने पर जातक को भीषण दुर्घटना से भी सुरक्षित रखता है। अनिष्टकारी होने पर केतु चर्मरोग, कारावास, जलाघात का कारण होता है। केतु सूर्य व पृथ्वी की परिक्रमा करता है। सौर मंडल में केतु का स्थान वायव्य कोण में है। केतु ग्रह मीन राशि का स्वामी माना गया है। केतु वक्री होने से आए कुप्रभाव से मुक्ति दिलाता है। केतु के पूजन के लिए मंगलवार उपयुक्त माना जाता है। केतु पूजन रात्रि के प्रथम पहर में किया जाता है। रविपुष्य योग के आरम्भ में अथवा कन्या या मकर लग्न में केतु पूजन अधिक फल देने वाला होता है।

अन्य ग्रहों की भांति केतु यंत्र पर अक्षत-पुष्प चढ़ाएं।

अक्षत आदि लेकर निम्नलिखित मंत्र से आह्वान करें—

आह्वान

पलाशपुष्पशंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रोद्रां रोद्रात्मकं घोरं केतुं आह्वामिहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः केतो इहागच्छ इहतिष्ठ। केतवे नमः।

ध्यान

धूम्रो द्विवाहुर्वरदो गदाधरो गृद्धासनस्थो विकृताननश्च।
किरीट केयूर रवि भूषितो यः सर्वोस्तु मे केतुगणः प्रशान्त्यै।।
ॐ अनेक रूपवर्णश्च शतशोअथ सहस्रशः।
उत्पातरूपो जगतां पीड़ां हरतु ते शिखी।।

बीज मंत्र

ॐ कें केतवे नमः।

दान

केतु की शान्ति के लिए वही वस्तुएं हैं जो राहू की शान्ति के लिए दी जाती हैं।

उपरोक्त ग्रहों को वर्णित विधियों के अनुसार जाप, साधना एवं पूजन कर अभीष्ट फल की प्राप्ति कर सकते हैं।





लक्ष्मी पूजन

लक्ष्मी का जन्म समुद्रमन्थन से ही माना जाता है। समुद्रमन्थन से लक्ष्मी पैदा हुई। इसकी सुन्दरता के कारण सुर और असुर सभी इसको चाहने लगे। इन्द्र ने इसको रत्नजड़ित आसन दिया, नदियां स्नान के लिये पवित्र जल लाईं और ऋषियों ने इसका अभिषेक किया।

सबसे पहले नारायण ने बैकुण्ठ में लक्ष्मी की पूजा की। दूसरी बार ब्रह्मा ने, तीसरी बार शिव ने, चौथी बार सागर मंथन के समय फिर विष्णु ने, फिर मनु ने और पाताल में नागों ने, भाद्रपद शुक्ल अष्टमी से लेकर आश्विन तक ब्रह्मा ने इसकी पूजा की थी। शेष देवताओं ने चैत्र शुक्ल और पौष शुक्ल अष्टमी के दिन इसकी पूजा की थी। इसके अतिरिक्त शरद ऋतु में दीपावली के दिन पौष संक्रान्ति के दिन भी देवताओं ने इसकी पूजा की। लक्ष्मी की साधना के लिये दीपावली की रात्रि का बहुत महत्व बताया गया है।

दीपावली पूजन विधि

दीपावली का त्यौहार त्रयोदशी से आरम्भ होता है। इसे "धन तेरस" भी कहते हैं। इस दिन अनेक व्यक्ति कोई न कोई नया बर्तन खरीदकर घर में लाते हैं। दीप भी जलाए जाते हैं। चतुर्दशी के दिन, जिसे छोटी दीपावली कहा जाता है, इस दिन भी देव स्थानों पर दीप प्रज्जवलित किये जाते हैं. इसके बाद अमावस्या के दिन दीपावली मनायी जाती है।

सायंकाल देव पूजन तथा लक्ष्मी का पूजन करना चाहिये।

5 दीप शुद्ध घी के तथा अन्य सरसों के तेल से प्रज्जवलित करें। जिस स्थान पर लक्ष्मी का पूजन हो वहाँ पर शुद्ध घी का दीपक जलावें। घर में

जिस स्थान पर रुपया अथवा आभूषण रखे हों तो उस स्थान पर घी का दीपक जलाना चाहिये। इस प्रकार अगर दुकान हो तो उस स्थान पर घी का दीपक जलाना चाहिये। एक घी का दीपक गंगाजी के नाम का भी जलाना चाहिए। इसके अतिरिक्त जितने भी घर में देव स्थान हों उन पर धी का दीपक जलाना चाहिए। घर के शेष सभी भीतरी तथा बाहरी भागों में तेल के दीपक जलावें। घर के दरवाजों, खिड़कियों, छत व मुंडेरों पर जलते दीपों की कतारें अत्यन्त शोभित होती हैं। चौराहे पर भी दीपक रखना चाहिए। चावल तथा कुंकुम से अष्टदल कमल बनाकर उस पर लक्ष्मी जी की मूर्ति स्थापित करें। फिर विधि अनुसार संकल्प करके देव पूजन व लक्ष्मी का पूजन करें। दीपमालिका के उत्सव पर चावल की खीर, खांड की मिठाई व अन्य विविध प्रकार के पकवानों से लक्ष्मी का भोग लगावें। निवास के सभी कमरे सुगन्धित धूप व अगरबत्ती आदि से सुवासित करने चाहिएं। पूजन के पश्चात् मिठाई बाँटें।

व्यवसायी को चाहिए कि वह अपनी दुकान पर जाकर दीपोत्सव मनायें। दुकानदारों को चाहिए कि वे लक्ष्मी-पूजन के समय अपने बहीखातों व कलम-दवात आदि का भी पूजन करें। सिन्दूर से घर व दुकान में यंत्र लिखें। जुआ खेलना महापाप है। आप ऐसा ना करें।

संकल्प

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषष्य विष्णोराज्ञा प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्राह्मणोन्हि द्वितीय परार्द्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे अमुक संवत्सरे, अमुक अयने अमुक ऋतो, अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, अमुक वासरे पुण्यतिथौ, अमुक गौत्रोमुकशर्माहं। स्थिर लक्ष्मीप्राप्तयर्थ सर्वारिष्ट निर्वृत्तिपूर्वक व्यापारे लाभार्थ च महालक्ष्मी महाकाली (मसीपात्र) महासरस्वति नवग्रहादि पूजनं करिष्ये।

श्री गणेशाम्बिका पूजनम्

ॐ गणानांत्वा गणपतिं हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिं हवामहे निधीनान्त्वानिधिपतिं हवामहेव्वसो मम आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम् ।।1।। ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय गणपतये नमः गणपतिमावाह्यामि स्थापयामि। हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्। लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाह्याम्यहम्। ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्ये नमः गौरीमावाह्यामि स्थापयामि। गंधाक्षत पुष्प धूप दीप नैवेद्य आचमनीय

ताम्बूल पूंगीफलं समर्पयामि नमः ।। 2।। इति गणेशाम्बिका पूजनम्।

श्री महालक्ष्मी पूजनम्

तत्रादौध्यानम्। या श्रीः पद्मासनस्थाविपुलकटितट पद्मपत्रायताक्षी। गम्भीरावर्तनाभितनु-भरणमिताशुभ्रवस्त्रोत्तरीया या लक्ष्मीर्दिव्यरूपपैर्मणिगणखचितैः स्थापिता हेमकुंभैःसा नित्यं पद्म हस्ता मम वस्तु गृहे सर्वमां गल्ययुक्ता ।। 1।। इति ध्यात्वा ॐ सर्वलोकस्य जननीं शूलहस्तां त्रिलोचनम्। सर्वदेवमयीमीशां देवीमावाह्याम्यहम् ।। 2।। सर्वतीर्थसमुद्भवं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम्। मया दत्तं गृहाणेमं भगवति भक्तवत्सले ।। 3।। महालक्ष्म्यैनमः पाद्यं समर्पयामि। ॐ तप्तकांचनवर्णाभांमुक्तामणिविराजितम्। अमल कमल दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्। ।। 4।। इत्यासनम्। ॐ गंगादितीर्थसम्भूतं गंधपुष्पाक्षतैर्युतम्। पाद्यं ददामहं देवी गृहाणाशु नमोस्तुते ।। 5।। इतिपाद्यं अष्टगंध समायुक्तं स्वर्णपात्र प्रपूरितम्। अर्घ्य गृहाण मदतं महालक्ष्म्यै नमोस्तुते ।। 6।। इत्यर्यध्म्। ॐ सर्वलोकस्त या शक्तिब्राह्मणविष्णुशिवादिभिः स्तुता ददाम्याचमनं तस्यै महाकाल्यै मनोहरम् ।। 7।। इत्यार्चनम्। ॐ पंचामृतसमायुक्तं जान्हवीसलिलं शुभम्। गृहाण विश्वजननि स्नानार्थ भक्तवत्सले ।। 8।। इति स्नानम्। ॐ दिव्यांवरं नूतनं हि क्षौमं त्वतिमनोहरम्। दीयमानं मया देवि गृहाण जगदम्बिके ।। 9।। इति वस्त्रयुग्मम्। कापिलं दधि कुन्देदुधवलं मधुसंयुतं। स्वर्णपात्रस्थितं देवि मधुपर्कं गृहाण मे ।। 10।। इति मधुपर्कम्। ॐ रत्नकंकणवैदूर्यमुक्ताहारादिकानि च। सुप्रसन्नेगमनसादत्तानि स्वीकुरूष्व मे ।। 11।। इति आभरणानि। श्री खंडागरूकर्पूरमृनाभि समन्वितम्। विलेपनं गृहाण त्वं नमोस्तुते भक्तवत्सल ।। 12।। इति चन्दनम्। ॐ रक्तचन्दनाम्मिश्रं पारिजात समुद्रभवम्। मयादत्तगृहाणाशु चन्दनं गंधसंयुतम् ।। 13।। इति रक्तचन्दनम्। ॐ सिंदूर रक्तवर्ण च सिंदूर तिलक प्रिये। भक्तया दत्तं मया देवि सिंदूरं प्रतिगृह्यताम् ।। 14।। इति सिंदूरं। ॐ कुंकुमं कामदं दिव्यं कुंकुमं कामरूपिणाम्। अखंडकाम सौभाग्यं कुंकुम प्रतिगृह्यताम् ।। 15।। इति कुंकुमम्। ॐ तैलानि च सुगंधींनिद्रव्याणि विविधानि च। मया दत्तानि लेपार्थ गृहाण परमेश्वरी ।। 16।। इति सुगन्धि तैलम्। ॐ मन्दापारिजातादीन्पाटलम् केतकीं तथा। मेरूवामोगरं चैव गृहाणाशु नमोस्तुते ।। 17।। इति पुष्पाणि। ॐ विष्णवादिसर्वदेवानां प्रियां सर्व सुशोभनाम्। क्षीरसागरसम्भूतां दूर्वा स्वीकुरू सर्वदा ।। 18।। इति पुष्पमालां। ॐ वनस्पतिरसोद्भतागंधाढ्यः सुमनोहरः आघ्रेयः सर्वदेवनां धूपोयं प्रतिगृह्यताम् ।। 19।। इति धूपम्।

ॐ कर्पूरवर्तिसंयुक्तं घृत्युक्तं मनोहरम्। तमोनाशंकरंदीपं गृहाण परमेश्वरी ।। 20।। इति दीपम्। ॐ नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ष्य भोज्य समन्वितम् षड्रसैरन्वितं दिव्यं लक्ष्मी देवि नमोस्तुते ।। 21।। इति नैवेद्यम्। शीतलं निर्मलं तोयं कपूरिणसुवासितम्। आचम्यतां मम जलं प्रसीद त्वं महेश्वरि ।। 22।। इति आचमनम्। ॐ एलालवंग कर्पूर नाग पात्रदिभिर्युतम्। पुंगीफलेन संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।। 23।। इति ताम्बूलं। ॐ फलेन फलितं सर्व त्रैलोक्यं सचराचरम्। तस्मात्फलप्रदानेन पूर्णाः संतु मनोरथः ।। 24।। इति फलम्। ॐ हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अन्नतपुण्यफलदमतः शान्ति प्रयच्छ मे ।। 25।। इति दक्षिणां। ॐ यानि कानि च पानानि ब्रह्महत्यासमानि। तानिता-निविनश्यन्ति प्रदक्षिणां पदे पदे। ॐ केतकीजाति कुसुमैर्मल्लिकामालती भवैः पुष्पांजलिर्मयादत्तंतावप्प्राप्यै नमोस्तुते ।। 28।। इति मंत्रपुष्पांजलिः। नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरीप्रिये या गतिस्त्वप्रपन्नामाँ सामे भूयात्वर्चनात् ।। 29।। इति पूजनम्।

बहीखाता पूजन

सबसे पहले नवीन लेखा-पत्राणि लेकर लेखनी द्वारा उस पर स्वास्तिक बनावें, फिर स्वास्तिक के चारों ओर एक गोल मंडल **"श्री सरस्वत्यै नमः"**, लिख-लिखकर बनावें। तत्पश्चात् ध्यान करें—

"या कुन्देदु तुषारहार धवला या भुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणा वर दंड मंडित करा या श्वेत पद्मासना।।
या ब्रह्मच्युत शंकर प्रभुतिभिर्देवै सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा ।।"

इसके बाद निम्नलिखित मंत्र से सरस्वती का आह्वान करें—

सरस्वती महाभागे रक्षार्थ मम सर्वदा।
आह्वायाम्यहं देवि सर्व कामार्थ सिद्धये।।

फिर **"ॐ भूर्भुवः सरस्वत्यै नमः"** कहता हुआ अर्घ्य, पाद्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, भूषण, गन्ध, सिन्दूर, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, पुनराचमन, ताम्बूल पुंगीफल, दक्षिणा समर्पित कर कपूर से आरती उतारें।

लेखनी पूजनम्

नई लेखनी लेकर किसी बाजोट अथवा वस्तु के आसन पर रखें और फिर प्रार्थना करें—

लेखनी निर्मितां पूर्व ब्राह्मणं परमेष्ठिनी।
लोकानां च हिताथ्यं तस्मात्तां पूजयाम्यहम्।।

ॐ चित्रलेखन्यै नमः कहकर अर्घ्य, पाद्य देकर पूजन करें।

तत्पश्चात् हाथ में पुष्प लेकर नीचे लिखे मंत्र से उस पर पुष्प छोड़ें—

लेखंयै ते नामेस्तेअस्तु लाभकत्रर्यै नमो नमः।
सर्वविद्या प्रकाशिन्य शुभदायै नमो नमः।।
पुस्तके चार्चिता देवी सर्व विद्यान्नदाभव।
मद गृहे धन धान्यादि समृद्धिं कुरूसर्वदा।।

तिजौरी, भाण्डागार पूजनम्

आह्वान

स्वर्ण मासं कुबेरं च गदापाण्याश्ववर्वाहनं।
चित्रणी पद्मायहितं निधीश्वरमहं भजे।।

तत्पश्चात् "**श्री कुबेरायनमः**" मंत्र से विधिपूर्वक पूजन करें। फिर नीचे लिखे मंत्र से हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।

धनदायनमस्तुभ्य निधिपदमाधिपाय च।
भवन्तु त्वत्प्रदान मे धन्य धान्यादि सम्पदा।।
कुबेराय नमअस्तुभ्यं नाना भाण्डार संस्थिता।
यत्र लक्ष्मीर्भवेदैवं धनं चिनु नमोस्तुते।।

दीपावली की कथा

एक बार शौनकादि ऋषियों ने आकर सनतकुमार जी से पूछा—भगवन् ! दीपावली के अवसर पर लक्ष्मी जी के साथ साथ अन्य देवी-देवताओं का पूजन क्यों किया जाता है ? ऋषियों की इस शंका को सुनकर सनतकुमार जी कहने लगे, हे ऋषियों ! समय पाकर जब बलि ने अपने भुजबल से अनेक देवताओं को बन्दी बना लिया तो कार्तिक अमावस्या के दिन स्वयं विष्णु भगवान् ने वामन रूप धारण करके उसे बांध लिया और समस्त बन्दी बनाये गये देवताओं को कारागार से मुक्त करा दिया। कारागार से मुक्त होकर सभी देवों ने क्षीर सागर में बली सहित विश्राम किया। इसी कारण दीपावली के दिन लक्ष्मी-पूजन के साथ-साथ अन्य देवताओं के भी पूजन व शयन की व्यवस्था करनी चाहिये। ऐसा करने से लक्ष्मी अन्य देवताओं के साथ वहीं पर विश्राम करेंगी। हे ऋषियों ! विधिपूर्वक श्रृद्धायुक्त होकर लक्ष्मी के पूजन से वह स्थायी निवास करती हैं। भगवती लक्ष्मीजी के भोग के लिए गाय के दूध का खोया बना उसमें मिश्री एवं इलायची आदि सुगन्धित द्रव्य मिलाकर लड्डू बनाने चाहिएं।

ऋषियों ने पुनः प्रश्न किया—भगवन् ! बलि ने लक्ष्मी व देवताओं को अपने वश में कर लिया था तो फिर लक्ष्मी ने उसका त्याग कब किया ? तब

सनतकुमार ने शंका का समाधान किया—हे ऋषियों ! एक बार जब देवराज इन्द्र से भयभीत होकर राजा बलि कहीं जा छिपा तो इन्द्र ने उसे ढूंढने का प्रयत्न किया। ढूंढते-ढूंढते इन्द्र ने देखा कि बलि एक खाली जगह पर गधे का रूप धारण कर रह रहा है, इन्द्र के वहाँ पहुँचने पर बलि से उनकी बातचीत होने लगी। बलि ने इन्द्र को तत्वज्ञान का उपदेश देते हुए काल समय की महत्ता समझाई। देवराज इन्द्र और दैत्यराज बलि में बातचीत चल रही थी कि उसी समय दैत्यराज के शरीर से अत्यन्त दिव्य रूप वाली स्त्री निकली। उसको देखकर इन्द्र ने पूछा—हे दैत्यराज ! तुम्हारे शरीर से निकलने वाली यह आभायुक्त स्त्री देवी है या आसुरी।

राजा बलि ने उत्तर दिया—राजन् ! यह देवी है, न आसुरी है। अगर तुम इसके सम्बन्ध में अधिक जानना चाहते हो तो फिर इसी से पूछो।

इतना सुनकर इन्द्र ने हाथ जोड़कर पूछा—देवी तुम कौन हो और दैत्यराज का परित्याग कर मेरी ओर क्यों बढ़ रही हो ?

मन्द-मन्द मुस्कराती हुई यह स्त्री बोली—हे देवेन्द्र ! मुझे लक्ष्मी के नामों से पुकारते हैं।

इन्द्र ने प्रश्न किया—हे देवी ! जब इतने दीर्घकाल तक आपने दैत्यराज में वास किया है तो फिर अब इनमें ऐसा कौन सा दोष उत्पन्न हो गया है जो इनका परित्याग कर रही हो, साथ ही यह भी बताने की कृपा कीजिए कि आपने मुझमें ऐसा कौन-सा गुण देखा है जो आप मेरी ओर आ रही हैं ?

लक्ष्मी जी ने उत्तर दिया—हे आर्य ! मैं जिस स्थान पर निवास कर रही हूँ, उस स्थान से मुझे विधाता नहीं हटा सकता। क्योंकि मैं सदैव समय के प्रभाव से ही एक को त्यागकर दूसरे के पास जाती हूँ इसलिये मेरा तुमसे कहना है कि तुम बलि का अनादर न करते हुए, आदर की दृष्टि से उसका सम्मान करो।

इन्द्र ने पूछा—देवी ! कृपाकर यह बताइये कि अब आप असुरों के पास क्यों नहीं रहना चाहतीं ? लक्ष्मी जी बोली—मैं उस स्थान पर रहती हूँ जहाँ धर्म, सत्य, दान, उपवास तथा तप रहते हैं। इस समय असुर इससे दूर हो गए हैं। यह ब्राह्मणों से द्वेष करने लगे हैं। झूठे हाथों घृत छूते हैं और अभक्ष्य भोजन करते हैं। साथ ही धर्म की मर्यादा तोड़कर विभिन्न प्रकार के मनमाने आचरण करते हैं। पहले ये उपवास एवं तप करते थे।

इसलिए देवराज ! मैं अब इनके घर में वास नहीं करूंगी। इसी कारण मैं अब तुम्हारी ओर आ रही हूँ, इसलिए तुम अंगीकार करो। मेरा जहाँ पर वास होगा वहाँ पर आशा, श्रद्धा, धृति, शान्ति, जय, क्षमा और विजित संगीत ये आठ देवियां भी निवास करेंगी। क्योंकि तुम देवों में अब धार्मिक भावना बढ़ गई है इसलिए अब मैं तुम्हारे यहाँ ही वास करूंगी।

सनतकुमार जी कहते हैं—हे ऋषियों ! बस उसी समय से संसार में धर्म और सुख-शान्ति की भावना लक्ष्मी की कृपा से जागृत हो गई है।

महालक्ष्मी उपवास की विधि

महालक्ष्मी के व्रत को भाद्रपद शुक्ला अष्टमी के दिन से प्रारम्भ किया जाता है। इस दिन स्नान करके सोलह धागों से सोलह गाँठ वाली एक डोरी बनाकर अगर, चन्दन, कपूर और चमेली के पुष्पों तथा अन्य सुगन्धित पदार्थों से पूजा करें। फिर **"श्री महालक्ष्म्यैनमः"** इस मंत्र से सोलह बार अभिमंत्रित करके श्री महालक्ष्मी से प्रार्थना करें—**"हे भगवती महालक्ष्मी ! आप धन, धान्य, भूमि, धर्म, कांति, कीर्ति, पुत्र-पौत्र आदि सभी कुछ मुझे दीजिए।"** इस प्रकार महालक्ष्मी का ध्यान करते हुए उन धागों से बनी डोरी को अपने सीधे हाथ में बांधें। अष्टमी से आश्विन शुक्ला अष्टमी तक "श्री महालक्ष्मी जी की कथा" सुनें। आश्विन कृष्णा अष्टमी अर्थात् सोलहवें दिन सायंकाल के समय स्नान करके सफेद वस्त्र धारण करें। तत्पश्चात् पूजा स्थल पर जाकर पूर्व दिशा की ओर मुंह करके आसन पर बैठें। फिर महालक्ष्मी का ध्यान करते हुए अगर, कपूर, चंदन और धूप-दीप से लक्ष्मी का आह्वान करना चाहिए।

श्री महालक्ष्मी कथा प्रारम्भ

एक बार महाराजा युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण जी से पूछा, हे पुरुषोत्तम ! विचारपूर्वक आप एक ऐसा व्रत बतलाइए जिसके करने से अपने नष्ट हुए स्थान फिर से मिल जायें। श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे युधिष्ठिर ! सतयुग में घोर कठिनाई से जीतने योग्य स्वर्ग को जब प्रबल दैत्यों ने घेर लिया अर्थात् देवताओं को बहुत त्रास दिया तब यही बात नारदजी ने इन्द्र से भी कही। नारद मुनि बोले—हे इन्द्र! पूर्वकाल में एक अत्यंत सुन्दर नगर था। उस नगर का राजा "मंगल" नाम से विख्यात था। उसके एक दुष्ट "चिल्लदेवी" नाम की स्त्री थी और दूसरी महायशस्विनी थी जिसका नाम "चोलदेवी" था और वही पटरानी थी। एक दिन राजा मंगल और चोलदेवी ने राजमहल के ऊपर से एक जगह देखी। राजा उस जमीन को देखकर कामयुक्त होकर कुछ मुस्कराकर अपनी स्त्री "चोलदेवी" से बोला—हे चंचलाक्षि ! अपनी शोभा से नन्दन वन को लजाने वाला तेरे लिये यहाँ बाग लगवाऊँगा। यह सुनकर "चोलदेवी" ने कहा बहुत अच्छा, लगवाइए। उसके ऐसा कहने पर राजा ने वहाँ पर एक सुन्दर बगीचा लगवा दिया। जब वह बाग अनेक तरह के वृक्षों की लताओं से युक्त होकर फलने-फूलने लगा और अनेक प्रकार के पक्षियों से सेवित अर्थात् सम्पूर्ण सामग्री से सुसम्पन्न हुआ तब वहाँ पर एक सूअर आया जो कि विशाल शरीर वाला,

ऊँचाई में मानो चन्द्रमा और सूर्य को पकड़ने वाला, वह सूअर अनेक प्रकार के वृक्ष लतादिकों से युक्त उस बगीचे को नष्ट करने लगा। श्रीकृष्ण कहते हैं कि हे युधिष्ठिर ! उसने कितने ही वृक्ष उखाड़ डाले, कितने ही वृक्ष दांतों के प्रहार और घर्षण से तोड़ डाले। काल सदृश उस सूअर से, बगीचे के सब रक्षकों ने भयभीत होकर उसका सारा हाल राजा से जाकर कहा। यह सुनकर राजा के क्रोध से नेत्र लाल-लाल हो गये और उसने अपनी सारी फौज को हुक्म दिया कि सूअर को शीघ्र ही मार डालो। इस प्रकार हुक्म देकर राजा भी मतवाले हाथियों के सहित चला। सेना ने बगीचे को चारों तरफ से घेर लिया। जब वह सूअर समय पाकर राजा के सामने हुआ तब राजा ने उसे बाण से मारा। सूअर रूप छोड़कर आकाश में कामदेवतुल्य सुन्दर शरीर होकर विमान में बैठकर "मंगल" नामक राजा से बोला—हे महीपाल ! आपका कल्याण हो। आपने हमें मुक्त कर दिया अर्थात् सूअर योनि से छुड़ा दिया। अब मैं जिस कारण से सूअर हुआ था, उसका वर्णन सुनिए। मेरा नाम "चित्ररथ" है। मैं एक समय देवताओं से युक्त ब्रह्मदेव के निकट गीत गा रहा था। गीत गाते-गाते मुझसे ताल बिगड़ गई तो इस अपकर्म से सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा जी ने मुझे श्राप दिया कि तू पृथ्वी पर रहेगा और सम्पूर्ण शत्रुओं को जीतने वाला "मंगल" नामक राजा तुझे मारेगा, तभी तेरी मुक्ति होगी। अतः हे महीपते ! आपके प्रताप से इस समय वही सब घटित हुआ। इससे हे राजन ! देवताओं को अत्यन्त दुर्लभ मेरा वर ग्रहण करो। "महालक्ष्मी" का दिव्य व्रत बहुत उत्तम है और वह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को देने वाला है। नारद जी कहते हैं—हे इन्द्र ! इस प्रकार "चित्ररथ" गंधर्व राजा के प्रति कहकर प्रसन्न होता हुआ अन्तर्ध्यान हो गया। इसके बाद राजा मंगल ने कांख में मृगछाला लिए हुए किसी ब्राह्मण ब्रह्मचारी को अपने पास खड़े हुए देखा। राजा हंसते हुए मधुरवाणी से बोला कि तुम देव, मानव, गंधर्व, राक्षस या राजा इनमें से कौन हो ब्रह्मचारी ? सत्य कहो, कहाँ से और किसलिए तुम यहाँ आये हो ? इस प्रकार राजा के वचन सुनकर ब्रह्मचारी ने आशीर्वाद देकर कहा कि मैं आपके ही देश में उत्पन्न हूँ। और मैं आपके साथ ही हूँ इससे हमको यथोचित कुछ आज्ञा दीजिये। इसके अनन्तर राजा ने कहा, हे बटुक! तेरा यह "नूतन" नाम है! सो तुम जल्दी ही जलाशय देखो और हमारे लिए जल लाओ। वह बटुक "ऐसा ही करूंगा" यह कहकर घोड़े पर चढ़कर जहाँ तालाब था वहाँ गया। वहाँ उसका घोड़ा कीचड़ में धंस गया तब उसने घोड़े की पीठ से उतर चारों दिशाओं को देखा। उसी तालाब के तट पर उसे दिव्य वस्त्रों को धारण किए हुए स्त्रियों का विशाल समूह दिखा। बटु ने स्त्रियों के पास जाकर सारा हाल कहा और हाथ जोड़कर मधुरवाणी से बोला—हे स्त्रियों, श्रद्धा भक्तियुक्त होकर तुम यह क्या कर रही हो ? इसकी

क्या विधि है ? और इसका क्या फल है ? सो हमसे विधिपूर्वक कहो। ऐसे उसके वचन सुनकर स्त्रियों का समूह दयायुक्त वाणी से बोला—हे विप्र ! सम्पूर्ण फलों को देने वाला यह उपवास महालक्ष्मी का है जो माया, प्रकृति, शक्ति आदि नामों से पुकारी जाती हैं और स्त्रियों ने उस बटु को उपवास की विधि भी समझाई। तब देवियों ने कहा, हे विप्र ! उपवास में यह उत्तम उपवास हमने तुमसे कहा, इसके करने से वांछित फल प्राप्त होता है। हे विप्र ! इस उपवास को करके अपने राजा से भी इसे कराओ। यह उपवास केवल श्रद्धावान को बताना। इसके बाद ब्राह्मण उस स्त्री समूह को नमस्कार करके कीचड़ से घोड़े को निकालकर तत्पश्चात् जल पीकर राजा के निमित्त कमल के पत्तों में जल लेकर घोड़े पर चढ़कर राजा के पास पहुँचा और पूर्वोक्त समस्त वृत्तांत कहा। नाना प्रकार की सामग्री से युक्त होकर राजा से भी उस उपवास को कराया, उस व्रत के प्रभाव से राजा सब राजाओं में श्रेष्ठ हुआ। एक वार जहाँ "चोलदेवी" नाम की रानी थीं वहाँ राजा मंगल गया और "चोलदेवी" ने राजा की भुजा में डोरे को देखा। डोरे को देखकर रानी को अत्यन्त क्रोध आया और मन में विचार कर क्रोधित होकर राजा के प्रति शंका करने लगे कि राजा शिकार के बहाने किसी और स्त्री के पास जाता है। उसने अपने सौभाग्य के लिये राजा के बाहु में डोरा डाल दिया है और इसी तरह मेरे देखने के लिए इस बटुक को भेजा है। अतः कुपित होकर उस दुष्टात्मा ने कोप से उस डोरे को तोड़कर फेंक दिया। सामन्त, मंत्री, भृत्यादिकों के सहित वन की वार्ता करते हुए राजा ने "चोलदेवी" नाम की रानी के द्वारा डोरा तोड़ा। इस बात को राजा ने नहीं समझा। उसी समय दूसरी "चिल्लदेवी" नाम वाली रानी की कोई दासी देखने को आई। उसने टूटे हुए डोरे को लेकर उसके व्रत आदि का महत्व बटुक से समझकर उस दासी ने रानी से उपवास करने के लिए कहा। तत्पश्चात् "चिल्लदेवी" ने "नूतन" नामक बटुक को बुलाकर उस उपवास को किया। अनन्तर एक वर्ष बीतने पर "लक्ष्मी पूजा" के दिन "चिल्लदेवी" रानी के घर में बाजे, गाने, नाच आदि के शब्दों को राजा ने सुना। उस शब्द को सुनकर राजा ने "नूतन" नामक बटुक से कहा—आज लक्ष्मी के पूजन का दिन है। वह मेरा उपवास का डोरा कहाँ है ? इस प्रकार राजा के पूछने पर बटुक ने डोरे के तोड़ने की बात कह सुनाई। उसको सुनकर मंगल राजा "चोलदेवी" पर नाराज होकर कहने लगा कि आज हम "चिल्लदेवी" रानी के घर में पूजा करेंगे। तत्पश्चात् "नूतन" के हाथ को पकड़कर मंगल राजा लक्ष्मी जी के पूजन के लिए "चिल्लदेवी" के घर गये। लक्ष्मीदेवी जी वृद्धा स्त्री का रूप धारण कर परीक्षा लेने के लिये "चोलदेवी" के गृह में आई। उसको देखकर रानी ने कहा कि हे दुष्टे ! तू यहाँ से चली जा तेरे यहाँ आने से क्या है, इस प्रकार उस

दुष्टा रानी से अत्यन्त अपमानित होकर लक्ष्मी जी क्रोध करके "चोलदेवी" से बोलीं—तूने जो मेरा अनादर किया है उससे तू शूकरमुखी हो। इस प्रकार रानी को श्राप दे दिया। तभी से पृथ्वी पर यह मंगलपुर "कोल्हापुर" के नाम से प्रसिद्ध हुआ। तत्पश्चात् रानी के स्तुति करने पर महालक्ष्मी जी उसी रूप में "चिल्लदेवी" के गृह में आई। "चिल्लदेवी" ने बहुत प्रकार से मानपूर्वक महालक्ष्मी की पूजा की। तब लक्ष्मी जी वृद्धा का रूप छोड़कर प्रत्यक्ष हुईं और रानी ने लक्ष्मी जी की पूजा की, तत्पश्चात् लक्ष्मी जी प्रसन्न होकर चिल्लदेवी से बोलीं, हे चिल्लदेवी ! मैं तुम्हारे पूजन से प्रसन्न हूँ, वर माँगो। तदनन्तर शुभ विचार वाली चिल्लदेवी ने महालक्ष्मी से वर माँगा कि हे देवी ! जो कोई इस उपवास को करे, उसके घर को कभी न छोड़ो और आज से यह राज सम्बन्धी कथा संसार में विख्यात हो और तुम्हारे प्रति हमारी भक्ति हो और जो सद्भाव से इस कथा को पढ़े या सुने उसको वांछित फल दो। महालक्ष्मी "तथास्तु" कहकर वहीं अन्तर्ध्यान हो गईं। तत्पश्चात "मंगल" नाम के राजा ने वहाँ आकर लक्ष्मी का पूजन परम भक्ति से चिल्लदेवी रानी सहित किया। तदनन्तर ईर्ष्या से दुष्ट आचार करने वाली चोलदेवी को चिल्लदेवी के गृह में आती हुई देखकर द्वारपालों ने रोका तो वह क्रोध से जहां "अंगिरा" ऋषि रहते थे उस वन को चली गई। उन्होंने उसे शूकरदेवी देखकर ज्ञान दृष्टि से विचार करके उस चोलदेवी से लक्ष्मी का उपवास कराया। उपवास के करने से चोलदेवी महातपस्विनी बनी। किसी समय में "मंगल" राजा ने मुनि से पूछा कि वह स्त्री कौन है ? तब उसका वृत्तांत मुनि ने राजा को कह सुनाया। राजा यह सुनकर चोलदेवी को पुनः अपने राज्य में ले आया। तब वहाँ आकर चोलदेवी और चिल्लदेवी दोनों प्रेम से रहने लगीं। रानियों सहित राजा मंगल अनन्त वर्षों तक राज्य करते रहे। वह नूतन "बटुक" मंगल राजा का मंत्री बना।

आरती श्री लक्ष्मी जी की

जय लक्ष्मी माता जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत हरि विष्णु विधाता।।
ब्रह्माणी रुद्राणी कमला तू ही है जगमाता।
सूर्य चन्द्रमा ध्यावत नारद ऋषि गाता।। जय।।
दुर्गा रूप निरंजन सुख संपत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत ऋद्धि-सिद्धि पाता।। जय।।
तू ही है पाताल बसंती तू ही शुभ दाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशक जगनिधि से त्राता।। जय।।
जिस घर थारो बासो तेहि में गुण आता।
कर न सके कोई करले मन नहीं घबराता।। जय।।

तुम बिन यज्ञ न होवे वस्तु न कोई पाता।
खान पान का वैभव तुम बिन नस जाता।। जय।।
शुभ गुण सुन्दर मुक्ता क्षीर निधि जाता।
रत्न चतुर्दश तोकूं कोई नहीं पाता।। जय।।
ये आरती लक्ष्मी जी की जो कोई गाता।
उर उमंग अति उपजे पार उतर जाता।। जय।।
स्थिर चरजगत बचाये शुभ कर्म नर लाता।
"राम प्रताप" मइया की शुभ दृष्टि चाहता।। जय।।

दीपावली पर पूजन-साधना

हमारा एकता का पर्व दीपावली है। सभी लोग दीपावली को श्रद्धापूर्वक मनाते हैं। दीपावली को इस प्रकार मनाया जाना चाहिये--कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी से शुक्ला द्वितीय तक पाँच दिन का दीपावली पर्व प्रारम्भ हो जाता है। धनतेरस के दिन द्वार पर "यमराज" के लिए दीपदान करना चाहिए। इससे अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता। दीप दान करते समय निम्न श्लोक को बोलना चाहिए—

"मृत्युना पाशहस्तेन कालेन भार्याया सह। त्रयोदशयां दीपदाना सूर्यजः प्रीचतामिवि।।" धन्वन्तरि का जन्म धनतेरस को हुआ था।

प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व उठकर लौकी को अपने सिर से घुमाने के बाद स्नान करना चाहिए। इस प्रकार करने से नरक का भय नहीं होता। इस को करते समय इस श्लोक का उच्चारण करें:

"सीता लोष्ट सहायुक्तः संकष्टः दलान्वितः। हर पापमपामार्ग भ्राम्यमाण पुनः पुनः।।"

कार्तिक शुक्ला अमावस्या के दिन प्रातः उठकर स्नान करना चाहिए। दूध, दही, शहद, घी और शक्कर से प्रसाद तैयार कर प्रभु को अर्पण करना चाहिये। सायंकाल लक्ष्मी का पूजन करने से धन प्राप्ति होती है। सायंकाल दीप जलाते समय निम्न श्लोक का जप करें—

"शुभम् करोति कल्याणम् आरोग्यं धन सम्पदां। शत्रु वृद्धि विनाशायः दीप ज्योति नमोऽस्तुते ।।"



गोवर्धन पर्व

इस दिन राजा इन्द्र की पूजा का विधान था। भगवान् कृष्ण ने गोवर्धन पूजा करवाई थी। गोवर्धन पूजा का उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

भैया-दूज

भैया दूज के दिन जो भाई अपनी बहन के हाथ का बना खाना उसके घर जाकर ग्रहण करता है वह सदा सुखी रहता है।

भैया-दूज की कथा

सूर्य के पुत्र व पुत्री यम और यमी में बहुत प्रेम था, पर बाद में राज्यकार्य में यम अपनी बहन यमी जिन्हें यमुना जी कहते हैं, को भूल गया। तब बहन ने एक दिन कार्तिक शुक्ला द्वितीय को भाई को निमंत्रण भेजा। यम बेचैन हो उठे। बहन की याद आई। वे यमुना के घर पहुँचे। बहन बहुत प्रसन्न हुई। उसने भाई का टीका किया। यम ने कुछ माँगने को कहा। बहन ने माँगा—आज के दिन जो बहनें भाई का टीका करें उनकी रक्षा होनी चाहिये। यमुना ने कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वितीया को ही अपने भाई को निमन्त्रित किया था। अतः इस पर्व का नाम यम द्वितीया पड़ गया।





नवरात्रारम्भ (नवरात्रों का व्रत)

आश्विन् शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी तक नवरात्रों का व्रत तथा भगवती दुर्गा की उपासना की जाती है। जिससे भगवती दुर्गा प्रसन्न होकर अपने भक्तों को मनचाहा वरदान देकर, उन्हें सब प्रकार के क्लेशों से रहित करती हुई सुखी बना दिया करती हैं।

विधि

नवरात्रों के करने की विधि का भली प्रकार वर्णन चैत्र के नवरात्रों में कर दिया गया है, उसी विधि के अनुसार व्रत करते हुए दुर्गा-पूजा के साथ-साथ दुर्गा सप्तशती का पठन-पाठन करते रहना चाहिए। इसके लिए आवश्यकता हो तो हमारी अनुवादित दुर्गा सप्तशती भाषा हमसे मंगवा लेनी चाहिए। इसमें दुर्गा चरित्र के वर्णन के साथ-साथ शतचण्डी और सहस्त्रचण्डी को प्रसन्न करने के विधान का भी भली प्रकार वर्णन किया गया है।





दशहरा पर्व (विजया दशमी)

विजया दशमी को आदि शक्ति की पूजा करते हुए रावण और कुम्भकरण तथा मेघनाद के पुतलों को जलाकर यह प्रतिज्ञा की जाती है कि हम सदा यम नियमों का पालन करते हुए शक्ति की उपासना करेंगे और दुष्ट स्वभाव वाले आताइयों को समूल नष्ट करते हुए, अपने देश व समाज की सदैव रक्षा करते रहेंगे।

अश्विन् शुक्ला दशमी को भगवती दुर्गा के महापराक्रमी दैत्य महिषासुर का वध करके दुनिया को आतङ्क से बचाकर सुखी बनाया था। तब से यह पर्व विजया दशमी के नाम से सम्बोधित किया जाता है। इसी दिन भगवान राम ने लङ्का के राजा आततायी रावण पर चढ़ाई करके, उसे मृत्यु के घाट उतारने के पश्चात्, भक्तजनों को सुखान्वित किया था। यह त्यौहार विशेषकर क्षत्रियों का त्यौहार माना जाता है। इस दिन वे अपने शस्त्रों की पूजा करते हैं और अपने इष्ट देवता को मानते हुए विजय कामना किया करते हैं। प्राचनी काल में इसी दिन शत्रु को जीतने की इच्छा से उस पर चढ़ाई की जाती थी।





अहोई (अशोकाष्टमी) का व्रत

बहुत रूचि विचार के बाद, भली प्रकार निरीक्षण करने पर ही कार्य का आरम्भ करो और अनजाने में भी किसी प्राणी की हिंसा मत करो। गऊ माता की सेवा के साथ-साथ अहोई माता (प्रजन्मा देवी भगवती) की पूजा करो। ऐसा करो। ऐसा करने पर अवश्य सन्तान-सुख के साथ-साथ सम्पत्ति-सुख प्राप्त होगा।

यह व्रत प्राय: कार्तिक बदी अष्टमी को उसी वार में किया जाता है जिस वार की दीपावली होती है। इस दिन स्त्रियाँ-पुत्रों की आरोग्यता और दीर्घायु-प्राप्ति के लिए अहोई माता का चित्र दीवार पर टांगकर/चिपकाकर/बनाकर पूजन किया करती हैं।

विधि

अहोई का व्रत दिन भर किया जाता है, इस दिन सायंकाल तारे निकलने के बाद दीवार पर अहोई बनाकर उसकी पूजा रखें, व्रत रखने वाली मातायें कहानी सुनें। कहानी सुनने के समय एक पट्टे पर एक जल से भरा लोटा रख लें। एक चांदी की अहोई बनवायें और उसमें दो मोती (दानें) डलवायें। फिर अहोई की रोली, चावल, दूध, भात से पूजा करें। जल के लोटे पर एक सतिया काढ़कर एक कटोरी में मीठे पूएं और रुपये का बायना निकालकर तथा हाथ में सात दानें गेहूं के लेकर कहानी सुनें। फिर अहोई को गले में पहिन लें, जो बायना निकाला था उसे सासू जी को पांव छू कर दें।

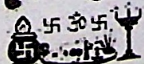
कथा

एक नगर में एक साहूकार रहा करता था, उसके सात लड़के थे। एक दिन साहूकार के सातों बेटों की बहुएं अपनी ननद के साथ चौके के लिए मिट्टी लेने गईं। मिट्टी खोदते समय उनकी ननद से स्याऊ के बच्चे मर गये। जब ननद ने कुदाल

के खुरपे को खून से सना देखा तो उसे स्याऊ के बच्चे मर जाने का बड़ा दुःख हुआ। परन्तु वह विवश थी और यह काम उससे अनजाने में हो गया था। स्याऊ ने कहा कि मैं तुझे श्राप दूंगी, तेरी कोख बांधूंगी। तब वह बोली कि भाभियों तुममें से एक मेरे बदले यह श्राप ले लो तब छः भाभियों ने तो ना कर दी। सबसे छोटी ने सोचा कि यह अपनी छोटी ननद है। इसकी कोख बंध जाएगी तो इसकी सासू को दुःख होगा। मेरे तो छः जेठानियां हैं। इनके बाल-बच्चे होंगे ही। ऐसा सोचकर उसने अपनी कोख बंधवा ली। दिन बीते, वर्ष बीते। उसके बालक हों और मर जायें और वह भी होई के दिन मरें। इसलिए वह व्रत भी नहीं कर सके। उसका दिन-रात रोना चालू रहे। उसने बड़े-बड़े पंडित बुलवाये और पूछा कि मेरा यह श्राप कैसे छूटेगा। तब पंडित ने बताया कि तू सुररी गऊ की सेवा किया कर। स्याऊ उसकी बहिन है। जब सुररी खुश होगी तो वह अपनी बहिन से कहकर तुम्हारी कोख छुड़वा देगी।

पंडितों की बात मानकर वह दूसरे दिन से ही सुररी गाय की सेवा करने लगी। बहुत दिन बीत गये। सुररी ने पूछा कि तुझे मेरी सेवा करते बहुत दिन हो गये। तू क्या चाहती है ? साहूकार के बेटे की बहू ने कहा कि स्याऊ से मेरी कोख छुड़वा। सुररी बोली कि कल मुंह-अंधेरे आना। दूसरे दिन वह आई तो सुररी उसे अपने साथ लेकर उजाड़ बावनी में गई। वहां स्याऊ ने कहा—आ बहन बहुत दिनों में आई। यह तुम्हारे साथ कौन है ? सुररी बोली यह मेरी सेवा करती है। तब स्याऊ ने कहा कि मुझे मेरे बच्चों की रखवाली के लिये भी चाहिए। सुररी बोली इसे ही रख ले। साहूकार के बेटे की बहू उनकी सेवा करने लगी। एक दिन स्याऊ बोली तू कौन है ? और इतनी उदास क्यों रहती है ? साहूकार के बेटे की बहू आंखों में आंसू ले आई और बोली कोई बात नहीं। तब स्याऊ बोली नहीं, बता मैं तेरा संकट दूर करूंगी। साहूकार के बेटे की बहू बोली वचन दे। स्याऊ ने वचन दिया तो उसने सारी बात कह दी। स्याऊ ने कहा तूने मुझे ठग लिया पर कोई बात नहीं सेवा-बंदगी से सब-कुछ हो सकता है। आज के बाद तेरी संतान नहीं मरेगी तथा पिछले सातों बेटे भी अपनी बहुओं के साथ घर आ जायेंगे। यह आशीर्वाद तथा बहुत-सा धन देकर विदा किया। वह घर आई तो सातों बेटे और बहुएं घर पर ही मिले। उस दिन अहोई का व्रत था। कड़ाही की, सब बहू-बेटों के साथ बैठकर कहानी सुनी। इधर उसकी जेठानियां बोली—जल्दी-जल्दी कहानी सुन लो फिर ननदजी रोने लग जायेगी। तब उन्होंने कहानी सुनकर अपने लड़को को भेजा कि जाकर देखो वह क्या कर रही है ? लड़कों ने जाकर देखा तो बहू-बेटों के साथ वह कहानी सुन रही है। लड़कों ने आकर सारी बात कही। सबने जाकर देखा कि सात होई मण्ड रही है साथ ही कड़ाही की है और सातों बेटों की बहुओं के साथ कहानी सुन रही है। तब उन्होंने पूछा कि यह सब कैसे हुआ ? उसने सारी बात बता दी।

हे स्याऊ माता ! जैसी उस साहूकार के बेटे-बहू पर खुश हुई वैसी सब पर होना। उसकी तरह किसी की परीक्षा मत लेना। कहानी कहते-सुनाते, लिखते-पढ़ते सब पर खुश होना।





कुछ प्रमुख आरतियाँ

आरती श्री गणेश जी

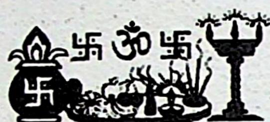
जय गणेश जय गणेश जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती पिता महादेवा।।1।।
एक दन्त दयावन्त चार भुजा धारी
माथे सिन्दूर सोहे मूसे की सवारी।।2।।
अंधन को आंख देत कोढ़िन को काया।
बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया।।3।।
पान चढ़ें फूल चढ़ें और चढ़े मेवा।
लड्डुअन का भोग लगे सन्त करें सेवा।।4।।
दीनन की लाज राखो शम्भु सुतवारी।
कामना को पूरी करो जाऊँ बलिहारी।।5।।



आरती श्री जगन्नाथ जी

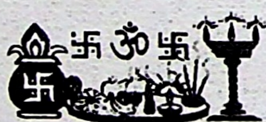
आरती श्री जगन्नाथ मंगलकारी,
चरणविंद आपदा हारी।
निरखत मुखारविंद आपदा हारी,
कंचन धूप ध्यान ज्योति जगमागी।
अग्नि कुण्डल घृत पाव सथरी।आरती०

देवन द्वारे ठाड़े रोहिनी खड़ी,
मारकण्डडे श्वेत गंगा आन करी।
गरुड़ खम्भ सिंह पौय यात्री जुड़ो,
यात्री की भीड़ बहुत बेंत की छड़ी।आरती०
सुर नर मुनि द्वारे ठाड़े वेद उचारे,
धन्य-धन्य सूरश्याम आज की घड़ी।आरती०



आरती श्री गंगा जी

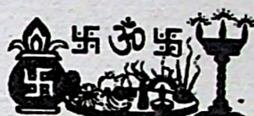
ओ३म् जय गंगे माता श्री जय गंगे माता,
जो नर तुमको ध्याता मनवांछित फल पाता।।ॐ जय
चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता।।ॐ जय
पुत्र सगर के तारे, सब जग की ज्ञाता,
कृपा दृष्टि तुम्हारी, त्रिभुवन सुखदाता।।ॐ जय
एक ही बार जो तेरी शरणागति आता,
यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता।।ॐ जय
आरती मात तुम्हारी जो जन नित्य गाता।
दास वही सहज में मुक्ति को पाता।।ॐ जय



आरती श्री पार्वती जी

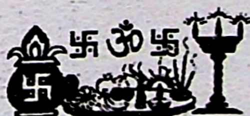
जय पार्वती माता जय पार्वती माता,
ब्रह्म सनातन देवी शुभ फल की दाता। टेक०
अरिकुल पद्म विनासनि जय सेवक त्राता,
जग जीवन जगदम्बा हरिहर गुण गाता। जय०
सिंह को वाहन साजे कुण्डल है साथा,
देव वधू जह गावत नृत्य करत ताथा। जय०
सतयुग रूपशील अतिसुन्दर नामसती कहलाता,
हेमांचल घर जन्मी सखियन रंगराता। जय०

शुम्भ निशुम्भ विदारे हेमाँचल स्याता,
सहस्र भुज तन धरिके चक्र लियो हाथा। जय०
सृष्टि रूप तुम्ही है जननी शिव संग रंगराता,
नन्दी भृंगी बीन लही सारा मदताता। जय०
देवन अरज करत हम चित को लाता,
गावत दे दे ताली मन में रंग राता। जय०
श्री प्रताप आरती मैया की जो कोई गाता,
सदासुखी नित रहता सुखी सम्पत्ति पाता। जय०



आरती श्री सरस्वती जी

आरती कीजे सरस्वती की, जनन विद्या, बुद्धि भक्ति की। टेक०
जाकी कृपा कुमति मिट जाए। सुमिरन करत सुमति गति आये,
शुक सनकादि जासु गुण गाये। वाणी रूप अनादि शक्ति की।।
आरती कीजे०....
नाम जपत भ्रम छूट दिए के। दिव्य दृष्टि शिशु उधर हिय के,
मिलहिं दर्श पावन सिय पिय के। उड़ई सुरभि युग 2 कीर्ति की।।
आरति कीजे०....
रचित जासु बल वेद पुराणा। जेते ग्रन्थ रचित जगनाना,
तालु छन्द स्वर मिश्रित गाना। जो आधार कवि यति सति की।।
आरती कीजे०....
सरस्वती की वीणा वाणी कला जननि की।
आरती कीजे सरस्वती की।।



आरती श्री बद्रीनाथ जी

पवन मन्द सुगन्ध शीतल हेम मन्दिर शोभितम।
निकट गंगा बहत निर्मल श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम।
शेष सुमिरन करत निशदिन धरत ध्यान महेश्वरम।
श्रीवेद ब्रह्मा करत स्तुति श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम।

शक्ति गौरी गणेश शारद नारद मुनि उच्चारणम।
जोग ध्यान अपार लीला श्री बद्रीनाथ विश्वम्भरम।
इन्द्र चन्द्र कुबेर धुनि कर धूप दीप प्रकाशितम।
सिद्ध मुनिजन करत जै जै श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम।
श्रीलक्ष्मी कमला चँवर डोले श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम।
यक्ष किन्नर करत कौतुक ज्ञान गन्धर्व प्रकाशितम।
कैलाश में एक देव निरन्जन शैल शिखर महेश्वरम।
राजा युधिष्ठिर करत स्तुति श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम।
श्री बद्रीजी के पंच रत्न पढ़त पाप विनाशनम।
कोटि तीर्थ भवेत पुण्य प्राप्यते फलदायकम।

आरती श्री शाकुम्भरी माता जी

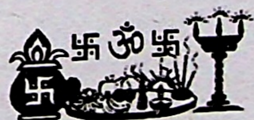
हरि ॐ श्री शाकुम्भरी अम्बा जी की आरती कीजो
ऐसो अदभुत रूप हृदय धर लीजो
शताक्षी दयालु की आरती कीजो
तुम परिपूर्ण आदि भवानी मां
सब घट तुम आप बखानी माँ
शाकुम्भरी अम्बाजी की आरती कीजो
तुम्हीं हो शाकुम्भरी, तुम ही हो शताक्षी मां
शिव मूर्ति माया, तुम ही हो प्रकाशी मां
श्री शाकुम्भरी....
नित जो नर-नारी अम्बे आरती गावे मां
इच्छा पूरण कीजो, शाकुम्भरी दर्शन पावे मां
श्री शाकुम्भरी....
जो नर आरती पढ़े पढ़ावे माँ
जो नर आरती सुने सुनावे माँ
बसे बैकुण्ठ शाकुम्भर दर्शन पावे,
श्री शाकुम्भरी अम्बा जी की आरती कीजो



आरती श्री दुर्गा जी

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी

तुमको निशि दिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी।। टेक०
मांग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को। मइया..
उज्ज्वल से दोऊ नैना, चन्द्रवदन नीको।। जय०
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे। मइया..
रक्त-पुष्प-गलमाला, कण्ठन पर साजे।। जय०
केहरि वाहन राजत, खड्ग-खप्परधारी। मइया..
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिन के दुःखहारी।। जय०
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती। मइया..
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति।। जय०
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती। मइया..
धूम्रविलोचन नैना, निशिदिन मदमाती।। जय०
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे। मइया..
मधु-कैटभ दोऊ मारे, सुर भयहीन करे।। जय०
तुम ब्रह्माणी, तुम रुद्राणी, तुम कमलारानी। मइया.
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी।। जय०
चौंसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरों। मइया..
बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरू।। जय०
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता। मइया..
भक्तन की दुःख हरता, सुख सम्पति करता।। जय०
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी। मइया..
मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी।। जय०
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती। मइया..
श्रीमालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति।। जय०
अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावे। मइया..
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पत्ति पावे।। जय०



आरती श्री भैरव जी

जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा।।
जय काली और गौरा देवी कर सेवा।। जय०
तुम्हीं पाप उद्धारक दुख सिन्धु तारक।
भक्तों के सुखकारक भीषण वसु धारक।। जय०

वाहन श्वान विराजत कर त्रिशूल धारी।
महिमा अमित तुम्हारी जै जै भयहारी। जय
तुम बिन देवा सेवा सफल नहीं होवे।
चौमुख दीपक दर्शन दुख खोवे।। जय०
तेल चटकि दधि मिश्रित मासबलि तेरी।
कृपा करिये भैरव करिये नहीं देरी।। जय०
पांव घूंघरू बाजत डमरू डमकावत।
बटुकनाथ बन बालक जन मन हर्षावत।। जय०
बटुकनाथ की आरती जो कोई नर गावे।
कहें धरणीधर नर मनवांछित फल पावे।। जय०

श्री रामायण जी की आरती

आरती श्री रामायण जी की।
कीरति कलित ललित सिय पी की।।टेक।।
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद।
बाल्मीक विज्ञान विशारद।।आरती....
सुक सनकादि शेष अरु शारद।
बरनी पवनसुत कीरति नीकी।।आरती....
गावत वेद पुराण अष्टदश।
छओं शास्त्र सब ग्रन्थन को रस।
मुनिजन धन सन्तन को सबरस।
सारअंश सम्बत सबही की।।आरती....
गावत सन्तन शम्भु भवानी।
अरु घट सम्भव मुनि विग्यानी।
व्यास आदि कवि पुंज बखानी।
कागभुसुण्डि गरुड़ के हिय की।।आरती....
कलिमल हरनि विषय रस फीकी।
सुभग श्रृंगार मुक्ति जुवती की।
दलन रोग भव भूरि अमी की।
तात् मातु सब विधि तुलसी की।आरती....



शुभ चिह्न

भारतवर्ष में तीज-त्यौहार, विवाह अथवा किसी भी मांगलिक कार्य के समय निम्न शुभ चिह्न बनाए जाते हैं। दीपावली अथवा नववर्ष पर भी बहीखाते के पूजन के समय भी यह शुभ चिह्न बनाने की सनातन परम्परा है। जहां यह एक ओर द्वार सजाते हैं वहीं इसका लाभ भी कुछ कम नहीं है। यह सिन्दूर अथवा शुद्ध रोली से बनाए जाते हैं।

卐
शुभम्
卐

6	1	8
7	5	3
2	9	4

卐
लाभम्
卐

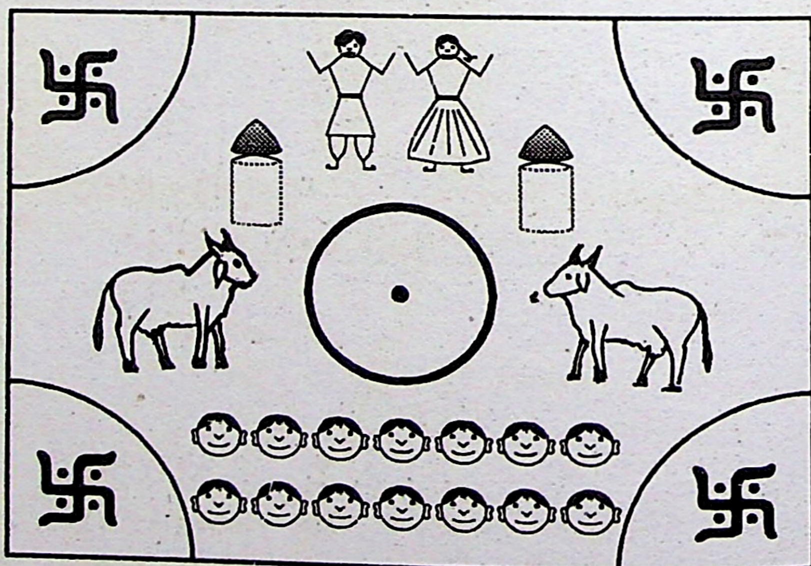
6	1	8
7	5	3
2	9	4

बही खाता

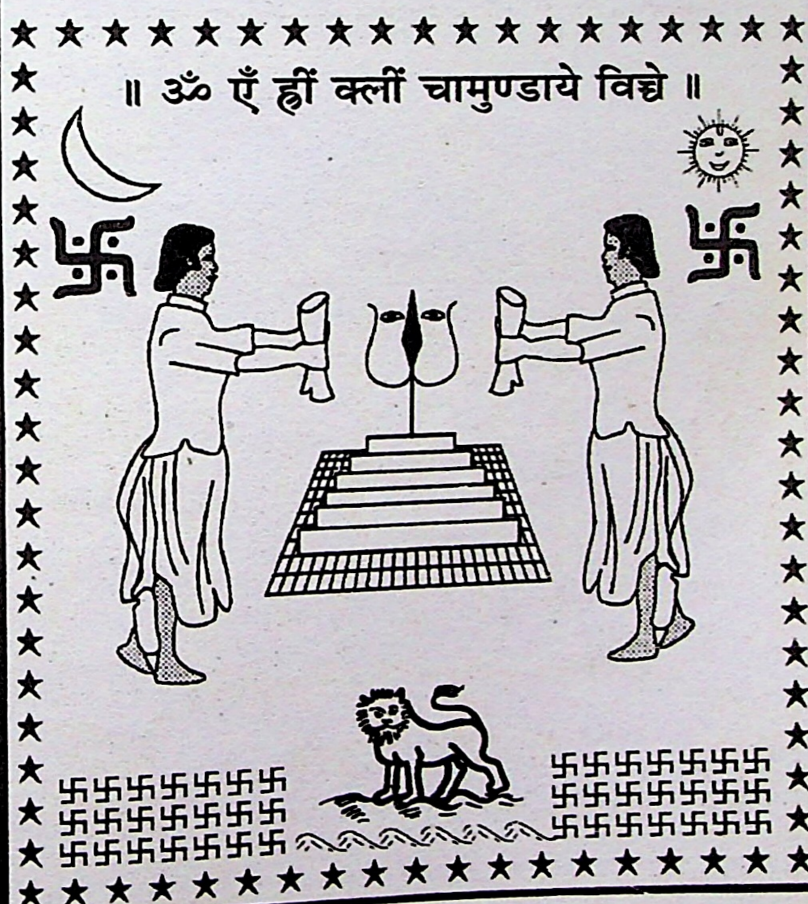
卐
शुभम् लाभम्
卐

6	1	8
7	5	3
2	9	4

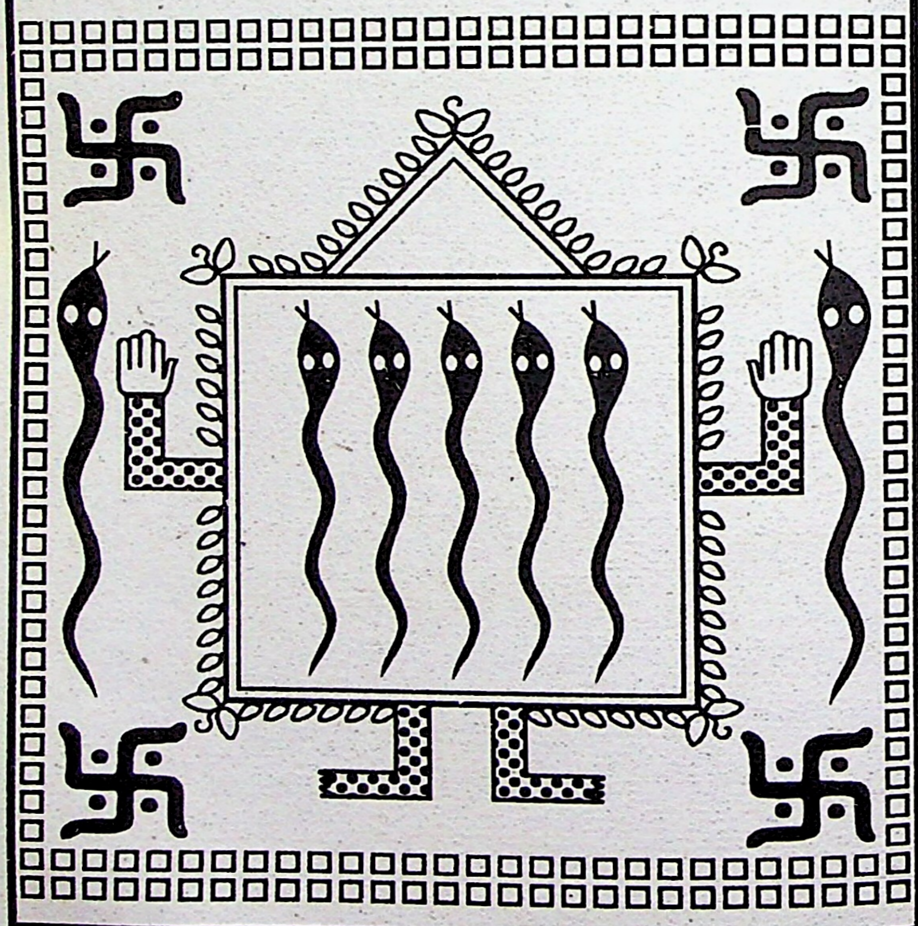
बछवारस पर इस प्रकार चित्र बनाकर पूजन करें !



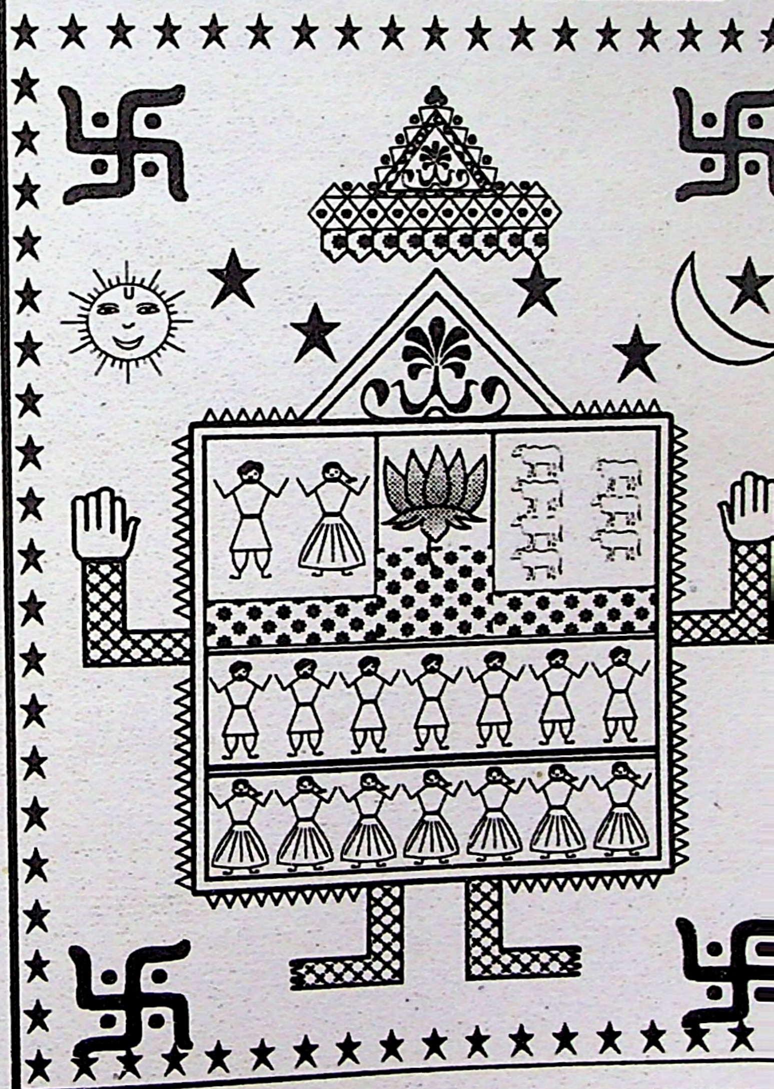
दुर्गा अष्टमी
नवरात्रे (दुर्गापूजन)
इस प्रकार चित्र बनाकर
पूजन करें !



गूगा पंचमी पर
गेरू से इस प्रकार
चित्र बनाकर
पूजन करें !

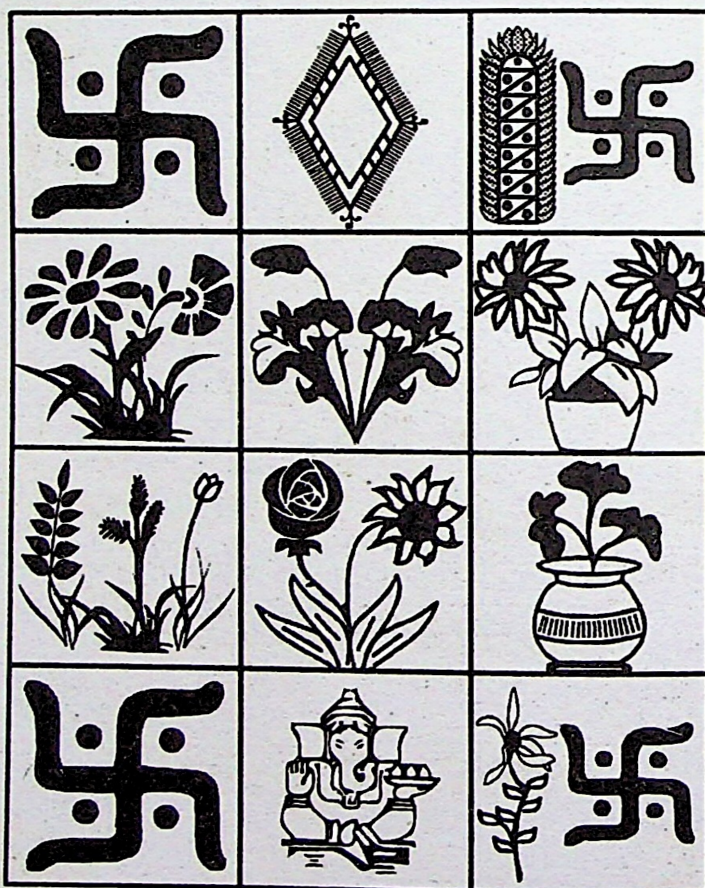


अहोई अष्टमी पर इस प्रकार चित्र बनाकर पूजन करें !

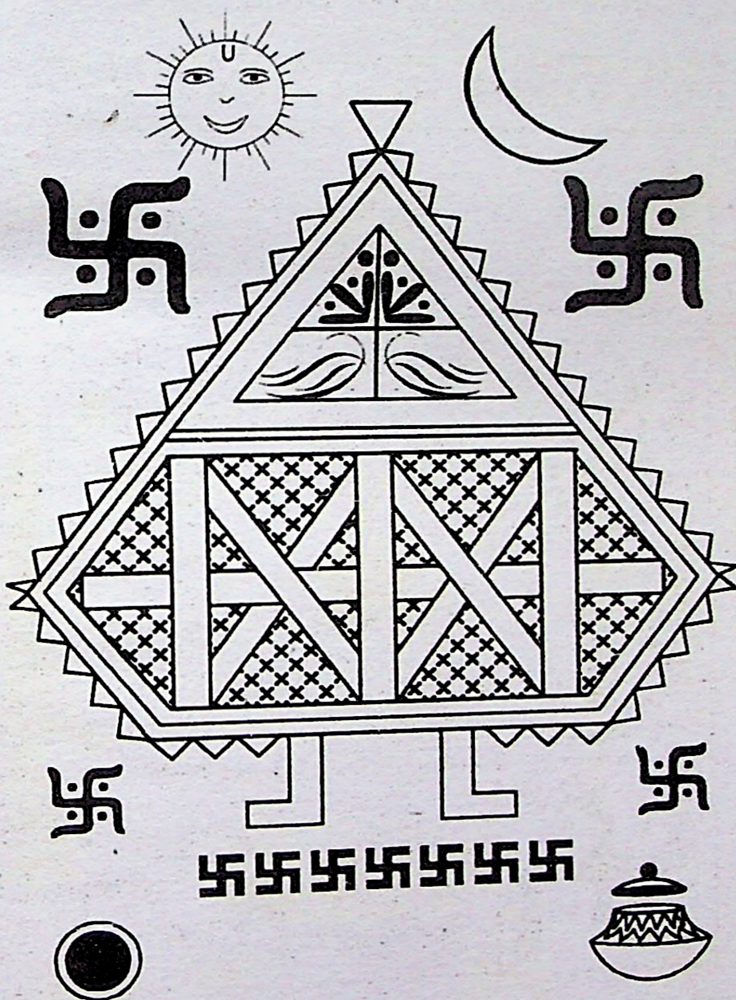


मारुति प्रकाशन

रक्षाबन्धन (सलूनों) पर इस प्रकार चित्र बनाकर पूजन करें!



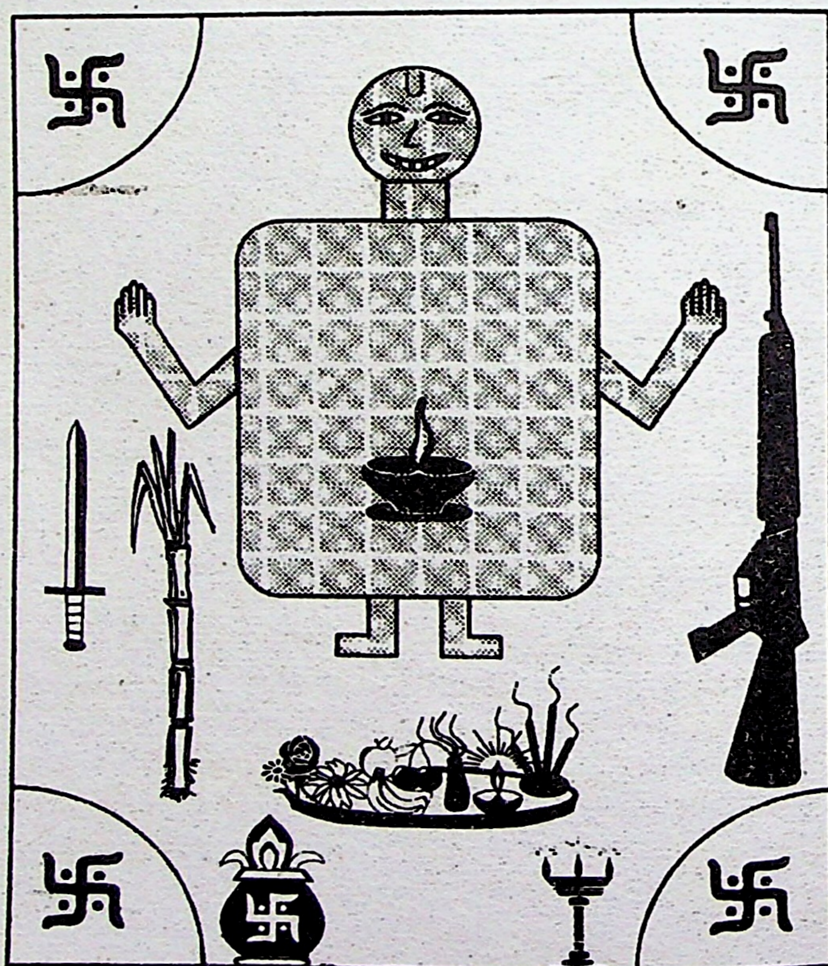
विजय दशमी (दशहरा) पर दीवार पर इस प्रकार चित्र बनाकर पूजन करें !



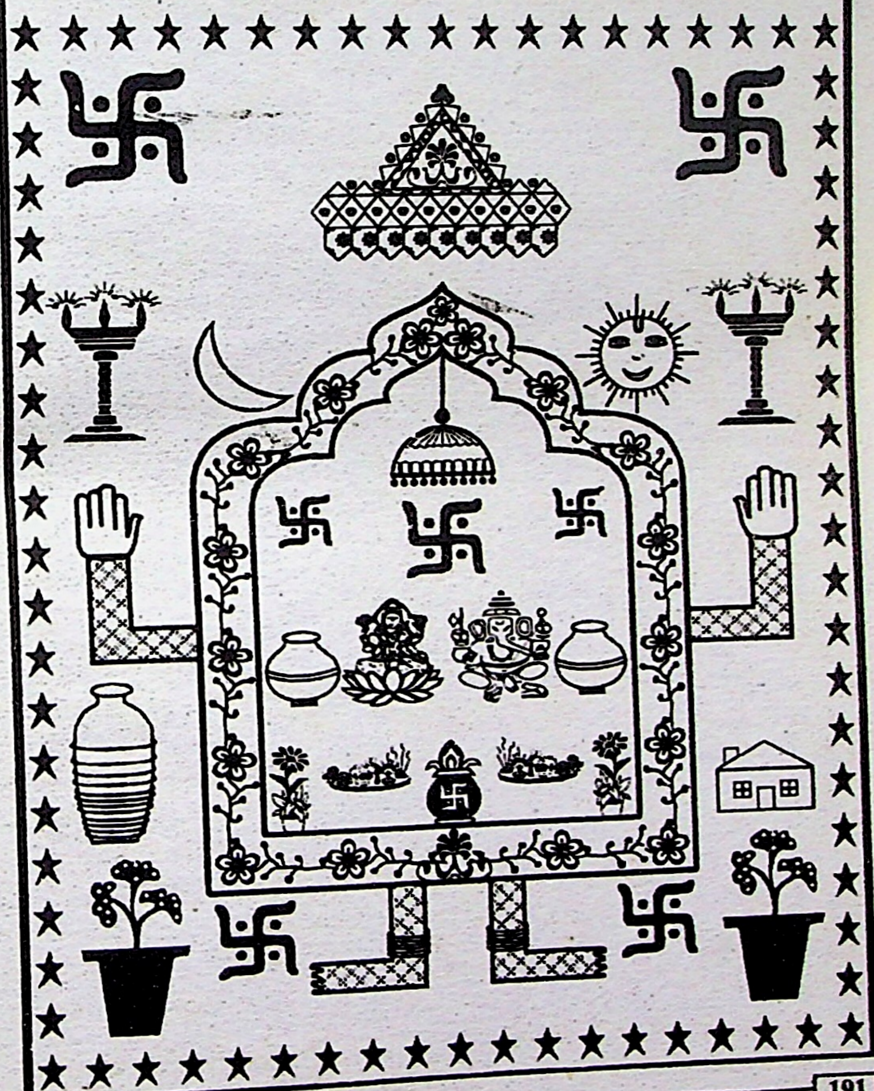
विजयदशमी (दशहरा) पर गोबर से इस प्रकार की आकृति भूमि पर बनाकर पूजन करें !

भूमि पर लिखें —

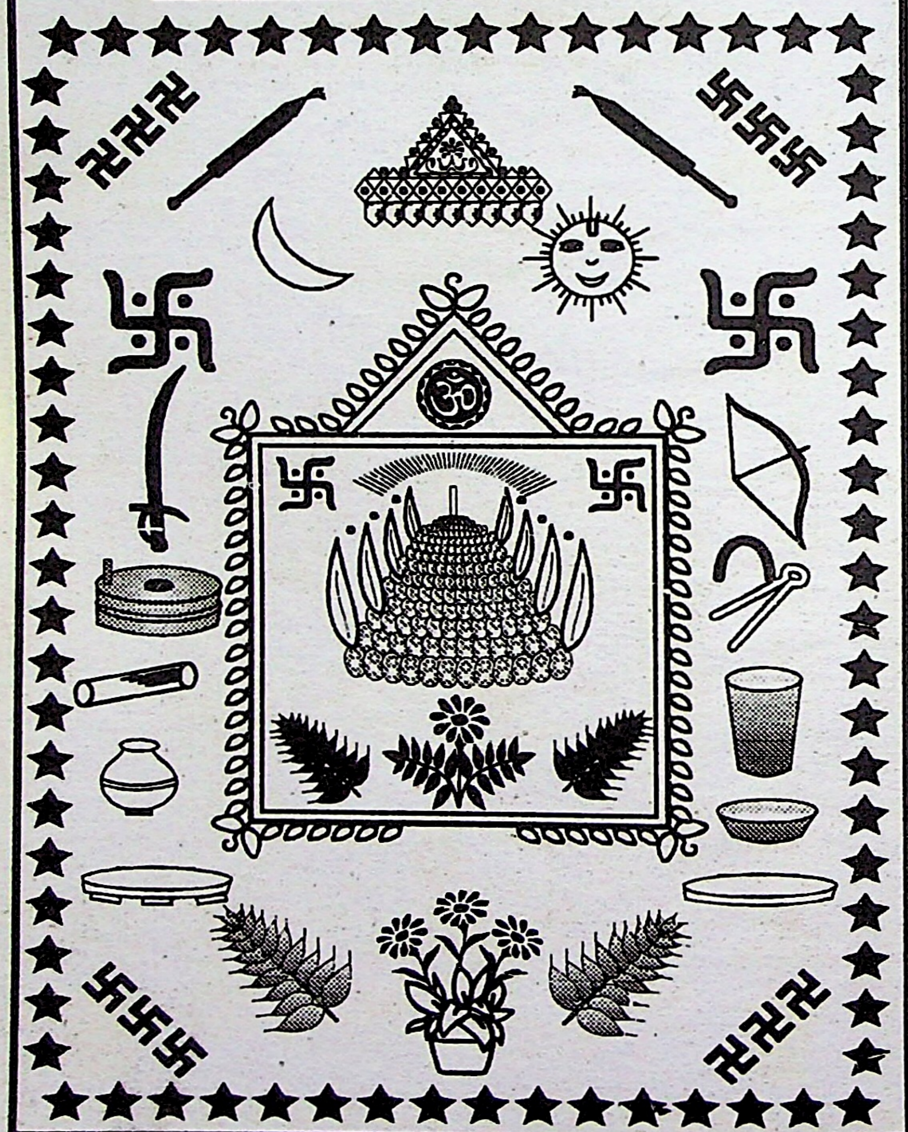
श्री राम चन्द्रजी का पायता, जहां जाए वहां सिद्ध,
पूरब का वर्षा, पश्चिम का नीर, उत्तर का घोड़ा, दक्षिण का चीर।
इसके साथ ही अनाज का वर्तमान भाव भी लिखकर पूजन करें।



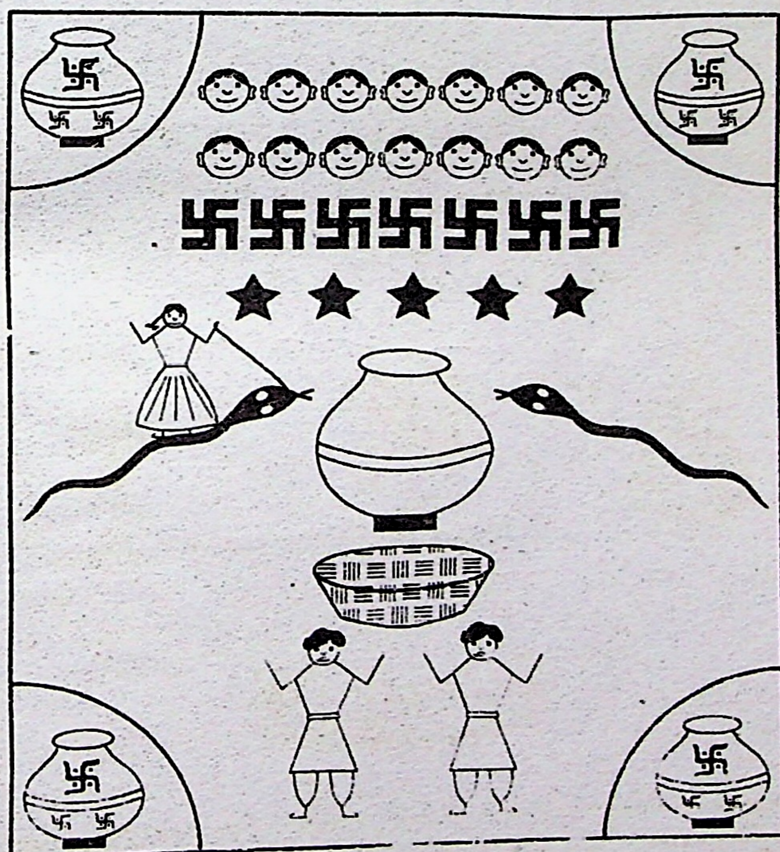
बड़ी दीपावली पर इस प्रकार चित्र बनाकर पूजन करें !



होलिका पर इस प्रकार चित्र बनाकर पूजन करें !

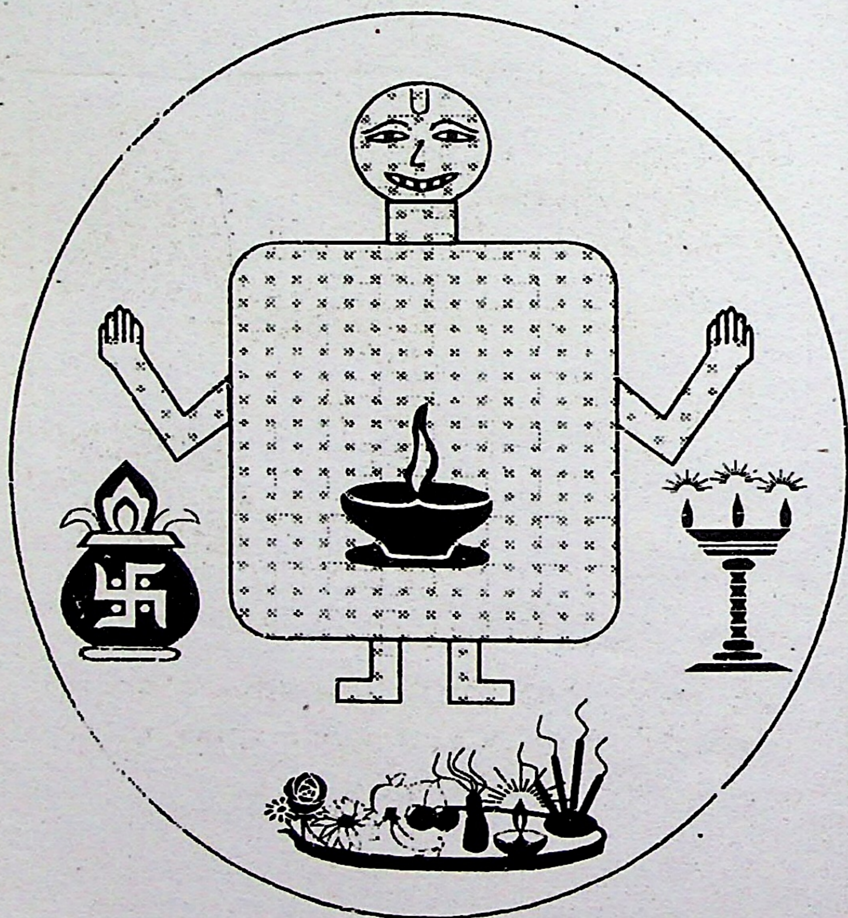


दुबड़ी सप्तमी पर इस प्रकार चित्र बनाकर पूजन करें !



गोवर्धन पर गोबर से इस प्रकार चित्र भूमि पर बनाकर पूजन करें !

और पूजन के पश्चात् इसके चारों ओर परिक्रमा करें।



नवग्रह मंडल

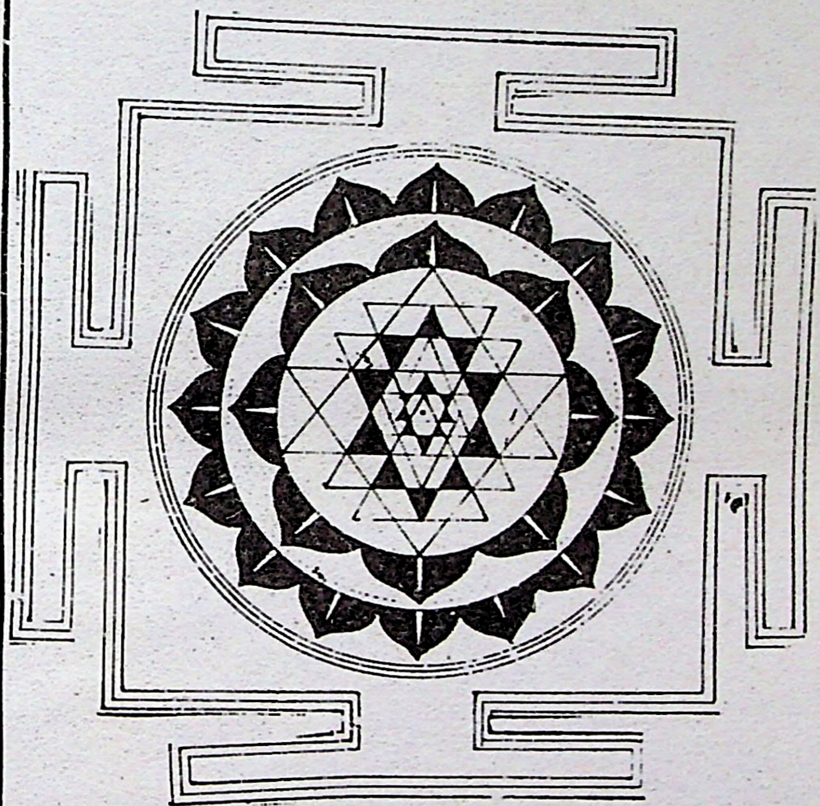
बुध	शुक्र	चन्द्र
गुरु	सूर्य	मंगल
केतु	शनि	राहु

ब्रह्मामुरारी त्रिपुरांतकारी भानु शशि भुमि सुतो।
बुधश्च गुरुश्च शुक्र शनि राहु केतव कुर्वुन्तु
सर्वेभय सुप्रभातम्।



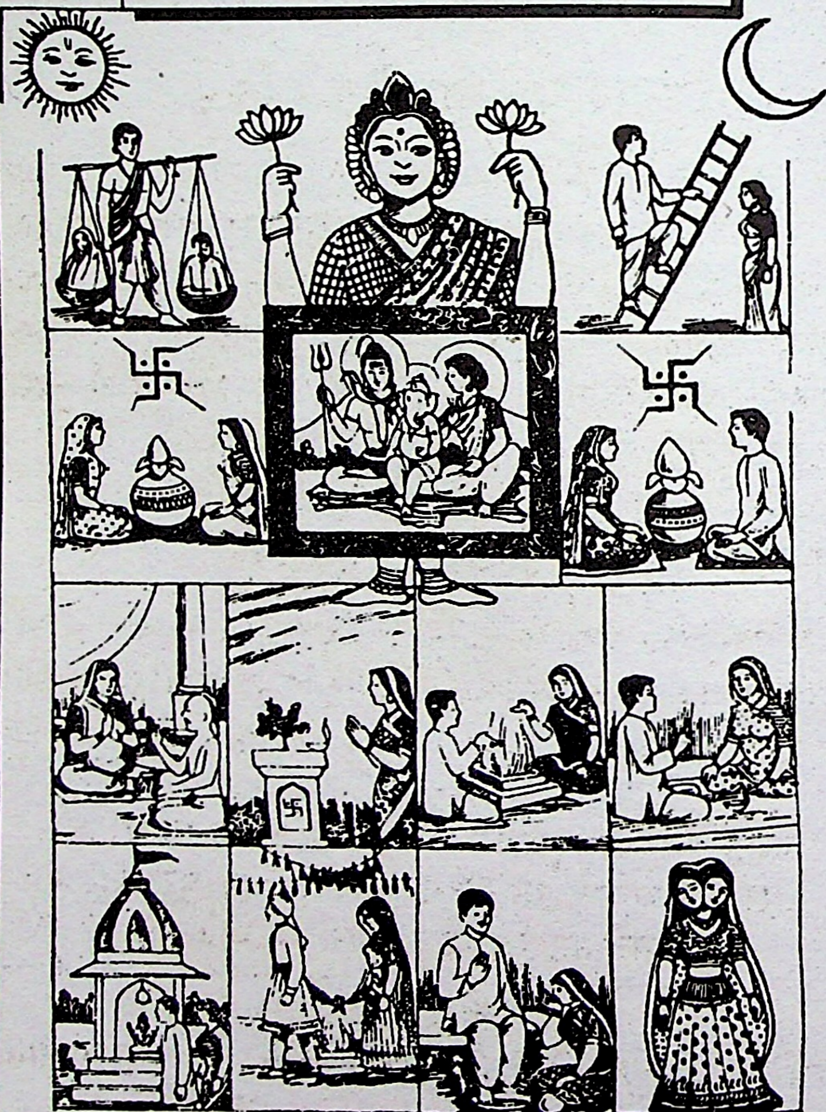
वक्रतुण्ड महाकायः कोटि सूर्य सम प्रभ।
निर्विघ्न कुरू में देव! सर्व कार्येषु सर्वदा।।

दीपावली पर पूजन हेतु विशेष धनदा यन्त्रम्



ॐ श्रीं ह्लीं श्रीं कमले कमलालये
प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्लीं श्रीं ॐ महालक्ष्मयै नमः!

करवा चौथ पर इस प्रकार चित्र बनाकर पूजन करें।





हमारा भारत पर्वों और धार्मिक आयोजनों का देश है। एक ओर जहां साधक साधनाओं, उपासनाओं और आराधनाओं के द्वारा कार्य सिद्ध करते हैं, वही दूसरी ओर सामान्य गृहस्थी जन उपवास, कथाओं के माध्यम से अपनी समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति करते हैं। आप भी अपनी समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति व्रत कथाओं से कर सकें, अपने त्यौहारों में कथाओं, आरतियों को सम्मिलित करके चार चांद लगा सकें- इसी पावन उद्देश्य को सामने रखकर इन उपवास कथाओं, आरतियों को बड़े ही सुन्दर ढंग से आज के जाने माने लेखक तांत्रिक बहल ने बड़े ही परिश्रम से संजोया है।






50/-

मारुति प्रकाशन

A.H.W. MARUTI SERIES

Anans Comm-9837351274